श्रीः ।

भिषग्वरविद्यापतिप्रणीत-

वैद्यरहस्य.

(चिकित्साग्रंथ)

८१६

८८३

मथुरानगरनिवासिपाठकज्ञातीयश्रीकन्हैयालाल-
माथुरपुत्रआयुर्वेदोद्धारसंपादकपंडित

दत्तरामचतुर्वेदी

रचितभाषाटीकाविभूषित और संशोधित

जिस्को

मुंबईमें

खेमराज श्रीकृष्णदासने स्वकीय "श्रीवेङ्कटेश्वर"
छापाखानामें छापके प्रसिद्ध किया.

शास्त्रंगुरुमुखोद्गीर्णमादायोपास्य चासकृत् ।
यः कर्म कुरुते वैद्यः स वैद्योऽन्ये तु तस्कराः ॥

'सुश्रुते'

संवत् १९५१ सन् १८९४

यह ग्रंथ सन् १८६७ आक्ट २५ के प्रमाण रजिस्टरीका हक
यन्त्राधिकारीने स्वाधिन रक्खा है ।

द्वितीया आवृत्ति.

श्रीः ।

प्रस्तावना ।

महाशयो ! मैंने समस्त आयुर्वेदीय भिषग्वरों की सुगमताके लिये यहग्रंन्थ "वैद्यरहस्य" भाषानुवाद करके प्रथम वार छपायके प्रसिद्ध किया जिससे सामान्य श्रेणीके मनुष्योंको अतीव लाभ पहुंचा. अब दूसरी बार छापनेके लिये परमोदार परोपकारोद्यत "खेमराज श्रीकृष्णदासजी" श्रीवेंकटेश्वर छापाखाना मुंबईको सर्वप्रकारके हक्कोंके साथ दे दिया है, अतएव कोई महाशय इसके छापनेका इरादा न करें

सज्जनोका कृपाभिलाषी–

दत्तरामचौबे.

मथुरा.

वैद्यकग्रंथाः ।

	की.रु.आ.	ट.म.रु.आ.
१ हारीत संहिता भाषाटीकासहित	३–०	०–८
२ अष्टांगहृदय (वाग्भट्ट) भाषाटीका अत्युत्तम वैद्यकग्रंथ सम्पूर्ण छपके तैयारहै	१०–०	१–०
३ बृहन्निघंटुरत्नाकर प्रथमभाग	३–०	०–६
४ बृहन्निघंटुरत्नाकर द्वितीयभाग	३–०	०–६
५ बृहन्निघंटुरत्नाकर तृतीयभाग	३–८	०–८
६ बृहन्निघंटुरत्नाकर चतुर्थभाग	२–८	०–५
७ बृहन्निघंटुरत्नाकर पंचमभाग छपता है	०	०
८ रसराजसुंदर भाषाटीकासह	३–४	०–८
९ पथ्यापथ्यभाषाटीका	०–१२	०–१॥
१० शार्ङ्गधर निदानसह भाषाटीका पं० दत्तराम चौबे मथुरानिवासीका बनाया	३–०	०–६
११ अमृतसागर कोशसहित हिंदी भाषामें नवीन छपके तैयारहै	२–४	०–८
१२ डाक्टरी चिकित्सासार भाषा (अं. दे. वै.)	०–१२	०–१
१३ चिकित्साखण्ड भाषाटीका प्रथमभाग	४–०	०–१०
१४ चिकित्साक्रमकल्पवल्ली संस्कृत काशि नाथकृत	२–८	०–८
१५ माधवनिदान उत्तम भाषाटीका	२–८	०–८
१६ अंजननिदान भाषाटीका अन्वयसहित	०–८	०–२
१७ हंसराज निदान भाषा टीका	१–४	०–३
१८ चर्य्याचंद्रोदयभाषाटीका (व्यंजनबनानेका)	२–०	०–४
१९ योगतरंगिणी बहुतही उत्तम	२–०	०–४
२० वीरसिंहावलोकन ज्योतिषशास्त्रादिकर्मवि पाक चिकित्सा नवीन टाईपमें अति उत्तम	१–१२	०–४
२१ योगचिंतामणिभाषाटीका दत्तरामचौबेकृत ग्लेज	१–४	०–४
तथा रफ कागजकी	१–०	०–३
२२ लोलिंबराज वैद्यजीवन संस्कृतटीका और भाषाटीका	१–०	०–४

पुस्तक मिलनेका ठिकाना

खेमराजश्रीकृष्णदास

श्रीवेंकटेश्वर छापाखाना–बम्बई.

श्रीः ।

अथ वैद्यरहस्यग्रंथकी अनुक्रमणिका ।

विषय.	पत्र.
मंगलाचरणम्	१
इस ग्रंथके प्रयोग चौरको शापकथन	,,
ज्वरचिकित्सा.	
दोषाज्ञातमें साधारण क्रियाकी आज्ञा	,,
ज्वरमें समान्यचिकित्सा	२
पंखेकी पवनके गुण	,,
नवज्वरमें क्रिया	,,
पथ्यकी आवश्यकता	३
तरुणज्वरमें पथ्यापथ्य	,,
तरुणज्वरमें परिषेकादि सेवनके उपद्रव	,,
ज्वरवालेको विदाहीगुरुआदि पदार्थ-सेवनका निषेध	,,
लंघन करनेका कारण....	,,
लंघन करनेका फल	४
उत्तम लंघनके गुण	,,
हीनलंघनके लक्षण	,,
अतिलंघनके उपद्रव	,,
बलके अविरोधीलंघन कथन	५
लंघनमें वर्जित मनुष्य....	,,
ज्वरपाककी अवधि	,,
कथित जलके पृथक् पृथक् गुण	,,
आरोग्यांबुके गुण	६
शीतलजल योग्य रोगी	,,
वातश्लेष्म ज्वरमें उष्ण जलके गुण	,,
शृतशीत योग्य रोगी	६
शृतशीत वा षडंग जल	७
अन्न देनेका काल	,,
त्रिविध पुरुष	७
लघु भोजनके गुण	,,
लंघन करानेकी व्यवस्था	७
ज्वरवालेको दिनान्तमें लघु पदार्थ भोजनकी आज्ञा और गुरु अभिष्यंदी आदि भक्षणके दोष	८
रोगीको दोषशुद्धीपर्यंत लघु अन्न भक्षणकी आज्ञा	,,
सामनिराम ज्वरमें व्यवस्था	,,
आमलक्यादि चूर्ण	,,
अमृतादि काथ....	९
अनंतादि चूर्ण	,,
आरग्वधादि काथ	,,
गुडूच्यादि काथ....	,,
पर्पटादि काथ	१०
द्राक्षादि काथ	,,
पित्तज्वरे कुटकीकल्क	,,
ह्रीबेरादि काथ	,,
भूनिंबादि काथ....	,,
महाद्राक्षादि काथ	११
अन्य प्रतीकार	,,
कफज्वरप्रतीकार	,,
कट्फलादिकाथ....	,,

कवल	१२
वातपित्तज्वरे पंचभद्रकम्	,,
यूष	,,
वातकफज्वरे	,,
स्वेदोद्गमे	,,
उद्धूलनम्	,,
पित्तकफज्वरे	१३
नागरादि काथ	,,
कुटकी शर्करा योग	,,
सन्निपातज्वरे	,,
त्रिदोषमें प्रथम कर्तव्य....	,,
त्रिदोषज्वरकी साध्यासाध्य	,,
धातुपाक मलपाकके लक्षण	१४
तथाच	,,
नस्यम्	,,
आर्द्रकादि कवलको मुखमें धारण करके त्यागना	,,
सूतादि टिकिया बंधन	१५
भैरवांजन	,,
नस्यम्	,,
उद्धूलनम्	,,
तथाच	१६
स्वच्छंदभैरवरसः	,,
शृंग्यादि काथ	,,
दशमूलादि काथ....	१७
अष्टादशांग काथ....	,,
पंचवक्त्रोरसः	१८
ज्वरघ्नोरसः	,,
उदकमंजरीरसः....	,,
महाज्वरांकुशः	,,
ज्वरारिः	१९
रामबाणरसः	१९
लीलावती वटी	,,
महाज्वरांकुशः	२०
जीर्णज्वरापहा वटी	,,
अग्निकुमारो रसः	,,
ज्वरघ्नगुटिका	२१
द्वितीयभूतभैरवो रसः	,,
चिंतामणिरसः	२२
आरोग्यरागीरसः	,,
पंचामृतपर्पटी	,,
उपायांतरम्	२३
कुपथ्यमें फिर लंघन करना	,,
मलसंग्रहजनित ज्वरमें मलको निकालना	,,
मद्यजन्यज्वरे	,,
जलजनितज्वरे	,,
उलट कर आनेवाले ज्वरपर किरातादि काथ	२४
पंचविधज्वरोंपर काथपंचक	,,
वर्द्धमान पिप्पली	,,
सुश्रुतका मत	२५
वाग्भटका मत	,,
गुडपीपल....	,,
पीपल सहत	,,
हरीतक्यादि वटी	२६
शीतज्वरे अनुभूतांजनम्	,,
बृहत्क्षुद्रादि काथ	,,
निंबादि चूर्णम्	,,
पिप्पलीमोदकः	२७
लशुनप्रयोग	,,
विषमज्वरनाशकयोग	,,

ज्वरऔरदाहनाशकयोग.... .... २८
षट्तक्रतैलम् .... ,,
माहेश्वर धूपः .... ,,
त्रिकंटक क्वाथ .... ,,
द्वितीयं आमलक्यादि चूर्णम् .... ,,
द्राक्षादि क्वाथ २९
दुर्जलजेता रसः.... .... ,,
ज्ञानोदयरसः .... ,,
जलदोषनिवृत्तिको उपायान्तर.... ३०
किरातादि चूर्ण .... ,,
ज्वरमें श्वास मूर्छा और अरुचिका यत्न .... ,,
ज्वरमेंवमनशांतियोग .... ,,
ज्वरजन्य तृषाचिकित्सा .... ,,
दूसरायत्न.... .... ,,
ज्वरातिसारचिकित्सा ३१
दूसरा यत्न .... ,,
अथ ज्वरातिसार चिकित्सा .... ,,
ज्वरातिसारे गुडूच्यादि क्वाथः .... ,,
ज्वरेविड्ग्रहचिकित्सा .... ,,
दूसरा योग ३२
उपायांतरम् .... ,,
हिक्काचिकित्सा .... ,,
तथा .... ,,
कासचिकित्सा .... ,,
तथा ३३
कर्णमूलचिकित्सा .... ,,
उपायांतर .... ,,
तथा .... ,,
मुखशोष मुखवैरस्यचिकित्सा .... ,,
निद्रानाशे ३४
तथा उपायान्तर ३४
अन्य उपाय .... ,,
तथा .... ,,
तथा .... ,,
तथा ३५
तथा .... ,,
शिरोर्तिचिकित्सा .... ,,
तथा .... ,,
तंद्रायां नस्यम् .... ,,
अंजनम् .... ,,
उन्मत्ताख्यरसः ३६
तालीसादि चूर्ण .... ,,
ज्वरमें अपथ्य .... ,,
असाध्य लक्षण ३७
ज्वरपर दैवीयत्न.... .... ,,

ज्वरातिसार.

ज्वर और अतिसारमें कही औषधोंको मिलायकर देनेका निषेध .... ,,
ज्वरातिसारमें उष्णजलका पृथक् पृथक् गुण ३८
नागरादि क्वाथ .... ,,
ह्रीबेरादि क्वाथ .... ,,
बृहद्गुडूच्यादि क्वाथ .... ,,
उशीरादि क्वाथ .... ,,
बिल्वादि क्वाथ ३९

अतिसार.

अतिसारमें सामान्य चिकित्सा.... ,,
अतिसारमें लंघनको प्राधान्यता ,,
प्रथम आमको पक्क करना .... ,,
पक्कापक्क निर्णय ४०
आमातिसारीके दस्तरोकना निषेध ..

बहुतसे रोगोंमें आमके दस्तकोभी रोकना
अतिसारीको लंघनादि प्राशस्त्य ४०
योगचतुष्टय ४१
धान्यपंचक .... ,,
मधुहरीतकी .... ,,
शुंठीपुटपाक .... ,,
प्रकारान्तर ४२
रक्तातिसारचिकित्सा .... ,,
कुटजादि क्राथ .... ,,
आजाज्यादि पुटपाक ४३
अजमोदादि चूर्ण .... ,,
गंगाधररसः .... ,,
दाडिमी वटी .... ,,
द्वितीय दाडिमी वटी ४४
सर्वातिसारहारिणी गुटिका .... ,,
अहिफेन योग .... ,,
मुक्ताभस्म योग .... ,,
जातीफलादि वटी .... ,,
जातीफलादि टिकिया ४५
पुनर्नवादि क्राथ.... .... ,,
आम्रकी गुठली और बेलगिरीका काढा.... .... ,,
मूंग और खीलका क्राथ .... ,,
अतिसारमें अपथ्य .... ,,

संग्रहणी.

संग्रहणीकी सामान्य चिकित्सा.... ४६
तक्रसेवन .... ,,
लवुलाई चूर्ण .... ,,
जातीफलादि चूर्ण ४७
कामेश्वर मोदक.... .... ,,
कपित्थाष्टक चूर्ण ४८
दाडिमाष्टकम् ४८
द्वितीयदाडिमाष्टकम् .... ,,
अभ्रकवटी ४९
ग्रहणीकपाटरस .... ,,
द्वितीय ग्रहणीकपाटरस.... .... ५०
संग्रहणीके असाध्य लक्षण .... ,,
ग्रहणीरोगमें अपथ्य .... ,,

अर्श.

अथ अर्शरोगचिकित्सा .... ,,
बवासीरमें वायुकी अनुलोमकारी और अग्निवर्द्धक औषध सेवनकी आज्ञा ,,
बवासीरकी चतुर्विधचिकित्सामें औषधको मुख्यत्व .... ,,
दस्तहोनेवाली और न होनेवाली-बवासीरका यत्न ५१
बवासीरके नाशक यवानी आदि-तीन योग .... ,,
सूरणपुटपाक .... ,,
कांकायनगुड .... ,,
देवदालीका जल तथा धूम ५२
लेप .... ,,
बृहच्छूरणो मोदकः .... ,,
कल्याण लवणम् ५३
कासीसादितैल .... ,,
नित्योदितोरसः .... ,,
अर्शःकुठारो रसः .... ,,
दुर्नामकुठाररसः ५४
वृद्धदारुमोदक .... ,,
धूप .... ,,
अर्कादिक्षार .... ,,
विश्वादिचूर्ण ५५

लाक्षादिचूर्ण ५५
कर्पूरकी धूनी .... ,,
विषमुष्टिचूर्ण .... ,,
चंदनादि काढा.... .... ५६
बवासीरपर तीन योग .... ,,
जोख लगाना .... ,,
कुटजावलेह .... ,,
बोलबद्धरसः ५७
लघुमालिनीवसंत .... ,,
नागार्जुनीयोग ५८
अर्शनाशिनीगुटिका ५९
हरडगुडकासेवन .... ,,
अर्शरोगमें पथ्य.... .... ,,

अग्निमांद्य.

अथ अग्निमांद्यचिकित्सा .... ,,
चतुर्विध जठराग्निकी चिकित्सा.... ,,
आमाजीर्णविष्टंभ और रसशेष-अजीर्णका यत्न.... .... ६०
दिनमें सुलानेयोग्य मनुष्य .... ,,
भस्मकरोगका यत्न .... ,,
हरीतक्यादिचूर्ण.... .... ,,
अथाग्निमुखचूर्णम् .... ,,
जरणादिचूर्ण ६१
लौंग और हरडका क्वाथ .... ,,
संजीवनीगुटिका.... .... ,,
हिंग्वाष्टकचूर्णम् ६१
लोलिंबराजचूर्णम् ६२
लवणभास्करचूर्णम् .... ,,
गंधकादिवटी .... ,,
अजीर्णादिरसः .... ,,
क्रव्यादिकल्पः ६३
समशर्करचूर्णम् ६३
ज्वालानलोरसः .... ,,
अग्निकुमारोरसः ६४
रामबाणोरसः .... ,,
अग्नितुंडावटी .... ,,
क्षुद्बोधको रसः ६५
अजीर्णकंटको रसः .... ,,
क्रव्यादरसः .... ,,
क्रव्यादरसः ६६
विडादिचूर्णम् .... ,,
गंधकवटी .... ,,
हरीतकीरसायन .... ,,
अर्कादितैल .... ,,
क्षुधासागरवटी ६७
अजीर्णमें प्यास-उकलाहट-पेटमें दर्द और पेटभारी होतो उसका यत्न .... ,,
विषूचिकामें अंजन .... ,,
चुक्रादितैल .... ,,
असाध्यअजीर्णरोगीके लक्षण ६८
अमृतहरीतकी .... ,,
लवंगादिगुटका .... ,,
हुताशनो रस ६९
जीर्णाहारके लक्षण .... ,,

कृमि.

अन्नमंड .... ,,
खुरासानी अजमायनका प्रयोग ,,
मुस्तादिकल्क ७०
रसेन्द्रलेप.... .... ,,
उदरकृमिनाशकवटी .... ,,
सुगंधिधूप .... ,,

कृमिमुद्गररस ७०
तथा .... ,,

पांडु.

वासादि काथ ७१
निसोथत्रिफलाका योग.... .... ,,
लोहभस्म.... .... ,,
त्रिफलाआदि तीनयोग.... .... ,,
अंजन ७२
मंडूरवटक .... ,,
पांडुरोगमें पथ्य .... ,,
नवायसचूर्ण .... ,,

रक्तपित्त.

रक्तपित्तका स्तंभन ७३
ह्रीवेरादि काथ .... ,,
धान्यादिहिम .... ,,
मृद्वीकादिचूर्ण .... ,,
रक्तपित्तमें नस्यप्रयोग ७४
मस्तकलेप .... ,,
खंडकूष्मांडावलेह .... ,,
दूसरा प्रकार ७५
एलादिगुटिका .... ,,
सहत और अडूसेका रसपान ७६

राजयक्ष्मा.

राजयक्ष्मारोगमें पंचकर्मका विधि-
निषेध .... ,,
सितोपलावलेह ७७
अमृतेश्वरो रसः .... ,,
राजमृगांको रसः .... ,,
कर्पूराद्यंचूर्णम् ७८
कुमुदेश्वरो रसः .... ,,
राजयक्ष्माके असाध्य लक्षण .... ,,

कास.

मरिचादिगुटका ७९
पिप्पल्यादिगुटिका .... ,,
कंटकारीस्वरस .... ,,
हरीतकीमोदक .... ,,
त्वगादि अवलेह .... ,,
शृंगवेरस्वरस .... ,,
कट्फलादिचूर्ण ८०
शृंग्यादिचूर्ण .... ,,
व्योषादिगुटिका .... ,,
लवंगादिचूर्ण ८१
हिंगुलादिवटी .... ,,
कासकेसरीरसः .... ,,
पारदादिचूर्ण .... ,,
कासकर्त्तरीरसः ८२
कफघ्नीवटी .... ,,
सोमनाथीताम्र .... ,,
कासरोगमें पथ्य.... .... ८३

हिक्का.

हिक्काका प्राणरोकनाआदिप्रतीकार ,,
नस्यत्रय .... ,,
धूमपान .... ,,
त्र्यूषणादिअवलेह ८४
हरेण्वादिकाथ .... ,,
चंद्रसूरजलपान .... ,,

श्वास.

स्वेदनशोधन और शमनकी आज्ञा ,,
घोडाचोलीरसः ८५
कृष्णादिचूर्ण ८६
शृंग्यादिचूर्ण .... ,,
सूर्यावर्त्तरसः .... ,,

श्वासकुठारोरसः ८६
अमृतार्णवोरसः ८७

स्वरभेद.

स्वरभेदकी यथादोषचिकित्सा.... ,,
ब्राह्मीआदियोग .... ,,
त्रिफलादियोगः ८८
उच्चभाषणजनितस्वरभेदपर दुग्ध और घृतपान .... ,,
चव्यादिचूर्ण .... ,,
गोरखवटी .... ,,

अरुचि.

अरुचिनाशकपांचयोग .... ,,
विडादिचूर्णका योग ८९
दाडिमाद्यंचूर्णम् .... ,,
लवणार्द्रकभक्षण .... ,,
शृंगवेररससेवन .... ,,
अम्लीकापान .... ,,
लवंगादिचूर्ण ९०

छर्दि.

छर्दिरोगका साधारण यत्न .... ,,
वातकीवमनका यत्न ९१
पित्तकी वमनका यत्न .... ,,
तथा .... ,,
तथा .... ,,
तथा .... ,,
त्रिदोषजन्यछर्दिका यत्न .... ,,
एलादिचूर्ण .... ,,
दूसरा यत्न ९२
छर्द्यतिसारका यत्न .... ,,
उपायांतर .... ,,
छर्दिके असाध्य लक्षण .... ,,

पिपासा.

प्यासका साधारण यत्न.... .... ९३
वात और पित्तकी तृषाका यत्न.... ,,
तृषामें सहतमिलेजलके कुल्ले और चांदीकी गोली मुखमें धारण .... ,,
खर्जूरादि गुटिका .... ,,
असाध्यतृषाके लक्षण .... ,,

मूर्छा.

मूर्छाका साधारण यत्न.... .... ९४
स्त्रीके दूधकी नाश .... ,,
सहतत्रिफला और गुडआर्द्रकका दिन रात्रीमें साधन .... ,,
भ्रमका यत्न .... ,,
तथा .... ,,

मदात्यय.

खर्जूरादिमंथ ९५
मद्यविकारका यत्न .... ,,
पना .... ,,
मद्यकी मादकताका यत्न .... ,,
असाध्य लक्षण .... ,,
कोदों और धतूरेके मदका यत्न ९६
सुपारीके मदका यत्न.... .... ,,
जायफलके मदका यत्न.... .... ,,
मदात्ययरोगोंका विशेष यत्न .... ,,

दाह.

दाहरोगका सामान्य यत्न .... ,,
रसादिगुटी ९७
महाचंद्रकलारसः .... ,,

उन्माद.

वातादिउन्मादोंका यत्न ९८

जलअग्निआदिसे उन्मादरोगीका रक्षण .... ,,
ब्राह्मीआदि स्वरसका पान .... ,,
ब्राह्मीचूर्ण .... ,,
नाश .... ,,
उन्मादगजकेसरीरस .... ,,
उन्मादरोगीको शिक्षा ९९

अपस्मार.

मृगीरोगका नाशक तीन योग .... ,,
अन्यउपाय .... ,,
कूष्मांडघृत .... ,,
मृगीरोगको टोटका .... ,,
तथा १००
पारदभस्मयोग .... ,,

वातव्याधि.

मस्तकपीडाका यत्न .... ,,
जंभाईका यत्न .... ,,
तथा .... ,,
तथा १०१
मुख खुला रहजावे वा बंद होजाय-उसका यत्न .... ,,
धनुस्तंभवातका यत्न .... ,,
रसोनगुटिका .... ,,
जिह्वास्तंभका यत्न .... ,,
कल्याणकावलेह .... ,,
वरतिक्तोक्तपर्पट १०२
जिह्वास्तंभका यत्न .... ,,
मुखवातका यत्न .... ,,
अर्दितवातका यत्न १०३
तथा .... ,,
मन्यास्तंभका यत्न .... ,,
बहुशोषका यत्न १०३
पक्षाघातका यत्न .... ,,
अपबाहुकका यत्न १०४
ऊर्ध्वताका यत्न .... ,,
पेटके फूलनेका यत्न .... ,,
बृहत्रास्नादि काथ .... ,,
नाराचरस १०५
सुंठीका अवलेह १०६
उबटना .... ,,
विजयभैरववर्त्तीतैल १०७
बृहद्विजयावटी .... ,,
अष्ठीला और त्रिकशूलका यत्न.... १०८
त्रयोदशांगगुग्गुलू .... ,,
वारंवारमूत्र होनेका यत्न १०९
तथा .... ,,
मूत्रनिग्रहका यत्न .... ,,
गृध्रसीका यत्न ११०
तथा .... ,,
पथ्यादिगुग्गुलू .... ,,
पाददाहका यत्न १११
तथा .... ,,
हाथपैरके दाहका यत्न.... .... ,,
दंडापतानकवातव्याधिका यत्न ,,
योगराजगूगल ११२
रसोनाष्टक ११३
वातारिरसः ११४
समीरपन्नगरसः .... ,,
समीरगजकेसरीरसः .... ,,

उरुस्तंभः

उरुस्तंभका सामान्य यत्न ११५
तथा .... ,,

तथा ११५
तथा .... ,,

आमवात.

आमवातका सामान्ययत्न ११६
रास्नादि क्काथ .... ,,
तथा .... ,,
अजमोदादि मोदक .... ,,
सौभाग्य शुंठी ११७
रसोन पिंड .... ,,
व्याधिशार्दूलो गुग्गुलू ११८
आमवातारि रस ११९
मेथीपाक.... .... ,,
आमवातमें पथ्य १२०

वातरक्त.

वातरक्तका सामान्य यत्न .... ,,
लघुमंजिष्ठादि क्काथ १२१
गुडूच्यादि क्काथ.... .... ,,
कैशोरगुग्गुलू .... ,,
अमृतभल्लातकावलेह १२२
लेप १२३
सारिवादि तैल १२४
चतुरंगुलादि क्काथ .... ,,
असाध्य लक्षण .... ,,

शूल.

शूलके सामान्य यत्न .... ,,
वातशूलका यत्न.... .... ,,
सौवर्चलादि गुटिका १२५
पंचसमं चूर्णम् .... ,,
सेक करना .... ,,
क्काथ .... ,,
तथा .... ,,
शूलनाशनचूर्ण १२५
भास्वद्वटी .... ,,
शूलनाशनचूर्ण १२६
चित्रकादिवटी .... ,,
शूलनाशिनीवटी.... .... १२७
कुबेराख्यवटक .... ,,
त्रिदोषशूलहरावलेह .... ,,
शूलदावानल रस १२८
वटी .... ,,
शंखद्राव .... ,,
तथा १२९
शूलगजकेसरी रसः .... ,,
अजाजी चूर्ण १३०
गंधकरसायन .... ,,
गुडाद्य मंडूर .... ,,
तारामंडूरोगुडः १३१
शूलगजकेसरीगुटिका .... ,,
करंजादि चूर्ण .... ,,
शूलरोगमें पथ्य .... ,,

उदावर्त्त

उदावर्त्तमें सामान्य यत्न.... .... १३२
त्रिवृतादि गुटिका.... .... ,,
नाराचरस .... ,,
तथा .... ,,
वचाद्य चूर्ण १३३
मैनफलादिवर्त्ती .... ,,

गुल्म.

गुल्मरोगका सामान्य यत्न .... ,,
स्वर्जिकादि गुटिका .... ,,
क्षाराष्टक .... ,,
वज्रक्षार १३४

अन्ययत्न १३४
शुक्तिका चूर्ण .... ,,
चिकित्सान्तर १३५
पथ्यापथ्य .... ,,
लहसनका औटाया दूध .... ,,
एरंडादि क्वाथ .... ,,
कांकायनगुटिका.... ... . ,,
उपायांतर १३६
विद्याधरो रसः .... ,,
गुल्मकुठारो रसः १३७
गुल्मरोगके असाध्य लक्षण .... ,,

प्लीह.

क्षारपान तथा पीपरदूधका पान .... ,,
सैंधवादिजलपान १३८
अन्य उपाय .... ,,
हिंग्वादि चूर्ण .... ,,
पिप्पलीसेवन .... ,,
शंखचूर्णपान .... ,,
शरफोकेका कल्क .... ,,
आम्ररससेवन .... ,,
शालमली पुष्पसेवन .... ,,
यवान्यादि चूर्ण १३९

यकृत्

साधारण यत्न .... ,,
जवाखारआदिका साधन .... ,,

हृद्रोग.

ककुभछालका सेवन .... ,,
हृदयकी कृमिरोगकी चिकित्सा १४०
हृद्रोगका उपायांतर .... ,,
तथा .... ,,
तथा .... ,,
हरिणशृंगका पुटपाक १४०
तथा .... ,,
तथा .... ,,
दाखहरडका योग .... ,,
हिंग्वादि चूर्ण १४१
हृदयरोगमें पथ्यापथ्य .... ,,

मूत्रकृच्छ्र.

त्रिकंटकादि क्वाथ .... ,,
अमृतादि क्वाथ .... ,,
तृणपंचक १४२
कूष्मांडरसपान .... ,,
एलादि .... ,,
लोहभस्मसेवन .... ,,
जवाखार और मिश्रीका सेवन .... ,,
गोक्षुरादि गुग्गुलु .... ,,
गुडजीरा १४३
जवाखार और तक्रपान .... ,,
लघुलोकेश्वरो रसः .... ,,
निंबू और गोवरकारसपान.... .... १४४
पथ्यापथ्य .... ,,

मूत्राघात.

सामान्य उपचार .... ,,
नलकादि क्वाथ .... ,,
अन्य यत्न .... ,,
तथा १४५
तथा .... ,,
तथा .... ,,
तथा .... ,,

अश्मरी.

अश्मरीको दारुणत्व कथन .... ,,
वरुण क्वाथ १४६

शुंठ्यादि क्वाथ १४६
एलादि क्वाथ .... ,,
अन्य यत्न .... ,,
तथा .... ,,
तथा .... ,,
पथ्यापथ्य १४७

प्रमेह

साधारण यत्न .... ,,
तथा .... ,,
चंद्रप्रभा वटी .... ,,
प्रमेहारि रस १४८
इन्दुवटी १४९
अन्ययत्न .... ,,
शितादि चूर्ण .... ,,
वंगेश्वर .... ,,
पूग (सुपारी) पाक .... ,,
गोखरूपाक १५०
पंचानन वटी १५१
त्याज्यरोगी .... ,,
प्रमेहकी पिटिकाओंका यत्न .... ,,

मेद.

सामान्य चिकित्सा १५२
अन्य उपाय .... ,,
देहदुर्गंधनाशक उपाय .... ,,
वडवानलो रसः .... ,,

कार्श्य.

रूक्षान्नादि सेवन १५३
स्वभावसे क्षीणरोगी त्याज्य .... ,,

उदर.

सामान्यउपचार .... ,,
गौका दूध वा ऊंटनीका दूध सेवन ,,
पुनर्नवादि क्वाथ १५३
अजमायनसुहागा सेवन १५४
थूहरके दूधकी भीगीपीपल .... ,,
नारायण चूर्ण .... ,,
सहस्र पुटी पीपल १५५
निकुंभादि चूर्ण .... ,,
उपायांतर .... ,,
तथा .... ,,
असाध्य उदररोगी .... ,,

श्वयथु (सूजन)

कतिपययोग १५६
तथा .... ,,
तथा .... ,,
तथा .... ,,
तथा १५७
तथा .... ,,
पुनर्नवादि चूर्णम् .... ,,
विभीतक लेप .... ,,
पुनर्नवादिचूर्णम् १५८
तथा उपाय .... ,,
पथ्यापथ्यम् .... ,,

अंडवृद्धि.

अंडवृद्धिमें पथ्य .... ,,
वातपित्तवृद्धिका यत्न .... ,,
लेप .... ,,
कफवृद्धिनाशक रेचन .... ,,
उष्ण औषधोंका साधन १५९
रास्नादि क्वाथ .... ,,
अन्ययत्न .... ,,
वचादिलेप .... ,,
वृद्धबाधिका वटी .... ,,

हरीतक्यादि लेह १६०
यत्नांतर .... ,,
ब्रध्म (वद)का यत्न .... ,,
बिच्छूका तेल .... ,,
गिलहरीके मांससे स्वेदन .... ,,
उपायांतर .... ,,
पथ्यापथ्य १६१

गंडमाला.

सर्षपादि लेप .... ,,
दूसरा लेप .... ,,
गलगंडका यत्न .... ,,
तथा .... ,,
तथा १६२
तथा क्काथ .... ,,
नस्य और लेप .... ,,
तथा .... ,,
तथा .... ,,
गंधकाद्यं चूर्ण १६३
पिप्पल्यादि नस्य .... ,,
अन्य यत्नांतर .... ,,
तथा .... ,,
तथा .... ,,

श्लीपद.

साधारण यत्न १६४
सिद्धार्थादि लेप .... ,,
वत्तूरादि लेप .... ,,
यत्नांतर .... ,,
तथा .... ,,
वर्द्धमानपीपलवाधतूरेके बीजसेवन १६५
सांठआदिका चूर्ण .... ,,

विद्रधि.

सामान्य उपचार १६५
कच्ची और पैत्तिकविद्रधिका यत्न ,,
रक्तागंतुनिमित्तकविद्रधिका यत्न १६६
तथा .... ,,
अंतरविद्रधिका यत्न .... ,,
तथा .... ,,

व्रणशोथ.

व्रणकी सप्तविध चिकित्सा १६७
वातशोथका यत्न .... ,,
पित्तशोथका यत्न .... ,,
कफशोथ और आगंतुशोथका यत्न ,,
कफशोथका दूसरा यत्न .... ,,
लेप करनेके नियम .... ,,
तथा १६८
व्रणके पीडनादि कर्म .... ,,
उपनाहन कर्म .... ,,
रक्तमोक्षण .... ,,
जलौका आदिलगानेयोग्य व्रण ,,
आम और विदग्धव्रणमें कर्म .... ,,
पाचनद्रव्य १६९
भेदन (चीरादेना) .... ,,
बालवृद्धोंके भेदनद्रव्यका लेप .... ,,
भेदनद्रव्य .... ,,
पीडन .... ,,
पीडनद्रव्य .... ,,
व्रणको शुद्धकर्त्ता क्काथ १७०
शोधनद्रव्य .... ,,
शोधन और रोपण .... ,,
रालादिमलहर (मल्हम) १७१
अवधूलन और लेप .... ,,

धूप १७१
लेप .... ,,
तथा अवधूलन १७२
तथा चूर्णलेप .... ,,
मस्तकी और सुहागेका .... ,,
अवधूलन.... .... ,,
तथा मल्हम .... ,,
तथा .... ,,
विडंगादि गुग्गुलु १७३
अमृतादि गुग्गुलु .... ,,
जात्यादि घृतम् .... ,,
व्रणकी कृमीपर लेप १७४
व्रणमें भोजन .... ,,
व्रणमें त्याज्यपदार्थ .... ,,
व्रणमें परिश्रम आदिकरनेके दोष ,,

सद्योव्रण

आगंतुकव्रणका यत्न १७५
सद्योव्रणशोधनादि .... ,,
घृष्टविदलितादि .... ,,
तलवारआदिघावका यत्न .... ,,
सद्योव्रणका दूसरा यत्न.... .... १७६
आमाशयस्थ और पक्काशयस्थ रुधिरका यत्न .... ,,
कोष्ठमें स्थितरुधिरका स्राव .... ,,
भोजन .... ,,
शस्त्रक्षतका अन्यउपाय १७७

अग्निदग्ध

प्लुष्टदुर्दग्धादिकोंकी चिकित्सा ,,
सिक्थादि घृत .... ,,
तैलदग्धका यत्न १७८
अग्निदग्धका यत्न .... ,,
तथा १७८
व्रणग्रंथिका लक्षण .... ,,

भग्न

सामान्य उपचार .... ,,
शिथिल और दृढबंधके दोष १७९
भग्नमें सेचनलेपनादि कर्म .... ,,
लाक्षादि चूर्ण .... ,,
तथा .... ,,
अस्थिभग्न और संधिभग्नका यत्न ,,
तथा .... ,,
भग्नरोगको पथ्य १८०
भग्नरोगमें अपथ्य .... ,,
साध्यअसाध्य भग्न .... ,,
नाडीव्रण (नासूरका) यत्न .... ,,
तथा .... ,,
तथावत्ती .... ,,
तथा १८१
सप्तांगोगुग्गुलु .... ,,

भगंदर:

भगंदरकी पिडकानुका यत्न .... ,,
लेप .... ,,
पैत्तिक भगंदर लेप १८२
नाडीव्रण.... .... ,,
दुष्टभगंदरोंका यत्न .... ,,
तथा .... ,,
नवकार्षिको गुग्गुलु १८३
शंबूक मांसभक्षण .... ,,
रूपराजरस .... ,,
भगंदरमें पथ्य .... ,,

उपदंश.

साधारण यत्न १८४
लेप .... ,,
तथा .... ,,
तथा .... ,,
पटोलादि क्काथ १८५
पारदाद्यंघृतम् .... ,,

शूकदोष.

शूकदोषकी चिकित्सा .... ,,

कुष्ठ

सामान्य यत्न .... ,,
लेप १८६
उद्वर्तन .... ,,
एकविंशतिको गुग्गुलु .... ,,
हरिद्राखंड .... ,,
पंचनिंबचूर्णम् १८७
लघुमंजिष्ठादि १८८
हरितालमारण .... ,,
पारदादि लेप १८९
द्वितीयतालकेश्वरोरसः .... ,,
लघुमरिचादि तैलम् १९०
चित्रकुष्ठपर लेप.... .... १९१
तीसरा तालकेश्वर रस.... .... ,,
अवशिष्टकुष्ठोंकी चिकित्सा १९२
सिध्मकुष्ठोपर लेप .... ,,
तथा .... ,,
दाद और खुजलीका यत्न .... ,,
चर्मदलका यत्न.... .... ,,
तथा १९३
तथा दाद और खजुलीका यत्न ,,
दादका यत्न .... ,,
दाद-चकत्ता और विभूतका यत्न १९३
तथा .... ,,
श्वेतकुष्ठको लेप .... ,,
भभूतपर लेप .... ,,
विपादिकापर लेप १९४
गंधकचूर्णसेवन .... ,,
तथा लेप.... .... ,,
चर्मदल और वातरक्तका यत्न ,,
खुजलीका यत्न.... .... १९५
तथा .... ,,
चित्र और पुंडरीक कुष्ठका यत्न ,,
तथा .... ,,
तथा .... ,,
पथ्यम् .... ,,

शीतपित्त.

सामान्य यत्न १९६
तथा .... ,,
उदर्दका यत्न .... ,,
उदर्द और कोढका यत्न .... ,,
तथा उद्वर्त्तन .... ,,
क्काथ .... ,,
अन्य यत्न १९७
शीतपित्तका यत्न .... ,,
उदर्दका यत्न .... ,,
आर्द्रक खंड .... ,,

अम्लपित्त.

सामान्य यत्न और पथ्य १९८
अन्य यत्न १९९
रक्तमोक्षण .... ,,
भूनिंबादि क्काथ .... ,,
गोली .... ,,

अविपत्तिकरचूर्ण १९९
नारिकेरखंड २००
अन्य उपाय २०१
तथा .... ,,

विसर्प.

साधारण यत्न .... ,,
तथा .... ,,
अग्निविसर्पका यत्न .... ,,
ग्रंथिविसर्पका यत्न २०२
कर्दम विसर्पका यत्न .... ,,
यत्नांतर .... ,,

स्नायुक.

स्नायुककी चिकित्सा .... ,,
तथा .... ,,
शोथकर्त्ता स्नायुकका यत्न २०३
तथा .... ,,
तथा .... ,,
तथा .... ,,
लेप .... ,,
मंत्र .... ,,
लेप .... ,,

विस्फाटक.

सामान्य यत्न २०४
दशांगलेप .... ,,
कालविस्फोटकका यत्न .... ,,

फिरंग.

साधारण यत्न.... .... ,,
उपदंशके घावपर लेप २०५
तथा .... ,,
मल्हम .... ,,
सिंदूरादिलेप .... ,,
धूम्रपान २०६
धूम्रपान दोषका यत्न .... ,,
फिरंगवातकेशरीरसः .... ,,
संप्रसारिणी गुटका २०७
सौभांजनादि क्वाथ .... ,,
वटी .... ,,
तथा २०८
रसकर्पूरसेवन .... ,,
पारदोत्पन्नमुखपाक चिकित्सा .... ,,
फिरंगरोगके उपद्रव २०९

मसूरिका.

मसूरिकाकी कृमियोंका यत्न.... ,,
कफकोपमें यत्न .... ,,
खदिरादि क्वाथ.... .... ,,
निंबादि क्वाथ २१०
चंदनादि कल्क .... ,,
पाक और स्रावका यत्न .... ,,

क्षुद्ररोग.

इरिवेल्लिकाका यत्न २११
पनसिका फुंसीका यत्न.... .... ,,
मुहांसोंका यत्न .... ,,
व्यंग-नील-तिल आदिका यत्न.... ,,
मुखकृष्णताका .... ,,
चिप्प-कुनखका यत्न २१२
अंडकोशकी खुजलीका यत्न .... ,,
कांछकायत्न .... ,,
तथा .... ,,
विसर्प और सूकरदंष्ट्रका यत्न .... ,,
अलसका यत्न २१३
बिवांयी खारुएका यत्न.... .... ,,
पैरके फटनेका यत्न .... ,,

कद्र—चर्मकील लहसन मस्से
और तिलका औषध २१३
दरदादि मल्हम २१४
खुजलीका यत्न .... ,,

शिरोरोग.

मस्तकरोगका सामान्य यत्न .... ,,
तथा .... ,,
तथा २१५
नस्य .... ,,
कुष्ठादि लेप .... ,,
देवदार्वादि लेप .... ,,
नस्य .... ,,
षड्बिंदुघृतम् .... ,,
षड्बिंदुतैलम् २१६
शिरोबस्ती .... ,,
तथा .... ,,
सूर्यावर्त्तका यत्न २१७
कुंकुमयोग .... ,,
आधासीका यत्न .... ,,
अनंत वातका यत्न २१८
केशवर्द्धनका उपाय .... ,,
तथा .... ,,
तथा .... ,,
इंद्रलुप्तका यत्न .... ,,
खालित्यका यत्न .... ,,
अरुंषिकाका यत्न २१९
तथा .... ,,
तथा .... ,,
इन्द्रलुप्तका यत्न.... .... ,,
रोम (बाल उगानेका) यत्न.... ,,
तथा २२०
बालोंका कल्प २२०
तथा दूसरा कल्प .... ,,
तथा तीसरा कल्प २२१
जूँआ आदि दूर करना.... .... ,,
शिरशूल आदि मस्तक पीडाका यत्न २२२
मस्तकपीडाको नस्य .... ,,
त्रिफलादि काढा .... ,,
तथा .... ,,

नेत्ररोग.

सामान्य यत्न २२२
नेत्ररोगके पाककी अवधी और क्रि-
याका काल .... ,,
ऋतुपरत्वअंजनकाकाल.... .... २२३
अंजनके नियम और आश्चोतन–
क्रिया .... ,,
आश्चोतनकी मात्रा .... ,,
आश्चोतनके गुण .... ,,
नेत्ररोगमें उपनाहन कर्म २२४
सेक .... ,,
वासादि काढा .... ,,
अन्य औषध .... ,,
शुक्रका यत्न २२५
नेत्रकी पिलाईका यत्न .... ,,
त्रिफलाप्रयोग .... ,,
चंद्रोदयावर्त्ती .... ,,
अन्य यत्न .... ,,
नेत्रके कमलवायुका यत्न २२६
गुटिकांजन .... ,,
नक्तांधकेतुवर्त्ती .... ,,
नागार्जुनी शलाका .... ,,
त्रिफलादि घृत .... ,,

त्रैफल घृत २२७
तथा .... ,,
नेत्ररोगमें विहित शाक .... ,,
नेत्रनष्टकारक वस्तु .... ,,
नेत्ररोगमें पथ्य २२८
मनाशिलादि अंजन .... ,,
लेप २२९
आश्चोतन .... ,,
कौसुमिकावर्ती .... ,,
त्रिफलाक्कायसें नेत्रधावन .... ,,
पित्ताभिस्यंदका यत्न .... ,,
नेत्रकेस्राव सूजन और ललोहीका–
यत्न २३०
नयनामृतांजन .... ,,
तथा अन्य उपाय .... ,,
विभीतकादि क्काथ .... ,,
नारायणांजन .... ,,
नयनामृत वटी २३१
हरिद्रादि वटी .... ,,
अंजन .... ,,
गैरिकादि अंजन २३२
बबूलादि क्काथ .... ,,
वासादि क्काथ .... ,,

कर्णरोग

सामान्य औषधि.... .... २३३
अन्य औषधि .... ,,
तथा .... ,,
कर्णशूलकी औषधि .... ,,
कर्णनादका यत्न.... .... ,,
बधिरका यत्न .... ,,
पूतिकर्णका यत्न.... .... २३४
बधिरताका दूसरा यत्न .... ,,
नागरादि तैल .... ,,
अर्कादि तैल .... ,,
कर्णनाडीका यत्न .... ,,
कर्णव्रणका यत्न २३५
कर्णनाडीका दूसरा यत्न.... .... ,,
स्वर्जिकाद्यंतैलम् .... ,,
सूर्यभक्तातैलम् .... ,,
थूहरका स्वरस .... ,,
पूयस्रावका यत्न.... .... २३६
कृमिकर्णका यत्न .... ,,
तथा .... ,,
शतावर्यादि तैलम् .... ,,

नासारोग

पीनसका यत्न २३७
त्र्युषणादि गुटी .... ,,
व्याघ्रीतैलम् .... ,,
हिंग्वादि तैल २३८
कटूफलादि चूर्ण .... ,,
पीनसरोगमें जलपान .... ,,
तथा .... ,,
नस्य .... ,,

मुखरोग

दांत हलनेका यत्न २३९
दांतोंमें दर्द होता हो उसका यत्न ,,
होठोंका यत्न .... ,,
होठोंके फटनेका यत्न .... ,,
तथा २४०
होंठके फटनेका यत्न .... ,,
दांतोंसे रुधिर निकलनेका यत्न ,,
तथा .... ,,
कणाद्यं चूर्णम् .... ,,
मसूढोंका यत्न .... ,,
भद्रमुस्तादिगुटी.... .... २४१
दांतोंका मंजन .... ,,
जीभफटनेका यत्न .... ,,
गलेके रोगोंका यत्न .... ,,
मुखपाक (छालेत्) का यत्न २४२

खदिरादिवटी २४२
तथा .... ,,
दंतनाडीका यत्न .... ,,
जीभके रोगोंका यत्न .... ,,
गलशुंडीका यत्न २४३
कालक चूर्णम् .... ,,
अन्य यत्न .... ,,
दांतोंका यत्न .... ,,
मुखपाकका यत्न .... ,,
तथा .... ,,

विषरोग

सामान्य यत्न २४४
तथा .... ,,
सर्प और विच्छूके विषका यत्न .... ,,
तथा विच्छूके विषका यत्न .... ,,
तथा .... ,,
तथा २४५
तथा विच्छूके विष दूर करनेका मंत्र .... ,,
बावरे कुत्तेके विषका यत्न .... ,,
मक्खीके विषका यत्न २४६
भौंराके विषका यत्न .... ,,
विषेलमूसेके विषका यत्न २४७
विषेलमेडकके विषका यत्न .... ,,
खानखजूरेके विषका यत्न .... ,,
स्थावरविषका यत्न .... ,,
जैपालांजन .... ,,
बावलेकुत्तेके विषका उपचार .... ,,

स्त्रीरोग.

प्रदरका यत्न २४८
तथा .... ,,
तथा .... ,,
तथा २४९
जीरकावलेह .... ,,
रक्तप्रदरका यत्न .... ,,
तथा २४९
तथा २५०
तथा .... ,,
प्रदरारि रस .... ,,
प्रदर और सोमरोगका यत्न .... ,,
असगंध पाक .... ,,
योनिसे जलस्राव होनेका यत्न.... २५१
योनिपीडाका यत्न .... ,,
जंवादि तैल .... ,,
कासीसादि चूर्ण.... .... २५२
योनिकी दुर्गंध और पिच्छलता हरण .... ,,
योनिकंदका यत्न .... ,,
सोमरोगका यत्न .... ,,
गर्भधारणकी विधि .... ,,
तथा २५३

गर्भवती.

ह्रीबेरादि क्काथ .... ,,
गर्भस्रावका यत्न.... .... ,,
गर्भवतीके ज्वरका यत्न.... .... ,,
गर्भिणीके शूलका यत्न.... .... ,,
सद्यःप्रसूतहोनेका यत्न.... .... २५४
प्रसवविलंबमें यत्न .... ,,
अपरापातनका यत्न .... ,,
मकल्लरोगका यत्न .... ,,
वलकांजिकम् .... ,,
सूतिका रोगोपक्रम २५५
देवदार्वादि क्काथ.... .... ,,
सौभाग्य शुंठ्यवलेह .... ,,
प्रतापलंकेश्वर रस २५६
स्तनमें दूध बढानेका यत्न .... ,,
स्तनकठोर करनेकी विधि २५७
बाल दूर करनेकी विधि .... ,,
तथा .... ,,
वंध्याकरण .... ,,

गर्भपातनकी विधि २५७
भगसंकोचन २५८
तथा .... ,,
तथा .... ,,
मुखसुगंधित करण .... ,,
केशबढानेकी विधि २५९
तथा .... ,,

बालरोग.

सामान्य यत्न और बालककी मात्राका प्रमाण .... ,,
बालककी लंघनका निषेध २६०
बालक दूध न पीवे तिसका यत्न ,,
बालकके ज्वरका यत्न .... ,,
बालकके अतिसार आम और प्रवाहिकाका यत्न .... ,,
मृत्पिंडस्वेदन .... ,,
नाभिपाकका यत्न २६१
बालकके बलबुद्धि बढानेका प्रयोग ,,
नत्ररोगका यत्न .... ,,
कुकूणकरोगका यत्न .... ,,
तथा .... ,,
तथा नेत्ररोगोंका यत्न .... ,,
चतुर्भद्रिका २६२
ज्वर और अतिसारका यत्न .... ,,
सौहदी .... ,,
बालकके निनावेरोगका यत्न .... ,,
तथा .... ,,
बालकी छर्दिका यत्न २६३
बालकके अतिसारका यत्न .... ,,
बालकके मूतरुकनेमें इलाज .... ,,
ज्वरका यत्न .... ,,
हिचकीका और दाहविस्फोटका यत्न .... ,,
पर्पटी २६४
बालकके दूधगेरनेका यत्न .... ,,
बालककी सूजनका यत्न २६४
बालककी मभूत-खुजली और विचर्चिकाका यत्न .... ,,
बालक बहुत रोवे उसका यत्न.... ,,
बालकके दांत ऊगनेके रोगका यत्न २६५
बालकके मुखपाकका यत्न .... ,,
बालग्रहको धूप .... ,,
तथा मुखपाकका दूसरा यत्न .... ,,

रसायन.

छ ऋतुमें हरड सेवन २६६
मंडूकपर्णी आदिके प्रयोग .... ,,
शंखपुष्पीक प्रयोग .... ,,
भांगरेका प्रयोग .... ,,
मूसलीका प्रयोग .... ,,
प्रातःकालमें जलपानके गुण २६७

वाजीकरण

अश्वगंधादि चूर्ण और अन्यप्रयोग ,,
कौंचकेबीजोंका प्रयोग .... ,,
कामदेव चूर्ण २६८
नारिकेर खंड .... ,,
मदनमंजरी २६९
मदनवर्द्धनो मोदक .... ,,
सुपारीपाक २७०
महाकामेश्वरः २७१
कामेश्वरो रसः .... ,,
शृंगाराभ्रकम् २७२
चंद्रोदयो रसः .... ,,
द्राक्षासव २७३
अथस्तंभन .... ,,
बलपुष्टिकर्त्ता प्रयोग २७४
धातुवर्द्धन प्रयोग .... ,,
पारामारण .... ,,
रेतस्तंभक पारद .... ,,

गंधकरसायन	.... २७५	आम्रपाक	.... २७९
स्तंभन	.... ,,	आकरभादि चूर्ण	....२८०
तथा	.... २७६	लक्ष्मीविलासावलेह	.... ,,
तथा	.... ,,	कौंचपाक	.... २८१
मानसोल्लासक चूर्ण	.... ,,	स्तंभनगुटी	.... ,,
कामसुंदर पाक	.... २७७	तथा	.... २८२
नपुंसकका यत्न	.... २७८	कामिनीमदाविधूननो रसः	.... ,,
विजयाशुद्धि	.... ,,	अथ कतिचित्योगाः	.... ,,
तथास्तंभन	.... ,,	ग्रंथ समाप्ति	.... २८४
रसायनाभ्र	.... २७९		

प्रथमावृत्तिकी समालोचना

सर्व वैद्यविद्यानुरागियोंको विदित होकि आजकल वैद्यक विद्याका प्रचार सर्वत्र बहुत फैला हुआहै और दिनपरदिन अधिक होता जाताहै इससे हमकोभी उत्साह हुआ तो हमनेभी बहुतसे ग्रंथोंका भाषानुवाद करके छापना प्रारंभ करा,परंतु चिकित्साका ग्रंथ अभी कोइ नही छापा अत एव यह वैद्यरहस्य ग्रंथ हमारे मित्रवर पंडित रामकुमारजीने छापनेको दीना और कहा कि इस ग्रंथको छापो तो इससे अनेक मनुष्योंका कल्याण होयगा और तुमकोभी फायदा होगा उनके वचनको स्वीकारकर हमने इसग्रंथको देखा तो वास्तवसे यह ग्रंथ यथातथा गुणोंसे भूषित है इसमें बहुतसें प्रयोग रहस्य (गुप्तरखनेयोग्य) हैं और ग्रंथकार यहभी लिखता है यह अमुक पुरुषका परिचित प्रयोग है यह हमारा अनुभव करा प्रयोग है और इसके बहुतसे प्रयोग श्री सवाई जयपुराधीश प्रतापसिंहजी महाराजनें अपने बनाएहुए ग्रंथ अमृतसागरमें धरेहैं और बहुतसे प्रतिष्ठित वैद्योंके मुखसे सुननेमें आयाहै कि वैद्यरहस्य ग्रंथके सर्वप्रयोग अनुभव करेहुए हैं इन सब कारणोंसे हम इस ग्रंथके छापनेको उद्यत हुए तो यह ग्रंथ बहुतही अशुद्ध था इस कारण हमने अन्यप्रति तलास करी तो कहीं नहीं मिली आखिरको इसी एक प्रतिको ग्रंथान्तरोंसे हमने शुद्ध करा और सर्वसाधारण वैद्योंकोभी उपयोगी होय इस कारण इसकी हिन्दी भाषाटीका करी और मुंबईके दिव्य टाइपमें छापकर प्रकाशित करी. अब सर्व विद्वान् वैद्योंसे यह प्रार्थना है कि जहां कहीं इसमें अशुद्धता देखें तो उसको कृपादृष्टिद्वारा शोधन करके हमको सूचना करदेवे तो दूसरीवार छपनेमें शुद्ध करदिया जायगा और आप लोगोंका परम उपकार मानैंगे शुभम्.

आपका प्रियमित्र.

आयुर्वेदोद्धारसंपादक
दत्तराम चौबे
मानिकचौक मथुरा.

ॐ

श्रीशं वन्दे

श्रीनिकुञ्जविहारिणे नमः ।

ARYA BHASKA PUSTAKALAYA BENARES CITY

अथ वैद्यरहस्यप्रारम्भः ।

मङ्गलाचरणम् ॥

यन्नामस्मरणं समस्तदुरितध्वंसावहं पुण्यदं
भक्तानामभयंकरं सुखकरं सर्वार्थसिद्धिप्रदम् ॥
तं नत्वार्जुनमीश्वरं गुरुकृपावाप्त्यै सुसिद्धैर्वरै-
र्योगैर्वैद्यरहस्यमद्य तनुते विद्यापतिः कौतुकात् ॥ १ ॥

श्रीकृष्णलालं पितरं रमामम्बां प्रणम्य च ।
भाषाटीकां दत्तरामः कुर्वे वैद्यरहस्यके ॥ १ ॥

अर्थ–जिसका नामस्मरण सर्वपापपुंजोंका नाशक, पुण्यदायक, भक्तोंको अभयकारी, सुखकारी, सर्वार्थसिद्धिदायक, ऐसे श्रीअर्जुनईश्वर (सहस्रबाहु)को नमस्कारकर, गुरुकी कृपाकरके प्राप्त ऐसे सुसिद्धप्रयोगोंकरके विद्यापति नामक ग्रंथकार सर्ववैद्योंको कौतुकरूप इस वैद्यरहस्य ग्रन्थको रचते हैं ।

अस्मद्ग्रन्थादाहृतान् सिद्धयोगानन्यग्रन्थे स्थापयिष्यन्ति केचित् ॥ नास्मात्स्थानाद्ये वदिष्यन्ति तेषां नाशं कुर्यादीश्वरोऽभीष्टसिद्धेः ॥ २ ॥

अर्थ–जो इसग्रंथसे सिद्धयोगोंको लेकर दूसरे ग्रंथमें धरेंगे और इस वैद्यरहस्यमेंसे नहीं लिया ऐसा कहेंगे उनकी अभीष्टसिद्धीका परमात्मा नाश करेगा ।

ज्वरचिकित्सा

यतः समस्तरोगाणां ज्वरो राजेति विश्रुतः ।
अतो ज्वराधिकारोऽत्र प्रथमं लिख्यते मया ॥ ३ ॥

अर्थ–समस्त रोगोंमें ज्वर राजाहै अतएव प्रथम हम ज्वराधिकार लिखते हैं ।

अंशांशं यत्र दोषाणां विवेक्तुं नैव शक्नुयात् ।
साधारणीं क्रियां तत्र विदधीत चिकित्सकः ॥ ४ ॥

अर्थ– जहां दोषोंके अंशांश निश्चय न होवे अर्थात् कौनसे दोषके कितने अंश इसरोगमें है उस जगे वैद्यको उचितहैकि साधारण क्रिया (जिस्सै कोई दोष न बढे ऐसीचिकित्सा) करे ।

ज्वरमें सामान्यचिकित्सा

सामान्यतो ज्वरी पूर्वं निर्वातनिलये वसेत् ।
निर्वातमायुषो वृद्धिमारोग्यं कुरुते यतः ॥ ५ ॥

अर्थ–ज्वरवालेका सामान्य यत्न यहहै कि ज्वरआतेही निर्वात स्थानमें रहना चाहिये, क्योंकि निर्वातस्थानमें रहनेसैं आयुकी वृद्धि और आरोग्यता होतीहै परंतु निर्वात कहनेसैं यहां दुष्ट और अत्यंत पवनका निषेधहै ।

पंखाकी पवनके गुण ।

व्यजनस्यानिलस्तृष्णास्वेदमूर्च्छाश्रमापहः । तालवृन्तोद्भवो वातस्त्रिदोषशमनो मतः ॥ ६ ॥ वंशव्यजनजः सोष्णो रक्तपित्तप्रकोपनः । चामरो वस्त्रसंभूतो मायूरो वेत्रजस्तथा ॥ ७ ॥ एते दोषजितो वाताः स्निग्धा हृद्याः सुपूजिताः ।

अर्थ–पंखेका पवन प्यास, पसीने, मूर्च्छा, और श्रमको दूर करताहै ताडके पंखेका पवन त्रिदोषको शमन करताहै । बांसके पंखेका पवन ऊष्ण और रक्तपित्तको कुपित करताहै । चमरका पवन वस्त्र निर्मितपंखेका पवन, मोरपंखके पंखेका पवन, तथा वेतके पंखेका पवन, ये सब पवन त्रिदोषको जीतने वाले स्निग्ध और हृदयप्रिय तथा माननीयहैं ।

नवज्वरमें क्रिया ।

नवज्वरी भवेद्यत्नाद्गुरूष्णवसनावृतः ॥ ८ ॥
यथर्तुपक्वं पानीयं पिबेत्किञ्चिन्निवारयन् ।
व्यपयुक्तं सर्वजीवैः पीयते यदहर्निशम् ॥ ९ ॥

अर्थ–नवीनज्वरवाला रोगी यत्नपूर्वक भारी और उष्णवस्त्रोंसैं ढकाहुआ तथा ऋतुपक्वपानीको कुछदेर प्यासको रोककर पीवे इसका देना बंद न करे क्यों कि इसको सर्वजीव दिनरात्र पीते हैं. अत एव जलका देना उचितहीहै ।

पथ्यकी आवश्यकता ।

विनापि भेषजैर्व्याधिः पथ्यादेव निवर्त्तते ।
न तु पथ्यविहीनस्य भेषजानां शतैरपि ॥ १० ॥

अर्थ-विना औषधीकेभी व्याधि केवल पथ्यसेंही निवृत्त होजातीहै, परंतु पथ्यरहित रोगीकी व्याधि सैंकडो औषधोंसैंभी नही निवृत्त (नष्ट) होतीहै ।

तरुणज्वरमें पथ्य ।

परिषेकान्प्रदेहांश्च स्नेहान्संशोधनानि च ।
दिवा स्वप्नं व्यवायं च व्यायामं शिशिरं जलं ।
क्रोधप्रवातभोज्यानि वर्जयेत्तरुणज्वरी ॥ ११ ॥

अर्थ-परिषेक (सेकना) प्रदेह (पसीनेलाना) स्नेह (तैलादिलगाना) संशोधन (वमनविरेचनादि) दिनमें सोना, मैथुन, दंडकसरत, शीतलजल पीना, क्रोध, पवन, और भोजन ये तरुणज्वरवालेको वर्जितहै अर्थात् इनको न करे ।

तरुणज्वरमें परिषेकादि सेवनके उपद्रव ।

शोषं छर्दिं मदं मूर्च्छां भ्रमं तृष्णामरोचकम् ।
प्राप्नोत्युपद्रवानेतान्परिषेकादिसेवनात् ॥ १२ ॥

अर्थ-शोष, वमन, मस्तपना, मूर्च्छा, भ्रम, प्यास, अरुचि, इत्यादि उपद्रव ज्वरमें परिषेकादि सेवन करनेसैं होतेहैं । अत एव ज्वरमें परिषेकादि करना वर्जितहै ।

सज्वरो ज्वरमुक्तो वा विदाहीनि गुरूणि च ।
असात्म्यान्यन्नपानानि विरुद्धाध्यशनानि च ॥ १३ ॥
व्यायाममतिचेष्टाश्चाभ्यङ्गं स्नानं च वर्जयेत् ।
तेन ज्वरः शमं याति शान्तश्च न पुनर्भवेत्॥ १४ ॥

अर्थ-ज्वरवाला या ज्वररहित मनुष्यको दाहकारी और भारी तथा जो अपने आत्माके अनुकूल न हो ऐसे अन्नपान तथा विरुद्ध और अध्यशन (भोजनके ऊपर भोजन) दंडकसरत, अतिचेष्टा, उवटना, और स्नानकरना वर्जितहै । इस प्रकार वर्त्तनेसैं ज्वर शमनहोताहै । और शांतज्वर फिर कभी उत्पन्न नहीं होवे ।

लंघन करानेका कारण ।

आमाशयस्थो हत्वाग्निं सामो मार्गान्पिधापयन् ।
विदधाति ज्वरं दोषस्तस्माल्लंघनमाचरेत् ॥ १५ ॥

अर्थ–आमाशयस्थ दोष जठराग्निको नष्टकर आमसहित मार्गोंको आच्छादन करताहुआ ज्वरको प्रगट करेहै । अत एव उस आमके नष्ट करनेको और अग्निके प्रज्वलित करनेको लंघन करना चाहिये । इसजगे अग्निशब्दकरके अग्निकी उष्माका ग्रहणहै ।

लंघनेन क्षयं नीते दोषे संक्षुभितेऽनले ।
विज्वरत्वं लघुत्वञ्च क्षुच्चैवास्योपजायते ॥ १६ ॥

अर्थ–दोष, लंघनद्वारा क्षीण होनेपर और जठराग्नि प्रबल होनेसें रोगी विज्वर और लघु (हलका) होताहै । तथा इस रोगीको क्षुधा लगतीहै ।

उत्तमलंघनके गुण ।

वातमूत्रपुरीषाणां विसर्गो गात्रलाघवम् ।
हृदयोद्गारकण्ठास्यशुद्धौ तन्द्राक्लमे गते ॥ १७ ॥
स्वेदे जाते रुचौ वापि क्षुत्पिपासासहोदये ।
कृतं लंघनमादेश्यं निर्व्यथे चान्तरात्मनि ॥ १८ ॥

अर्थ–अधोवायु, मल, मूत्रका अच्छी तरह उतरना, देह हलका होवे, हृदय, डकार, कंठ, मुख ये शुद्धहोवे; तन्द्रा और क्लम जातेरहे, पसीने आवे, अन्नपर रुचि होवे, तथा भूखप्यासका एकसाथ लगना, और अंतरात्मा व्यथारहित होवे तब वैद्य जाने कि इस रोगीको उत्तमलंघन हुए ।

हीनलंघनके लक्षण ।

कफोत्क्लेशः सहृल्लासः ष्ठीवनं च मुहुर्मुहुः ।
कण्ठास्यहृदयाशुद्धिस्तन्द्रा स्याद्धीनलंघने ॥ १९ ॥

अर्थ–कफ, क्लेश, तथा सूखी रदके साथ वारंवार थूके; कंठ, मुख, और हृदय ये अशुद्धहो तथा तन्द्राहो ये लक्षण हीन लंघनवाले रोगीके हैं ।

अतिलंघनके उपद्रव ।

पर्वभेदोऽङ्गमर्दश्च कासः शोषो मुखस्य च ।
क्षुत्प्रणाशोऽरुचिस्तृष्णा दौर्बल्यं श्रोत्रनेत्रयोः ॥ २० ॥
मनसः संभ्रमोऽभीक्ष्णमूर्ध्ववातस्तमो हृदि ।
देहाग्निबलहानिश्च लंघनेऽतिकृते भवेत् ॥ २१ ॥

अर्थ–गाँठगाँठमें पीड़ा, अंगफूटन, खाँसी, मुखका सूखना, भूख जातीरहे,

अरुचि, प्यास, दुर्बलता, नेत्र और कानोंमें दुर्बलता अर्थात् कमदीखे और कम सुने, मनमें संभ्रम, वारंवार डकार आवे; हृदयमें अंधकार प्रतीतहो, देह, अग्नि और बलकी हानी, ये लक्षण अत्यंत लंघन करनेके है।

बलके अविरोधी लंघनकथन।

बलाविरोधिना चैनं लंघनेनोपपादयेत्।
बलाधिष्ठानमारोग्यं यदर्थोऽयं क्रियाक्रमः॥ २२॥

अर्थ–वैद्यको उचितहै कि जैसें रोगीका बल क्षीण नहोवे इसप्रकार लंघन करावे क्योंकि आरोग्यता बलके आधीनहै। और उसी आरोग्यताके लिये यह चिकित्साक्रमहै।

लंघनमें वर्जित मनुष्य।

तद्धिमारुततृष्णाक्षुन्मुखशोषभ्रमान्वितैः।
न कार्यं गुर्विणीबालवृद्धदुर्बलभीरुभिः॥ २३॥
न क्षयाऽध्वश्रमक्रोधकामशोकचिरज्वरे।

अर्थ–बादीवालेको, प्यासेको, भूखेको, मुखशोषी, भ्रमवाला, गर्भवती स्त्री, बालक, वृद्ध, दुर्बल, डरनेवाला, क्षयीरोगी, मार्गमें, परिश्रमी, क्रोधी, कामी, शोकवाला, और जिसको बहुतदिनका ज्वरहो इतने मनुष्योंको वैद्य लंघन न करावे।

ज्वरपाककी अवधि।

वातिकः सप्तरात्रेण दशरात्रेण पैत्तिकः॥
श्लैष्मिको द्वादशाहेन ज्वरः पाकं प्रपद्यते॥ २४॥
यावत्तु लंघनं कार्यं तावत्तप्तोदकं भजेत्।
निर्वाते च गृहे वासस्तावत्कार्यः प्रयत्नतः॥ २५॥

अर्थ–वातज्वर सातरात्रिमें, पैत्तिकज्वर दशरात्रिमें, कफज्वर १२ दिनमें पाक होताहै। रोगी जबतक लंघन करे तावत्कालपर्यंत गरम जल पीवे. और तबतक निर्वात स्थानमें रहे, [परंतु वैद्यको उचितहै कि रोगीको स्वच्छ मकान और उज्ज्वल शय्यापर सुलावे]।

क्वथितजलके पृथक् पृथक् गुण।

तत्पादहीनं पित्तघ्नमर्धहीनन्तु वातनुत्।
त्रिपादहीनं श्लेष्मघ्नं संग्राह्यग्निप्रदं लघु॥ २६॥
पादशेषन्तु यत्तोयं आरोग्याम्बु तदुच्यते।

अर्थ-अब औंटाएहुए जलके गुण कहते हैं । पादहीन अर्थात् सेरका तीनपाद जल पित्तनाशकहै, अर्धहीन अर्थात् सेरका आधारक्खा जल वातनाशकहै, और सेरका पाउभर जो औंट.नेसें रहै वह जल कफनाशक संग्राहि, जठराग्निको बढानेवाला, और हलका होताहै । पादशेष अर्थात् सेरका पावभर रहे जलको आरोग्याम्बु कहतेहैं ।

आरोग्याम्बुके गुण ।

आरोग्याम्बु सदा पथ्यं कासश्वासकफापहं ॥ २७ ॥
सद्योज्वरहरं ग्राहि दीपनं पाचनं लघु ।
आनाहपांडुशूलार्शोगुल्मशोथोदरापहम् ॥ २८ ॥

अर्थ-आरोग्याम्बु सदैव पथ्यहै । खाँसी, श्वास, और कफको नाश करै, शीघ्र ज्वरको हरणकरै, ग्राहीहै दीपन और पाचन तथा हलकाहै । अफरा, पांडुरोग, शूल, बवासीर, गोला, सूजन, और उदररोग इनको दूर करताहै ।

शीतलजलयोग्य रोगी ।

मूर्च्छापित्तोष्णदाहेषु विषे रक्ते मदात्यये ।
भ्रमश्रमपरीतेषु तमके वमथौ तथा ॥ २९ ॥
धूमोद्गारे विदग्धेऽन्ने शोषे च मुखकण्ठयोः ।
ऊर्ध्वगे रक्तपित्ते च शीतमम्भः प्रशस्यते ॥ ३० ॥

अर्थ-मूर्च्छित, पित्त और गरमीके दाहमें, विष, रक्त, और मदात्ययमें, भ्रम, श्रम, तमक, श्वास, वमन, धूमोद्गाररोगमें, विदग्धान्नमें, मुख कंठके सूखनेमें, ऊर्ध्वगत रक्तपित्तमें, इन रोगोंमें शीतल जल देवे, गरम जल न देय ।

वातश्लेष्मज्वरार्त्ताय हितमुष्णाम्बु सर्वदा । तत्कफं विलयं नीत्वा तृष्णामाशु निवर्त्तयेत् ॥ ३१ ॥ उदीर्य चाग्निस्रोतांसि मृदूकृत्य विशोधयेत्।वातपित्तकफस्वेदशकृन्मूत्राणि सारयेत् ३२

अर्थ-वातकफज्वरवालेको गरम जलही सर्वदा हितहै, यह गरम जल कफको नष्टकर शीघ्र प्यासको निवृत्त करताहै । और जठराग्निके स्रोतोको खोल नम्रकरके विशोधन अर्थात् शुद्ध करे है । तथा वात, पित्त, कफ, पसीने, मल, और मूत्रको निकाले है ।

शृतशीतयोग्यरोगी ।

दाहातीसारपित्तासृङ्मूर्च्छामद्यविषार्त्तिषु ।

मूत्रकृच्छ्रे पाण्डुरोगे तृष्णाच्छर्दिभ्रमेषु च ॥ ३३ ॥
शृतशीतं षडङ्गं वा जलं देयं प्रयत्नतः ।

अर्थ–दाह, अतीसार, रक्तपित्त, मूर्च्छा, मद्यावस्था, और विषविकार, मूत्रकृच्छ्र, पांडुरोग, प्यास, वमन, और भ्रम इनरोगोंमें शृतशीत वा षडङ्गजल यत्नपूर्वक देना चाहिये । (जिस जलको औंटाकर शीतल कराजाय उसको शृतशीत कहते हैं) ।

शृतशीत वा षडङ्गजल ।

मुस्तपर्पटकोदीच्यक्षत्राख्योशीरचन्दनैः ॥ ३४ ॥
शृतशीतं जलं चैतत् षडङ्गोदकमीरितम् ।

अर्थ–नागरमोथा, पित्तपापड़ा, नेत्रवाला, धनियां, खस, और चंदन, इन औषधोंको डालकर जो जल वासितकरा जावे उसको शृतशीत जल वा षडङ्गोदक कहते हैं ।

अन्न देनेका काल ।

प्रायशः सप्तदिवसैर्ज्वरः पाकं प्रपद्यते ॥ ३५ ॥
क्षुत्संभवति पक्वेषु रसदोषमलेषु च ।
काले वा यदि वाकाले सोऽन्नकाल उदाहृतः ॥ ३६ ॥

अर्थ–प्रायः ज्वरपाक सातदिनकरके हो जाता है । जब रस दोष और मल पकते है तभी क्षुधा उत्पन्न होती है । चाहिये कालहो या अकालहो वही भोजनका काल कहा हैं । (अत एव जिससमय भूख लगे उसीसमय भोजन देना चाहिये) ।

त्रिविधपुरुष ।

बलवान् निर्बलोऽतीव बलहीनास्त्रिधा नरः ।
बलवान् ज्वरमुक्तयंतं निर्बलो दोषपाकतः ॥ ३७ ॥
अतीवबलहीनं हि लंघनं नैव कारयेत् ।

अर्थ–रोगीमनुष्य तीन प्रकारका होता है । बलवान्, निर्बल, और अतीवबलहीन, तहां बलवान्‌को ज्वरमुक्तहोनेपर भोजन देवे, और निर्बल मनुष्यको दोषपाकसैं, तथा जो अत्यंत बलहीन मनुष्यहै उसको लंघन कदाचित् न करावे, (परंतु भारतवर्षके बहुतसे मूर्ख वैद्य इस श्लोककी तरफ ध्यान नहीं करते) ।

ये गुणा लंघने प्रोक्तास्तेगुणा लघुभोजने ॥ ३८ ॥
तस्माद्यूषैश्च मण्डैश्च पेयाद्यैस्तानुपाचरेत् ।

निर्बलं बलहीनं च पाचनाद्यैरुपाचरेत् ॥ ३९ ॥
ज्वरो बलवतः पुंसो लंघनादेव नश्यति ।

अर्थ-जो गुण लंघन करानेमें है वही अल्प भोजनमें कहे है । इसीसैं वैद्यको उचित है कि यूष, मंड, और पेयादि देकर चिकित्सा करे, और जो निर्बल तथा सर्वथा बलहीन है उनको पाचनादि औषध देकर चिकित्सा करे और भोजन कराता रहे । जो बलवान् पुरुष है उसको लंघनही कराना हितहै, क्योंकि बलिष्ट पुरुषका ज्वर लंघन करानेसैंही नष्ट होता है । [परंतु इस पदकी तरफ डाक्टर और हकीमलोग नहीं निगाह करते हैं, चाहे रोगी मरही क्यो न जावे धन्यरे गड्-रिया प्रवाह धन्य है !]

सज्वरं ज्वरमुक्तं वा दिनान्ते भोजयेल्लघु ॥ ४० ॥
गुर्वभिष्यन्द्यकालेषु ज्वरी नाद्यात्कथंचन ।
नतु तस्य हितं भुक्तमायुषे वा सुखाय च ॥ ४१ ॥

अर्थ-ज्वरवाला हो चाहिये विना ज्वरवाला रोगी हो वैद्यको उचित है कि सायंकालमें हलका भोजन देवे । भारी, अभिष्यन्दी, और कुसमय ज्वरवान्पुरुषको भोजन कदाचित् नहीं करना चाहिये, यदि करावे तो वह भोजन आयु और सुखके लिये हित नहीं है ।

आनद्धस्तिमितैर्दोषैर्यावन्तं कालमातुरः ।
तावत्कालं स लघ्वन्नमश्नीयात्स विरक्तवत् ॥ ४२ ॥

अर्थ-जबतक यह प्राणी दोषसैं घिरा रहै अर्थात् जबतक दोष शुद्ध न होवे तबतक रोगी मनुष्यको विरक्तके तुल्य हलके अन्नका सेवन करना चाहिये ।

सप्ताहात्परतो दुष्टे सामे स्यात्पाचनं ज्वरे ।
निरामे शमनं स्तब्धे सामे नौषधमाचरेत् ॥ ४३ ॥

अर्थ-सात दिनसैं उपरांत यदि ज्वर होवे तो जानेकी यह साम ज्वर है, उसमें औषध न दे, किंतु और लंघन करावे । यदि निराम ज्वर होवेतो पाचन देवे और स्तब्धज्वरमें शमनकरता औषधि देवे ।

आमलक्यादिचूर्ण ।

आमलक्यभया कृष्णा चित्रकश्चेत्ययं गणः ।
सर्वज्वरकफातङ्कभेदी दीपनपाचनः ॥ ४४ ॥

अर्थ-आमले १ तोला, हरडा वक्कल १ तोला, पीपल १ तोला, चीतेकी छा-

ल १ तोला, इन सबको कूट पीस ३ तीन पुडिया करे, १ पुडिया पावसेर पानीमें ओंटाय चतुर्थांश रहे तब उतार छान रोगीको देनेसें सर्वज्वर, कफके रोगोंको दूरकरे, दस्तावर और दीपनपाचन है (यदि छहमासे सैंधानिमक मिलाय चूर्ण बनायलेवे तो इसकी मात्रा ६ मासे रात्रिको गरमजलसें ले गरमीमें शीतलजलके साथ लेवे।)

अमृतादिकाथ।

अमृतारिष्टकुचन्दनपद्मकधान्योद्भवः क्वाथः।
ज्वरहृल्लासच्छर्दितृषणादाहारुचीर्हन्यात् ॥ ४५ ॥

अर्थ-गिलोय, नीमका छाल, हौहुवेर, लालचंदन, पद्माख, और धनिया प्रत्येक बराबर लेकर क्वाथ करे. इसके पीनेसें ज्वर, सूखीरद, वमन, प्यास, दाह और अरुचि ये दूर हो।

अनंता वालकं मुस्तं नागरं कटुरोहिणी।
पिबेत्सुखाम्बुना चूर्णं पाययेदक्षसम्मितम् ॥ ४६ ॥
चूर्णमल्पेन कालेन हन्यात्सर्वज्वरामयम्।
विदध्यात्कोष्ठसंशुद्धिं दीपयेच्च हुताशनम् ॥ ४७ ॥

अर्थ-जवासा, नेत्रवाला, नागरमोथा, सोंठ, कुटकी, इन सबको बराबर ले कूट पीस चूर्णकर छहमासे गरमजलके साथ देवे, यह चूर्ण थोडेही कालमें संपूर्ण ज्वरोंको दूरकरे और कोठेको शुद्धकर जठराग्निको दीपित करेहै।

आरग्वधादिक्वाथ।

आरग्वधकणामूलमुस्तातिक्ताभयाकृतः।
क्वाथः शमयति क्षिप्रं ज्वरं वातकफोद्भवम् ॥ ४८ ॥

अर्थ-अमलतासका गूदा, पीपरामूल, नागरमोथा, कुटकी और हरड ये समानभाग ले काढा करे इसके पीनेसें शीघ्र वातकफज्वर शांतिहोवे।

गुडूच्यादिकाथ।

गुडूचीपिप्पलीमूलनागरैः पाचनं स्मृतम्।
दद्याद्वातज्वरे पूर्णलिङ्गे सप्तमवासरे ॥ ४९ ॥

अर्थ-गिलोय, पीपरामूल और सोंठ ये पाचन औषधी है। इसको वातज्वर पूर्णस्वरूप होनेसें सातवे दिन देवे, (यदि अपूर्ण रूप होय तो तीसरे चौथेही दिन देवे। पूर्णरूप निदानसें निश्चय करे।)

पर्पटादिकाथ ।

पर्पटो वासकस्तिक्ता कैरातो धन्वयासकः ।
प्रियंगुश्च कृतः क्वाथ एषां पित्तज्वरापहः ॥ ५० ॥

अर्थ– पित्तपापरा, अडूसा, कुटकी, चिरायता, धमासो और फूलप्रियंगु इनका काढा पित्तज्वरको दूर करताहै ।

द्राक्षादिकाथ ।

द्राक्षा हरीतकी मुस्ता कटुकं कृतमालकः ।
पर्पटश्च कृतः क्वाथ एषां पित्तज्वरापहः ॥ ५१ ॥
तृण्मूर्च्छादाहपित्तासृक्छमनो भेदनः स्मृतः ।

अर्थ–दाख, हरड़, नागरमोथा, कुटकी, अमलतासका गूदा और पित्तपापडा इनका काढा पित्तज्वरको दूरकरे । तृषा, मूर्च्छा, दाह, रक्तपित्त, इनको शमन करे । और दस्तावरहै ।

पित्तज्वरे तु कुटकीकल्कः शर्करयान्वितः ॥ ५२ ॥
प्रशस्यते चित्तदोषे सर्वोपद्रवनाशनः ।

अर्थ–कुटकीके कल्कमें मिश्री मिलाकर पीनेसें पित्तज्वर तथा पित्तके सर्व उपद्रवोंको नाशकरे ।

ह्रीबेरादिकाथ ।

ह्रीबेरचन्दनोशीरघनपर्पटसाधितम् ॥ ५३ ॥
दद्यात्सुशीतलं वारि तृट्छर्दिज्वरदाहनुत् ।

अर्थ–नेत्रवाला, लालचंदन, खस, नागरमोथा और पित्तपापडा इनकरके साधित क्वाथ और शीतलजल देनेसें प्यास, वमन, ज्वर और दाह दूरहो ।

भूनिम्बादिकाथ ।

भूनिम्बातिविषालोध्रमुस्तकेंद्रयवामृताः ॥ ५४ ॥
वालकं धान्यबिल्वे च कषायो माक्षिकान्वितः ।
विड्भेदश्वासकासांश्च रक्तपित्तज्वरं हरेत् ॥ ५५ ॥

अर्थ–चिरायता, अतीस, लोध, नागरमोथा, इन्द्रजो, गिलोय, नेत्रवाला, धनिया, बेलगिरी, प्रत्येक तोले २ भर ले कूटकर काथ करे इसमें सहत मिलायकर देय तो दस्तोंका होना, श्वास, खांसी, रक्तपित्त और ज्वरको दूरकरे ।

महाद्राक्षादि ।

द्राक्षाचन्दनपद्मानि मुस्तातिक्तामृतापिच । धात्रीवाल्मुशीरं च लोध्रेन्द्रयवपर्पटाः ॥५६॥ परूषकंप्रियङ्गुश्चयवासोवासकस्तथा । मधुकंकुलकंचापि किरातोधान्यकस्तथा ॥ ५७॥ एषांक्राथोनिहन्त्येव ज्वरंपित्तसमुद्भवम् । तृष्णांदाहंप्रलापंच रक्तपित्तभ्रमंक्लमं ॥ ५८ ॥ मूर्च्छांछर्दिंतथाशूलं मुखशोषमरोचकम् । कासंश्वासंचहृल्लासं नाशयेन्नात्रसंशयः ॥ ५९ ॥

अर्थ—दाख, लालचंदन, पद्माख, नागरमोथा, गिलोय, आमला, नेत्रवाला, खस, लोध, इन्द्रजौ, पित्तपापडा, फालसे, फूलप्रियंगु, जवासा, अडूसा, मुलहटी परवलके पत्ते, चिरायतो और धनिया, प्रत्येक तोले तोले लेय जब कुटकर १ तोलेका काढाकरके पीवे तो पित्तज्वर, तृषा, दाह, बकवाद, रक्तपित्त, भ्रम, क्लम, मूर्च्छा, वमन, शूल, मुखशोष, अरुचि, खांसी, श्वास और हल्लास इन सबको यह महाद्राक्षादिकाथ दूर करे ।

अन्यप्रतीकार ।

द्राक्षामलककल्केन कवलोत्रहितोमतः।पक्वदाडिमबीजैर्वा धान्यकल्केनवाक्वचित् ॥ ६०॥ दाहवम्यार्दितंक्षामं निरन्नंतृष्णयान्वितं । शर्करामधुसंयुक्तं पाययेल्लाजतर्पणम् ॥ ६१ ॥

अर्थ—दाख और आमलेके कल्कका कवल पित्तज्वरमें हित है, अथवा पके अनारके दाने अथवा धनियेके कल्कका कवल हित है, दाहरोग और वमनसें जो पीडितहै अथवा जो अन्न नहीं खाय तथा तृषासें पीडितहै उस रोगीके खीलोंके यूषमें मिश्री और सहत मिलायकर पीना हित कहा है ।

कफज्वरप्रतीकार ।

श्लेष्मके द्वादशाहेन ज्वरे युंजीत भेषजम् ।
वासाक्षुद्रामृताक्राथः क्षौद्रेण ज्वरकासहृत् ॥ ६२ ॥

अर्थ—कफज्वरमें १२ दिन औषध देनी चाहिये. अडूसा, कटेरी और गिलोय इनका काढा सहतके साथ देनेसें ज्वर और खांसीको दूरकरे ।

कट्फलादिक्वाथ । भूर्ग

कट्फलं पौष्करं शृंगी कृष्णा च मधुना सह ।

श्वासकासज्वरहरो लेहोऽयं कफनाशनः ॥ ६३ ॥

अर्थ–कायफर, पौहकरमूल, कांकडासिंगी और पीपल इनको सहतके साथ सेवन करे तो श्वास, खांसी और ज्वरको नष्ट करे तथा कफको नाशकरे ।

कवल ।

सिन्धुत्रिकटुराजीभिरार्द्रकेण कफे हितः ॥ कवलः इति शेषः ।

अर्थ–कफके रोगमें सेंधानिमक, त्रिकुटा, और राई इनको अदरखके रसके साथ कवल देना हित है ।

मुद्गयूषोदनो देयो ज्वरे कफसमुत्थिते ।

अर्थ–कफज्वरमें मूंगका यूष और भातका पथ्य देना चाहिये ।

वातपित्तज्वरे पंचभद्रकं ।

गुडूची पर्प्पटो मुस्ता किरातो विश्वभेषजम् ॥ ६४ ॥
वातपित्तज्वरे देयं पञ्चभद्रमिदं शुभम् ।

अर्थ–गिलोय, पित्तपापडा, नागरमोथा, चिरायता और सोंठ यह पंचभद्र क्वाथ वातपित्तज्वरमें देना चाहिये ।

मुद्गामलकयूषस्तु वातश्लेष्मज्वरे हितः ॥ ६५ ॥

अर्थ–मूंग और आमलेका यूष वातपित्तज्वरमें पथ्यहै ।

वातकफज्वरे ।

पंचकोलकृतः क्वाथो वातश्लेष्मज्वरापहः ।
दशमूलीरसः पीतः कणाढ्यः कफवातजे ॥ ६६ ॥

अर्थ–पंचकोलका काढा वातकफज्वरको दूरकरे. उसीप्रकार दशमूलका रस अथवा काढा करके उसमें पीपल डालके पीवेतो वातकफज्वर दूरहोय ।

स्वेदोद्गमे ।

स्वेदोद्गमे भृष्टकुलत्थचूर्णनिपातनं शस्तमिति ब्रुवन्ति ।
जीर्णं शकृद्रोर्लवणस्य भाजनं संचूर्णितं स्वेदहरं सुधूलम् ॥६७॥

अर्थ–यदि पसीने आते होय तो कुलथीका चूर्ण करके देहमें मालिसकरे अथवा पुराना गौका गोबर और नोनका पात्र इनको पीस उद्धूलनकरना पसीने आनेको दूरकरेहै ।

उद्धूलनम् ।

भूनिम्बकारवीतिक्तावचाकट्फलजं रजः ।

एतदुद्धूलनं श्रेष्ठं संततस्वेदसंभवे ॥ ६८ ॥

अर्थ–चिरायता, कलोंजी, कुटकी, वच और कायफर इन सबका महीन चूर्ण कर उद्धूलनकरना निरंतर पसीने आनेको दूर करेहै ।

पित्तकफज्वरे ।

पित्तश्लेष्मज्वरे देयमौषधं दशमेऽहनि ।
गुडूच्यादिभवः क्वाथः पूर्वोक्तश्चात्र शस्यते ॥ ६९ ॥

अर्थ–पित्तकफज्वरमें दशवे दिन औषध देनी चाहिये इस पित्तकफज्वरमें पूर्वोक्त गुडूच्यादिकाथ देना हित होताहै।

नागरोशीरबिल्वाब्दधान्यमोचरसाम्बुभिः ।
कृतः क्वाथो भवेद्ग्राही पित्तश्लेष्मज्वरापहः ॥ ७० ॥

अर्थ–सोंठ, खस, वेलगिरी, नागरमोथा, धनिया, मोचरस और नेत्रवाला इनका काढा ग्राहीहै तथा पित्तकफज्वरको दूरकरे।

शर्करामक्षमात्रं तु कटुका चोष्णवारिणा ।
पीत्वा ज्वरं जयेज्जन्तुः पित्तश्लेष्मसमुद्भवम् ॥ ७१ ॥

अर्थ–कुटकीका चूर्ण १ तोले मिश्री १ तोले दोनोंको गरमजलके साथ लेय तो यह पुरुषके कफपित्तज्वरको नष्टकरे ।

सन्निपातज्वरे ।

मृत्युना सह योद्धव्यं सन्निपातं चिकित्सता ।
यश्च तत्र भवेज्जेता स जेतामयसङ्कुले ॥ ७२ ॥

अर्थ–जो वैद्य सन्निपातकी चिकित्सा करताहै वह मृत्युके साथ युद्ध करताहै यदि संनिपातको जीतलेवे तो वह संपूर्ण रोगोंका जीतनेवाला जानना।

लंघनं वालुकास्वेदो नस्यं निष्ठीवनं तथा ।
अवलेहोऽञ्जनं चैव प्राक्प्रयोज्यं त्रिदोषजे ॥ ७३ ॥

अर्थ–त्रिदोषज्वरमें प्रथम लंघन, वालुसे सेककर पसीने निकालना, नस्य, निष्ठीवन, अवलेह और अंजन इत्यादि कर्म करने चाहिये ।

सप्तमे दिवसे प्राप्ते दशमे द्वादशेऽपि च ।
पुनर्घोरतरो भूत्वा प्रशमं याति हन्ति वा ॥ ७४ ॥

अर्थ–जो ज्वर सातवे दशमे अथवा बारवे दिन फिर घोररूपसैं चढे वह कि तो शांति होजाय अर्थात् फिर न आवे अथवा उस रोगीके प्राण हरणकरे ।

धातुपाकमलपाकके लक्षण ।

नाभेरूर्ध्वं हृदोऽधस्तात्पीडिते चेद्व्यथा भवेत् ।
धातोः पाकं विजानीयादन्यथा तु मलस्य च ॥ ७५ ॥

अर्थ–जिस ज्वरवान् पुरुषके नाभीके ऊपर और हृदयके नीचे दबायके देखनेसें जो व्यथा होय उसके धातुपाक हुआ जानना और ये लक्षण न होवे किंतु क्षुधादिके लगनेसैं मलपाक जानना ।

तथाच ।

स स्याद्धीन्द्रियपञ्चकस्य पटुता वन्हेश्च यत्र क्रमा-
त्तृष्णादिप्रशमो ज्वरस्य मृदुता तं दोषपाकं वदेत् ।
हृन्नाभ्योरतिवेदनातिसरणं तीव्रो ज्वरस्तृण्मदः
श्वासाधिक्यमरोचकोऽरतिरिति स्याद्धातुपाकाकृतिः ॥७६॥

अर्थ–इन्द्रियपंचक (नेत्र, कान, त्वचा, जिव्हा, अरु नासिका)की और जठराग्निकी प्रसन्नता होय तथा क्रमसैं तृष्णाआदिकी शांति और ज्वरका हलका होना ये मलपाकके लक्षणहैं. और जिसमें हृदय नाभिमें अत्यंत पीडा होय अत्यंत दस्त होतेहो अत्यंत तीव्रज्वर अत्यंत तृषा और मद होय तथा श्वासकी वृद्धि, अरुचि, अरति (मनका न लगना) ये धातुपाकीज्वरके लक्षणहै [ये लक्षण लंघनके अंतमें होतेहैं ।]

नस्यम् ।

सैन्धवं श्वेतमरिचं सर्षपाः कुष्ठमेव च ।
वस्तमूत्रेण संपिष्टं नस्यं तन्द्रानिवारणम् ॥ ७७ ॥

अर्थ–सैंधानिमक, धुलीहुई कालीमिरच, सरसो और कूठ इनको बकरेके मूत्रसैं पीसकर नस्य देनेसैं तन्द्रा दूरहोय ।

आर्द्रकस्वरसोपेतं सैन्धवं कटुकत्रयम् । आकण्ठं धारयेदास्ये निष्ठीवेच्च पुनःपुनः ॥ ७८ ॥ तेनास्यहृदयक्लोममन्यापार्श्वशिरोगलात् । लीनोप्याकृष्यते श्लेष्मा लाघवं चास्य जायते ॥ ७९ ॥ मुखाक्षिगौरवं जाड्यमुत्क्लेशश्चोपशाम्यति । ह-

न्त्यष्टाङ्गावलेहस्तु सन्निपातं सुदारुणम् ॥ ८० ॥ हिक्कां श्वासं च कासं च कंठरोगं विनाशयेत् ।

अर्थ—अदरकके स्वरसमें सेंधानिमक और त्रिकुटा मिलाय मुखमें कंठपर्यंत उतार फिर कुल्ला करदेवे, इसप्रकार वारंवार करनेसें मुख, हृदय, क्लोमस्थान, मन्या, शिर और गला इनमें लिहसे हुए कफको निकालता है और देहको हलका करे, मुख ने-त्रका भारीपना जडता और घबराहटको दूर करे. उसीप्रकार अष्टांगावलेह दारुण संनिपातको दूर करे. तथा हिचकी, श्वास, खांसी, और कंठके रोग इनको दूरकरे ।

सूतंविषंचमरिचं तुत्थकं नवसादरम्॥८१॥ चूर्णितंस्वरसैर्मर्द्यं धूर्त्तपत्ररसोनयोः । सन्निपातकृतेमोहे मूर्ध्निलिम्पेत्पदोपरि ॥८२॥

अर्थ—शुद्धपारा, विष, कालीमिरच, नीलाथोथा और नोसदर इन सबका चूर्ण-कर फिर धतूरेके पत्तोंके रसमें और लहसनके रससें घोटकर इसकी टिकियासी बनाय मस्तकके ऊपर बांधे तो सन्निपातकी बेहोसी दूर होय ।

भैरवाञ्जनम् ।

सूततीक्ष्णकणागन्धमेकांशं जयपालकम्
सर्वैस्त्रिगुणितं जम्भवारिपिष्टं दिनाष्टकम् ॥ ८३ ॥
नेत्राञ्जनेन हंत्याशु सर्वोपद्रवयुग्ज्वरम् ।

अर्थ—शुद्धपारा, लोहभस्म, पीपल और गंधक ये एक एक भागले और जमाल-गोटा सबसें तिगुना लेय जंभीरीके रसमें आठदिन खरल करे इसको नेत्रमें अंजन करनेसें सर्वोपद्रवयुक्त ज्वर नष्टहोय ।

गंधेशौ लशुनाम्भोभिर्मर्दयेद्यामभात्रकम् ॥ ८४ ॥
तस्योदकेन संयुक्तं नस्यं तत्प्रतिबोधकृत् ।
मरिचेन समायुक्तं हन्ति तन्द्राप्रलापकान् ॥ ८५ ॥

अर्थ—गंधक और पारा दोनो समान लेवे दोनोंको लहसनके रसमें एकदिन घोटे उस घुटे हुए जलके नस्य लेनेसें संज्ञा होय, यदि इसी रसमें कालीमिरच डा-लके घोटे और नस्य देवे तो तन्द्रा, प्रलाप आदिको नष्टकरे ।

उद्धूलनम् ।

मरिचं पिप्पली शुंठी पथ्या लोध्रं सपुष्करम् । भूनिम्बं क-टुका कुष्ठकचूरेन्द्रयवा सटी ॥ ८६ ॥ एतानि समभागानि

सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत् । प्रस्वेदे कंठरोधे च सन्धिमर्दनमिष्यते । एतदुद्धूलनं श्रेष्ठं सान्निपातहरं परम् ॥ ८७ ॥

अर्थ—मिरच, पीपल, सोंठ, हरड, लोध्र, पुहकरमूल, चिरायता, कुटकी, कूठ, कचूर, इन्द्रजौ और सटी इन सबको समभाग लेकर महीन चूर्ण करे, यह पसीने, कंठरोधमें, संधियोंमें मर्दन करे, यह उत्तम उद्धूलन सन्निपातको दूर करे है ।

तथाच ।

रसविषमरिचमहेशप्रियभस्मैकभूचतुर्वसुभिः ।
भागैर्मितमुद्धूलनमिदममितस्वेदशैत्यहरम् ॥ ८८ ॥

अर्थ—पारा एक भाग, विष एकभाग, कालीमिरच १ भाग, गंधक चारभाग, राख ८ भाग, सबको पीसे तो यह उद्धूलन अत्यंत पसीने और शीतको हरण करे है ।

स्वच्छन्दभैरवरसः ।

समभागं च संग्राह्यं पारदामृतगंधकम् । जातीफलं च भागार्धं दत्वा कुर्याच्च कज्जलीम् ॥ ८९ ॥ सर्वार्द्धं मागधीचूर्णं खल्वे क्षिप्त्वा विमर्दयेत् । शीतज्वरे सन्निपाते विषूच्यां विषमज्वरे ॥९०॥जीर्णज्वरे च मन्दाग्नौ शिरोरोगे च दारुणे । योजयेद्भेषजं सम्यग्रसः स्वच्छन्दभैरवः ॥९१॥

अर्थ—पारा १ भाग, विष १ भाग गंधक १ भाग, जायफल ॥ आधा भागले खरलमें डालकर कज्जली करे, इसमें सबकी बराबर पीपलका चूर्ण मिलाय खरलकरे, इस्सें सन्निपातमें शीतज्वरमें विषूचिका, विषमज्वर, जीर्णज्वर, मंदाग्नि, दारुण मस्तकरोग, इनरोगोंमें यह स्वच्छंदभैरव रस देवे ।

शृंग्यादि ।

शृंगीभार्ङ्ग्यभयाजाजीकणाभूनिम्बपर्पटैः । देवदारुवचाकुष्ठयासकट्फलनागरैः ॥ ९२ ॥ मुस्तानागरतिक्तेन्द्रसठीपाठाहरेणुभिः । हस्तिपिप्पलिचव्याग्निपिप्पलीमूलचित्रकैः ॥९३॥ निम्बारग्वधत्रायन्तीविशालासोमराजिभिः । विडंगरजनीदार्वीयवानीद्वयसंयुतैः ॥ ९४ ॥ राजिकारोहिणीच्छिन्नापञ्चमूलीद्वयान्वितैः । समानैःसाधितःक्काथोहिंग्वार्द्ररससंयुतः ॥

॥ ९५ ॥ अभिन्यासंज्वरंघोरंहन्तितन्द्रान्वितंक्षणात् । सन्निपातंतथारौद्रंत्रयोदशविधंजयेत् ॥ ९६ ॥ कर्णमूलंचहिक्कांचमूर्च्छांग्लानिंविशेषतः । तन्द्रांकासंमूत्रकृच्छ्रंतथाशीतज्वरंतृषाम् । दाहंज्वरंचशमयेत्पृष्ठभङ्गंशिरोग्रहम् ॥ ९७ ॥

अर्थ–कांकडासिंगी, भारंगी, हरड, जारी, पीपल, चिरायता, पित्तपापडा, देवदारु, वच, कूठ, धमासा, कायफर, सोंठ, नागरमोथा, कुटकी, इन्द्रजौ, कचूर, पाठा, रेणुका, गजपीपल, चव्य, चीता, पीपरामूल, चित्रक, नीमकी छाल, अमलतास, बला, इन्द्रायनकी जड, बाकुची, वायविडंग, हलदी, दारुहलदी, अजमायन, खुरासानी अजमायन, राई, कंभारी, गिलोय, दशमूल, ये सब औषध समानभाग लेवे जव कुटकर १ तोलेका काढा करके उसमें हिंग, और अदरकका रस मिलायके पीवेतो तंद्रायुक्त घोर अभिन्यास ज्वरको दूरकरे तेरह प्रकारके घोर सन्निपातोंको, कर्णमूलका, हिचकी, मूर्च्छा, ग्लानि, तन्द्रा, खांसी, मूत्रकृच्छ्र, शीतज्वर, प्यास, दाहज्वर, पीठका रहजाना, और मस्तकपीडा, इत्यादि रोगोंको यह शृंग्यादिक्काथ दूर करे है ।

दशमूल ।

शालिपर्णीपृष्ठपर्णीबृहतीद्वयगोक्षुरैः । बिल्वाग्निमन्थस्योनाकपाटलागणकारिकाः ॥ ९८ ॥ दशमूलमितिख्यातंक्वथितंतज्जलंपिबेत् । पिप्पलीचूर्णसंयुक्तंसन्निपातज्वरापहम् ॥ ९९॥

अर्थ–शालपर्णी पृष्ठपर्णी, (पिठवन), छोटी बडी कटेरी, गोखरू, वेलगिरी, अरणी, टेंटू, पाढल, गनयारी, यह दशमूल है । इसके काढेको पीपलके चूर्णको डालकर पीवे तो सन्निपात दूर होय ।

अष्टादशाङ्ग ।

भूनिम्बदारुदशमूलमहौषधाब्दतिक्तेन्द्रबीजधनिकेभकणाकषायः । तन्द्राप्रलापकसनारुचिदाहमोहश्वासादियुक्तमखिलज्वरमाशुहन्यात् ॥ १०० ॥

अर्थ–चिरायता, देवदारु, दशमूल, सोंठ, नागरमोथा, कुटकी, इन्द्रजौ, धनियां, गजपीपल, इनका काढा तन्द्रा, प्रलाप, खांसी, अरुचि, दाह, मोह, और श्वासयुक्त संपूर्ण ज्वरोंको शीघ्र दूर करे ।

पञ्चवक्रो रसः ।

गन्धेशौटङ्कमरिचविषंधत्तूरजद्रवैः । दिनंसंमर्दितंशुष्कंपञ्च-
वक्रोभवेद्रसः ॥ १०१ ॥ आर्द्रकस्यद्रवेणैवदातव्योरत्तिका-
मितः । सन्निपातज्वरंघोरंनाशयेन्नात्रसंशयः ॥ १०२ ॥

अर्थ—गंधक, पारा, सुहागा काली मिरच और विष इन सबको धतूरेके रससें १ दिन खरलकर गोली बांध लेवे; तो यह पंचवक्ररस सिद्ध होय । इसको अदरखके रसके साथ १ रत्ती देनेसैं घोर सन्निपातज्वरको दूर करे ।

रसादेकोविषादेकोभागष्टङ्कणगंधयोः । प्रत्येकंभागयुग्मंस्या-
द्दन्तावीजाच्चकट्फलात् ॥१०३॥ मरिचादेकैकशःपंचभागाः
श्लक्ष्णंविचूर्णयेत्।धातुपाकरसःसर्वज्वरघ्नोनास्त्यतोवरः॥ १०४॥

अर्थ—पारा १ भाग, विष १ भाग, और सुहागा, गंधक, दोनोंके दो दो भाग लेय, जमालगोटा १ भाग, कायफर १ भाग, काली मिरच पांच भाग, इन सबको चूर्ण करे इसको धातुपाकरस कहते हैं । इस्सैं बढकर दूसरा प्रयोग ज्वर-नाशक नहीं है ।

उदकमञ्जरीरसः ।

सूतोगन्धष्टङ्कणःसोषणश्चसर्वैस्तुल्याशर्करामत्स्यपित्तैः । भू-
योभूयोमर्दयेत्तंत्रिरात्रंवल्लोदेयःशृङ्गवेरद्रवेण ॥ १०५ ॥ ता-
पेशीतंभोजयेत्तक्रभक्तंवृंताकाढ्यंपथ्यमेतत्प्रदिष्टम् । अन्है-
वोग्रंहन्तिसद्योज्वरन्तुपित्ताधिक्येमूर्ध्नितोयंविदध्यात्॥१०६॥

अर्थ—पारा, गंधक, सुहागा, त्रिकूटा, सब समान लेय सबके बराबर मिश्री मिलावे, फिर इसमें मछलीके पित्तेकी भावना देकर तीन रात्रि घोटे और गोली बनाय लेवे, १ गोली अदरखके रससैं देय । यदि इस रसकी गरमी होय तो शीतल वस्तु जैसें भात, छाछ, बेंगनका साग देय, यह रस एकही दिनमें घोर ज्वरको दूर करे । यदि पित्तकी वृद्धिसें रोगी घबरावे तो उसके मस्तकपर जलकी धारा देनी चाहिये ।

महाज्वरांकुशः ।

शुद्धःसूतोविषंगन्धःप्रत्येकंशाणसम्मितः ॥ धूर्त्तबीजंत्रिशाणं
स्यात्सर्वेभ्योद्विगुणाभवेत् ॥ १०७ ॥ हेमाह्वाकारयेदेषां

सूक्ष्मचूर्णप्रयत्नतः । जंबीरजीरकैर्देयंचूर्णगुञ्जाद्वयोन्मितम् ॥
॥ १०८ ॥ आर्द्रकस्यरसेनापिज्वरंहन्तित्रिदोषजम् । विषमं
चज्वरंहन्यान्नवंजीर्णंचसर्वथा ॥ १०९ ॥

अर्थ-शुद्ध पारा, विष, गंधक, प्रत्येक ३ मासे लेवे; धतूरेके बीज ९ मासे, और सब औषधोंसे दूना चोक लेय, सबका चूर्ण कर जंभीरी और जीरेके साथ २ रत्ती देवे अथवा अदरखके रससें देय तो सन्निपातज्वर, विषमज्वर, नवीन ज्वर, और जीर्णज्वरको दूर करे ।

जयरसः ।

रसंगंधंचदरदंजैपालंक्रमवर्द्धितं । दन्तीरसेनसंपिष्यवटीगु-
ञ्जामिताकृता ॥ ११० ॥ प्रभातेसितयासार्द्धमशिताशी-
तवारिणा । एकेनदिवसेनैवशीतज्वरमपोहति ॥ ११ ॥

अर्थ-पारा, गंधक, हिंगुल, जमालगोटा, ये क्रमसें एक भाग, दो भाग, तीन और चार भाग लेवे, सबको दंतीके रससें पीस १ रत्तीके प्रमाण गोली बनावे, प्रातःकाल मिश्री या बूरेके साथ खाय ऊपर शीतल जल पीवे तो यह रस एकही दिनमें शीतज्वरको दूर करे ।

रामबाणरसः ।

हरबीजकटुत्रयटङ्कणकंजयपालकहंसकगन्धयुतं । गरलं
चसमंसहशर्करयासहसाजयतिज्वरमष्टविधम् ॥ ११२ ॥

अर्थ-पारा, त्रिकुटा, सुहागा, जमालगोटा, हिंगुल, गंधक और सिंगिया विष ये सब समान भाग लेय इसमेंसें २ रत्ती बूरेके साथ लेय तो आठ प्रकारके ज्वर दूर होय ।

लीलावतीवटी ।

पारदंगन्धकञ्चैवविषंहैमवतींतथा । पञ्चमंदन्तिबीजंचक्रम-
वृद्धानियोजयेत् ॥ ११३ ॥ निंबुनीरेणवटिकाकर्त्तव्यामाष-
सन्निभा । शीतलेनजलेनैषानवज्वरहरीमता ॥ ११४ ॥
एषालीलावतीनाम्नालीलयाज्वरनाशिनी ।

अर्थ-पारा, गंधक, विष, चौक, और जमालगोटा, प्रत्येक क्रमसें १-२-३-४ और ५ भाग लेवे; सबको पीस नींबूके रससें उडदके प्रमाण गोली बनावे एक गोली शीतल जलके साथ लेवे तो नवीनज्वरको दूर करे; इसको लीलावती वटी कहतेहैं ।

महाज्वराङ्कुशः ।

शुद्धसूतंविषंगन्धंधूर्त्तबीजंत्रिभिःसमं ॥ ११५ ॥ चतुर्णांद्विगुणंव्योषंचूर्णंगुंजाद्वयोन्मितम् । आर्द्रकस्यरसैःकिंवाजम्बीरस्यरसैर्युतं॥११६॥महाज्वराङ्कुशःसर्वज्वरघ्नःसन्निपातजित् ।

अर्थ–शुद्ध पारा, विष, गंधक, ये सब समान लेय सबके बराबर धत्तूरेके बीज लेवे, और सबसैं दूना त्रिकुटेका चूर्ण लेय, सबको एकत्र पीस इसमेंसें २ रत्ती चूर्ण अदरखके रससैं अथवा जंभीरीके रससैं देय तो यह महाज्वरांकुश सर्व प्रकारके ज्वरोंको नष्ट करे ।

शुद्धंजैपालटङ्कंतुकट्वींटङ्कद्वयोन्मितां ॥ ११७ ॥ गैरकंटंकमेकञ्चकन्यानीरेणमर्दयेत् । कलापसदृशीकार्यावटिकातांच भक्षयेत् ॥ ११८ ॥ शीतलेनजलेनैषावटीजीर्णज्वरापहा । श्वासाधिकारोक्तःश्वासकुठारोरसोऽतीवज्वरेहितः ॥ ११९ ॥

अर्थ–शुद्ध जमालगोटा ४ मासे, सुहागा ४ मासे, कुटकी ८ मासे, गेरू ४ मासे, इन सबको घीगुवारके रसमें खरल कर, मटरके प्रमाण गोली बनावे, १ गोली शीतल जलके साथ खाय तो जीर्णज्वर दूर होय । अथवा श्वासाधिकारमें जो श्वासकुठाररस कहाहै वह ज्वरमें देना अतीव हितहै ।

अग्निकुमारोरसः ।

द्वौकर्षौसूतकाद्ग्राह्यौगन्धकाद्वौतथैवच । कर्षैकममृतंमर्द्यं दिनंहंसपदीरसैः ॥ १२० ॥ कल्कस्यवटिकांकृत्वानिःक्षिपेत्काचभाजने । कूपिकायाःपरोभागोवालुकाभिःप्रपूरयेत् ॥ ॥ १२१ ॥ सार्द्धयावदहोरात्रंतावत्तत्ररसंपचेत् । दीपमात्रोऽनलोदेयःस्वाङ्गशीतंसमुद्धरेत् ॥ १२२ ॥ तोलार्धममृतं तत्रक्षिपेत्तावत्तथोषणं । भक्षितोरक्तिकामात्रोरसस्त्वग्निकुमारकः ॥ १२३ ॥ सन्निपातज्वरंहन्याद्वातंमन्दाग्नितामपि । शूलंसंग्रहणींगुल्मंक्षयंपांडुगदंतथा ॥ १२४ ॥ श्वासकासादिकान्सर्वान्गदानेषविनाशयेत् ।

अर्थ–शुद्ध पारा २ तोले, गंधक २ तोले, विष १ तोला, इनको हंसपदीके रसमें एक दिन खरल करे फिर कल्ककी गोली बनाय कांचकी शीशीमें भरे, इ-

सप्रकार भर वालुकायंत्रमें स्थापित करे और उस सीसीके दो भाग वालूसे परिपूर्ण करे, फिर उसको एकदिनरात भट्टीपर धरके दीपककी आंचसें पचावे, जब स्वांगशीतल होजावे तब उतार रसको निकास लेवे, उसमें आधातोला विष और इतनाही त्रिकुटा मिलाय गोली बनाय लेवे । १ रत्तीके खानेसें यह अग्निकुमार रस सन्निपातज्वर, वादी, मंदाग्नि, शूल, संग्रहणी, गोला, छर्द, पांडु, श्वास, खांसी आदि संपूर्ण रोगोंको दूर करे ।

ज्वरघ्नगुटिका ।

तालकंशुक्तिकाचूर्णंतुल्यंतत्रोभयोरपि ॥ १२५ ॥ नवमांशं चतुत्थंस्यान्मर्दयेत्कन्यकाद्रवैः । तत्तुसंशुष्कमुपलैर्वन्यैर्गजपुटेपचेत् ॥ १२६ ॥ शीतंगुञ्जामितंशीतज्वरघ्नंसितयासह । पथ्यंसितादधियुतंभक्तंमध्यंदिनेपुनः ॥ १२७ ॥ वान्तिर्भवतिकस्यापिभूतभैरवसंज्ञकः ।

अर्थ–हरताल, सीपको चूर्ण, दोनों समानभाग लेय. और इन दोनोंका नवमांश लीलाथोथा लेवे, सबको घीगुवारके रसमें खरलकर टिकिया बांधलेवे फिर सरावसंपुटमें धर आरनें उपलोंके गजपुटमें फूक देवे. जब शीतल होजाय तब २ रत्ती मिश्रीके साथ देय तो शीतज्वर दूर होय । इसके ऊपर दही बूरा मध्यान्हमें खानेको देय इस भूतभैरव रसके सेवनसें किसी किसीको वमन होती है ।

द्वितीयभूतभैरवरसः ।

एककर्षंभवेत्तालंद्विकर्षंतुत्थकंभवेत् ॥ १२८ ॥ षट्कर्षंभृष्टशुक्तीनांचूर्णमेकत्रकारयेत् । धत्तूरपत्रस्वरसैर्मर्दयेद्यामकमात्रकम् ॥ १२९ ॥ निधायभाजनेलोहेसंमर्द्यक्रमशोबुधः । उपर्यग्नेःस्थापयित्वातद्रसंशोषयेद्भिषक् ॥ १३० ॥ पुनःपर्य्युषितंप्रातर्गृहीत्वाकिञ्चिदग्नितः । कोष्णंकृत्वाकल्कमेतत्ततोवैद्यप्रसाधितः ॥ १३१ ॥ चणकप्रमितास्तासामेकाशर्करया सह । शीतज्वरंनिहन्त्येवसर्वनास्त्यत्रसंशयः ॥ १३२ ॥

अर्थ–हरताल १ तोला, लीलाथोथा २ तोले, सीपका चूना ६ तोले, सबको एकत्र कर धतूरेके रससें १ प्रहर लोहेके पात्रमें खरलकर अग्निके ऊपर स्थापन करके रसको सुखाय देवे फिर दूसरे दिन रस डालके इसीप्रकार अग्निके ऊपर धरके

घोटे और इसके रसको सुखाय गाढा करे और इसकी चनेके प्रमाण गोली बनावे, १ गोली मिश्रीके साथ खाय तो संपूर्ण शीतज्वरोंको नष्ट करे इसमें संदेह नहींहै ।

चिन्तामणिरसः ।

रसंगन्धंमृताभ्रंचमृतंताम्रंकटुत्रिकम् । त्रिफलाजयपालंच द्रोणपुष्पीदलद्रवैः ॥ १३३ ॥ संघृष्ययामयुग्माभ्यांशोषये-दातपेरवेः । द्विरक्तिरेकरक्तिर्वादीयतेऽस्ययथाबलम्॥ १३४॥ ज्वरमष्टविधंशूलमजीर्णंह्यामवातकम् । हिक्काहलीमकंहन्या-च्चिंतामणिरसःस्वयम् ॥ १३५ ॥

अर्थ—पारा, गंधक, अभ्रकभस्म, ताम्रभस्म, त्रिकुटा, त्रिफला, और जमालगोटा इन सबको गोमाके पत्तेके रसमें २ प्रहर घोट धूपमें सुखाय लेके, इसमें २ रत्ती अथवा १ रत्ती बलाबल देखकर देवे तो आठप्रकारके ज्वर, शूल, अजीर्ण, आमवात, हिचकी, हलीमक इन सब रोगोंको यह चिंतामणिरस दूर करता है ।

आरोग्यरागीरसः ।

रसोगन्धःकणामूलंवह्न्यंशजयपालकम् । व्योषंचबाणलवकंविषंचन्द्रलवंक्षिपेत् ॥ १३६ ॥ ताम्बूलरागतोमर्द्यादिनं ताम्बूलपत्रयुक् । दत्तोनवज्वरंहन्तितापेशीतक्रियोचिता ॥ ॥ १३७ ॥ सर्वज्वरेसन्निपातेदद्दीतामुंद्विगुञ्जकम् । आरोग्यरागीनामायंरसःपरमदुर्लभः ॥ १३८ ॥

अर्थ—पारा, गंधक, पीपरामूल, ये तीनो दोभाग, और जमालगोटा एकभाग, त्रिकुटा ५ भाग, विष १ भाग, इन सबको पानके रससें १ दिन खरलकरे, इस रसको २ रत्ती पानमें धरके देवे यदि गरमी मालूम हो तो शीतल उपचार करे यह सर्वप्रकारके ज्वरोंको दूर करे इस परमदुर्लभ रसको आरोग्यरागी कहतेहैं।

पञ्चामृतपर्पटी ।

रविरसभुजगायोवङ्गतोगन्धकस्यद्विगुणरचितभागंद्रावयेल्लोहउष्णम् ॥ समविनिहितपङ्कास्थायिरम्भादलस्थंतदितरदलयोगात्प्रद्रुतंयत्समंतात् ॥ १३९ ॥ तदातुपञ्चामृतपर्पटीतिस्मृतंज्वराशेषविशेषहारि । कासक्षयाशोंग्रहणीगदघ्नं

अर्थ—तामेकी भस्म, पारा, सीसेकी भस्म, वंगभस्म सब समानभाग लेवे सबके दूनी गंधक लेवे, लोहेके करछुलामें गंधकको तपाय और उसमें सब उक्तवस्तु मिलायकेकेले पत्तेपर डालदेवे, और दूसरेपत्तेसे ढकदेवे, तो यह पंचामृतपर्पटीसंज्ञक रस बने, यह संपूर्णज्वर, खांसी, क्षई, ववासीर, संग्रहणी आदिरोगोंको सहत पीपलके साथ खाने-सैं दूरकरे इसकी मात्रा ४ रत्तीकी है ।

उपायान्तरम् ।

त्रपुसंभक्षयित्वाग्रेतक्रमम्लंपिबेदनु ।
ततोहुताशंसेवेतप्रावृतोवातपंस्फुटम् ॥ १४१ ॥
ततःप्रस्विद्यसर्वाङ्गेयातिशीतज्वरःक्षयं ।

अर्थ—शीतज्वरवाला मनुष्य प्रथम खीरको खाय उसके ऊपर त्रिकुटामिली छाछ पीवे, फिर अग्निसैं तापे, अथवा सौड रिजाई आदि वस्त्रोंको ओढकर धूपमें बैठजावे तो सर्वांगमें पसीने आतेही शीतज्वर दूरहोय ।

अपथ्यदोषाद्यदिसंप्रवृत्तोभवेज्ज्वरश्चेद्बलिनश्चपुंसः । हितंपुन-र्लंघनमादिशान्तिसन्तोऽल्पदोषस्यचभेषजानि ॥ १४२ ॥

अर्थ—जिस बलिष्ठपुरुषके कुपथ्यआदिसे यदि ज्वर फिर आय जावेतो उसको लंघन फिर करावे और यदि दोष अल्प होवे तो औषध देनी चाहिये ।

यदिवानिर्हृतमलःपुनरेवभवेज्ज्वरः ।
मलंचनिर्हरेच्छीघ्रंततःसम्पद्यतेसुखम् ॥ १४३ ॥

अर्थ—यदि मलके संचयसै फिर ज्वर आयजावे तो उस रोगीका वैद्य शीघ्र जुला-ब देकर मल निकाले तो ज्वरशांति होय ।

मद्यजन्यज्वरे ।

शुकवल्लभमृद्वीकापक्वाम्लीकापरूषकैः ।
स्वरसैःशर्कराढ्यैश्चपाययेन्मद्यजेज्वरे ।
पित्तज्वरोक्तंयत्कर्मतत्सर्वंचात्रइष्यते ॥ १४४ ॥

अर्थ—अनारदाना, दाख, पकी इमली, फालसे इनके स्वरसमें मिश्री मिलाकर मद्यजन्य ज्वरवालेको पिलाना चाहिये, और जोजो विधि पित्तज्वरमें कहीहै वो सब इस मद्यजन्य ज्वरमें करनी चाहिये ।

जलजनितज्वर ।

औपत्यकेमद्यसमुद्भवेचहेतुंज्वरेपित्तमुदाहरन्ति । दाहश्चशो-

थंचशिरोव्यथाचकोष्ठाभिवृद्धिंकटितोदकण्डु ॥ १४६ ॥ मलातिपातस्त्वतिबद्धताचऔपत्यदोषेणभवेज्ज्वरेण ।

अर्थ–औपातिक (जलजनित) और मद्यजन्य ज्वरके उत्पन्नहोनेका कारण पित्त है उसके लक्षण ये है दाह, सूजन, मस्तकपीडा, उदरकी वृद्धि, करमें पीडा, खुजली, अत्यंत मलका गिरना, अथवा बद्धहोना, ये लक्षण औपत्य दोषजन्य ज्वरमें होते हैं।

किराततिक्तकंतिक्तामुस्तापर्पटकाऽमृता ।
निःक्वाथ्यपीतानिघ्नंतिपुनरावर्त्तकज्वरम् ॥ १४७ ॥

अर्थ–चिरायता, नीमकी छाल, कुटकी, पित्तपापरो, और गिलोय इनका काढा करके पीवेतो वारंवार लोटकर आनेवाले ज्वरकी शांति होय।

क्वाथपंचकं पंचविधज्वरे ।

कलिङ्गकंपटोलस्यपत्रंकटुकरोहिणी । पटोलंसारिवामुस्तापाठाकटुकरोहिणी ॥ १४८ ॥ निम्बंपटोलंत्रिफलामृद्वीकामुस्तवत्सकौ । किराततिक्तममृताचन्दनंविश्वभेषजम् ॥ ॥ १४९ ॥ गुडूच्यामलकंमुस्तमर्द्धश्लोकसमापनाः । कषायाःशमयन्त्याशुपंचपंचविधंज्वरम् ॥ १५० ॥

अर्थ–इन्द्रजौ, पटोलपत्र, कुटकी इनका काढा सततज्वरको दूरकरे । पटोलपत्र, सारिवा, नागरमोथा, पाढ और कुटकी इनका काढा संततज्वरको दूर करे। नीमकी छाल, पटोलपत्र, त्रिफला, मुनक्कादाख, नागरमोथा और कूडाकी छाल इनका काढा इकतरा ज्वरको दूरकरे। चिरायता, नीमकी छाल, गिलोय, लाल चंदन, और सोंठ इनका काढा तृतीयक (तिजारी) को दूरकरे गिलोय आमरे और नागरमोथा, इनका काढा चातुर्थिक ज्वरको दूर करेहै। एक एक काढा आधे आधे श्लोकमें कहाहै, ये पांच काढे पंचविध ज्वरोंको दूर करतेहैं, सो हमने पृथक् पृथक् खोलदीनेहै।

वर्द्धमानपिप्पली ।

त्रिभिरथपरिवृद्धंपञ्चभिः सप्तभिर्वादशभिरपिविवृद्धंपिप्पलीवर्द्धमानम् । इतिपिबतिनरोयस्तस्यनश्वासकासज्वरजठरगदार्शोवातरक्तक्षयाःस्युः ॥ १५१ ॥ ताःक्षीरपिष्टाःक्षीरोदनाहारेणपातव्याइति ॥ १५२ ॥

अर्थ–तीनसैं, पांचसैं, सातसैं, वा दशसैं बढाइ हुई वर्द्धमान पीपल जो मनुष्य पीताहै, उसके श्वास, खांसी, ज्वर, उदररोग, बवासीर, वातरक्त; ये रोग नष्ट होते हैं परंतु इसको जिस दूधमें औटावे उसमें पीसकर पीवे और इसके ऊपर दूध-भातका भोजन करे।

सुश्रुते।

पिप्पलीर्वाक्षीरपिष्टाःपञ्चभिर्वृद्ध्यादशवृद्ध्यावापिबेत्।
क्षीरोदनाहारंदशरात्रंदशरात्राद्ध्रयश्चाकर्षयेत्॥ १५३॥

अर्थ–सुश्रुतमें लिखाहै कि पांचकरके अथवा दशसै बढाई पीपलोंको दूधमें पीसकर पीवे और दशरात्रिपर्यंत दूधभात भोजनकरे। जब दशरात्रि व्यतीतहो जावे तब क्रमसैं घटाय देवे।

तथा वाग्भटेपि।

क्रमवृद्धादशाहानिदशपिप्पलिकंत्विदम्। वर्द्धयेत्पयसासा-
र्द्धंतथैवापनयेत्पुनः॥ १५४॥ पिप्पलीनांसहस्रस्यप्रयोगो-
यंरसायने। पिष्टास्ताबलिभिःपेयाःशृतामध्यबलैर्नरैः॥ १५५॥
चूर्णिताहीनबलिनांहितामधुसमायुताः। कासाजीर्णरुचि-
श्वासहृत्पांडुकृमिरोगिणां॥ १५६॥

अर्थ–उसीप्रकार वाग्भट ग्रंथमें लिखाहै कि क्रमसैं बढीहुई ये दशपिप्पलको क्रमसैं दूधके साथ दशदिन बढावे और फिर उसीक्रमसैं घटाय देवे यह रसायनमें हजार पिपलका प्रयोगहै इस वर्द्धमान पीपलको बली पुरुष पीसकर पीवे और मध्यबली पुरुष ओटायकर पीवे और जो हीनबलीहै वो पीपलका चूर्णकर उसकी प्रथम फक्की लेकर फिर दूध पीवे यदि पीपलके चूर्णके बराबर सहत मिलाय-कर सेवन करे तो खांसी, अजीर्ण, अरुचि, श्वास, हृदयरोग, पांडुरोग और कृमिरोगवालोंको हितहै [अर्थात् उक्तरोगोंको नाश करे]।

मन्दाग्निविषमाग्नीनांशस्यतेगुडपिप्पली।

अर्थ–जिन पुरुषोंकि मंदाग्नि अथवा विषमाग्नि है उनको गुड़के साथ पीपल सेवन करनी चाहिये।

पंचद्वौसप्तदशवापिप्पल्यःक्षौद्रसर्पिषा॥ १५७॥
लीढाज्वरंश्वासकासहृद्रोगंपांडुकामलां।
प्रदरंचप्रमेहंचहन्यादत्राकिमद्भुतम्॥ १५८॥

अर्थ-पांच दो सात अथवा दश पीपलके चूर्णको सहत और मक्खनके साथ सेवन करनेसैं ज्वर, श्वास, खांसी, हृद्रोग, पांडु, कामला, प्रदर, और प्रमेहको दूर करे ।

हरीतकीत्रिवृद्वृद्धदारकाणांपृथग्भवेत्।पलद्वयंकणाशुंठीगुडूचीगोक्षुरोवरी ॥ १५९ ॥ सहदेवीविडंगंचप्रत्येकंपलसम्मितं । मधुनावटिकाकृत्वाखादेज्ज्वरमपोहति ॥ १६० ॥ कासंश्वासंगलस्तंभंवह्निमान्द्यंनियच्छति ।

अर्थ-हरड, निसोथ, विधायरो, ये प्रत्येक दो दो पल लेय, और पीपल, सोंठ, गिलोय, गोखरू, सतावर, सहदेई, वायविडंग, ये प्रत्येक एक एक पल लेय सबको कूट पीस सहतके साथ गोली बनावे, इसके खानेसैं ज्वर, खांसी, गलस्तंभ, और मंदाग्नि दूर होय ।

शीतज्वरे अनुभूताञ्जनम् ।

फलत्रिकंव्योषरजःससूतंलोहार्कभृङ्गंसमभागिकंस्यात्॥१६१॥ पुत्रस्यमातुःपयसाविमर्द्यवटीचकार्याचणकप्रमाणा ।

अर्थ-त्रिफला, त्रिकुटा, पारा, गंधक, लोहभस्म, ताम्रभस्म, भांगरा, प्रत्येक समान भाग लेवे, पुत्रवती स्त्रीके दूधसैं खरलकर चनेके प्रमाण गोली बनावे इसको जलमें घिसकर अंजन करे तो शीतज्वर अवश्य दूर होय यह अंजन ज्वरआनेके समय लगावे ।

बृहत्क्षुद्रादिक्काथः ।

क्षुद्राधान्यकशुण्ठीभिर्गुडूचीमुस्तपद्मकैः ॥ १६२ ॥ रक्तचन्दनभूनिम्बपटोलवृषपौष्करैः । कटुकेन्द्रयवारिष्टभार्ङ्गीपर्पटकैःसमैः ॥ १६३ ॥ क्काथंप्रातर्निषेवेतसर्वशीतज्वरापहम् ।

अर्थ-कटेरी, धनिया, सोंठ, गिलोय, नागरमोथा, पद्माख, लाल चंदन, चिरायता, पटोलपत्र, अडूसा, पौहकरमूल, कुटकी, इन्द्रजो, नीमकी छाल, भारंगी, और पित्तपापडा, ये समान भाग ले प्रातःकाल क्काथकरके सेवनकरे तो सर्व शीतज्वर दूरहोय ।

निम्बादिचूर्णम् ।

निम्बच्छदंदशपलंत्र्यूषणंचपलत्रयम् ॥ १६४ ॥ त्रिपलंत्रिफलाचैवपलंत्रिलवणंभवेत् । क्षारयोर्द्विपलंचैवयवानीपलप-

१ त्रिपलंलवणत्रयमितिपाठान्तरम् ।

ष्टकम् ॥ १६५ ॥ सर्वमेकीकृतंचूर्णंप्रत्यूषेभक्षयेन्नरः । ऐ-काहिकंद्व्याहिकंचत्र्याहिकंचचतुर्थकम् ॥ १६६ ॥ संततंस-ततंघोरंत्रिदोषोत्थंज्वरंजयेत् ।

अर्थ—नीमके पत्ते १० पल, त्रिकुटा ३ पल, त्रिफला ३ पल, तीनों लवण ३ पल, क्षार २ पल, अजमायन ५ पल, इन सबको एकत्रकर प्रातःकाल सेवन करे तो ऐकाहिक, द्व्याहिक, त्र्याहिक, चातुर्थिक, संतत, सतत और त्रिदोषजन्य इन सबप्रकारके ज्वरोंको दूरकरे ।

पिप्पलीमोदकः ।

क्षौद्राद्द्विगुणितंसर्पिर्घृताद्द्विगुणापिप्पली ॥ १६७ ॥ सिताच द्विगुणातस्याःक्षीरंदेयंचतुर्गुणं । चातुर्जातंक्षौद्रतुल्यंपक्त्वा कुर्याच्चमोदकान् ॥ १६८ ॥ धातुस्थांश्चज्वरान्सर्वाञ्छ्वा-संकासंचपांडुताम् । धातुक्षयंवह्निमान्द्यंपिप्पलीमोदको जयेत् ॥ १६९ ॥

अर्थ—सहतसैं दूना घी, और, घृतसैं द्विगुण पीपल, और पीपलसैं दूनी खांड और खांडसैं चौगुना दूध लेय, और चातुर्जात (तज, पत्रज, इलायची, नागके-शर) ये सहतके समान लेय, इन सबको पाकविधिसैं पक्व कर लड्डू बनावे यह धातुगतज्वरोंको, श्वास, खांसी, पांडुरोग, धातुक्षय, और मंदाग्निको पिप्पली-मोदक दूर करताहै ।

लशुनप्रयोगः ।

तिलतैललवणयुक्तःकल्कोलशुनस्यसेवितःप्रातः ।
विषमज्वरमपिहरतेवातव्याधीनशेषांश्च ॥ १७० ॥

अर्थ—जो मनुष्य प्रातःकाल तिलका तैल और लवणमिश्रित लहसनके कल्कको सेवन करे तो विषमज्वर और संपूर्ण वातव्याधियोंको दूर करे ।

कालाजाजीतुसगुडाविषमज्वरनाशिनी । पीतोमरिचचूर्णे-नतुलसीपत्रजोरसः ॥ १७१ ॥ द्रोणपुष्पीरसोवापिनिह-न्तिविषमज्वरान् ।

अर्थ—गुडमें मिली कलौंजीका सेवन विषमज्वरको दूर करे है । तथा तुलसीके पत्तोंके स्वरसमें कालीमिरचका चूर्ण मिलाकर पीनेसैं विषमज्वर दूर होय । अथवा द्रोणपुष्पी (गौमा) के रस पीनेसैंभी विषमज्वर दूर होताहै ।

एरण्डस्यतुपत्राणिलिस्वाभूमौनिधापयेत् ।
तेननश्यतिदाहोऽस्यज्वरश्चैवोपशाम्यति ॥ १७२ ॥

अर्थ-पृथ्वीको लीप उसपर अरंडके पत्ते बिछाय इस प्राणीको सुलानेसैं इसका दाह नष्ट होय और ज्वरशांति होय ।

षट्तक्रतैलम् ।

सुवर्चिकानागरकुष्ठमूर्वालाक्षानिशालोहितयष्टिकाभिः ।
सिद्धंहरेत्षड्गुणतक्रपक्वंतैलंज्वरंदाहसमन्वितंच ॥ १७३ ॥

अर्थ-हुलहुल, सोंठ, कूठ, मूर्वा, लाख, हलदी, मजीठ, ये प्रत्येक औषध एक एक पल लेय और तेल प्रस्थभर और छाछ छः प्रस्थ लेय तैलकी विधिसैं इसको बनाय लेवे तो यह तैल दाहयुक्त ज्वरको तत्काल दूर करे ।

माहेश्वरधूपः ।

रुद्रजटागोशृङ्गंविडालविष्ठोरगस्यनिर्मोकः । मदनफलभूत-
केश्यौवंशत्वग्रुद्रानिर्माल्यं ॥ १७४ ॥ घृतयवमयूरचन्द्रकछ-
गलकलोमानिसर्षपासवचा । हिङ्गुयवास्थिमरीचाःसमभा-
गाश्छागमूत्रसंपिष्टाः ॥ १७५ ॥ धूपनविधिनाशमयन्त्येते
सर्वज्वरान्नियतम् । ग्रहडाकिनीपिशाचप्रेतविकारानयंधूपः ॥

अर्थ-ईश्वरालिंगी गौका सींग, बिलाईकी विष्ठा, सांपकी कांचली, मैनफल, छड, वांसका छिलका, शिवनिर्माल्य, घी, जो, मोरकी चंद्रिका, बकरेके गलेके वाल, सरसों, वच, हींग, गौकी हड्डी और मिरच, ये समानभाग लेवे सबको बकरीके मूत्रमें पीस धूप तयार करले, इसकी धूनी देनेसैं सर्वप्रकारके ज्वर, बालग्रह, डाकिनी, पिशाच और प्रेतविकार, इन सबको यह माहेश्वरधूप नाश करे है।

त्रिकण्टकक्काथः ।

निदग्धिकानागरकामृतानांक्काथंपिबेन्मिश्रितपिप्पलीकं ॥
जीर्णज्वरारोचककासशूलश्वासाग्निमान्द्यार्दितपीनसेषु ॥ १७७ ॥

अर्थ-कटेरी, सोंठ, और गिलोय इनके काढेमें पीपल डालकर पीवे तो जीर्णज्वर, अरुचि, खांसी, शूल, श्वास, मंदाग्नि, अर्दित, और पीनसरोग इनको दूर करे।

द्वितीयं आमलक्यादिचूर्णम् ।

शिवाग्निपिप्पलीपथ्याभूपितासैंधवैःकृतम् ।
चूर्णसर्वज्वरहरंदीपनंपाचनंस्मृतम् ॥ १७८ ॥

अर्थ-आंवले, चित्रक, पीपल, हरड़का वकल, और सेंधानिमक इनका चूर्ण सर्व ज्वरको हरण करे तथा दीपन पाचन कहाहै ।

द्राक्षादिक्काथः ।

द्राक्षाऽमृतासटीशृंगीमुस्तकंरक्तचन्दनम् । नागरंकटुकापाठाभूनिम्बःसदुरालभः ॥ १७९ ॥ उशीरंधान्यकंपद्मंवालकंकंटकारिका । पुष्करंपिचुमन्दश्चदशाष्टाङ्गमिदंस्मृतम् ॥१८०॥ जीर्णज्वरारुचिःश्वासकासश्वयथुनाशनम् ।

अर्थ-दाख, गिलोय, कचूर, काकडासिंगी, नागरमोथा, लालचन्दन, सोंठ, कुटकी, पाठ, वकायनकी छाल, धमासो, खस, धनियां, पद्माख, नेत्रवाला, कटेरीकी जड, पौहकरमूल नीमकी छाल, यह अष्टादशांग क्वाथ है, यह जीर्णज्वर, अरुचि, श्वास, खांसी और सूजन इनको दूर करे ।

दुर्जलजेता रसः ।

विषभागद्वयंदग्धकपर्दःपञ्चभागिकः । मरिचंनवभागंस्याच्चूर्णंवस्त्रेणशोधयेत् ॥ १८१ ॥ आर्द्रकस्यरसेनास्यकुर्यान्मुद्गनिभांवटीम् । वारिणावटिकायुग्मंप्रातःसायंचभक्षयेत् ॥ ॥ १८२ ॥ अयंरसोज्वरेयोज्यस्तस्मिन्दुर्जलजेपिच । अजीर्णाध्मानविष्टम्भशूलेषुश्वासकासयोः ॥ १८३ ॥

अर्थ-विषके दोभाग, कौडीकी भस्म ५ भाग, मिरच ९ भाग, सबका चूर्ण कर कपडछान करलेवे । फिर इसकी अदरखके रससें मूंगके समान गोली बनावे, नित्य प्रातःकाल और सायंकालमें दो गोली जलके साथ भक्षण करे यह रस साधारणज्वरमें देना और दुर्जलजनितज्वरमेंभी देवे तो अजीर्ण, अफरा, मल रोध, शूल, श्वास, और खांसीमेंभी देवे तो उक्तरोग दूर होय ।

ज्ञानोदयरसः ।

कलावेदाङ्गचन्द्रांशैःसर्वांशासितयायुतैः । शक्रासनरजोजातीफलशुक्रैःसुमेलितैः ॥ १८४ ॥ ज्ञानोदयोभवेदेषसाधकानन्दसिद्धिदः । सेवितःसात्म्यतोग्राहीजलदोषापनोदनः ॥ ॥ १८५ ॥ वातश्लेष्मामयध्वंसीज्वरातीसारनाशनः ।

अर्थ–भांग १६ भाग, गंधक ४ भाग, जायफल १ भाग, और चित्रक १ भाग, सबको एकत्र कर गोली बनावे यह ज्ञानोदय रस साधकोंको आनंद सिद्धिका दाता है । इसके सेवनकरनेसें जलदोष, वात कफके विकार, ज्वर, अतीसार, इनको नष्ट करे और आत्माको हित है । [कोई वैद्य शुक्रशब्दसें पारदका ग्रहण करते हैं ।]

भोजनादौसदाश्रीयाच्छुण्ठ्याजाज्यभयोत्थितम् ॥१८६॥
चूर्णंचशमयेद्वारिदोषंसर्वप्रदेशजम् ।

अर्थ–इस प्राणीको भोजनके पूर्व सोंठ, जीरा, घृत, और हरड इनके चूर्णका सेवन करनेसें सर्वदेशका पानी अवगुण नहीं करे [अर्थात् इसके सेवनसें जल नहीं लगे]

किराताद्चूर्ण ।

किराततिक्तात्रिवृदम्बुपिप्पलीविडङ्गविश्वाकटुरोहिणीरजः ॥
॥ १८७ ॥ निहन्तिलीढंमधुनातिसंज्वरंसुदुस्तरंदुर्जलदोषजंज्वरम् ।

अर्थ–चिरायता, गिलोय, निसोथ, नेत्रवाला, पीपल, वायविडंग, सोंठ, कुटकी इन सबका चूर्ण कर सहतमें मिलाय सेवन करनेसें अत्यंत ताप देनेवाला दुस्तर दुर्जलजनित ज्वरको दूर करताहै ।

[एवंज्वरेश्वासेचातुर्भद्रिकाष्टाङ्गावलेहौदेयौ] ॥ १८८॥ आर्द्रकस्यरसेनैनस्यंमूर्च्छायामाचरेन्नरः। [श्वासकुठारनस्यमपिदातव्यम् । अरुचौदाडिमबीजानांससैंधवंचर्वणंकार्यम्] ॥ १८९ ॥

अर्थ–इसीप्रकार ज्वरमें श्वास होय तो चातुर्भद्रक और अष्टांगावलेह काढा देना, यदि सन्निपातमें मूर्च्छा होय तो उस रोगीको अदरखके रसकी तथा श्वासकुठार रसकी नस्य देवे, यदि अरुचि होय तो अनारके दानेमें सेंधानिमक मिलायकर चबावे ।

क्राथोगुडूच्याःसमधुःसुशीतःशीघ्रंप्रशान्तिंवमनस्यकुर्यात्।विण्मक्षिकाणांमधुनाऽवलीढासचन्दनंशर्करयान्वितावा॥१९०॥

अर्थ–यदि ज्वरमें वमन होती होय तो गिलोयके काढेमें सहत मिलाय और उसको शीतल कर पीनेसें शीघ्र वमनको नष्ट करे । अथवा मक्खियोंकी वीठ सहतके वा चंदन और मिश्री मिलाकर सेवन करे तो ज्वरमें वमन ...

ज्वरजन्यतृषाचिकित्सा ।

शीतंपयःक्षौद्रयुतंनिपीतमाकण्ठमास्येनतदुद्वमेच्च ।
तर्षप्रकर्षप्रशमायवक्रेदध्याद्दक्षौद्रवटाग्रलाजा॥१९१॥

अर्थ–यदि ज्वरमें तृषाकी विशेषता होय तो शीतलजलमें सहत मिलायके मुखसे आकंठपर्यंत पीवे और फिर वमनद्वारा निकाल डारे अथवा तृषा दूर करनेको कमलगट्टेकी मिंगी, सहत, वडके अंकुर और खील इनकी गोली मुखमें राखे ।

दंतशठबीजपूरकदाडिमवदरैःसचुक्रकैःकल्कः ।
सद्योजयतिपिपासामथरजतगुटीमुखान्तःस्था॥१९२॥

अर्थ–जंभीरी, विजोरा, अनारदाना, वेर, और चूका इनका कल्क शीघ्र प्यासको दूर करे अथवा चांदीकी गोली मुखमें रक्खे तो प्यास दूर होय ।

अथ ज्वरातिसारचिकित्सा ।

लंघनमेकंमुक्त्वानचान्यदस्तीहभेषजंबलिनः ।
समुदीर्णदोषनिचयंशमयतिपाचयत्यपिच ॥ १९३ ॥

अर्थ–बलीज्वरातिसारवालेको केवल लंघनके अन्य औषध नहीं है । लंघन करनेसें बढेहुए दोष शमन होतेहै और पाचन होते हैं ।

वत्सादनीवत्सकवारिवाहाविश्वंभरानिम्बविषाःसविश्वाः ।
ज्वरेतिसारंत्वरितंजयन्तिविश्वामृतावत्सकवारिवाहाः॥१९४॥
पाठाऽमृतापर्पटमुस्तविश्वाकिराततिक्तेन्द्रयवान्विपाच्य ।
पिबन्हरत्येवहठेनसर्वज्वरातिसारानपिदुर्निवारान् ॥ १९५ ॥

अर्थ–गिलोय, कूडाकी छाल, नागरमोथा, सोंठ, नीमकी छाल, अतीस और कलोजी इनका काढा तत्काल ज्वरातिसारको दूर करे । अथवा सोंठ, गिलोय, कूडाकी छाल, नागरमोथा, इनका काढा, अथवा पाठ, गिलोय, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, सोंठ, चिरायता, कुटकी, इन्द्रजौ, इन सब औषधोंका काढा पीनेसें बलपूर्वक संपूर्ण अनिवार्य सर्व ज्वरातिसारोंको दूर करे ।

ज्वरेविड्ग्रहचिकित्सा ।

हरीतकीमेषशृङ्गीपिप्पलीत्रिवृताशिवा । सैन्धवंचित्रकंबीजंदाडिमस्यसमंमतम् ॥१९६॥ चूर्णमेतत्प्रयोक्तव्यंकासेश्वासेचविड्ग्रहे । वडवानलमेतद्धिबद्धकोष्ठज्वरापहम् ॥ १९७॥

अर्थ-हरड़, सनाय, पीपल, निशोथ, आवले, सैंधानिमक, चित्रक और अनारदाना इसका चूर्ण बनाय खांसी, श्वास, मलके न उतरनेपर देवे यह वडवानलचूर्ण बद्धकोष्ठको दूर करैहै ।

पथ्यारग्वधतिक्तात्रिवृतामलकैःशृतंतोयं ।
जीर्णज्वरेविबंधेदद्यादाश्वेवविड्ग्रहःशाम्येत् ॥ १९८ ॥

अर्थ-हरड़, अमलतास, कुटकी, निशोथ और आमरे इनका काढा जीर्णज्वर, विबंध और मलका रुकना तत्काल दूर करे ।

उपायान्तरम् ।

हरीतक्यादिगुटिकामामलक्यादिचूर्णकम् ।
विड्ग्रहेसंप्रयोक्तव्यंभेषजंनास्त्यतःपरम् ॥ १९९ ॥

अर्थ-विड्ग्रह अर्थात् दस्त न होनेपर हरीतक्यादि गुटका अथवा आमलक्यादि चूर्ण देना चाहिये । इससैं परे मलबद्धताको दूर करनेवाली दूसरी औषध नहींहै ।

हिक्काचिकित्सा ।

अश्वत्थवल्कलंशुष्कंदग्धंनिर्वापितंजले ।
तज्जलंपानमात्रेणहिक्कांछर्दिंचनाशयेत् ॥ २०० ॥

अर्थ-यदि हिचकी होवे तो पीपलकी सुखी छालको जलायकर जलमें डालदेवे, फिर इस जलको नितारकर पीवे तो हिचकी और वमनहोना दूर होय ।

शुष्कस्याश्वपुरीषस्यधूमोहिक्कांनिवारयेत् ।
अपिसर्वात्मिकांचैवयोगराडयमीरितः ॥ २०१ ॥
जावकस्यरसोवापिनस्यतोहन्तिहिक्किकाम् ।

अर्थ-अथवा सूखी घोडेकी लीदकी धूनी देना हिचकीको दूरकरे यह सर्वयोगोंमें बढकर है । अथवा महावरकी नस्य लेनेसैं ज्वरवान्की हिचकी दूरहोय [और साधारणहिचकी दूरहोतीहै] ।

कासचिकित्सा ।

विभीतकघृताभ्यक्तंगोशकृत्परिवेष्टितम् ॥ २०२ ॥
स्विन्नमग्नौहरेत्कासंध्रुवमास्येविधारितम् ।

अर्थ-बहेडेको घीसें चुपड और उसपर गोबर लपेट अग्निमें पुटपाक करलेवे । इसको मुखमें रखनेसें निश्चय खांसी दूर होय ।

विभीतकत्वङ्मरिचंलवङ्गंसवैंःसमानःखदिरस्यसारः॥२०३॥
बब्बूलजक्वाथकृतावटीयंमुखास्थिताकासहरीक्षणेन ।
अष्टाङ्गावलेहिकापिदातव्याचात्र ॥ २०४ ॥

अर्थ-बहेडेकी छाल १ भाग, काली मिरच १ भाग, लौंग १ भाग, खैरसार ३ भाग ये सबको कूटपीस बब्बूलके काढेसैं इसकी गोली बनावे इस गोलीको मुखमें रखनेसैं क्षणमात्रमें खांसीको दूर करतीहै, इस जगे अष्टांगावलेह देनेसंभी खांसी दूर होतीहै

कर्णमूलचिकित्सा ।

अशिशिरजलपरिमृदितंमरिचकणाजीरसिंधुजंत्वरितम् ।
नस्यविधिंसेवितमिहकर्णकनाशार्थमेवोक्तम् ॥ २०५ ॥
कृष्णापमार्गबीजाभ्यांनस्यंवाकट्फलोद्भवम् ।
ऊषणोषणतुम्बीनांनस्यंकण्ठामयंहरेत् ॥ २०६ ॥

अर्थ-गरमजलमें मिरच, पीपल, जीरा और सैंधानिमक मिलाय नस्य लेवे तो कर्णकरोग दूर होय । अथवा तुलसी और ओंगाके बीजोंकी नस्य, अथवा कायफर, मिरच, पीपल और तूंबेका रस इनकी नस्य लेय तो कंठरोग दूर होय ।

विषतिन्दुकनागरकट्फलैकरसिताविधिजीरकयामिलितैः ।
कृतलेपउपैतिविनाशमतःश्रुतिमूलगदोनिजदृष्टमतः ॥२०७॥

अर्थ-सिंगियाविष, कुचला, सोंठ, कायफर और कालीजीरी इन सबको पानीमें पीस विधिपूर्वक लेप करनेसैं कर्णमूलको नष्टकरे यह परिचित औषध है ।

लेपैर्यदिनशाम्येतकर्णमूलभवोगदः ।
जलौकापातनंशस्तंपक्वेव्रणचिकित्सितम् ॥ २०८ ॥

अर्थ-यदि लेपके करनेसैं कर्णमूल न जाय तो जोंक लगायके रुधिर निकाल डाले और व्रण पकजावे तो उसकी चिकित्सा करे ।

मुखशोषमुखवैरस्यचिकित्सा ।

शर्करादाडिमाभ्यांवाद्राक्षादाडिमयोस्तथा ।
कल्कंविधारयेदास्येशोषवैरस्यनाशनम् ॥ २०९ ॥

अर्थ-मिश्री और अनारके दाने, अथवा दाख और अनारदानेके कल्कको मुखमें धारण करनेसैं शोष और विरसताका नाश होय ।

अलूबुखारानाम्नोहिफलंतादृक्समीरितम् ।

अर्थ–अथवा आलूबुखारेको मुखमें रखनेसें मुखशोष और मुखकी विरसता दूर होय ।

निद्रानाशे ।

भृष्टंतुविजयाचूर्णंमधुनानिशिभक्षयेत् ॥ २१० ॥
निद्रानाशेऽतिसारेचग्रहण्यांपावकक्षये ।

अर्थ–भुनीहुई भांगका चूर्ण, सहतके साथ रात्रिमें खाय तो निद्रानाश, अतिसार संग्रहणी और मंदाग्नि दूर होय ।

गुडंपिप्पलिमूलस्यचूर्णेनालोडितंलिहन् ॥ २११ ॥ चिरादपिचसन्नष्टांनिद्रामाप्नोतिमानवः । काकजंघाजटानिद्रांजनयेच्छिरसिस्थिता ॥ २१२ ॥ केशसंमार्जनीतद्वद्भिषग्भिःसमुदीरिता । निद्रानाशेतुकर्त्तव्यंपादयोर्मृदुमर्दनम् ॥ २१३ ॥

अर्थ–जिस मनुष्यको बहुतदिनोंसें निद्रा न आतीहो वह पीपलामूलके चूर्णको गुडमें मिलायकर खाय तो तत्काल निद्रा आवे । अथवा काकजंघा (कैवैया)की जटा मस्तकमें रखनेसें निद्रा प्रगट करेहै । अथवा बालोंको सुधारनेकी कंघी (कंगही, कंगा)को सिरानेधरनसें निद्रा आवे अथवा धीरे धीरे पांमोंको दावे तो निद्रा आवे ।

पुष्पतैलारनालाभ्यांचुक्राद्येनविशेषतः । सुस्विन्नंकोमलंरात्रौकृष्णवृन्ताकजंफलं ॥ २१४ ॥ प्रातर्मधुयुतंखादेच्छीघ्रं निद्रामवाप्नुयात् ।

अर्थ–अथवा फुलेल, कांजी और चूका आदिसें रात्रिमें कोमल स्वेदनविधि करे तो निद्रा आवे, अथवा उबलेहुए सतके बासी काले बेंगन प्रातःकाल सहतसें खाय तो निद्रा अवश्य आवे ।

एरण्डतैलमतसीतैलंकांस्येविघर्षयेत ॥ २१५ ॥
अंगुल्याचांजयेत्तेननिद्रांसंजनयेत्पराम् ।

अर्थ–अंडका और अलसी दोनों तेलोंको कांसेकी थालीमें घिसकर नेत्रोंमें आंजे तो घोर निद्रा आवे ।

शतपुष्पांचविजयांछागीक्षीरेणपेषयेत् ॥ २१६ ॥
लिपेत्पादौकवोष्णेननिद्रांसंजनयेत्पराम् ।

अर्थ—अथवा सौफ और भांगको बकरीके दूधमें पीस कुछ गरम कर पैरोंको लेप करे तो अवश्य निद्रा आवे ।

छागीक्षीरेणचरणौसुखंसंमर्दयेद्बुधः ॥ २१७ ॥
दाहश्चैवोपशम्येतनिद्रांसंजनयेत्पराम् ।

अर्थ—अथवा बकरीके दूधकी पैरोंमें मालिस करे तो दाहशांति होय और घोर निद्रा आवे ।

कस्तूरिकाञ्जनंकार्यंस्तन्येनपयसाऽथवा ॥ २१८ ॥
चिरादपिचसन्नष्टांनिद्रांसंजनयेत्पराम् ।

अर्थ—अथवा स्त्रीके दूधसें वा केवल गौआदिके दूधसें कस्तूरी घिसके नेत्रोंमें आंज तो बहुतकालकी गईहुईभी निद्रा आवे ।

शिरोर्तिचिकित्सा ।

कुष्टमेरण्डजंमूलंलेपात्कांजिकपेषितं ॥ २१९ ॥
शिरोर्त्तिवातजांहन्यात्पुष्पंवामुचुकुन्दजम् ।

अर्थ—कूठ, और अंडकी जडको कांजीमें पीस मस्तकमें लेप करे तो वातजन्य मस्तकपीडा दूर होय । अथवा मुचुकुंदके फूलोंको पीसके लेपकरे तो वातजन्य मस्तकपीडा जाय ।

चंदनोशीरयष्ट्याह्वबलाव्याघ्रनखोत्पलैः ॥ २२० ॥
क्षीरपिष्टःप्रलेपःस्याद्रक्तपित्ताशिरोर्त्तिनुत् ।

अर्थ—चंदन, खस, मुलेठी, खरेटी, नख (गंधद्रव्य) और कमलगट्टा इन सबको दूधमें पीसके लेपकरे तो रक्तपित्तकी मस्तकपीडा दूरहोय ।

तन्द्रायां ।

मरिचवचार्द्रकनस्यंप्रभुग्ननेत्रंज्वरंजयति ॥ २२१ ॥

अर्थ—कालीमिरच, वच और अद्रक इनकी नस्य लेना प्रभुग्ननेत्र अर्थात् तंद्राको और ज्वरको दूर करे ।

निस्तुषंजयपालस्यबीजंस्याद्दशशाणिकम् । मरिचंपिप्पली-
मूलंशाणमात्रंविचूर्णयेत् ॥ २२२ ॥ जम्बीरनीरैरसकृत्स-
प्ताहान्मर्दयेद्दृढं। रसोयमञ्जनेदत्तःसन्निपातंनियच्छति॥२२३॥

अर्थ—छिलेहुए जमालगोटाके बीज १० टंक, मिरच, पीपलामूल, ये १ एक एक

१ शुंठीप्रपुन्नाटदेवकाष्ठसंमिलितैरेभिरौषधैःकफजन्यामस्तकपीडाशांताभवति ।

टंक अर्थात् चारमासे सबको एकत्र पीस जंभीरीके रसमें वारंवार सातदिन खर-लकरे इस रसको लगानेसें सन्निपात दूर होय [इससें जयपालादि अंजन कहते हैं।]

उन्मत्ताख्यरसः ।

सूतकंगंधकंतुल्यंधत्तूरफलजैर्द्रवैः ।संमर्द्यदिनमेकंतुत-त्तुल्यंत्र्यूषणंक्षिपेत् ॥ २२४ ॥ उन्मत्ताख्योरसश्चायंन-स्यतःसन्निपातजित् ॥ २२५ ॥

अर्थ—पारा, गंधक समान ले धतूरेके फलरससें १ दिन खरल करे फिर पारे गंधकके समान त्रिकुटा मिलावे तो यह उन्मत्ताख्य रस सिद्ध होय । इसकी नस्य देनेसें सन्निपात दूर होय ।

तालीसादिचूर्णं

तालीसोषणविश्वपिप्पलितुगाकर्षाभिवृद्धात्रुटिःकर्षार्द्धा त्वगपिप्रकामधवलाद्वात्रिंशकर्षासिता । तालीसाद्यमि-दंसुचूर्णमरुचावाध्मानमन्दानलश्वासच्छर्द्यतिसारशोष-कसनप्लीहज्वरेशस्यते ॥ २२६ ॥

अर्थ—तालीसपत्र १ तोला, काली मिरच २ तोले, सोंठ ३ तोले, पीपल ४ तोले, वंसलोचन ५ तोले, छोटी इलायची ६ तोले, तज ९ माशे, मिश्री ३२ तोले सबको कूट पीस चूर्ण करलेवे । यह तालीसादि चूर्ण अरुचि, अफरा, मन्दाग्नि, श्वास, वमन, अतीसार, शोष, खांसी, प्लीहा और ज्वर इन सबको दूर करे ।

अपथ्यं ।

व्यायामप्लवनव्यवायहरितासात्म्यान्नविष्टंभकृत्पिष्टान्नातिगु-रूण्यजाङ्गलपलंशुष्कानिशाकानिच । वर्ज्यान्याबललाभतो-ऽन्यसहसासर्वान्नभुग्विज्वरःस्याद्देत्येवहिदुर्बलंप्रतिगतोनूनंज्व-रोऽसात्मिकम् ॥२२७ ॥

अर्थ—अब ज्वरवान् रोगीको अपथ्य वस्तु कहते हैं । जैसे कि दंडकसरत, स्नान, मैथुन, हरितशाक और जो अपने आत्माको अनुकूल न हो, और विष्टंभकारी अन्न पिष्टान्न (मैदाआदि) अत्यंत भारी, अनूपदेश और ग्राम्यआदि जीवोंका मांस तथा सूखा साग ये सब वस्तु जबतक देहमें बल न आवे तबतक त्याज्य है । यदि वर्जित वस्तुओंको खाय तो उसके देहमें फिर ज्वर असात्म्यकारणसें बढकर उस रोगीको मृत्यु करे ।

अथासाध्यलक्षणानि ।

गम्भीरोबलवानसाध्यउदितोयोदीर्घरात्रिस्थितःसश्वासभ्रमणक्लमप्रलपनोहृच्छूलयुग्रक्तदृक् । व्यामूढोविगतेन्द्रियःकृशतरोनिद्राश्चयेनार्दिताः सोऽतिक्षीणबलाल्पवह्निपिशितोऽस्यातीवतीव्रोज्वरः ॥ २२८ ॥

अर्थ-जो ज्वर गंभीर और बलवान्हो तथा जो बहुतकालका होय वो असाध्य है । तथा जिसमें श्वास, भ्रम, क्लम, प्रलाप और हृदयमें शूलयुक्त लालनेत्र हों, बेहोस, नेत्र नासिकाआदि इन्द्री जिसमें जातीरहे, अत्यंत कृशहो, अत्यंत नींद आतीहो, रोगीका देह अत्यंत क्षीण हो और मन्दाग्नि तथा देहमें मांस न रहाहो और अत्यंत तीव्र ज्वर आताहो ऐसे लक्षणवाला रोगी असाध्य है ।

विष्णुंसहस्रमूर्द्धानंचराचरपतिंविभुम् ।
स्तुवन्नामसहस्रेणज्वरान्सर्वान्व्यपोहति ॥ २२९ ॥

अर्थ-सहस्रमस्तकवाले चराचरके पति और समर्थ ऐसे विष्णुभगवान्को सहस्रनाम (विष्णुसहस्रनाम) सें स्तुतिकरे तो सर्वप्रकारके ज्वर दूर होय ।

इतिकिंचिज्ज्वरस्योक्तंसंप्रदायचिकित्सितम् ।
मयादैर्घ्यभयादस्यग्रन्थस्यबहुनोदितम् ॥ २३० ॥

अर्थ-यह ज्वरचिकित्साकी संप्रदाय कुछ थोडीसी मैंने कहीहै । ग्रंथ बढनेके भयसें विस्तारपूर्वक नही कही ।

इति श्रीवैद्यरहस्ये ज्वरचिकित्सा समाप्ता ।

इति श्रीमाथुरकृष्णलालतनयेन दत्तरामेण कृतायां वैद्यरहस्यप्रकाशिकाटीकायां ज्वराधिकारः समाप्तः ॥

ज्वरातिसारचिकित्सा ।

ज्वरातिसारयोरुक्तंभेषजंयत्पृथक्पृथक् ।
नतन्मिलितयोःकार्यमन्योन्यंवर्द्धयेद्यतः ॥ १ ॥

अर्थ-ज्वरातिसारमें जो औषध पृथक् पृथक् कहाहै वो मिलायकर न करे । क्योंकि वे औषध अन्योन्य एकदूसरेको बढातीहै ।

१ लंघनमुभयेनोक्तं मिलितंकार्यं विशेषतस्तदनु ।

दशांशंषोडशांशंवाशतांशंवाशृतंजलं । सुशीतंपाचनंग्राहि दीपनंदोषनाशनम् ॥ २ ॥ यथायथाशृतंतोयंज्वरातीसारिणोभवेत् । दीपनंपाचनंग्राहिआरोग्यत्वंतथातथा ॥ ३ ॥

अर्थ–दशांश (अर्थात् जो औटानेसें दशामा हिस्सा रहे) एवं षोडशांश और शतांशजल औटेहुएको शीतलकर देय तो वह पाचन, ग्राही, दीपन और दोषनाशक है । जैसे जैसे ज्वरातिसारवालेको अधिक औटाया जल दियाजाय उसी उसी प्रकार दीपन और पाचन, ग्राही तथा आरोग्यदाता होताहै ।

नागरातिविषामुस्तभूनिम्बामृतवत्सकैः ।
सर्वज्वरहरःक्राथःसर्वातीसारनाशनः ॥ ४ ॥

अर्थ–सोंठ, अतीस, नागमोथा, चिरायता, गिलोय और कूडाकी छाल इन सब औषधोंका काढा ज्वरको हरण करे, और सर्व अतिसारोंको नाश करे ।

ह्रीबेरादिक्काथः ।

ह्रीबेरातिविषामुस्ताबिल्वधान्यकनागरैः । पिबेत्पिच्छाविबंधघ्नंशूलदोषामपाचनम् ॥ ५ ॥ सरक्तंहन्त्यतीसारंसज्वरंचाथविज्वरम् ।

अर्थ–नेत्रवाला, अतीस, नागरमोथा, बेलगिरी, धनिया, सोंठ यह ह्रीबेरादिकाथ विबंध, शूलदोष और आमको पाचन करे । और ज्वरसहित वा ज्वररहित रक्तातीसारको नाश करे ।

बृहद्गुडूच्यादिः ।

गुडूच्यतिविषाधान्यशुण्ठीबिल्वाब्दवालकैः ॥ ६ ॥ पाठाभूनिम्बकुटजचन्दनोशीरपद्मकैः । कषायःशीतलःपेयोज्वरातीसारशान्तये ॥ ७ ॥ हृल्लासारोचकच्छर्दिपिपासादाहनाशनम् ।

अर्थ–गिलोय, अतीस, धनिया, सोंठ, बेलगिरी, नागरमोथा, नेत्रवाला, पाढ, चिरायता, कूडाकी छाल, लाल चंदन, खस और पद्माख इनका क्राथ शीतलकरके पीवे तो ज्वर और अतीसार दूर होय । हृल्लास, अरुचि, वमन, प्यास और दाह इनका नाश होय ।

उशीरादिक्काथः ।

उशीरंवालकंमुस्तंधान्यकंबिल्वमेवच ॥ ८ ॥ समंगाधातकी-

लोध्रंविश्वंदीपनपाचनम् । हन्त्यरोचकपिच्छामंविबंधंसातिवेदनं ॥ ९ ॥ सशोणितमतीसारंसज्वरंवाथविज्वरम् ।

अर्थ-खस, नेत्रवाला, नागरमोथा, धनिया, बेलगिरी, लजालू, धायके फूल, लोध, और सोंठ, ये सब औषध समान लेके कूट पीस काढा करे । इसके पीनेसें अरुचि, गाढीआम, पीडासहित विबंध, रक्तसहित सज्वर अथवा विज्वर अतिसारको दूर करे और दीपन पाचनहै ।

बिल्वादिः ।

बिल्ववालकभूनिम्बगुडूचीधान्यनागरैः ॥ १० ॥
कुटजाब्दयुतःक्राथोज्वरातीसारशूलनुत् ।

अर्थ-बेलगिरी, नेत्रवाला, चिरायता, गिलोय धनिया, सोंठ, कूडेकी छाल, और नागरमोथा इन औषधोंका काढा ज्वरातीसार और शूलको दूरकरे ।

इति वैद्यरहस्ये ज्वरातिसारचिकित्सा ।

अथ अतिसारचिकित्सा ।

हितंलंघनंवातजेचातिसारेसचानाहशूलप्रसेकीतुवाम्यं ।
चितायेविदग्धान्नसंमूर्च्छितास्तेनसंस्तंभनीयाअतीसारदोषाः १

अर्थ-वादीके अतिसारमें लंघनकरना हितहै । यदि अतिसारमें अफरा और शूल होय तो उसको वमन करावे, और जो विदग्धान्नसें व्याप्त और मूर्छितहै उस अतिसारवालेके दोष स्तंभनीय नहीहै (किंतु निकालने योग्य है) ।

लंघनमेकंमुक्त्वानचान्यदस्तीहभेषजंबलिनः ।
समुदीर्णदोषनिचयंतत्पाचयेत्तथाशमयेत् ॥ २ ॥

अर्थ-बलवान् अतिसारवाले रोगीको लंघनको परित्याग करके दूसरी औषध नहीहै, (अर्थात् लंघन करनाही हितहै) और बढेहुए दोषसमूहको पाचनकरे अथवा शमनकरना चाहिये ।

आमपक्वक्रमंहित्वानातिसारेक्रियापुनः ।
अतोऽतिसारेसर्वस्मिन्नामपक्वंचलक्षयेत् ॥ ३ ॥

अर्थ-आमपक्वक्रमको त्याग अतिसारमें दूसरी क्रिया नहीहै अत एव सर्व अतिसारोंमें आमपक्वका लक्ष करना चाहिये ।

पक्वापक्वनिर्णयः ।

संसृष्टमामैर्दोषैस्तुन्यस्तमप्सुनिमज्जति । पुरीषंभृशदुर्गन्धि पिच्छलंचामसंज्ञितम् ॥ ४ ॥ एतान्येवतुलिंगानिविपरीतानितस्यवै । लाघवंचविशेषेणतस्यपक्वंविनिर्दिशेत् ॥ ५ ॥

अर्थ–कच्चे दोषोंकरके मिश्रित मल जलमें गेरनेसैं डूब जाताहै और उस मलमें अत्यंत दुर्गंधी आती है, तथा वह मल चिकना गाढा मलाईके माफिक होताहै । और जो मल इन उक्त लक्षणोंसैं विपरीत होवे और अतिशय हलका होवे उससै पक्व मल जानना (यह पक्वापक्वमलकी परीक्षा है) ।

नचसंग्राहिणंदद्यात्पूर्वमामातिसारिणे ।
अकालेसंगृहीतोहिविकारान्कुरुतेबहून् ॥ ६ ॥

अर्थ–आमातिसारीको पूर्वही संग्राही औषध अर्थात् दस्तोंके रोकनेवाली औषध न देवे । कारण यहहै कि विनासमयके मलको रोकनेसैं वह मल अनेकविकारोंको करताहै ।

दण्डकालसकाध्मानग्रहण्यर्शोभगन्दरान् । शोथपाण्ड्वामयप्लीहगुल्ममेहोदरज्वरान् ॥ ७ ॥ डिम्भस्थःस्थविरस्थश्ववातपित्तात्मकश्चयः । क्षीणधातुबलस्यापिबहुदोषोतिविश्रुतः ॥ ८ ॥ आमोपिस्तंभनीयःस्यात्पाचनान्मरणंभवेत् ।

अर्थ–परंतु इतने रोगियोंके आमकाभी स्तंभन करना चाहिये । जैसे दंडक, अलसक, अफरा, संग्रहणी, बवासीर, भगंदर, सूजन, पांडु, प्लीह, गोला, प्रमेह, उदर, ज्वर, बालक, बुड्ढा, वातपित्तात्मकरोगी, क्षीणधातु और क्षीणबलवाला, जिसको अत्यंत दस्त होगएहो इतने रोगियोंकी आमभी स्तंभन करने योग्यहै । इन रोगियोंकी आम पाचन करनेसैं मरण होताहै ।

अतिसारेबलवतोलंघनंभेषजंपरम् ॥ ९ ॥ जलमष्टावशेषंचननोवाप्यधिकंश्रृतम् । लंघनैःक्वथितैस्तोयैरतीसारंविपाचयेत् ॥ १० ॥ लंघनएवदोषोदुःसहापिपासायां । दोषपाकार्थंषडङ्गविधिनार्द्धश्रृतम् ॥ ११ ॥

अर्थ–बलवान् पुरुषको अतिसारमें लंघन करानाही मुख्य औषध है और अष्टावशेष जलका अथवा इसमेंभी अधिक औटाजलका देना हितहै । अतिसारको

लंघन और ओटाए हुए पानीसेही पाचन करे दुःसह दोषकी प्यासमें दोषके पाकार्थ षडंगविधिकरके अर्द्धावशिष्ट पानीको शीतल करके देवे।

योगचतुष्टयमाह।

धान्याम्बुभ्यांशृतंतोयंतृष्णादाहातिसारिणे । ह्रीबेरशृंगवेराभ्यांमुस्तापर्पटकेनवा ॥ १२ ॥ मुस्तोदीच्यशृतंशीतंप्रदातव्यंपिपासवे । वत्सकातिविषाबिल्वमुस्तावालकजंशृतम् ॥ १३ ॥ अतीसारंजयेत्सामंचिरजंरक्तशूलजित् ।

अर्थ–अब योगचतुष्टय कहतेहैं। जैसे धनिया, नागरमोथा इनको डालकर ओंटाया हुआ जल अतिसारवालेकी प्यास और दाहको दूर करे। अथवा नेत्रवाला, अदरख, नागरमोथा, पित्तपापरेके काढेसे तृषाशांति होय। अथवा नागरमोथा और नेत्रवाला डालके ओंटाया जल शीतलकरके देय तो प्यास नष्ट होय। अथवा कूडाकी छाल, अतीस, वेलगिरी, नागरमोथा और नेत्रवाला इनका काढा ओंटाय शीतलकरके देवे तो आमसहित और प्राचीन अतिसार तथा रक्तशूलको जीते।

धान्यपंचकम्।

धान्यंबिल्वंनागरंचवालकंमुस्तकंतथा ॥ १४ ॥
क्राथोयंपाचनःशूलविबंधवह्निमांद्यजित् ।

अर्थ–धनिया, वेलगिरी, सोंठ, नेत्रवाला और नागरमोथा यह धान्यपंचकक्राथ पाचनहै। शूल, विबंध और मंदाग्निको दूर करे।

मधुहरीतकी।

त्रिकण्टकैरण्डबिल्वैःसाधितायवकांजिके ॥ १५ ॥
आमातीसारशूलानिजयेत्क्षौद्रान्विताशिवा ।
केवलावातथास्विन्नामधुनाग्राहिणीमता ॥ १६ ॥

अर्थ–गोखरू, अंडकी जड, वेलगिरी इन औषधोंको कूट जौंकी कांजीमें मिलावे उस कांजीमें हरडोंको ओंटावे १ हरड सहतके साथ खाय तो आमातिसार, शूल, दूर होय। और केवल हरडमात्रको भूनकर सहतके साथ खाय तो दस्तोंको रोकती है।

शुण्ठीपुटपाकः।

महौषधंसूक्ष्मचूर्णकृत्वातोयेनपेषयेत् । ततस्तुगोलकंकृत्वा लेपयेत्तदनन्तरम् ॥ १७ ॥ वातारिमूलकल्केनश्रीपत्रैर्वेष्ट-

येत्ततः । सूत्रबद्धंमृदालिप्तंमृदुवह्नौविपाचयेत् ॥ १८ ॥ सुस्विन्नंगोलकंतत्तुस्फोटयित्वासमुद्धरेत् । शीतीभूतंमधुयुतं खादेट्टङ्कद्वयोन्मितम् ॥ १९ ॥ अथतक्रेणगव्येनसहदेयं पलेनच । योगोऽयंकफवातोत्थदुष्टातीसारनाशनः ॥ २० ॥ शोफकासहरःकान्तिकरोत्यग्निविवर्द्धनः ।

अर्थ—सोंठको महीन कूट जलसें पीसे फिर उसका गोला बनाय उसको अंडकी जडके कल्कसें लपेट ऊपर बेलके पत्तोंसें लपेट देवे । फिर उसके ऊपर डोरा लपेट गीली मिट्टी लगाय गोला बनावे इस गोलेको मंदाग्निसे पचावे । जब अच्छी, रीतिसें परिपक्व होजावे तब इस गोलेको फोडकर सोंठको निकाललेवे । जब वो शीतल होजावे तब इसको सहतके साथ ८ मासे [या छः मासे] के अनुमान खाय अथवा छाछके या मक्खनके या मांसयूषके साथ देय, यह योग कफवातोत्थ दुष्ट अतीसारोंको नष्ट करे । सूजन और खांसीको दूर करे, अग्निको बढावे और कान्ति करेहैं ।

प्रकारान्तरमाह ।

शुण्ठीचूर्णंघृताभ्यक्तंकिञ्चिदेरण्डपत्रजैः ॥ २१ ॥ वेष्टितंविपचेन्मंदंशिखिनापुटपाकतः । तच्चूर्णंसितयायुक्तमामशूलातिसारनुत् ॥ २२ ॥

अर्थ—अथवा सोंठके चूर्णको घीमें सान अंडके पत्तोंमें लपेट पुटपाककी विधिसें मंदाग्निपर पचावे फिर इसके चूर्णको खांडके साथ खाय तो आमशूल, और अतिसार दूर होय ।

इति अतिसारचिकित्सा ।

अथ रक्तातिसारचिकित्सा ।

मुस्तावत्सकमोचामोचरसोबिल्वधातकीलोध्रम् ।
गुडमथितसंप्रयुक्तंगङ्गामपिवेगवाहिनींरुंध्यात् ॥ १ ॥

अर्थ—नागरमोथा, कूडाकी छाल, मोचा, मोचरस, बेलगिरी, धायके फूल और लोध्र इनको गुडके जलके साथ लेवे तो गंगाके प्रवाहसमानभी अतिसारका वेग रुके ।

कुटजादिक्काथः ।

वत्सकतरुत्वगार्द्रादाडिमफलसम्भवात्वक्चात्वग्युग-

लंपलमानंविपचेदष्टांशसम्मितेतोये ॥ २ ॥ अष्टमभा-
गेशेषेक्काथंमधुनापिबेत्पुरुषः।रक्तातिसारमुल्बणमति-
शयनिर्न्नाशयेन्नियतम् ॥ ३ ॥

अर्थ-कूडाकी छाल गीली २ तोले, और अनारके फलकी छाल २ तोले इनको ८ आठगुने पानीमें औटावे। जब जलका आठवा हिस्सा बाकी रहे तब उतार इस क्काथमें सहत मिलायके पीवे तो प्रबल रक्तातिसारको निश्चय दूर करे।

अजाजीनिर्यासःकरभतरुजोजातिजफला-
हिफेनोलेलीतःकरकरसपिष्टःकरकजे ॥
पुटेकृत्वापाच्यःपुटपचनवत्तण्डुलजलैः
सुपक्कःसंलीढोधरणमितमस्रातिसृतिषु ॥ ४ ॥

अर्थ-जीरा, राल, मोचरस, जायफल, अफीम और गंधक इन सबको अनारके छिलकाके रससें पीस अनारके पत्तेमें पुटपाककी विधिसें पचन करावे। फिर इस-मेंसें ४ मासे चावल धोवनके पानीसें लेय तो रक्तातिसार दूरहोय।

अजमोदामोचरसंसशृङ्गवेरंसधातकीकुसुमम् ।
गोमथितसंप्रयुक्तंगङ्गामपिवेगवाहिनीं रुंध्यात् ॥ ५ ॥

अर्थ-अजमोद, मोचरस, अदरख, धायकेफूल इन सबका चूर्ण ३ मासे ले गौकी छाछके साथ पीवे तो गंगाके समानभी दस्तोंका प्रवाह रुके।

गंगाधररसः

मुस्तंमोचरसंलोध्रंधातकीबिल्वकौटजं । अहिफेनंरसंगंधंसू-
क्ष्मचूर्णानिकारयेत् ॥ ६ ॥ वल्लमात्रामिदंखादेद्गुडतक्रसम-
न्वितम् । अतीसारेप्रवाहेचग्रहण्यांचाविशेषतः ॥ ७ ॥

अर्थ-नागरमोथा, मोचरस, लोध, धायके फूल, बेलगीरी, इन्द्रजौ, अफीम, पारा, गंधक इन सबको महीन पीस २ रत्ती गुड छाछके साथ खाय तो अतीसार, प्रवाहिका, संग्रहणी इनको दूर करे।

दाडिमीवटी

शुण्ठीजातीफलंचाहिफेनंद्विगुणमन्तिमात् । अपक्कदाडि-
मीबीजंकोशोक्षिप्त्वाखिलंहितत् ॥ ८ ॥ पुटपाकविधानेन
पक्त्वाकोशसमन्वितम् ।पिष्ट्वाकल्कंविधायाथगुटिकांसंप्रक-

ल्पयेत् ॥ ९ ॥ बदरास्थिप्रमाणेनतक्रेणसहदापयेत् । प-
क्वातीसारशमनीदाडिमीवटिकामता ॥ १० ॥

अर्थ-सोंठ ४ मासे, जायफल २ मासे, अफीम १ मासा इन सबके समान कच्चे अनारके दाने ले, सबको कूट पीस कच्चे अनारके भीतर भर पुटपाककी विधिसें पक करके फिर पीस कल्ककर इसकी गोली बेरकी गुठलीके समान बनावे, एक गोली छाछके साथ भक्षण करे तो यह दाडिमीवटी पक्कातीसारको दूर करे।

द्वितीयादाडिमीगुटिका

विश्वामोचरसंबिल्वंमधुयष्टीमिसिस्तथा । अहिफेनंचखर्जू-
रंसमभागंविचूर्णयेत् ॥ ११ ॥ शेषंपूर्ववद्विधानं ।

अर्थ-सोंठ, मोचरस, बेलगिरी, मुलहटी, सोंफ, अफीन और छुहारा ये सब सम-भाग ले पूर्वोक्त दाडिमीवटीके अनुसार बनायलेवे और गुणभी उसीके समान है।

सर्वातिसारहारिणी गुटिका

शृंगवेरप्रतिविषाबिल्वमोचरसेनच ।
भुजङ्गगुडसंयुक्तासर्वातीसारनाशिनी ॥ १२ ॥

अर्थ-अदरख, अतीस, बेलगिरी, मोचरस, नागेश्वर अथवा पानका रस और गुड इनकी गोली सर्वप्रकारके अतिसारोंको दूर करे।

अहिफेनंसुसंमृष्टंखर्परेमृदुवह्निना ।
पक्वातीसारशमनंभेषजंनात्यतःपरम् ॥ १३ ॥

अर्थ-अफीमको खिपडेमें मंदाग्निसें भूने, पक्कातिसार शमन करनेवाली इस्से और दूसरी औषधी नहींहै (अर्थात् यह पक्कातिसार दूरकरनेको सर्वोत्तम योगहै ।)

मुक्ताभस्मयोगः

मुक्ताभस्मेतिनामेदंदोषंदृष्ट्वाप्रकल्पयेत् । गुंजार्धमेकगुञ्जंवा
कर्पूरेणसुवासितम् ॥ १४ ॥ जातीफलादिसंयुक्तंरहस्यंपर-
मंमतम् ।

अर्थ-अतिसारवाले रोगीके दोषको विचार आधरत्ती या एकरत्ती मोतीकी भस्म भीमसेनीकपूर और जायफलमें मिलायकर देवे तो सर्वप्रकारके अतीसार दूर होवे । यह प्रयोग परम रहस्यहै ।

जातीफलादिवटी

जातीफलंचखर्जूरमाहिफेनंतथैवच ॥ १५ ॥ समभागानि

सर्वाणिनागवल्लीरसेनच । चणकमात्रावटीकार्यादेयातक्रा-
नुपानतः ॥ १६ ॥ अतीसारंजयेद्घोरंवैश्वानरइवाहुतिम्।

अर्थ-जायफल, छुहारा, और अफीम ये समानलेय इनको नागरवेल पानके रसमें चनेके समान गोली बनावे एक गोली छाछके साथ देय तो घोर अतिसारको दूरकरे ।

जातीफलौषधिशिवाविडहिङ्गुजीरगंधद्विशोमथितकल्कितरा-
जिकंच ॥ अङ्गारभर्जितमरिष्टसुपिष्टमिष्टंतक्रेणसंमिलितमा-
मगदग्रहण्योः ॥ १७ ॥

अर्थ-जायफल, सोंठ, आमले, वायविडंग, हींग, जीरा ये प्रत्येक एक एक भाग, गंधक दोभाग इन सबको कूट पीस राईके कल्कमें घोट टिकिया बनावे, फिर उस टिकियाको अंगारोंपर भून पीसके छाछके साथ देवे तो आमातिसार और संग्रहणीको दूरकरे ।

शोथघ्नीन्द्रयवापाठाविड़ंगातिविषावना ।
क्वथिताशोषणापीताशोथातीसारनाशनाः ॥ १८ ॥

अर्थ-सोंठकी जड, इन्द्रजौ, पाढ, वायविडंग, अतीस और नागरमोथा इन सबका काढाकर और उसमें कालीमिरचका चूर्ण डालके पीवे तो शोथातिसार दूरहोय ।

आम्रास्थिमध्यमालूरफलक्वाथःसमाक्षिकः ।
शर्करासहितोहन्याच्छर्द्यतीसारमुल्बणम् ॥ १९ ॥

अर्थ-आमकी गुठली, वेलगिरी, इनका क्वाथकर उसमें सहत और खांड मिलाकर पीवे तो छर्द्यतीसारको दूरकरे ।

कषायोभृष्टमुद्गस्यसलाजमधुशर्करः ।
निहन्याच्छर्द्यतीसारंतृष्णादाहंज्वरंभ्रमम् ॥ २० ॥

अर्थ-भुनीहुई मूंग, चावलोंकी खील, इनका काढाकर उसमें सहत और खांड मिलाकर पीवे तो अतीसार, वमन, तृष्णा, दाह, ज्वर और भ्रमको दूर करे ।

अतीसारे अपथ्यम् ।

नवान्नोष्णगुरुस्निग्धभोजनंतापसेवनम् ।
व्यायामंमैथुनंचिन्तामतीसारीविवर्जयेत् ॥ २१ ॥

अर्थ-नवीन, गरम, भारी और चिकने अन्नका भोजन अग्नि अथवा धूमका सेवन दंडकसरतकरना मैथुन और चिंताकरना इनको अतिसारवाला त्यागदेवे ।

इति श्रीवैद्यरहस्ये अतीसाराधिकारः समाप्तः ।

अथ संग्रहणीचिकित्सा ।

ग्रहणीमाश्रितंदोषमजीर्णवदुपाचरेत् । लंघनैर्दीपनीयैश्चस-
दातीसारभेषजैः ॥ १ ॥ दोषंसामंनिरामंचविद्यात्तत्रातिसा-
रवत् । अतीसारोक्तविधिनातस्यामंचविपाचयेत्॥ २ ॥ पे-
यादिपटुलघ्वन्नपञ्चकोलादिभिर्युतम् । दीपनानिचतक्रंचग्र-
हण्यांयोजयेद्भिषक् ॥ ३ ॥

अर्थ-यदि दोष ग्रहणीके आश्रित हो अर्थात् ग्रहणीमें जाय पहुचे होय तो उनको अजीर्णरोगके समान यत्न करना चाहिये । जैसे लंघन, दीपन और सदैव अतिसारकी औषधोंकरके यत्न करे । और अतिसारके सदृश दोषोंका साम और निरामता जानना । यदि दोष साम होय तो उनका अतिसारोक्तविधिसें पाचन करे, तथा पेयादि हलके अन्नोंकरके और पंचकोलादिकरके पाचन करे । एवं संग्रहणीमें दीपनकर्ता औषध दे और तक्रका पान करना चाहिये ।

दुःसाध्योग्रहणीरोगोभेषजैर्नैवशाम्यति । सहस्रशोऽपि
विहितैर्विनातक्रस्यसेवनात् ॥४॥ दोषधातुबलापेक्षा-
ग्रहण्यांतक्रमापिबेत् । नतक्रसेवीव्यथतेकदाचिन्नतक्र-
दग्धाःप्रभवंतिरोगाः ॥ ५ ॥

अर्थ-दुःसाध्य ग्रहणीरोगकी हजारों उचित औषधोंसे शांति नहीं होती इसके दूर करनेको केवल तक्र कहा है । दोषधातुबलके अनुसार रोगी छाछ पीवे जो मनुष्य नित्यप्रति तक्र सेवन करते हैं वो कदाचित् व्यथित नहीं होते, और तक्र-द्वारा जो रोग नष्ट हुए है वो फिर कदाचित् नहीं होते ।

लघुलाईचूर्णम् ।

कर्षंगंधकमर्द्धपारदमुभेकुर्य्याच्छुभांकज्जलीमक्षंत्र्यूषणतश्चपं-
चलवणंसार्द्धंचकर्षंपृथक् । भृष्टंहिंगुजजीरकद्वययुतंसर्वार्द्धंभ-
ङ्गान्वितंस्वादेद्दंकामितंप्रवृत्तगदवांस्तक्रेणबिल्वेनच ॥ ६ ॥

अर्थ-१ तोला गंधक, ६ मासे पारा दोनोंकी कज्जली करे; फिर इसमें त्रिकुटा १ तोला, पांचो नोन पौन २ पैसेभार ले, तथा भुनी हींग, दोनों जीरे, प्रत्येक डेढ डेढ तोले लेवे; और सब औषधोंसे आधी भांग लेवे सब कूट पीस चूर्ण कर लेवे इसमेंसें ४ मासेके अनुमान संग्रहणीरोगवाला छाछके या बेलके साथ खाय।

जातीफलादिचूर्ण ।

जातीफलाग्निहिमवेल्लतिलेन्दुजीरवांसीत्रिकत्रयमनक्षमिभोनतश्च । तालीसदेवकुसुमेअपिचूर्णमेषांद्विःशर्करंसमसुभृंगभवंग्रहण्याम् ॥ ८ ॥

अर्थ-जायफळ १ तोले, चित्रक १ तोले, चंदन १ तोले, कालीमिरच १ तोले, तिल १ तोले, कपूर ६ मासे, जीरा १ तोले, वंशलोचन १ तोले, हरड १ तोले, आमला १ तोले, गजपीपल १ तोले, तगर १ तोले, तालीसपत्र १ तोले, और लोंग १ तोले, भुनी भांग १३॥ तोले, और मिश्री २७ तोले, लेय, इसकी मात्रा ६ मासेकी है यह संग्रहणीको दूर करे ।

कामेश्वरमोदक ।

धात्रीसैंधवकुष्ठकट्फलकणाशुंठीयवानीद्वयं यष्टीजीरकयुग्मधान्यकसटीभृंगीजयाकेशरम् । तालीसंत्रिसुगंधिकंसमरिचंमेथ्याख्यमिश्यान्वितं चूर्णीकृत्यसमानकंफलयुतंभृष्टंच शक्रासनम् ॥ ९ ॥ सर्वैस्तुल्यमतःसितांसुविमलांवध्वाक्षभांडेक्षिपेत्कर्पूरैरपिचूर्णितामापिचसंदत्वाचभृष्टांस्तिलान्। सर्वव्याधिहरंक्षयंक्षयकरंकुष्ठापहंबृंहणं स्त्रीणांतोषकरंपरंश्रुतिधरंशुक्राग्निवृद्धिप्रदम् ॥ १० ॥ कासश्वासबलासरोगनिचयप्रध्वंसनंप्राणिनांब्रूतेब्रह्मसुतोमहेन्द्रपुरतोकामेश्वरंमोदकम् ।

अर्थ-आमले, सैंधानिमक, कूठ, कायफर, पीपल, सोंठ, अजमायन, अजमोद, मुलहटी, सपेद जीरा, काला जीरा, धनिया, कचूर, काकडासिंगी, हरड, नागकेशर, तालीसपत्र, त्रिसुगंध, कालीमिरच, मेथी, सौंफ, जायफल, ये सब समानभाग ले सब औषधोंकी बराबर भुनी भांग ले, और भांगसहित सबकी बराबर मिश्री मिलावे सबको एकत्र कर बहेडेके समान गोली बनाय उत्तम पात्रमें भरकर धरदेवे इसमें भीमसेनी कपूर और भुने तिल औषधके प्रमाण मिलाने चाहिये । इसके सेवन करनेसे सर्वरोगमात्र दूरहो विशेषकरके क्षय, कुष्ठ, श्वास,

खांसी, कफ आदि रोगको दूर करे, बृंहणहै, स्त्रियोंको आनंददायी, अत्यंत शुक्रका बढानेवाला, जठराग्निवर्द्धक है यह प्रयोग दक्षप्रजापतिनें इन्द्रके आगे कहाहै इसको कामेश्वरमोदक कहते हैं ।

कपित्थाष्टकचूर्णम् ।

अष्टौशाणाःकपित्थस्यषट्शाणाःशर्करास्मृता । अजमोदाच पिप्पल्यःश्रीफलंधातकीतथा ॥ ११ ॥दाडिमंतिंतिडीकंचप्र- त्येकंस्यात्रिशाणकम्।सौवर्चलंयवानीचग्रंथिकंवालकंतथा॥१२॥ मरिचंजीरकंधान्यंचातुर्जातंसचित्रकम् । महौषधंचप्रत्येकंग्रा- ह्यमेकैकशाणकम् ॥ १३ ॥ कपित्थाष्टकनामेदंचूर्णंहन्याद्ग- लामयान् । अतीसारंक्षयंगुल्मंग्रहणींचव्यपोहति ॥ १४ ॥

अर्थ-कैथ टंक ८, मिश्री टंक ६, अजमाद, पीपल, वेलगिरी, धायके फूल, अनारदाना, तंतडीक, प्रत्येक तीन तीन टंक लेवे; कालानोन, अजमायन, पीपरामूल, नेत्रवाला, मिरच, जीरा, धानियां, चातुर्जात, चित्रक, और सोंठ प्रत्येक एक एक टंक लेवे । सबको कूट पीस चूर्ण बनावे यह कपित्थाष्टक चूर्ण गलेके रोग, अतीसार, क्षय, वायगोला, और संग्रहणीको दूर करे ।

अथ दाडिमाष्टकम् ।

पलद्वयंदाडिमस्यव्योषस्यचपलद्वयम् ।त्रिगंधस्यपलंचैकंखं- डस्याष्टपलानिच ॥ १५ ॥ सर्वमेकीकृतंचूर्णप्रशस्तंदाडि- माष्टकम् । दीपनंरुचिदंस्वंस्वंसंग्राहीग्रहणीहरम् ॥ १६ ॥

अर्थ-अनारदाना २ पल, त्रिकुटा २ पल, त्रिसुगंधि १ पल, मिश्री ८ पल, सबका चूर्ण कर धररखे, यह दाडिमाष्टकचूर्ण दीपन, रुचिदायक, संग्राही, और संग्रहणीको दूर करे ।

द्वितीयदाडिमादिचूर्णम् ।

दाडिमस्यपलान्यष्टौपलंसौगंधिकस्यच । पृथक्पलांशकान् भागान्त्रिकटुग्रंथिकस्यच ॥ १७ ॥ त्वक्क्षीरीवालकंचैवद- द्यात्कर्षसमंभिषक् । शर्करायापलान्यष्टौतदेकस्थंविचूर्ण- येत ॥ १८ ॥ आमातिसारशमनंकासहृत्पार्श्वशूलनुत् । हृद्रोगमरुचिंगुल्मंग्रहणीमाग्निमार्दवम् ॥ १९ ॥ प्रयुक्तोना- शयत्येपचूर्णोयंदाडिमाष्टकः ।

अर्थ-अनारदाना ८ पल, त्रिसुगंध १ पल, त्रिकुटा, पीपरामूल,-प्रत्येक १ एक-एक पल, वंसलोचन नेत्रवाला. एकएक तोले, मिश्री ८ पल, इन सबको एकत्र पीस चूर्णकरे । यह आमातिसार, खाँसी, हृदयशूल, पसवाडेका शूल, हृद्रोग, अरुची, गुल्म, संग्रहणी, और मंदाग्नि इन सब रोगोंको यह दाडिमाष्टकचूर्ण दूर करताहै ।

अभ्रकवटी

रसंगंधंविषंव्योषंटंकणंलोहभस्मच ॥ २० ॥ अजमोदाहि-फेनंचसर्वतुल्यंमृताभ्रकं । चित्रकत्वक्कषायेणमर्दयेद्यामभा-त्रकम् ॥ २१ ॥ मरिचाभंवटीकृत्वाखादेदेकांजयेदसौ । च-तुर्विधांचग्रहणींरहस्यंतादिदंस्मृतम् ॥ २२ ॥

अर्थ-पारा, गंधक, विष, त्रिकुटा, सुहागा, लोहकी भस्म, अजमोद, अफीम, ये सब औषध समानले; सबकी समान अभ्रककी भस्म लेवे । सबको खरलमें डारके १ प्रहर चीतेके काढेसैं खरलकरे । फिर मिरचके समान गोली बनावे । १ गोली नित्यप्रति खाय तो चार प्रकारकी संग्रहणीको दूर करे, यह गोप्य औषधी है ।

ग्रहणीकपाटरसः

गंधंपारदमभ्रकंचदरदंलोहंचजातीफलंबिल्वंमोचरसंविषंप्रति-विषंव्योषंतथाधातकी । भृष्टामप्यभयांकपित्थजलदौदीप्या-नलौदाडिमंटंकाद्भस्मकलिंगकंकनकजंबीजंचयक्षेक्षणम् २३ ॥ एतत्तुर्यमफेनमेतदखिलंसंमर्द्यसंचूर्णयेत् धत्तूरच्छदजैरसैश्चम-तिमान्कुर्यान्मरीचाकृतिम् । दत्तासाग्रहणीगदंसरुधिरंसामंस-शूलंचिरातीसारंविनिहंतितूर्त्तिसहितांतीव्रांविषूचीमपि॥२४॥ दुःसाध्यामपियेविशींपरिहरेदुक्तानुपानैरयंनाम्नातुग्रहणीमतंग-जमदध्वंसीभकंठीरवः ॥ २५ ॥

अर्थ-गंधक, पारा, अभ्रक, सिंगरफ, लोह, जायफल, बेलगिरी, मोचरस, सिंगियाविष, अतीस, त्रिकुटा, धायके फूल, भूनीहरड, कैथकागूदा, नागरमोथा, अजमायन, चीता, अनारदाना, शंखभस्म, इन्द्रजौ, धतूरेके बीज, राल, प्रत्येक समान ले और सबकी चतुर्थांश अफीम लेवे, सबको कूट पीस चूर्ण करे. इसमें धतूरेका रस डालके गोल मिरचके समान गोली करे, इसके सेवनसैं रुधिरयुक्त, साम और शूलयुक्त संग्रहणी, बहुत दिनोंका अतीसार, तथा चोटनीयुक्त विशूचिका और अनेक प्रकारके दुःसाध्य रोगोंको यह अनुपानके साथ दूर करे ।

द्वितीयग्रहणीकपाटरसः

पारदाद्द्विगुणोगंधस्ताभ्यांतुल्यंकटुत्रिकम् । अजाजीटंकणंधान्यंहिंगुजीरयवानिका ॥ २६ ॥ प्रत्येकंद्विगुणंसूताद्रुचकंचचतुर्गुणम् । सर्वेषांचसमादेयादग्धासुज्ञैर्वराटिका ॥ २७॥ सर्वमेकीकृतंचूर्णमाषद्वयमितंततः । तक्रेणालोडयमतिमान्भक्षयेत्सततंनरः । ग्रहणीकपाटकोह्येषहितःस्याद्ग्रहणीगदे ॥२८॥

अर्थ–पारा १ भर, गंधक २ भर, त्रिकुटा ३ भर, जीरा, सुहाग, धनिया, हींग, अजमायन, प्रत्येक दो दो रुपे भर, सौचरनोन ४ तोले, और सबकी बराबर कौडिकी भस्म ले, सबका चूर्णकर २ माशे छाछके साथ सेवन करे तो यह ग्रहणीकपाटरस संग्रहणीको दूर करे ।

यैर्लक्षणैःसिद्ध्यतिनातिसारैस्तैःस्यादसाध्योग्रहणीगदोऽपि । वृद्धस्यजायेतयदागदोऽयंदेहंतदातस्यविनाशमृच्छेत् ॥२९ ॥

अर्थ–जिन लक्षणोंसें अतिसार रोग असाध्य कहाहै वोही लक्षणोंसें संग्रहणी रोगभी असाध्य जानना यदि यह संग्रहणी रोग वृद्ध मनुष्यके हो तो उसकी मृत्यु होवे ।

ग्रहणीरोगे अपथ्यम्

पिच्छिलानिकठोराणिगुरूण्यन्नानियानिच ।
आमकृन्नैवसेव्यानिग्रहणीरोगिभिःक्वचित् ॥ ३० ॥

अर्थ–मलाईदार पदार्थ, कठोर, भारी, और आमकर्ता अन्नादिपदार्थ, ग्रहणीरोगवाले मनुष्यको त्याज्य है ।

अथार्शचिकित्सा ।

अर्शोऽतिसारग्रहणीविकाराःप्रायेणचान्योन्यनिदानभूताः ।
शान्तेनलेसंतिनसंतिदीप्तेरक्षेदतस्तेषुविशेषतोऽग्निम् ॥

अर्थ–बवासीर, अतिसार, और संग्रहणी ये रोग अन्योन्य एकसें दूसरा उत्पन्न होता है. ये रोग मंदाग्निके होनेसें होते है, और दीप्त अग्निमें नहीं होते अत एव इन उक्त रोगोंमें अग्निकी विशेषकर्के रक्षा करे ।

यद्वायोरनुलोम्याययदाग्निबलवृद्धये । अन्नपानौषधंसर्वंतत्सेव्यंनित्यमर्शसैः ॥ अर्शसामोषधैःक्षारैःशस्त्रेणचतथाग्निना । चिकित्सास्याच्चतुर्द्धैवंमुख्यंतत्रौषधंविदुः ॥

अर्थ–जो पवनको अनुलोम करे, और अग्निको तथा बलको बढावे, ऐसे अन्नपान और औषधीको नित्य बवासीरवाला सेवन करे । बवासीरकी चिकित्सा चार प्रकारकी है जैसे औषध, क्षार, शस्त्र, और अग्निकरके इनमें मुख्य औषध चिकित्सा है ।

अर्शांसिभिन्नवर्चांसिवातातीसारवद्दिशेत् । उदावर्तान्विधानेनगाढविट्काण्युपाचरेत् ॥ ऊर्ध्वजान्शोणितवहान्पित्तशोणितनाशनैः । योगैरुपाचरेत्तक्रंविड्बंधेतुप्रशस्यते ॥

अर्थ–जिनबवासीरोंमेसैं बराबर मल निकलता होय उनकी वातातिसारके समान चिकित्सा करे, और जिनसैं गाढा मल निकलता होय उनकी उदावर्त्तके समान चिकित्सा करे, और ऊर्ध्वज तथा रुधिर वहनेवालीन्का पित्त और रुधिरनाशक चिकित्सा करे, एवं विड्बंधमें छाछका पीना हितकारी कहाहै ।

यवानीविश्वसंयुक्तंतक्रमर्शोनिबर्हणम् । घृतेसंभर्जितांपथ्यां पिप्पलीगुडसंयुतां ॥ भक्षयेद्वात्रिवृद्दन्तीसंयुतांचानुलोमनीं ।

अर्थ–अजमायन और सोंठ मिली छाछ पीना बवासीरको दूर करे । अथवा घृतमें भुनी हींग तथा गुडसंयुक्त पीपल अथवा निशोथ और दंतीके चूर्णको गुडमें मिलायके खाय तो बवासीर दूर होवे ।

मृल्लिप्तंसूरणंकन्दंपक्त्वाग्नौपुटपाकवत् ।
अद्यात्सतैललवणंदुर्नामविनिवृत्तये ॥

अर्थ–जिमींकंदपर कपरमिट्टीकर अग्निमें पुटपाककी विधिसैं पक्क कर तेल और नोनके साथ खाय तो बवासीर दूर होवे ।

कांकायनगुड ।

पथ्यादलस्यगुरुणःपलपंचकस्यादेकंपलंचमरिचादपिजीरकाच्च । कृष्णातदुद्भवजटाचविकाग्निशुंठ्यः कृष्णादिपंचकमिदं पलतःप्रवृद्धम् ॥ एतैररुष्करपलाष्टकसंयुतैःस्यात्कन्दस्तुरुष्करफलाद्द्विगुणःप्रकल्प्यः।स्याद्यावशूककुडवार्द्धमतःसमस्ताद्योज्योगुडोद्विगुणितो वटकीकृतश्च ॥ कांकायनेनमुनिनागदितः किलायंश्रेयस्करेण वटकोऽत्रगुदामयघ्नः । क्षाराग्निशस्त्रयतनैरपियेनसिद्धाःसिध्यंत्यनेनवटकेनगुदामयास्ते ॥

१ पित्तातीसारवद्दिशेदिति पाठांतरम् ॥

अर्थ–बडीहरडका वक्कल ५ पल, मिरच, जीरा, और पीपल प्रत्येक एकएक पल, पीपरामूल २ पल, चव्य ३ पल, चित्रक ४ पल, और सोंठ ५ पल, भिलाए ८ पल, जमीकंद १६ पल, जवाखार २ पल, और गुड सबसे दूना लेवे, सबको कूट पीस गुड मिलाय बहेडेके समान गोली बनावे । यह कांकायन मुनिका कहा हुआ है गुटका बवासीरको दूर करता है । जो बवासीर क्षार दागना और शस्त्रसें नहीं दूरहो वो इस गुटकासै दूर होती है ।

देवदालीकषायेणशौचमाचरतांनृणाम् ।
किंवातद्धूमसेवाभिःकुतःस्युर्गुदजाङ्कुराः ॥

अर्थ–घघरवेल(सोनैया)के काढेसें जो मनुष्य गुदाप्रक्षालन करता है अथवा घघरवेलकी मस्सेनको धूनी देवे तो मस्से अवश्य दूर हो । देवदालीको बंदालभी कहते हैं ।

सिंधूत्थदेवदाल्याश्चबीजंकांजिकपेषितम् ।
गुदाङ्कुरान्प्रलेपेनपातयत्युल्बणानपि ॥

अर्थ–सैंधानिमक, बंदालके बीज, इनको कांजीमें पीस मस्सेन्पर लेप करे तो घोरमस्सेभी गिरजावे ।

बृहत्सूरणमोदकः ।

सूरणषोडशभागावह्नेरष्टौमहौषधस्यास्य । अर्द्धेनभागयुक्तिर्मरिचस्यततोऽपिचार्द्धेन ॥ त्रिफलाकणासमूलातालीसारुष्करकृमिघ्नानाम् । भागामहौषधसमादहनांसातालमूलीच ॥ भागःसूरणतुल्योदातव्योवृद्धदारुकस्यापि । भृङ्गैलेमरिचांशे सर्वाण्येकत्रसंचूर्ण्य ॥ द्विगुणगुडेनयुक्तोसेव्योऽयंमोदकःप्रकामयनैः । नाशनशस्त्रक्षाराग्निभिर्विनाप्यर्शसामेषः॥ हिक्कांश्वासंकासंसराजयक्ष्माप्रमेहांश्च । प्लीहांस्तथाग्रहण्यांसम्यक्सेव्यं रसायनंपुंसां ॥

अर्थ–जिमीकंद १६ भाग, चित्रक ८ भाग, सोंठ २ भाग, मिरच १ भाग, त्रिफला पीपल, पीपरामूल, तालीसपत्र, भिलाए, वायविडंग, ये दोदो पल लेय मूसली ८ भाग, विधायरा १६ भाग, भांग, इलायची, और मिरच प्रत्येक एक एक भाग ले, सबको कूट पीस सबसें दूना गुड मिलाय गोली बनावे। इसका सेवन करनेसें बवासीर, हिचकी, श्वास, खांसी, खई, प्रमेह, तिल्ली, और संग्रहणीको दूर करे । जो शस्त्र, क्षार और अग्निके दागनेसें न दूर हो सो इस बृहच्छूरणमोदकसें दूर होवे.

कल्याणलवणम्

भल्लातकानित्रिफलादंतीचित्रकमेवच। समभागानिसर्वाणिसैन्धवंद्विगुणंभवेत् ॥ कपालपुटसंपक्वंमृदुनागोमयाग्निना। कल्याणलवणंनामश्रेष्ठमर्शोविकारिणाम् ॥

अर्थ–भिलाए, त्रिफला, दंती, और चीतेकी छाल, सब समान लेवे, और सेंधानोन एक औषधसें दूना लेवे इन सबको खिपडेमें डालके आरने उपलोंकी मंदाग्निसें भूने तो यह कल्याणलवण बवासीर रोगियोंको परमोत्तमहै।

कासीसादितैलम्।

कासीसंसैन्धवंकृष्णाशुंठिकुष्टंचलाङ्गली। शिलादिभिश्चमरिचंकृमिघ्नदन्तिचित्रकौ॥ हारितालंतथास्वर्णक्षीरीचैतैःपचेत्समैः। तैलंशुद्धार्कपयसागवांमूत्रैश्चतुर्गुणैः॥ एतदभ्यङ्गतोर्शांसिक्षारवत्पाचयेद्ध्रुवम्। क्षारकर्मकरोत्येतन्नचदूषयतेवलिम् ॥

अर्थ–कसीस, सेंधानिमक, पीपल, सोंठ, कूठ, कलयारी, मनशिल, काली मिरच, वायविडंग, दंती, चित्रक, हरिताल, और चोक ये प्रत्येक बराबर लेवे। आकका दूध, और तेलसें चौगुना गोमूत्र लेवे, सबको एकत्र कर तैल पककी विधिसें इस तेलको सिद्ध करे। इसके लगानेसें यह क्षारके समान मस्सोंको उखाड देवे, और क्षारके सदृश कर्म करता है परंतु गुदाकी वली (आँटो) को नही बिगाड करताहै।

नित्योदितोरसः

मृतसूताभ्रलोहार्कविषंगंधंसमंसमं। सर्वतुल्यांशभल्लातफलमेकत्रकारयेत् ॥ द्रवैःसूरणकंदोत्थैःखल्वेमर्द्यादिनत्रयं। माषमात्रंलिहेदाज्यैरसाध्यर्शांसिनाशयेत् ॥ रसोनित्योदितो नाममृत्युरोगकुलान्तकः।

अर्थ–पारेकी भस्म, अभ्रकभस्म, लोहभस्म, तामेकीभस्म, सिंगियाविष, गंधक सब समान लेवे सबकी बराबर भिलाए लेवे सबको जमीकंदके रससें तीन दिन खरल करे, १ माशे गौके घृतसें खाय तौ असाध्यभी बवासीर नष्ट होवे यह मृत्युरोगसमूहको नाश कर्त्ता रसको नित्योदित कहते हैं।

अर्शकुठारो रसः

शुद्धंसूतंपलैकंतुशुद्धगंधंपलद्वयम् ॥ मृतंताम्रंमृतंलोहंद्वयमेतत्पलत्रयम्। त्र्यूषणंलाङ्गलीदंतीबिल्वंचैवसाचित्रकम् ॥

प्रत्येकंद्विपलंयोज्यंयवक्षारंचटंकणम् । उभौपंचपलंग्राह्यंसैं-धवंपलपंचकं ॥ द्वात्रिंशत्पलगोमूत्रंस्नुहीक्षीरंचतत्समम् । मृद्वग्निनापचेत्स्थाल्यांयावत्तात्पिंडतांव्रजेत् ॥ खादेन्माषद्वय-मितंरसमर्शःकुठारकः ।

अर्थ–पारा १ पल, गंधक २ पल, तामेकीभस्म, लोहभस्म, दौनों ३ पल, त्रिकुटा कलयारी, दंती, बेलगिरी, और चित्रक प्रत्येक दो दो पल लेवे । जवाखार और सुहागो ये दोनो ५ पल, सैंधानिमक ५ पल, गोमूत्र ३२ पल, थूहरका दूध ३२ पल, इन सबको किसीपात्रमें भरके मंदाग्निसैं पचावे जब गोलासा होजावे तब उतारलेय । इसमेंसैं २ मासे नित्य खाय तो यह अर्शकुठार रस बवासीरको दूर करे ।

दुर्नामकुठाररसः

मरिचंपिप्पलीकुष्टंसैंधवंजीरनागरं ॥ वचाहिङ्गुविडंगानिप-थ्यावह्न्यजमोदकम् । एतेषांकारयेचूर्णंचूर्णस्याद्विगुणंगुडम् ॥ खादेत्कर्षमितंचापिपिबेदुष्णजलंततः । सर्वाण्यर्शांसिनश्यं-तिवातजानिविशेषतः ॥

अर्थ–मिरच, पीपल, कूठ, सैंधानिमक, जीरा, सोंठ, बच, हिंग, वायविडंग, हरड, चीता, अजमोद, सब समान लेवे और सब औषधोंमैं दूना गुड लेवे सबको मिलाय १ तोले गरम जलके साथ खावे तो सर्व प्रकारकी बवासीर नष्ट होवे । परंतु वातकी बवासीरको विशेष फायदा करे है ।

वृद्धदारुमोदकः ।

वृद्धदारुकभल्लातंशुंठीचूर्णेनयोजयेत् ।
सगुडोमोदकोहन्यात्षड्विधार्शःकृतांरुजम् ॥

अर्थ–विधायरो, भिलाए और सोंठ, सबके चूर्णको मिलाय दूने गुडसैं लड्डु बनावे तो यह छः प्रकारकी बवासीरको दूर करे ।

तुषंकणिकसत्वस्यशक्राशनदलान्वितम् ।
समंचूर्णीकृतंपायौधूपोऽर्शोघ्नस्तुतत्क्षणात् ॥

अर्थ–गेहूके आटेकी भूसी और भांग बराबर ले चूर्ण कर धूनी देनेसैं तत्क्षण बवासीर दूर होवे ।

पंचाङ्गमार्कमनलेविधिवद्विदग्धंक्षारंप्रकल्पितबुधैःसममस्य

योज्यम् । सिंदूरमुत्तमामिदंद्विशिखंडयुक्तंलेप्यंनिवर्घ्यगुदजा-
निसुखर्परेण ॥ तेषामुपर्य्युपरिभक्तदधिंप्रलिंपेदुद्घाटयेद्गतव-
तित्रितयेदिनानाम् । एवंपतन्तिगुदजान्यचिरेणनूनंदृष्टंमया
बहुशएतदनन्यथास्ति ॥

अर्थ–आकके पंचांगको अग्निमें भस्मकर क्षार बनावे, यह आकका क्षार टके-भर, सिंदूर टकेभर, नीलाथोथा टकेभर सबको एकत्र करे । फिर खिपडेके टूकसें बवासीरके मस्सोंको खुजलाकर उक्त आकक्षारआदिका लेपकरे, फिर उसके ऊपर दहीभात बांधे तीन दिनके बाद उनको खोले तो गुदाके मस्से अवश्य गिर पडे यह प्रयोग हमारा अनेकवार अनुभव कराहुआ है ।

विश्वोपकुल्योषणनागपत्रकंत्वगेलिकाचूर्णितमुत्तरोत्तरम् ।
विवर्द्धितंतुल्यसितंप्रभक्षणादर्शोऽग्निमांद्यारुचिगुल्महृद्गदम् ॥
सश्वासकंठामयमामवातंहन्याद्यथासिंहइभंप्रमत्तम् ।

अर्थ–सोंठ, पीपल, काली मिरच, नागकेशर, पत्रज, दालचीनी, इलायची, प्रत्येक एकसें दूसरी दूनी लेवे । सबका चूर्णकर सबकी बराबर मिश्री मिलायके १ तोले भक्षण करे तो बवासीर, मंदाग्नि, अरुचि, गोला, हृद्रोग, श्वास, कंठके रोग, आमवात, इन सबको यह दूर करे ।

लाक्षाहरिद्रामधुकंमंजिष्ठानीलमुत्पलम् ॥ अजाक्षीरेणसं-
पीतंरक्तजार्शोविनाशनम् ।

अर्थ–लाख, हरदी, मुलहटी, मजीठ, नील, नीला कमल, इनके चूर्णको बकरीके दुधके साथ पीवेतो खूनी बवासीर दूर होवे ।

रक्तौघशांतयेदेयंगुदेकर्पूरधूपनम् ॥

अर्थ–यदि मस्सोंमेंसें अत्यंत खून वहता होवेतो गुदामें कपूरकी धुनी देवे ।

विषमुष्टिभवंबीजंषट्कसप्ताष्टवापिच । चूर्णितंससितंभक्षेद्र-
क्तार्शोविनिवारणम् ॥ महाप्रमेहशमनंत्वग्दोषक्रमिनाशनम् ॥

अर्थ–कुचलाके ६ या ७ या ८ बीजोंको पीस मिश्री मिलायके खावेतो खूनी बवासीर, घोर प्रमेह, त्वचाके दोष (कुष्ठादि) और कृमिरोग दूर होवे परंतु कुच-लाको वैद्य बलाबल देखकर देवे क्योंकि यह विष है ।

चंदनकिराततिक्तकधन्वयाससनागराक्वथिता । रक्तार्शसांप्रशमनादार्वीत्वगुशीरनिम्बावा ॥

अर्थ—लालचंदन, चिरायतो, कुटकी, धमासो, और सोंठ, इनका काढाकरके पीवे तो खूनीववासीर दूर होय । अथवा दारुहलदी, तज, खस, और नीमकी छालका काढा पीवे तो ववासीर दूरहो ।

नवनीततिलाभ्यासात्केशरनवनीतशर्कराभ्यासात् ।
दधिरसमथिताभ्यासाद्गुदजाःशाम्यंतिरक्तवहाः ॥

अर्थ—मक्खन और तिलके सेवनसे, अथवा केशर मक्खन और मिश्रीके साधनसें, अथवा दहीकी छाछ पीनेसें खूनी बवासीरके मस्से शांत होवे ।

विबंधेर्शसिचोत्सन्नेकंडूमद्रक्तवाहिनी ।
जलौकापातनादन्यःप्रयोगोनास्तिकश्चन ॥

अर्थ—ववासीरके मस्से बहुत ऊंचे उठ आएहो और उनमें खुजली और रुधिर वहताहो तो वैद्य उनमें जोख लगा कर रुधिर निकाले यह सर्वोपर उपाय है ।

कुटजावलेह ।

कुटजत्वक्पलशतंजलद्रोणेविपाचयेत् । अष्टभागावशेषंतुकषायमवतारयेत् ॥ वस्त्रपूतंपुनःक्वाथ्यंपचेल्लेहत्वमागतम् । मुस्तंमोचरसंलोध्रंकपित्थफलधातकी ॥ भल्लातकविडंगानि त्रिकटुत्रिफलास्तथा । रसांजनंचित्रकश्चकुटजश्चफलानिच ॥ वचामातिविषांबिल्वंप्रत्येकंचपलंपलं । त्रिंशत्पलंगुडस्यात्रचूर्णीकृत्यानिधापयेत् ॥ मधुनःकुडवंदद्यात्घृतस्यकुडवंतथा । एषलेहःशमयतिअर्शोरक्तसमुद्भवं ॥ वातिकंपैत्तिकंचैवश्लैष्मिकंसान्निपातिकम् । येचदुर्नामजारोगास्तान्सर्वान्नाशयत्यपि ॥ अम्लपित्तमतीसारंपाण्डुरोगमरोचकम् । ग्रहणीमार्दवंकार्श्यंश्वयथुःकामलामपि ॥ अनुपानंघृतंदद्यान्मधुतक्रंजलंपयः । रोगानीकविनाशायकुटजोलेहउच्यते ॥

अर्थ—कूडेकी छाल १०० पलको द्रोणभर जलमें औटावे, जब अष्टमांश बाकी रहे तब उतारलेवे, कपडछानकर फिर कडाहीमें औटावे, जब गाढा होजावे तब इसमें नागरमोथा, मोचरस, लोध, कैथका गूदा, धायके फूल, भिलाए, वायवि-

डंग, त्रिकुटा, त्रिफला, रसोत, चीता, इन्द्रजौ, वच, अतीस, और बेलगिरी प्रत्येक एकएक पल लेवे, गुड ३० पल, सहत ४ पल, और गौका घी ४ पल लेवे। सबको उक्तलेहमें मिलायकर एकत्र करे, इस अवलेहके सेवन करनेसें खूनीबवासीर, वादीकी, पित्तकी, कफकी और संनिपातकी बवासीर, तथा दुष्ट नामके रोग (कुष्ठ भगंदरादि) अम्लपित्त, अतीसार, पांडुरोग, अरुचि, संग्रहणी, कृशता, सूजन, कामला, इन सबको दूरकरे। इसके ऊपर अनुपान घृत, सहत, छाछ, जल, दूध है। यह संपूर्ण रोगोंके दूरकरनेको कुटजावलेह कहाहै।

बोलबद्धोरसः ।

गुडूचिकासत्वसमौरसेन्द्रगंधौसमांशोनिखिलेनवर्बरः । विमर्दयेच्छाल्मलिकोद्भवाद्भिःस्याद्बोलबद्धोमधुयुक्त्रिमाषः ॥ रक्तार्शसांनाशकएषसूक्तंपित्तार्शसांपित्तजविद्रधेश्च। रक्तप्रमेहस्यखुडस्यचापिस्त्रीणांप्रवाहस्यभगंदरस्य ॥

अर्थ—गिलोयसत्व, पारा, गंधक, सब बराबर लेवे सबकी बराबर बोल लेवे, सबको सेमरके जलसें घोटे, तो यह बोलबद्ध रस बने। इसको सहतके साथ तीन मासे सेवन करे तो खूनीबवासीर पित्तकी बवासीर, विद्रधि, रक्तप्रमेह, स्त्रीनका सोमरोग, और भगंदर इनको नाश करे।

लघुमालिनीवसंत ।

खर्परंमानुषेमूत्रेस्थितंघस्त्रंत्रिसप्तकम् । वित्वकृतदर्द्धमरिचंनवनीतेनमर्दयेत् ॥ शतधाभावयेन्निंबुरसैःस्याद्रसकेश्वरः । पिप्पलीमधुयुग्दत्तंससितंचास्यभोजनम् ॥ ज्वरंधातुगतंपित्तं भ्रमंपित्तास्रजान्गदान् । रक्तातीसारग्रहणींदुर्न्नामास्रंनिवारयेत् ॥ अनम्लंदधिवादुग्धंपथ्यंचास्मिन्प्रयोजयेत् ॥

अर्थ—खपरियाको २१ दिन मनुष्यके मूत्रमें भिगोवे, फिर धुलीहुई काली मिरच खपरियाके आधा भाग डाल खरलमें मक्खनके साथ घोटे, फिर नीबुके रसकी १०० भावना देवे तो यह लघुमालिनीवसंत रस बनकर तयार होवे, इसको सहत पीपलके साथ देवे और मिश्री मिला भोजन देवे तो धातुगत ज्वर, पित्त, भ्रम, पित्तरुधिरके रोग, रक्तातीसार, संग्रहणी, बवासीरके खूनको दूर करे। इसके ऊपर मीठा दही अथवा दूध पथ्य देवे।

नागार्जुनीयोग ।

त्रिफलापंचलवणंकुष्टंकटुकरोहिणी ॥ देवदारुविडंगानिपि-
चुमन्दफलानिच । बलाचातिबलाचैवहरिद्रेद्वेसुवर्चला ॥
एतत्संभृतसंभारंकरंजत्वग्रसेनतु । पिष्ट्वाचगुटिकांकृत्वाब-
दरास्थिप्रमाणतः ॥ एकैकांतुसमुद्धृत्यरोगेरोगेपृथक्पृथक् ।
उष्णेनवारिणापीतंशान्तिमग्निप्रदीपयेत् ॥ अर्शांसिहन्तितत-
क्रेणगुल्ममम्लेननिर्हरेत् । जंतुजुष्टंतुतोयेनहृद्रोगंतैलसंयुतं ।
इंद्रस्यरससंयुक्तासर्वज्वरविनाशिनी । मातुलुंगरसेनाथसद्यः
शूलहरीमता ॥ कपित्थतिन्दुकानान्तुरसेनसहमिश्रिता ।
विषाणिहंतिसर्वाणिपानाशनप्रयोगतः ॥ गोशकृद्रससंयुक्ता
हन्यात्कुष्टानिसर्वशः । श्यामाकषायसहिताजलोदरविना-
शिनी ॥ भक्तछन्दंहिजयतिभुक्तस्योपरिभक्षिता । अक्षिरोगेषु
सर्वेषुमधुनाघृष्यचाञ्जयेत् ॥ लेपमात्रेणनारीणांसद्यःप्रदरना-
शिनी । व्यवहारेतथाद्यूतेसंग्रामेमृगयादिषु ॥ समालभ्यनरो-
प्येनांक्षिप्रंविजयमाप्नुयात् ॥

अर्थ-त्रिफला, पांचोनोन, कूठ, कुटकी, देवदारु, वायविडंग, निबोली, खरेटी, कगई, हरदी, दारुहलदी, हुलहुल इन सब औषधोंको कूट पीस कंजीकी छालके रसमें खरलकर बेरकी गुठलीके प्रमाण गोली बनावे एक एक गोली पृथक् पृथक् अनुपानके साथ रोग २ में देवे यदि इस गोलीको गरम जलके साथ देय तो मंदाग्निको दीप्त करे, छाछके साथ बवासीरको, खटाईके साथ गुल्म, जलके साथ कृमिरोगको, तेलके साथ हृद्रोगको, कुडाकी छालके रसमें सर्व ज्वरोंको बिजोरेके रसमें शूलको, कैथ और तेंदूके साथ संपूर्ण विषोंको, गोबरके रसमें घिसके लगानेसें सर्व प्रकारके कुष्ठोंको, निसोथके काढेके साथ जलोदरको, भोजनके उपरांत भक्षण करनेसें भोजनके विकारोंको दूर करे । सर्व प्रकारके नेत्ररोगोंमें सहतमें घिसकर लगाना चाहिये । इसके लेप करनेसें स्त्रियोंके तत्काल प्रदर दूर हो । यदि व्यवहार (व्यापार) जुआ संग्राम (लड़ाई) और शिकार आदिमें इस गोलीको पास रक्खे तो शीघ्र विजय (जीत) होवे ।

कार्पासमज्जालशुनंसर्जिकाक्षारहिङ्गुकम् ।
घृतेनकोलमात्रंहिगुटिकाशोंविनाशिनी ॥

अर्थ–बिनोलेकी मींगी, लहसन, सज्जी, और हींग इसकी गोली बनाय घृतके साथ २ टंक खाय तो बवासीर दूर होय ।

पथ्यागुडान्वितासेव्यानित्यमर्शोविकारिभिः ।
अर्शांसितेनशाम्यंतिनप्ररोहन्तिचापरे ॥

अर्थ–बवासीरवाले मनुष्योंको हरडका चूर्ण गुडके साथ सेवन करना चाहिये इस्सै उठी हुई बवासीर शांत हो और फिर कभी उत्पन्न नहीं हो ।

अर्शरोगे पथ्यम् ।

शालिगोधूमवार्ताकमुद्गकंदकठिल्लकान् ।
जांगलामिषवास्तूकमारिषंचार्शसांहितम् ॥

अर्थ–बवासीरवाले रोगीको सांठी चावल, गेहूं, बेंगन, मूंग, कंद, करेला, जंगली जीवोंका मांस, वथुएका और चौलाईका शाक सेवन करना हित है ।

इति श्रीवैद्यरहस्ये अर्शचिकित्सा ।

अथाग्निमान्द्यम् ।

समाग्नेःपालनंकुर्याद्विषमेवातशोधनम् । तीक्ष्णेग्नौपित्तशमनं मंदेश्लेष्मप्रतिक्रियाम् ॥ तीक्ष्णेऽग्नौतन्निषेवेतगुरुंस्निग्धंचय-द्भवेत् । यच्चश्लेष्मकरंभुक्त्वादिवानिद्राचशस्यते ॥

अर्थ–समाग्निका पालन करना, विषमाग्नीमें वातका शोधन, तीक्ष्णाग्निमें पित्तका शमन, और मंदाग्निमें कफका यत्न करना चाहिये । तीक्ष्णाग्निवाला पुरुष उस वस्तूका सेवन करे जो भारी, चिकनी, और जो कफकारी है तथा भोजन करके दिनमें शयन करना हित है ।

अमाजीर्णेवामिःकार्यावचालवणवारिणा । धन्यनागरजः काथःपेयोवाजीर्णशूलहृत् ॥ स्वेदंकुर्याच्चविष्टंभेपिबेद्वालव-णादकम् । रसशेषेदिवानिद्रांलंघनंचसमाचरेत् ॥

अर्थ–आमाजीर्णमें बच, नौन मिले पानीसें वमन करावे । अथवा धनियां सोंठका काढा जीर्णके शूलको दूर करे है । विष्टंभाजीर्णमें स्वेदविधि करे तथा

नोन मिला गरम जल पीवे । रसशेषाजीर्णमें निद्रा और लंघन करना चाहिये ।

व्यायामस्त्रीभाराध्वक्लान्तान्शूलतृषार्दितान् । श्वासा-
तीसारहिक्कार्त्तान्क्षीणान्क्षीणकफान्शिशून्॥ वृद्धान-
जीर्णिनोरात्रावनिद्रापदपीडितान् । आहाररहितान्-
वातपीडितान्स्वापयेद्दिवा ॥

अर्थ–दंडकसरत, स्त्री, बोझा, और मार्ग चलना इनकरके जो क्लेशित है । तथा शूल, तृषा, श्वास, अतीसार, हिचकीकरके पीडित है क्षीणदेह तथा क्षीणकफवाले मनुष्योंको, बालक, वृद्ध, अजीर्णरोगी, रात्रिमें जगे, आहाररहित, और जो वातसैं पीडित है उनको वैद्य दिनमें शयन करावे ।

ईषत्पक्कानिपिष्टानिगुरूण्यन्नानिभोजयेत् ।
भस्मकेश्लेष्मकक्षौद्रंमाहिषंचपयोघृतम् ॥

अर्थ–भस्मकरोगमें वैद्य थोडे पके, पिसे, और भारी ऐसे अन्नपानका तथा कफकारी वस्तु, सहत, और भैसका दूध घी सेवन करावे ।

हरीतकीकणाचूर्णंसौवर्चलयुतंपिबेत् । क्षौद्रेणोष्णाम्बुनावापि
ज्ञात्वादोषगतिंबुधः ॥ अग्निमांद्यमजीर्णानितथाध्मानमरोच-
कम् । शूलंचवातगुल्मंचशीघ्रमेवव्यपोहति ॥

अर्थ–अजीर्णमें हरड और पीपलका चूर्ण कालेनोनके साथ पीवे, अथवा सहतके साथ वा गरम जलके साथ हरड़ और पीपलका चूर्ण दोषानुसार पीवे तो मंदाग्नि, अजीर्ण, अफरा, अरुचि, शूल, वायगोला ये सब रोग शीघ्र नष्ट होवे ।

अथाग्निमुखचूर्णम् ।

हिंगूग्रगंधाचपलाशृंगवेरंयवानिका । पथ्याचित्रककुष्टानिभा-
गवृद्धियथोत्तरम् ॥ चूर्णमग्निमुखंनामपिबेत्कोष्णेनवारिणा ।
दध्नावामस्तुनावापिसर्ववातहरंपरं ॥ अजीर्णमुदरंचैवगुल्म-
शूलंगुदाङ्कुरान् । उदावर्त्तंक्षयंकासंश्वासंचाशुविनाशयेत् ॥

अर्थ–हींग, वच, पीपल, अदरक, अजमायन, हरड, चित्रक, कूठ, ये क्रमसैं बढती भाग, लेवे । इस अग्निमुख चूर्णको गरम जलके साथ लेवे, अथवा दही, वा आछके साथ लेवे तो सर्व वातके रोग, अजीर्ण, उदर, गोला, शूल, बवासीर, उदावर्त, क्षय, खांसी और श्वास, इनको शीघ्र दूर करे ।

जरणरुचकशुंठीपिप्पलीतीक्ष्णवेल्लंसलवणमजमोदाहि-ङ्गुपथ्येतिकर्षं।पृथगथपलमेकंस्यात्त्रिवृच्चूर्णमेषांजनन-मुदरवह्नेःपाचनंरेचनंच ॥

अर्थ–जीरा, सैंधानोन, सोंठ, पीपल, काली मिरच, अजमोद, हींग और हरड ये प्रत्येक तोले तोलेभर ले निसोतका चूर्ण ४ तोले ले यह चूर्ण जठराग्निको प्रबल करे और पाचन तथा रेचन है ।

लवङ्गपथ्ययोःक्वाथःसैंधवेनाऽवधूलितः ।
पीतःप्रशमयत्युग्रमजीर्णंरेचयत्यपि ॥

अर्थ–लौंग और हरडके काढेमें सैंधानिमक मिलायके पीये तो अजीर्ण शांत हो और पाचन तथा रेचन है ।

संजीवनीगुटिका ।

विडंगंनागरंकृष्णापथ्यामलविभीतकाः । वचागुडूचीभल्लात-विषंचात्रप्रयोजयेत् ॥ एतानिसमभागानिगोमूत्रेणैवपेषयेत् । गुंजाभागुटिकाःकार्यादद्यादार्द्रकजैरसैः ॥ एकामजीर्णयुक्त-स्यद्वेविषूच्यांप्रदापयेत् । तिस्रोभुजङ्गदष्टस्यचतस्रःसान्निपा-तिनः ॥ गुटिकाजीवनीनाम्नासंजीवयातिमानवम् ।

अर्थ–वायविडंग, सोंठ, पीपल, हरड, आमले, बहेडे, वच, गिलोय, भिलाए, और विष ये समान भाग लेवे, सबको गोमूत्रमें पीस रत्तीके प्रमाण गोली बनावे । अदरकके रसमें १ गोली अजीर्णवालेको, २ गोली हैजावालेको, ३ गोली साँपके काटे हुएको और ४ गोली सन्निपातवालेको देय, यह संजीवनीगुटिका मनुष्यको जीवातीहै ।

हिंग्वाष्टकचूर्णम् ।

त्रिकटुकमजमोदासैंधवंजीरकेद्वेसमचरणधृतानामष्टमो हिङ्गुभागः।प्रथमकवलभुक्तंसर्पिषाचूर्णमेतज्जनयतिज-ठराग्निंवातगुल्मंनिहन्ति ॥

अर्थ–सोंठ, मिरच, पीपल, अजमायन, सैंधानिमक, सफेदजीरा, कालाजीरा और भुनीहींग ये समान भागले, इनका चूर्ण कर भोजनके समय प्रथम गस्सेमें घीके साथ मिलायके खाय तो जठराग्नि प्रबल हो, और वायगोला दूर होवे ।

लोलिंबराजचूर्णम् ।

शुंठीबाणमिताकणार्णवमितादीप्यायवान्योःक्रमाद्भागा-
नांत्रितयंद्वयंचलवणाद्भागःशिवैतत्समा । कोष्ठाटोपरु-
गामगुल्ममलहल्लोलिम्बराजोदितश्चूर्णोद्रीनपिभस्मसा-
त्प्रकुरुतेकिंभोजनंभोजनाः ॥

अर्थ-सोंठ ५ भाग, कालीमिरच ४ भाग, अजमोद ३ भाग, अजमायन २ भाग, सेंधानिमक २ भाग, हरड २ भाग ले, चूर्णकर गरम जलके साथ लेय तो पेटका फूलना, पेटका दर्द, गोला, इनको यह लोलिंबराजचूर्ण दूर करे । तथा पत्थरकोभी भस्म कर दे, भोजनको भस्म करना क्या बडी बात है ।

लवणभास्करचूर्णम् ।

तालीसग्रंथिधान्येभवरविडकणाकृष्णजीरच्छदाम्लंसामुद्रंवि-
श्वजीरोषणमथरुचकंत्वक्त्रुटीदाडिमंतैः ॥ विंशत्यष्टत्रिपंचै-
कचतुरवयवैर्भास्करोऽन्येथवाम्लैर्गुल्मामार्शोर्त्तिकासग्रहणि-
जठरहृत्त्वग्गदेश्लेष्मकासे ॥

अर्थ-तालीसपत्र ३ पल, पीपलामूल २ पल, धनिया २ पल, नागकेशर २ पल, सेंधानिमक २ पल, बिडनोन २ पल, पीपल २ पल, कालाजीरा २ पल, पत्रज २ पल, अम्लवेत २ पल, समुद्रनोन ८ पल, सोंठ १ पल, सपेदजीरा १ पल, कालीमिरच १ पल, संचरनोन १ पल, दालचीनी १ पल, छोटी इलायची १ पल और अनारदाना ४ पल, इन सबका चूर्ण कर सेवन करे तो गोला, ववा-सीर, खांसी, संग्रहणी, उदर, त्वचाके रोग, और कफकी खांसी, ये सब रोग दूर होवे ।

गंधकंमरिचंचुक्रंसौवर्चलसमन्वितम् । टंकप्रमाणागुटिकाब-
द्धकोष्टेग्निदीपनी ॥

अर्थ-गंधक, कालीमिरच, चूका और कालानौन, इन सबको कूट पीस टंकके प्रमाण गोली बनावे । यह बद्धकोष्ठको दूर करे, और जठराग्निको दीपन करे ।

अजीर्णारिरसः ।

शुद्धंसूतंगंधकंचपलमानंपृथक्पृथक् । हरीतकीचाद्विपलाना-
गरास्त्रिपलःस्मृतः ॥ कृष्णाचमरिचंतद्वत्सिंधूत्थंत्रिपलंपृथ-
क् । चतुःपलाचविजयामर्दयेन्निम्बुकद्रवैः ॥ पुटानिसहदे-

यानिघर्ममध्येपुनःपुनः । अजीर्णारिरयंप्रोक्तःसद्योदीपनपाचनः ॥ निंबुकस्यरसाभावेचुक्रंस्याद्विजयासमम् ।

अर्थ-पारा, गंधक, प्रत्येक एक एक पल, हरड २ पल, सोंठ ३ पल, पीपल, काली मिरच, सेंधानिमक, ये तीन तीन पल, भांग ४ पल ले, सबका चूर्ण कर नीबूके रससे धूपमें वारंवार पुट देवे तो यह अजीर्णारिरस सिद्ध होवे, यह शीघ्र दीपन और पाचन करे है। यदि नीबूका रस न मिले तो भांगके बराबर इसमें चूका डाले।

क्रव्यादिकल्पः।

एलालवंगमरिचकृष्णाशुक्तिसमन्वितम् ॥ चुक्रनागरसिंधूत्थमूषकंपलपंचकं । एषांचूर्णवस्त्रपूतंक्रव्यादान्नातिरिच्यते ॥

अर्थ-इलायचीके बीज, लौंग, कालीमिरच, पीपल, प्रत्येक पैसे पैसे भरले, चूका, सोंठ, सेंधानिमक, और सोरा पांच पांच पल लेवे, इन सबका चूर्ण कपडछन करे तो क्रव्यादिरस बने यह अजीर्णको तत्काल दूर करे।

समशर्करचूर्णम्।

एलात्वङ्नागपुष्पाणांमात्रोत्तरविवर्द्धिता । मरिचंपिप्पलीशुंठीचतुःपंचषडुत्तराः ॥ द्रव्याण्येतानियावंतितावतीसितशर्करा । चूर्णमेतत्प्रयोक्तव्यमग्निसंदीपनंपरम् ॥

अर्थ-इलायची छोटीके बीज, दालचीनी, लोंग, प्रत्येक क्रमसैं बढती भाग ले। मिरच ४ भाग, पीपल ५ भाग, सोंठ ६ भाग ले। और सबकी बराबर मिश्री मिलावे इस चूर्णको सेवन करे तो जठराग्नि प्रबल होय।

ज्वालानलो रसः।

क्षारत्रयंसूतगंधौपंचकोलमिदंसमम् । सर्वैस्तुल्याजयाभ्रष्टा तदर्द्धाशिग्रुजाजटा ॥ एतत्सर्वंजयाशिग्रुवह्निमार्कवजैर्द्रवैः । भाव्यतेत्रिदिनंघर्मेततोलघुपुटेक्षिपेत् ॥ सप्तधार्द्रद्रवैर्घृष्टोरसोज्वालानलोभवेत् । निष्कोस्यलीढोऽपूर्वाह्णेऽनुपानंगुडनागरं ॥ हंत्यजीर्णमतीसारंग्रहणीमाग्निमार्दवम् । श्लेष्महृल्लासवमनमालस्यमरुचिंजयेत् ॥

अर्थ-सज्जीखार, जवाखार, सुहागा, पारा, गंधक, पंचकोल, (पीपल पीपरा-

मूल चव्य चित्रक सोंठ) ये सब वस्तु समान लेवे, सबके समान भुनीभांग, और भांगसें आधी सहजनेकी छाल, इन सबको भांग, सहजना, चीता, और भांगरा, इनकी तीन तीन दिन धूपमें भावना देवे, फिर लघुपुट दे, तदनंतर अद-रखके रसकी ७ सात भावना देवे तो ज्वालानलरस सिद्ध होवे । इसमेंसे ४ मासे गुड और सोंठके साथ सेवन करे तो अजीर्ण, अतीसार, संग्रहणी, मंदाग्नि, कफ, सूखीरह, वमन, आलस्य, और अरुचिको दूर करे ।

अग्निकुमारो रसः ।

टंकणंरसगंधौचसमभागंत्रयंविषात् । कपर्दःस्वार्जिकाक्षारो मागधीविश्वभेषजम् ॥ पृथक्पृथक्कर्षमात्रंवसुभागामिहौष-णं । जंबीराम्लैर्दिनंघृष्टंभवेदग्निकुमारकः ॥ विषूचीशूलवा-तादिवह्निमान्द्यप्रशान्तये ।

अर्थ—सुहागा, पारा, गंधक, और सिंगियाविष, ये समान भाग ले, कौडीकी भस्म, सज्जीखार, पीपल, और सोंठ ये प्रत्येक चार चार तोले लेवे, कालीमि-रच ८ तोले, इन सबको जंभीरीके रसमें १ दिन खरल करे तो अग्निकुमाररस सिद्ध होय यह हैजा, शूल, वातादिदोष, और मंदाग्निको दूर करे ।

रामबाणो रसः ।

पारदामृतलवङ्गगंधकंभागयुग्ममरिचेनामिश्रितम् । तत्रजा-तिफलमर्द्धभागिकंतिंतिडीफलरसेनमर्दितम् ॥ वह्निमा-न्द्यदशवक्त्रनाशनोरामबाणइतिविश्रुतोरसः । दीयतेचचण-कानुमानतःसद्यएवजठराग्निदीपनः ॥

अर्थ—पारा, विष, लौंग, और गंधक एक एक तोले लेवे, काली मिरच ८ तोले, जायफल ४ तोले, इन सबको कूट पीस तंतडीकके रसकी भावना देवे । यह रस मंदाग्निरूप रावणके मारनेको रामबाण कहा है । इसको चनेके समान देवे तो जठराग्निकी तत्काल वृद्धि होवे ।

अग्नितुण्डावटी ।

शुद्धंमृतंविषंगंधमजमोदापलत्रयम् । स्वर्जिक्षारंयवक्षारंव-ह्निसैंधवजीरकं ॥ सौवर्चलंविडंगानिसामुद्रंत्र्यूषणंसमं । विषमुष्टिसर्वतुल्यंजंबीराम्लेनमर्दयेत् ॥ मरिचाभांवटींखादे-

दग्निमांद्यप्रशांतये । पथ्याशुंठीगुडंचानुपलार्द्धंभक्षयेत्सदा ॥
अग्नितुंडावटीख्यातासर्वरोगकुलांतका ।

अर्थ–शुद्धपारा, विष, गंधक, और अजमोद, ये प्रत्येक तीन पल लेय । सज्जीखार, जवाखार, चीता, सैंधानिमक, जीरा, काला नोन, वायविडंग, समुद्रनोन, त्रिकुटा, ये सब समान ले और सबकी बराबर कुचला ले, सबको कूट पीस जंभीरीके रससैं खरल कर काली मिरचके समान गोली बनावे, १ गोली मंदाग्नि दूर करनेके अर्थ खाय, ऊपरसैं हरड, सोंठ, और गुड खाय तो यह अग्नितुंडावटी, सर्वरोगसमूहोंको नाश करै ।

क्षुद्बोधको रसः ।

व्योषसिंधूत्थवलिभिरेकद्वित्रिलवैःस्मृतः ।
निंब्वंबुमर्दितंगाढंनाम्नाक्षुद्बोधकोरसः ॥

अर्थ–त्रिकुटा ३ भाग, सैंधानिमक २ भाग, गंधक १ भाग ले, नीबूके रसमें खरल कर गोली बनावे इसके खानेसैं क्षुधा बढे ।

अजीर्णकंटको रसः ।

टंकणकणामृतानांसहिंगुलानांसमाभागाः । मरिचस्यभागयुगलंनिंबूनीरेवटीकार्या ॥ वटींकलापसदृशींएकांद्वेवासमश्नीयात् । सत्वरमजीर्णशांतौवह्नेर्वृद्ध्यैकफध्वस्त्यै ॥

अर्थ–सुहागा, पीपल, विष, और हिंगुल, ये समान भाग लेवे । कालीमिरच २ भाग लेवे, सबको नीबूके रसमें खरल कर मटरके समान गोली बनावे । एक वा दो गोली अजीर्ण कफके नाशके लिये और अग्नेकी वृद्धिके लिये खाय ।

क्रव्याद्द्रवः ।

व्यालष्टंकणधर्मपत्तनरजःकर्षैककंचार्द्रकंप्रस्थंसैंधवसंयुतं दधिजलप्रस्थेनसंपेषितम् । निम्बूकस्यरसस्तुतस्यतुलितो क्रव्यादनामारसोविष्टंभोदरगुल्मशूलहरणोवह्निप्रदोरोचकः ॥

अर्थ–चीता, सुहागा, कालीमिरच, प्रत्येक एक एक कर्ष ले, अदरखका रस सेरभर, सैंधानिमक अनुमान माफिक, इन सबको सेरभर दहीके जलसैं पीसे, फिर दहीके जलकी बराबर नीबूका रस डालके घोटे, तो क्रव्यादनामा रस सिद्ध हो, यह अफरा, उदर, गोला, शूल इन रोगोंको दूर करे; अग्नि दीप्त करे और रुचि करे ।

मस्तुनिंबूरसप्रस्थंतृतीयांशार्द्रकान्विताम् । वरांगैलापलंदे-
वपुष्पंपंचदशस्मृतम् ॥ टंकणंवह्निसहितंपलार्द्धंकटुकत्रयम् ।
वरंसार्द्धपलंसर्वंपिष्ट्वासंशोध्यवाससा ॥ द्रवक्रव्यादिसंज्ञोयंरा-
जारामप्रकाशितः । प्रभूणांरुचिदोदेयःसम्यगालोच्यमात्रया ॥

अर्थ-दहीका तोड, नींबूका रस, प्रत्येक एकसेर । अदरखका रस ढाईपाव । त्रिफला, छोटी इलायची एक पल ले, लौंग १५ पल, सुहागा और चीता प्रत्येक अर्द्धपल, सोंठ, मिरच, और पीपल प्रत्येक छ छ तोले, इन सबको पीस कपड छनकर उक्त रसमें मिलाय देवे, तो यह क्रव्यादसंज्ञक रस बने । इसको यथायुक्ति बलाबल देखकर मात्रा कल्पना करे, यह अजीर्णको तत्काल दूर करे ।

विडरुचकयवानीजीरकेद्वेचपथ्यात्रिकटुकहुतभुग्भ्यांवेतसा-
म्लाजमोदैः ॥ समविहितरजोभिर्धान्यकैंतिंतिडीकंजरयाति
नगकूटंकाकथाभोजनस्य ॥

अर्थ-विडनोन, संचरनोन, अजमायन, दोनो जीरे, हरडकी छाल, सोंठ, मिरच, पीपल, चित्रक, अमलवेत, अजमोद, धनिया, तंतिडीक, प्रत्येक समान लेय, चूर्ण कर २ टंक नित्यप्रति लेय तो पत्थरभी पचजावे, भोजन कितनी बात है ।

गंधकंमरिचंशुंठीसैंधवंयवजंलवम् ।
निंबूरसेनवटिकाचणमात्राग्निदीपनी ॥

अर्थ-गंधक, कालीमिरच, सोंठ, सैंधानोन, जवाखार, इन सबका चूर्ण कर नींबुके रसमें चनेके प्रमाण गोली बनावे यह अग्निको दीपन करे ।

हरीतकीहरिहरतुल्यषड्गुणाचतुर्गुणाचतुविलाशापिप्पली ।
द्विचित्रकंवरदवैरकसैंधवंरसायनंकुरुनृपवह्निदीपनम् ॥

अर्थ-हरडकी छाल ६ भाग, पीपल छोटी ४ भाग, चीतेकी छाल २ भाग, सैंधा-निमक १ भाग, सबको कूट पीस चूर्ण करे यह अग्निको दीप्त करे ।

अर्कपत्ररसप्रस्थंप्रस्थंधत्तूरकस्यच । श्वेतस्नुहीरसप्रस्थंसौ-
भांजनरसंतथा ॥ कुष्टसैंधवयोःकल्कंपलेद्वेद्वेप्रमाणतः । तै-
लप्रस्थंकांजिकेनपचेन्मृद्वग्निनासमं ॥ खल्लींविषूचिकांहंति
पक्षाघातंचगृध्रसीं ।

अर्थ–आकके पत्तोंका रस १ सेर, धतूरेके पत्तोंका रस १ सेर, सेतथूहरका रस १ सेर, सहजनेका रस १ सेर, कूठ और सैंधानिमक इन दोनोंका कल्क दो दो पल ले, तेल १ सेर, इन सबको एकत्र कर कांजी मिलाय तेलको मंदाग्निमें पचावे तो यह तेल खल्ली, विषूचिका, पक्षाघात, और गृध्रसीको दूर करे।

क्षुधासागरवटी

त्रिकटुत्रिफलाचैवतथालवणपंचकम् ॥ क्षारत्रयंरसोगंधोद्विभागंपूर्ववद्विषम् । आर्द्रकस्वरसेनैवगुंजाभावटकीकृता ॥ अजीर्णेद्वेवटीखादेल्लवंगैःपंचसप्तभिः । क्षुधासागरनाम्नीयंवटीसूर्येणनिर्मिता ॥

अर्थ–सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आमला, पांचोनोन, सुहागो, सज्जीखार, जवाखार, पारा, गंधक, सिंगीमुहरा, विष ये समान, भागलेय। सबको कूट पीस अदरखके रससे रत्तीके प्रमाण गोली करे। दो गोली पांच अथवा सात लोंगके चूर्णके साथ सेवन करे तो यह सूर्यनिर्मित क्षुधासागर रस अजीर्णको दूर करे।

पिपासायांतथोत्क्लेशेलवङ्गस्यांबुशस्यते । जातीफलस्यवा शीतंशृतंभद्रघनस्यवा ॥ सरुग्वानद्धमुदरमम्लपिष्टैःप्रलेपयेत् । दारुहेमवतीकुष्ठशताह्वाहिंगुसैंधवैः ॥

अर्थ–यदि अजीर्णमें प्यास और उकलाहट होवे तो लोंगका जल पीवे, अथवा-जायफलका तथा नागरमोथेका मिला काढा शीतल करके पीवे, यदि अजीर्णमें पेटमें पीडा होती हो तो वा पेट भारी हो तो कांजी वा खटाईमें देवदारु, चोक, कूठ, सोंफ, हींग, और सैंधानिमक मिलाकर लेप करे।

व्योषंकरंजस्यफलंहरिद्रेमूलंसमावाप्यचमातुलुङ्गाः । छायाविशुष्कावटिकाविधेयाहन्याद्विषूचींनयनांजनेन ॥

अर्थ–सोंठ, मिरच, पीपल, कंजा, हरदी, इनको कूट पीस बिजोरेकी जडके रसमें गोली बनाय छायामें सुखायले, इसको नेत्रोंमें आंजनेसे विषूचिका दूर हो।

चुक्रादितैलम्।

पलंचुक्रंकुष्टंपिचुयुगलकंसैंधवकणेतदर्द्धंप्रत्येकंकरतलमितंजातिफलकम् ॥ कटुस्तैलंकिंचित्कुडवमितिमप्रावाधिशृतंतदेचुक्राद्यंशमयतिविषूचींचसगदाम् ॥

अर्थ-चूका १ पल, कूठ, नीमकी छाल, बकायनकी छाल, सैंधानिमक, प्रत्येक अर्द्ध पल, जायफल १ तोले, फिर इनको पावभर कडूए तैलमें डालके मंदाग्निसे पचावे तो यह चुक्रादितैल पीडायुत विषूचिकाको दूर करे ।

श्यामोष्ठदंतनखरंछर्दियुतांतगंताततिर्षाक्षम् ।
मुक्ताङ्गसन्धिमज्ञंजह्याद्धीमानजीर्णार्त्तम् ॥

अर्थ-जिस अजीर्णरोगीके होठ, दांत, नाखून, काले पडगए हो; अंधकार दीखे, तृषा अधिक लगे, अंगकी संधि अलग होजाय, और जो जडके समान होजाय, उस अजीर्ण रोगीको वैद्य त्याग देवे ।

अमृतहरीतकी ।

तक्रेणसंस्वेद्यशिवाशतानितद्बीजमुद्धृत्यचकौशलेन । षडूषणंपंचपटूनिहिंगूक्षारावजाजीमजमोदकंच ॥ षडूषणादेस्तृवृदर्द्धभागागणस्यदेयाम्बरगालितस्य । विभाव्यचुक्रेणरजांसि चैषाक्षिपेच्छिवाबीजनिवासगर्भे ॥ संमर्द्यघर्मेचविशोष्यतासां हरीतकीमन्यतमांनिषेवेत् । अजीर्णमन्दानलजाठरामयान् सगुल्मशूलग्रहणीगुदांकुरान् ॥ विबंधमानाहरुजोजयत्यसौ समामवातास्वमृताहरीतकी ॥

अर्थ-बडी और मोटी १०० हरडोंको छाछमें औटाय उनकी गुठलीको चतुराईसें निकाले, फिर षडूषण (पीपल पीपरामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ और मिरच) पांचोनोन, हींग, सज्जीखार, जवाखार, जीरा, अजमोद, ये सब समान भाग ले, और षडूषणसें आधी निसोथ लेवे, सबको कूट पीस कपड छन करे, इस चूर्णको चुकामें भीगोकर उक्त हरडोंमें भरे । फिर उन हरडोंको डोरासें बांध धूपमें सुखाय लेवे, इसमेंसे १ हरड नित्य सेवन करे तो अजीर्ण, मंदाग्नि, उदरके रोग, गोला, शूल, संग्रहणी, बवासीर, बद्धकोष्ठ, अफारा और आमवात, इन सब रोगोंको यह अमृतहरीतकी दूर करे ।

लवंगादिगुटिका ।

सर्वार्धंदेवपुष्पंमरिचमगधयोस्त्रित्रिकर्षंयवान्योरष्टावष्टाग्नितोपित्रिपटुरसपलंग्रंथिकंसप्तकर्षं ।शुंठीपथ्यादशाक्षामलककलिफलाजाजिचव्यानिषट्पट्सुत्रामप्रीतिपात्रंनखमिति मखिलंचूर्णितंवस्त्रपूतं ॥ त्रिर्भाव्यंचार्द्रकस्यद्रवमभिविधि-

वन्माषयुग्मप्रमाणाबद्धाचुक्रेणासिद्धाप्रभवातिगुटिकासौलव-
ङ्गामृताख्या।भुक्तानक्तांबुयुक्तासकलसुखकरीदीप्तिमग्निंवि-
धत्तेवृष्यायुष्यावपुष्यामयनिचयहृतिख्यातिमुख्याविभाति ॥

अर्थ–लौंग ५३ ॥ तोले, मिरच ३ तोले पीपल ३ तोले, अजमायन ८ तोले, चीतेकी छाल ८ तोले, तीनोंनोन छः टके भर, पीपरामूल ७ तोले, सोंठ, हरडकी छाल, प्रत्येक पांच पांच तोले, आमरे बहेडा जीरा चव्य प्रत्येक छः छः तोले ले, और भांग २ तोले, सबका कपड छन चूर्ण कर अदरखके रसकी ३ भावना देय, फिर चूकेसें दो दो मासेको गोली बनावे, तो यह लवंगामृत गुटिका बने, १ गोली जलके संग लेय तो अग्निको दीप्त करे, वृष्य है, आयुको बढावे, देहके सकल रोगोंको हरण करनेमें यह मुख्य है ।

एकंचादिग्द्वादशभागमात्रंयोज्यंविषंटंकणमूषणंच ॥
हुताशनोनामहुताशनस्यकरोतिवृद्धिंकफवातहंता।

अर्थ–विष १ भाग, सुहागो १० भाग, काली मिरच १२ भाग सबको घोट गोली बनावे, तो यह हुताशनरस अग्निको बढावे और कफवातको दूर करे ।

जीर्णाहारके लक्षण ।

उद्गारशुद्धिरुत्साहोवेगोत्सर्गोयथोचितः ।
लघुताक्षुत्पिपासाचजीर्णाहारस्यलक्षणम् ॥

अर्थ–डकार शुद्ध आवे, देहमें उत्साह हो, यथोचित वेगोंका उतरना, देहमें हलकापन, भूख, प्यासका लगना, ये अजीर्ण पचजानेके लक्षण हैं ।

इति अग्निमान्द्यचिकित्सा समाप्ता ।

अथ कृम्यधिकारः ।

विडंगव्योषसंयुक्तमन्नमंडंपिबेन्नरः ।
दीपनंक्रिमिनाशायजठराग्निविवृद्धये ॥

अर्थ–चावलके मांडको वायविडंग, और त्रिकुटाका चूर्ण मिलाकर पीना दीपन है, और कृमिका नाश करे, तथा जठराग्निको बढावे ।

पारसीकयवानीकापीतापर्युषितवारिणाप्रातः ।
गुडपूर्वाक्रिमिजालंकोष्ठगतंपातयत्याशु ॥

अर्थ-बासेजलके साथ खुरासानी अजमायनका चूर्ण गुडमिलायके खाय तो उदरकी ६४ क्रामि गिरजावे ।

मुस्ताखुपर्णीफलदारुशिग्रुकाथःसकृष्णःकृमिशत्रुकल्पः ।
मार्गद्वयेनापिचिरप्रवृत्तान्कृमीन्निहंतिकृमिजांश्चरोगान् ॥

अर्थ-नागरमोथा, मूसापर्णीके फल, देवदारु, सहजनेके बीज, पीपल, और बायविडंग, इनका कल्क करके पीवे तो दोनो मार्गसें निकलनेवाले कृमिको तत्काल दूर करे ।

रसेन्द्रेणसमायुक्तोरसोधत्तूरपत्रजः ।
तांबूलपत्रजोवापिलेपाद्यूकानिवारणः ॥

अर्थ-धतूरेके रसमें अथवा पानके रसमें पारेको घोटकर लेप करनेसें सर्वप्रकारके जूआं लीख दूर होय ।

हिंगुलंकर्षमानंस्याद्दंतीबीजंतदर्द्धकं । अर्कक्षीरेणसंमर्द्यदापयेद्भावनादश ॥ माषमात्रंप्रदातव्यमर्कमूलरसेनच । प्रपिवेद्धिंगुसंयुक्तंकृमिजालनिपातनम् ॥

अर्थ-हिंगुल १ तोले, जमालगोटा ६ मासे, दोनोंको आकके दूधमें खरलकर दशभावना देवे, इसमेंसे १ मासेकी गोली बनाय आकके रसमें हींग मिलाकर पीवे तो सब पेटके कीडे झडजावे ।

ककुभकुसुमंविडंगंलांगलिभल्लातकंतथोशीरम् । श्रीवेष्टंसर्जरसंचंदनमथचाष्टमंदद्यात् ॥ एषसुगंधिकधूपोमशकानांवैविनाशकःप्रोक्तः।शय्यासुमत्कुणानांशिरसिचगात्रेषुयूकानाम् ॥

अर्थ-कोहके फूल, वायविडंग, कलियारी, भिलाए, खस, मेढल, राल, और चंदन, यह सुगंधि धूप मच्छर खटमल और मस्तकदेहकी क्रामि आदिको दूर करे ।

क्रमेणवृद्धंरसगंधकाजमोदाविडंगंविषमुष्टिकाच । पलाशबीजंचविचूर्ण्यमस्यानिष्कप्रमाणंमधुनावलीढं ॥ पिबेत्कषायंघनजंतदूर्ध्वंरसोऽयमुक्तःकृमिमुद्गराख्यः । कृमीन्निहन्तिकृमिजांश्चरोगान्संदीपयत्याग्निमयंत्रिरात्रात् ॥

अर्थ-पारा १ तोले, गंधक २ तोले, अजमोद ३ तोले, वायविडंग ४ तोले, कुचला ५ तोले, और ढाकके बीज ६ तोले, ले सबको कूट पीस सहतके साथ ४

मासे चाटे, ऊपरसैं नागरमोथेका काढा पीवे, तो यह कृमिमुद्गररस कृमिरोग और कृमिजन्य रोगोंको दूर करे, तीन रात्रि सेवन करनेसें अग्निको दीप्त करे ।

क्रमेणवृद्धंरसगंधकाजमोदाविडंगाविषमुष्टिकाच ।
पलाशबीजंचविचूर्ण्यमस्यलेपस्ययूकानिविनाशयन्ति ॥

अर्थ–पारा १ भाग, गंधक २ भाग, अजमोदा ३ भाग, वायविडंग ४ भाग, कुचला ५ भाग और ढाकके बीज ६ भाग, सबका चूर्ण करे । इस चूर्णके लेप करनेसैं सर्व प्रकारके जुआँ लीख दूर हो ।

इति कृम्यधिकारः समाप्तः ।

पांडुरोगचिकित्सा ।

वासामृतानिम्बवराकिरातकटुकीकषायःसमधुर्निपीतः ।
सकामलांपांडुमथास्रपित्तंहन्यात्तुचान्यांश्वहलीमकादीन् ॥

अर्थ–अडसा, गिलोय, नीमकी छाल, त्रिफला, चिरायता, कुटकी, ये सब समान लेकर काढा करे । इसमें सहत डालके पीवे तो कामला, पांडुरोग, रक्तपित्त और हलीमकआदि विकार नष्ट होवे ।

त्रिवृद्रजःसमाक्षिकंफलत्रयोदकेनवा ।
निपीतमेवकामलामलंविजेतुमीरितम् ॥

अर्थ–निसोथके चूर्ण और त्रिफलाके चूर्णमें सहत मिलायकर ६ मासे जलके साथ पीवे तो कामला शीघ्र दूर हो ।

सप्तरात्रंगवांमूत्रेभावितंचायसोरजः ।
पांडुरोगप्रशान्त्यर्थंपक्तिशूलंचदारुणम् ॥

अर्थ–लोहभस्मको सात रात्रि गौके मूत्रमें भावना देवे फिर इसका सेवन करे तो पांडुरोग और शूलरोग दूर होवे ।

त्रिफलायागुडूच्यावादार्वीनिंबस्यवारसः ।
प्रातर्माक्षिकसंयुक्तःशीलितःकामलापहः ॥

अर्थ–त्रिफलाका या गिलोयका अथवा दारुहलदीका या नीमके रसमें सहत मिलाय प्रातःकाल सेवन करे तो कामलारोग दूर होवे ।

अंजनेकामलार्तानांद्रोणपुष्पीरसोहितः।

अर्थ–कामलारोगीको गोमाके रसका अंजन करना हित है।

मंडूरवटकः

पंचकोलंसमरिचंदेवदारुफलत्रिकं॥ विडंगमुस्तायुक्तश्चभागास्त्रिपलसम्मिताः। यावंत्येतानिचूर्णानिमंडूरंद्विगुणंततः॥ पक्त्वाचाष्टगुणेमूत्रेघनीभूतेतदुद्धरेत्। ततोक्षमात्रान्वटकान्पिबेत्तक्रेणभक्तभुक्॥ पांडुरोगंजयत्येषमन्दाग्नित्वमरोचकम्। अर्शांसिग्रहणीदोषमूरूस्तंभमथापिवा॥ कृमिप्लीहानमुदरंगलरोगंचनाशयेत्। मंडूरवट्टनामायंरोगानीकप्रणाशनः॥

अर्थ–पंचकोल, कालीमिरच, देवदार, त्रिफला, वायविडंग, और नागरमोथा, प्रत्येक तीन तीन पल लेवे। और सब औषधोंसें दूना शुद्ध मंडूर लेवे, इन सबको आठगुने गोमूत्रमें पकावे। गाढा होनेपर उतार लेवे। और धेले धेलेभरकी गोली बनावे, १ गोली प्रातःकाल खाय ऊपर छाछभात खाय तो पांडुरोग, मंदाग्नि, अरुचि, बवासीर, संग्रहणी, ऊरुस्तंभ, कृमि, प्लीह, उदर और गलेके रोग, इन सबको यह मंडूरवटक दूर करे।

शालिषष्टिकगोधूमयवमुद्गादयोहिताः।
रसाश्चजांगलभवामसूराःपांडुरोगिणाम्॥

अर्थ–पुराने और लाल चावल, गेंहू, जौ, मूंग, मसूर, और जंगली जीवोंका मांसरस, ये पांडुरोगीको हित है।

नवायसचूर्णम्।

सत्र्यूषणानिसफलत्रिकचित्रकानिसांभोधराणिसविडंगफलानिचस्युः। कर्षाणिलोहरजसश्चनवेतिचूर्णमेतन्नवायसमिदंमधुनाऽवलीढं॥ नस्युःप्रमेहपिडिकानचपांडुरोगाः स्थौल्यंतनोःस्थिरतानचशीघ्रमेति। नोकुष्ठरुग्जठरता जठरस्यनैवनाग्नेरपाटवमनेननवायसेन॥

अर्थ–त्रिकुटा, त्रिफला, चीतेकी छाल, नागरमोथा, वायविडंग, प्रत्येक एक

एक तोले लेवे। लोहकी भस्म ९ तोले ले, सबको एकत्रकर छः मासे सहतके साथ खाय तो यह नवायसचूर्ण प्रमेह पिडिका, पांडुरोग, स्थूलता, वृद्धावस्था, तथा कुष्ठरोग, उदरके रोग और मंदाग्निका रोग दूरकरे।

इति पांडुरोगचिकित्सा समाप्ता।

अथ रक्तपित्तचिकित्सा।

पित्तास्रंस्तंभयेन्नादौप्रवृत्तंबलिनोयतः।
हृत्पांडुग्रहणीरोगप्लीहगुल्मज्वरादिकृत्॥

अर्थ-प्रथम रक्तपित्त जातेहुएको बंद करदेवे, क्योंकी यदि ये प्रवृत्त होनेके कारण बढजाय तो हृदयके रोग, पांडु-संग्रहणी, प्लीह-गुल्म और ज्वरादि रोगोंको करे है।

ह्रीबेरमुत्पलंधान्यंचन्दनंयष्टिकामृता। उशीरंचवृषश्चैषांक्वाथंसमधुशर्करम्॥ पाययेत्तेनसद्योहिरक्तपित्तंप्रणश्यति। अंतर्दाहंजयत्युग्रंतृष्णांमूर्च्छांज्वरंतथा॥

अर्थ-नेत्रवाला, कमलगट्टा, धनिया, चंदन, मुलहटी, गिलोय, खस, और अडूसा, इनके काढेमें सहत मिश्री मिलाकर पिलावे तो रक्तपित्त, अंतर्दाह, प्यास, मूर्च्छा, और ज्वर ये तत्क्षण दूर होय।

धान्यादिहिमः।

धान्याकधात्रीवासानांद्राक्षापर्पटयोर्हिमः।
रक्तपित्तंज्वरंदाहंतृष्णाशोषंचनाशयेत्॥

अर्थ-धनिया, आमले, अडूसा, दाख और पित्तपापडा, इनका हिम, रक्तपित्त, ज्वर, दाह, तृषा और शोषका नाश करे।

मृद्वीकाचन्दनंलोध्रंप्रियंगुंचेतिचूर्णयेत्। चूर्णमेतात्पिबेत्क्षौद्रवासारससमन्वितम्॥ नासिकामुखपायुभ्योयोनिमेढ्रादिवेगिनाम्। रक्तपित्तंस्रवद्धन्तिसिद्धएषप्रयोगराट्॥ रक्तातिसारेप्रदरेरक्ताशाँसिचिकित्सितम्। अधोगेरक्तपित्तेचकार्यमुक्तंभिषग्वरैः॥ बोलबद्धपर्पटीरसश्चात्रदेया मालिनीवसंतश्च।

अर्थ–दाख, चंदन, लोध, फूल प्रियंगु, इनका चूर्ण कर सहत और अडूसेका रस मिलाकर पीवे तो नाक-मुख-गुदा-योनि और लिंग आदिसें निकलतेहुए रुधिर बंद करे । तथा रक्तातिसार, प्रदर, खूनीबवासीर, और अधोगत रुधिरको बंद करे । इस रक्तपित्तरोगमें बोलबद्धरस पर्पटीरस और मालनीवसंतरसभी वैद्यको देना चाहिये ।

नासाप्रवृत्तेरुधिरेजलनस्यंप्रशस्यते ॥ नस्येदाडिमपुष्पोत्थो रसोदूर्वाभवोपिवा । आम्रास्थिजःपलांडोर्वानासिकास्रावरक्तजित् ॥

अर्थ–जिस मनुष्यकी नकसीर चलती हो उसको जलकी अथवा अनारके फूलके रसकी अथवा दूबके रसकी अथवा आमकी गुठलीके रसकी अथवा प्याजके रसकी नस्य लेना गिरतेहुए रुधिरको बंद करती है ।

शीतलामलकल्केनशतधौतघृतेनच ।
मुंडयित्वाशिरोलेपःकरणीयःपुनःपुनः ॥

अर्थ–मस्तकको मुडाकर शीतल आमलेके कल्कका अथवा सौवार धुले हुए घृतका लेपन वारंवार करे तो रक्तपित्त दूर हो ।

खंडकूष्मांडावलेह ।

पुराणंपीनमादायकूष्मांडस्यफलंदृढम् । तद्बीजाधारबीजत्वक्शिराशून्यंचकारयेत् ॥ ततोतिसूक्ष्मखंडानिकृत्वातस्य विधानवित् । ततस्तस्यतुलांनीत्वापचेज्जलतुलाद्वये ॥ तस्मिन्नीरेर्द्धशिष्टेतुयत्नतः शीतलीकृते । तानिकूष्मांडखंडानि पीडयेद्दृढवाससा ॥ यत्नतस्तज्जलंनीत्वापुनःपाकायधारयेत् । कूष्मांडंशोषयेद्घर्मेताम्रपात्रेततःक्षिपेत् ॥ क्षिप्त्वातत्रघृतंप्रस्थंकूष्मांडंतेनभर्जयेत्। मधुवर्णंतदालोक्यतज्जलंतत्रनिक्षिपेत ॥ सितायाश्चतुलांतत्रक्षिप्त्वातल्लेहवत्पचेत् । सुपक्वेपिप्पलीशुंठीजीरणेद्वेपलेपृथक् ॥ पृथक्पलार्द्धंधान्याकपत्रैलामरिचत्वचम् । चूर्णमेषांक्षिपेत्तत्रघृतार्द्धंक्षौद्रमावपेत् । एतत्पलमितंखादेदथवाग्निबलंयथा।खंडकूष्मांडकोलेहोरक्तपित्तंवि-

नाशयेत्॥पित्तज्वरंतृषांदाहंप्रदरंकृशतांवमिं।स्वरभेदंसहृद्रोगंकासंश्वासंक्षतक्षयं॥ नाशयत्येववृष्योऽयंबृंहणोबलवर्द्धनः।

अर्थ-पुराना और मोटा पेठा लेवे, उसको छील और बीज निकाल छोटे छोटे तुकडे कर १ तुला (१०० टके) भर ले, उसको २०० टकेभर जलमें औटावे, जब आधा जल शेष रहे तब शीतल कर कपडेमें बांध निचोड डाले, और उसको फिर औटावे तदनंतर उसको धूपमें सुखाय तांबेके पात्रमें डाले, १ सेर घी डालके भूने, जब भुनकर सहतके समान होजावे तब निकालके फिर निचुडे हुए जलको डाल उसमें १०० पल मिश्री डाल चासनी करे, जब पाक योग्य चासनी होजावे तब उक्त पेठेको डाल उसमें पीपल, सोंठ, दोनों जीरे, प्रत्येक ४ तोले डाले, और धनिया, पत्रज, छोटी इलायची, काली मिरच, और तज दो दो तोले ले, चूर्ण कर उसी चासनीमें डालदेवे और आधसेर सहत डाले, इसमेंसे ४ तोले नित्य खाय तो, रक्तपित्त, पित्तज्वर, तृषा, दाह, प्रदर, कृशता, वमन, स्वरभेद, हृदयका रोग, खांसी, स्वास, क्षई, इन सबको यह खंड कूष्मांडावलेह दूर करे। वृष्य, बृंहण, और बलको बढाती है।

पंचाशच्चपलंस्विन्नंकूष्मांडान्प्रस्थमाज्यतः ॥ पक्वंपलशतंखंडंवासाक्वाथाढकेपचेत् । शुभाधात्रीघनैर्भार्ङ्गीत्रिसुगंधैश्चकार्षिकैः॥ तालीसविश्वधान्याकमरिचैश्चपलांशकैः। पिप्पलीकुडवंचैवमधुभानिप्रदापयेत् ॥ कासंश्वासंज्वरंहिक्कांरक्तपित्तंहलीमकम्। हृद्रोगमम्लपित्तंचपीनसंचव्यपोहति॥

अर्थ-पका पेठेका गूदा ५० पल लेवे, उसको १ सेर गौके घृतमें भूने, जब भूनके लाल होजावे, तब १०० पल खांडकी चासनी सेरभर अडूसेका क्काथ डालके पकावे, जब पाकयोग्य चासनी होजावे तब उक्त पेठेको डाल देवे, और आमले, नागरमोथा, भारंगी, त्रिसुगंध, प्रत्येक एक पल लेवे, पीपल पावसेर इनका चूर्ण कर उसी अवलेहमें डाले, इसको सेवन करे तो खांसी, श्वास, ज्वर, हिचकी, रक्तपित्त, हलीमक, हृद्रोग, अम्लपित्त, और पीनस, इनको दूर करे।

एलादिगुटिका।

एलापत्रत्वचोद्राक्षाःपिप्पल्यर्द्धपलंतथा । सितामधुकखर्जू-

१ एलेयविश्वधान्याकमरिचैश्चपलांशिकैः। पाठांतरम्।

रमृद्वीकाश्चपलोन्मिताः ॥ संचूर्ण्यमधुनायुक्तागुटिकाःसंप्रकल्पयेत् । अक्षमात्रांततश्चैकांभक्षयेत्तांदिनेदिने ॥ कासंश्वासंज्वरंहिक्कांछर्दिमूर्च्छामदभ्रमम् । रक्तनिष्ठीवनंतृष्णांपार्श्वशूलमरोचकम् ॥ शोषंप्लीहाढ्यवातंचस्वरभेदंक्षतक्षयं । गुटिकातर्पणीवृष्यारक्तपित्तंविनाशयेत् ॥

अर्थ–छोटी इलायची, पत्रज, तज, प्रत्येक दो दो तोले ले । मिश्री, मुलहटी, छुहारे, दाख, ये चार चार तोले ले सबका चूर्ण कर सहतसे गोली बनावे । एक गोली नित्य प्रति खाय तो खांसी, श्वास, ज्वर, हिचकी, वमन, मूर्च्छा, मद, भ्रम, रुधिरका गेरना, प्यास, पसवाडेका शूल, अरुचि, शोष, प्लीहा, वादी, स्वरभेद, उरक्षत, क्षई, इन सबको यह एलादिगुटका दूर करे । तथा देहको पुष्ट करे, वीर्य बढावे, और रक्तपित्तको दूर करे ।

मध्वाटरूषकरसौयदितुल्यभागौकृत्वानरःपिबतिपुण्यतरःप्रभाते । तद्रक्तपित्तमतिदारुणमप्यवश्यमाशुप्रशाम्यतिजलैरिववह्निपुञ्जः ॥

अर्थ–सहत और अडूसेका रस समान ले प्रातःकाल पीवे तो घोर रक्तपित्त तत्काल दूर हो ।

इति रक्तपित्तचिकित्सा समाप्ता ।

अथ राजयक्ष्माचिकित्सा ।

बलिनोबहुदोषस्यपंचकर्माणिकारयेत् । यक्ष्मिणोक्षीणदेहस्यतत्कृतंस्याद्विषोपमम् ॥ मलायत्तंबलंपुंसांशुक्रायत्तंचजीवितं । तस्माद्यत्नेनसंरक्षेद्यक्ष्मिणोमलरेतसी ॥

अर्थ–राजयक्ष्मारोगमें बलिष्ठरोगीके अत्यंत दोष होवे तो (वमन विरेचनादि) पंचकर्म करनेसे यह रोग दूर हो, और जो खईरोगी क्षीणदेहवाला होवे तो उसको पंचकर्म न करावे उसको विषतुल्य है, क्योंकी लिखा है की यक्ष्मारोगीका मलके आधीन बल है, और शुक्रके आधीन जीवन है, अतएव इन दोनोंकी वैद्य यत्नपूर्वक रक्षा करे ।

सितोपलावलेह ।

सितोपलातुगाक्षीरीपिप्पलीबहुलात्वचः । अन्त्यादूर्ध्वंद्विगुणिताचूर्णितामधुसर्पिषा ॥ लेहयेद्राजरोगार्तकासश्वासज्वरातुरम् । पार्श्वशूलिनमल्पाग्निंसुप्तजिह्वंरुचिच्युतम् ॥ हस्तपादाङ्गदाहेचज्वरेरक्तेतथोर्ध्वगे ॥

अर्थ–मिश्री ५ तोले, वंशलोचन ४ तोले, पीपल ३ तोले, छोटी इलायची २ तोले, दालचीनी १ तोले ले, सबका चूर्ण कर सहत और मक्खनके साथ श्वास खाँसी और ज्वरातुर राजरोगी खाय, तथा पसवाडेका दर्द, मंदाग्नि, जिसकी जीभ लकडाइ गई हो, अरुचिवाला, हाथ पैरमें दाहवाला, ज्वर और ऊर्ध्वगत रुधिररोगी खाय तो सर्व रोग नष्ट होवे ।

अमृतेश्वरो रसः ।

रसभस्माऽमृतासत्वंलोहंमधुघृतान्वितम् ।
अमृतेश्वरनामायंषड्गुंजोराजयक्ष्मजित् ॥

अर्थ–रससिंदूर, गिलोयसत्व, और लोहभस्म, इनको समान भाग ले सहत मक्खनके साथ ६ रत्ती नित्य खाय तो यह अमृतेश्वररस राजरोगको दूर करे ।

राजमृगाङ्को रसः ।

त्र्योंशामारितात्सूतादेकोंशोहेमभस्मनः । एकोंशोमृतताम्रस्याशिलागंधश्चतालकम् ॥ प्रत्येकंभागयुग्मंस्यादेतत्सर्वंविचूर्णयेत् । वराटीःपूरयेत्तेनछागीक्षीरेणटंकणं ॥ पिष्ट्वातस्य मुखंरुद्ध्वामृद्भांडेताश्चधारयेत् ।ततोगजपुटेपक्त्वाचूर्णयेत्स्वांगशीतलं ॥ रसोराजमृगांकोऽयंचतुर्गुंजःक्षयापहः । मरिचैरूनविंशत्याकणाभिर्दशभिस्तथा ॥ मधुनासर्पिषावापिदद्यादेतंरसंभिषक् । अनेननश्यतिक्षिप्रंवातश्लेष्मभवःक्षयः ॥

अर्थ–पारा ३ तोले, सुवर्णभस्म १ तोला, ताम्रभस्म १ तोला, मनसिल, गंधक, और हरताल प्रत्येक दो दो तोला ले, चूर्ण कर कौडीके भीतर भरे, और सुहागको बकरीके दूधमें पीस इससे कौडीके मुखको बंद करदेवे, उन कौडियोंको मिट्टीके सरावसंपुटमें भरके गजपुटमें फूंकदेवे, जब शीतल होजावे तब चूर्णकरके धररक्खे, यह राजमृगांकरस ४ रत्ती ले, काली मिरच १९ ले,

अथवा १० पीपलके चूर्णके साथ सहत वा मक्खनमें मिलायके देवे तो इससें वादी कफकी खई रोग तत्काल दूर होवे ।

कर्पूराद्यं चूर्णम् ।

कर्पूरोचोचकंकोलजातीफलदलाःसमाः । लवङ्गनागमरिचकृष्णाशुंठ्योविवर्द्धिताः ॥ चूर्णसितासमंहृद्यंरोचनंक्षयकासनुत् । वैस्वर्यश्वासगुल्मार्शश्छर्दिकंठामयापहः ॥ प्रयुक्तंचान्नपानेषुभेषजद्वेषिणामपि ॥

अर्थ–भीमसेनी कपूर, तज, कंकोल, जायफल, प्रत्येक ५ टंक ले, लौंग ६ टंक नागकेशर ७ टंक, काली मिरच ८ टंक, पीपल ९ टंक, और सोंठ १० टंक ले, सबका चूर्ण करे चूर्णके समान मिश्री मिलावे, इसके सेवनसें क्षय, खांसी, स्वरभंग, श्वास, गोला, बवासीर, वमन, और कंठके रोग दूर करे । हृदयको हितकारी, और रुचिकारी है, इसको जो औषध खानेसें डरपनेवाले है उनको अन्न, जलके साथ देवे ।

कुमुदेश्वरो रसः ।

पारदंशोधितंगंधमभ्रकंचसमंसमम् । तदर्द्धंदरदंदद्यात्तदर्धाचमनःशिला ॥ सर्वार्द्धंमृतलोहंचखल्वमध्येविनिक्षिपेत् । द्विसप्तभावनादेयाशतावर्यारसेनच ॥ ततःसिद्धोभवत्येषकुमुदेश्वरसंज्ञकः । सितयामरिचेनाथगुंजाद्वित्रिप्रमाणतः ॥ भक्षयेत्प्रातरुत्थायपूजयेत्त्विष्टदेवतां । यक्ष्माणमुग्रंहंत्येववातपित्तकफामयान् ॥ ज्वरादीनखिलान्रोगान्यथादैत्यान्जनार्दनः । सतताभ्यासयोगेनवलीपलितनाशनः ॥

अर्थ–पारा, गंधक, अभ्रक, सब समान ले पारेसें आधा हिंगलू, हिंगलूसें आधा मनःसिल, और सबकी आधी लोहभस्म ले, सबको खरल करे । फिर सतावरके रसकी १४ भावना देवे, तो कुमुदेश्वररस सिद्ध हो । इसको मिश्री और मिरचके साथ दो अथवा तीन रत्ती प्रातःकाल देवे तो खई, वातपित्तकफके विकार, और ज्वरादि सकल रोगोंको दूर करे । इसके अभ्याससे मनुष्य वृद्धावस्थारहित होवे ।

आनाहरक्तवमिपार्श्वरुगंशतापतस्यमन्ददहनस्यहतस्वरस्य ।

विड्भेदिनश्चपरिवर्जितएषशोषोप्यल्पोगदौषधबलाक्षमदुर्बलस्य ॥

अर्थ—आनाहरोगी, रक्तपित्त, वमन, पसवाडेमें दरदवाला, ज्वररोगी, मंदाग्निवाला, स्वरभंग, और जिसको दस्त होतेहो, तथा जिसको औषध न पचे और दुर्बल हो ऐसे शोषरोगीको वैद्य त्याग देवे ।

इति राजयक्ष्माचिकित्सा समाप्ता ।

अथ कासचिकित्सा ।

कर्षःकर्षांशौपलंपलद्वयंस्यात्ततोर्द्धकर्षंच । मरीचापिप्पलीनां दाडिमगुडयावसूकानां ॥ सर्वौषधैरसाध्याःकासायेवैद्यानिर्मुक्ताः । अपियूयंछर्दयतांतेषामिदमौषधंपथ्यं ॥

अर्थ—कालीमिरच १ तोले, पीपल १ तोले, अनारके छीतरा २ तोले, जवाखार ६ मासे, गुड ४॥ तोले, सबको कूट पीस गुड मिलाय ४ मासेकी गोली बनावे, १ गोली सोते समय मुखमें रक्खे तो असाध्यभी खांसी दूर हो ।

सपिप्पलीपुष्करमूलपथ्याशुंठीसटीमुस्तकसूक्ष्मचूर्णैः ।
गुडेनयुक्तागुटिकाप्रयोज्याश्वासेषुकासेषुविवर्द्धितेषु ॥

अर्थ—पीपर, पोहकरमूल, हरडकी छाल, सोंठ, कचूर, और नागरमोथा, सब बराबर ले सबकी बराबर गुड मिलाय गोली बनावे । यह गोली श्वास और खांसीमें देवे तो तत्काल दूर हो ।

लघुभृष्टकंटकारीस्वरसंचपलारजोमिश्रम् ।
यःपिबातितस्यकासाःसश्वासानाशमुपयान्ति ॥

अर्थ—छोटी कटेरीको भून उसका स्वरस निकाल उसमें पीपलका चूर्ण मिलाकर पीवे तो खांसी और श्वास तत्काल दूर हो ।

हरीतकीकणाशुंठीमरिचंगुडसंयुतम् ।
कासघ्नोमोदकःप्रोक्तःपरंचानलदीपनः ॥

अर्थ—हरड, पीपल, सोंठ, और कालीमिरच, इनके चूर्णको गुडमें मिलाय गोली करे तो यह गुटका खांसीको दूर करे, और जठराग्निको प्रबल करे ।

त्वक्क्षीरीपिप्पलीलाजाद्राक्षाजलदशर्कराः ।
सर्पिर्मध्वावलेहोयंपित्तकासविनाशनः ॥

अर्थ-वंशलोचन, पीपल, खील, दाख, नागरमोथा, और मिश्री, इनकी अवलेह कर उसमें घृत और सहत मिलायकर पीवे तो खांसी दूर होय ।

स्वरसःशृंगवेरस्यपेयःक्षौद्रसमन्वितः । कफकासप्रतिश्याय-श्वासानाशुविनाशयेत् ॥ वर्द्धमानपिप्पलीचात्रदेया । ज्वर-रोपद्रवप्रसंगेकासघ्नायोगाःज्वराधिकारेउक्तास्तेपिविधेयाः सा-मान्यकासे ॥

अर्थ-अदरखके स्वरसमें सहत मिलाकर पीवे तो कफ, खांसी, श्वास, पीनसको शीघ्र दूर करे । खांसीमें वर्द्धमानपीपलभी देय, यदि खांसीमें ज्वर होय तो जो ज्वराधिकारमें खांसीके योग लिखे हैं वो देने चाहिये ।

कट्फलादिचूर्णम् ।

कट्फलंमुस्तकंतिक्तासटीशृंगीचपौष्करम् । चूर्णमेषांमधुयु-तंशृंगवेररसेनवा ॥ लिह्याज्ज्वरहरंकंठ्यंकासश्वासारुचीर्ज-येत् । वायुंछर्दितथाशूलंक्षयंचैवव्यपोहति ॥

अर्थ-कायफर, नागरमोथा, कुटकी, कचूर, काकडासिंगी, और पुहकरमूल, इनका चूर्ण कर सहत अथवा अदरखका रस मिलायकर चाटे तो ज्वर, कंठके रोग, खांसी, श्वास, अरुचि, वादि, वमन, शूल और क्षईको दूर करे ।

शृंग्यादिचूर्णम् ।

शृंगीअतिविषाकृष्णाचूर्णितामधुनालिहेत् । शिशुकासज्व-रच्छर्दिविषंचोपविषंहरेत ॥ज्वराधिकारोक्तंतालीसादिचूर्णदेयं।

अर्थ-काकडासिंगी, अतीस, और पीपलके चूर्णमें सहत मिलायके चटावे तो बालककी खांसी, ज्वर, वमन, विष, और उपविषके विकारको दूर करे । बालककी खांसीमें ज्वररोगमें कहाहुआ तालीसादिचूर्ण देनाभी उत्तम है ।

व्योषादिगुटिका ।

व्योपाम्लवेतसंचव्यंतालीसंचित्रकंतथा । जीरकंतिंतिडीकं चप्रत्येकंकर्षभागिकम् ॥ त्रिसुगंधंत्रिशाणंस्याद्गुडःस्यात्कर्ष-त्रिंशतिः । सर्वमेकत्रसंकुट्यवटिकाकर्षसंमिता ॥ भक्षयेत्प्रा-

तरुत्थायसर्वान्कासान्व्यपोहति । पीनसंश्वासमरुचिंस्वरभेदंनियच्छति ॥

अर्थ-सोंठ, मिरच, पीपल, अमलवेत, चव्य, तालीसपत्र, चित्रक, जीरा, और तंतडीक, प्रत्येक एक एक तोला त्रिजुगंध १॥ तोला, गुड २० तोले, सब कूट पीस १ तोलेकी गोली बनावे, १ गोली प्रातःकाल सेवन करे तो सर्व प्रकारकी खांसी, पीनस, श्वास, अरुचि, और स्वरभेदको दूर करे।

लवंगादिचूर्णम्।

लवंगपिप्पलीजातीफलंकर्षमिदंपृथक् । कर्षद्वयंचमरिचंशुंठीषोडशकार्षिको ॥ सितासर्वैःसमादेयाचूर्णःकासज्वरंहरेत् । प्रमेहारोचकश्वासवह्निमांद्यामयानपि ॥ ग्रहणीगुल्मरोगांश्च हंतिशीघ्रंनसंशयः ।

अर्थ-लौंग, पीपल, जायफल, प्रत्येक तोला तोला काली मिरच २ तोले, सोंठ १६ तोले, इन सबकी बराबर मिश्री मिलाय चूर्ण करे तो यह खांसी, ज्वर, प्रमेह, अरुचि, श्वास, मंदाग्नि, संग्रहणी, और गुल्मरोग, इत्यादि सबको दूर करे।

दरदंमरिचंमुस्तंटंकणंचसमंविषं ॥ जम्बीरादिश्वसंमर्द्यकुर्यान्मुद्गनिभांवटीं । आर्द्रकस्यरसेनैवकासंश्वासंव्यपोहति ॥

अर्थ-हिंगलू, काली मिरच, नागरमोथा, सुहागा, और विष, ये समान लेवे सबको जंभीरी आदिके रससे खरलकर मूंगके समान गोली बनावे १ गोली अदरखके रससे खाय तो खांसी श्वास दूर होय।

कासकेसरीरसः।

मरिचमुस्तककुष्ठवचाविषंसममथोपरिगृह्यसुपेष्यच । विमलमार्द्ररसेनवटीकृताकसनशूलकफामयनाशिनी ॥ प्रसूतिरोगंग्रहणींनाशयेच्चणकोपमा ।

अर्थ-काली मिरच, नागरमोथा, कूट, वच, विष, सब समान ले कूट, पीस, अदरखके रसमें चनेके बराबर गोली बनावे, यह गोली खांसी, शूल, कफके रोग प्रसूति, और संग्रहणीको दूर करे।

पारदादिचूर्णम्।

पारदंगंधकंशुद्धंमृतलोहंचटंकणं । रास्नाविडंगत्रिफलादेव-

दारुकटुत्रयं॥ अमृतापद्मकंक्षौद्रंविषंतुल्यानिचूर्णयेत्। त्रि-
गुंजःसर्वकासघ्नोज्वरारोचकमेहनुत् ॥

अर्थ–शुद्धपारा, गंधक, लोहभस्म, सुहागा, रासना, वायविडंग, त्रिफला, देवदारु, त्रिकुटा, गिलोय, पद्माख, सहत, और सिंगियाविष, प्रत्येक समान भाग ले सबको कूट, पीस जलसें ३ रत्तीकी गोली बनावे, तो यह सर्व प्रकारकी खांसी, ज्वर, अरुचि, और प्रमेहको दूर करे ।

कासकर्त्तरीरसः

रगकृष्णाभयाक्षाढरूषभाङ्गर्चःक्रमोत्तराः । तत्समंखादिरंसा-
रंबब्बूलक्काथभावितम् ॥ एकविंशतिवारंचमधुनाकासकर्त्त-
री । कासंश्वासंक्षयंहिक्कांहन्त्येषाकासकर्त्तरी ॥

अर्थ–पारा, गंधक, पीपल, हरड, अडूसा, भारंगी, ऐ क्रमसें, बढतीभाग ले और सबकी बराबर खैरसार मिलावे, फिर सबको बबूलको छालके काढेकी २१ भावना देवे, इसकी २ रत्तीकी गोली बनावे, १ गोली सहतके साथ देवे तो खांसी, श्वास, खई, हिक्का, इनको यह कासकर्त्तरीरस दूर करे ।

कफघ्नीवटी

कर्पूरमर्द्धकर्षंमृगमदमपिदेवकुसुमयुगं । मरिचकणाक्षकुलिं-
जनमेकैकंशुक्तिपरिमाणम् ॥ दाडिमफलवल्कलपलमखिल-
समंखदिरसारमवचूर्ण्य । वटिकामुद्गसमानाकृताधृतास्ये
कफघ्नीस्यात् ॥

अर्थ–भीमसेनी कपूर, १ तोला, कस्तूरी १ तोला, लौंग २ तोला, काली मिरच पीपल, बेहडा, कुलिंजन, प्रत्येक ४ पैसे भार ले, अनारके फलकी छाल ४ तोले, और सबकी बराबर खैरसार गेर जलसें मूंगके समान गोली बनावे, इसको मुखमें रखनेसें कफको दूर करे ।

सोमनाथीताम्रम्

शुल्बंसूतसमंद्वयोरपिसमोगंधस्तदर्धःपुनस्तालश्चार्द्धशिलायुतो
विरचयेत्पिष्ट्वाततःकज्जलीम् । लिप्त्वाताम्रदलानिमार्त्तिकदृढेपा-
त्रेनिधायाथतत्पाच्यंसैकतयंत्रकेद्धदिवसंशीतंस्वतोनिर्हरेत् ॥
तत्कासश्वसनाग्निमांद्यगुदजेनेकार्त्तिपांड्वामयप्लीहारःप्रतिरोधकोप्र

मरुतोयुक्तांजयेद्योजितं । वल्लद्वंद्वमितंकणामधुयुतंक्षाराद्रैवारापि-
वा युक्तंसर्वकफामयघ्नमचिराद्यत्सोमनाथाभिधम् ॥

अर्थ—कंटकवेधी तामेके पत्र ४ तोले ले पारा ४ तोले, गंधक ८ तोले, हरताल, २ तोले, मनसिल १ तोले, सबको मिलाय कजली कर उन तामेके पत्रोंपर लेपकरे, फिर एक हांडीपर कपरोटी कर उसमें वालू भर बीचमें इन पत्रोंको धर दोप्रहर बराबर हठाग्नी देवे, स्वांग शीतल होनेपर निकाल ले, यह सोम-नाथीताम्र—खांसी, श्वास, मंदाग्नि, बवासीर, पांडुरोग, तिल्ली, उरःक्षत, बद्धकोष्ठ, इन सबको ४ रत्ति पीपलका चूर्ण और सहतके साथ देय तो दूर करे अथवा जवाखार या अदरखके रससें देवे तो सर्व कफके रोगोंको दूर करे।

मैथुनस्निग्धमधुरदिवास्वापंपयोदधि ।
पिष्टान्नपयसादीनिकासीधूमंविवर्जयेत् ॥

अर्थ—खांसीवाला मनुष्य मैथुन, चिकनाई, मिठाई, दिनमें सोना, दूध, दही, मेंदाके पदार्थ, दूधके पदार्थ और धूआं, इनका सेवन त्याग देवे ।

इति कासचिकित्सा समाप्ता।

अथहिक्काचिकित्सा ।

प्राणावरोधतर्जनविस्मापनभीषिकाभिश्च ।
रौद्रैःकथाप्रयोगैःशमयेद्धिक्कांमनोभिघातैश्च ॥

अर्थ—प्राणपवनका रोकना, त्रास देना, भूलाई देना, डर दिखाना, घोर वार्त्ताओंका कहना, तथा जिसबातसें मनमें चोट लगे, इत्यादि कर्मोसे वैद्य हिच-कियोंको बंद करे ।

हिक्कार्त्तस्यपयश्छागंहितंनागरसाधितं । मधुकंमधुसंयुक्तंपि-
प्पलीशर्करान्विताः ॥ नागरंगुडसंयुक्तंहिक्काघ्नंनावनत्रयम् ।

अर्थ—हिचकीसें पीडित मनुष्योंको बकरीके दूधमें सोंठ औटायकर देवे, अथवा मुलहटी और सहत, अथवा पीपलका चूर्ण और खांड, अथवा सोंठ और गुड मिलायकर नस्य देवे तो हिचकी दूर हो । ये तीन नस्य पृथक् पृथक् है ।

धूमोमाषनिशारजोयुतशणत्वक्संभवोहंत्यलं
श्वासोर्ध्वानिलकासहृद्गलरुजोहिक्काःसमस्ताअपि ॥

अर्थ-उडद, हलदीका चुरा, और सनकी छाल, इनको हुक्केमें धरके पीवे तो श्वास, खांसी, गलेके रोग, और सर्वप्रकारकी हिचकी दूर हो ।

कटुत्रिकयवासकट्फलककारवीपौष्करैःसशृंगिभिरतिद्रुतं मधुयुतोऽवलेहोजयेत् ॥ सहिध्मकसनंकफंश्वसनमंभसासिं-धुजंप्रदत्तमपिनावनेझटितिसर्वहिक्कापहं ॥

अर्थ-त्रिकुटा, जवासा, कायफर, कलौंजी, पुहकरमूल, और कांकडासिंगी, इनका अवलेहकर उसमें सहत मिलायके पीवे तो हिचकी, खांसी, कफ, श्वास, दूर हो । तथा सेंधेनोनको जलमें मिलायकर नस्य देवे तो शीघ्र हिचकी दूर हो ।

हरेणूनांकणानांचक्काथोहिंगुसमन्वितः ।
हिक्काप्रशमनःश्रेष्ठोधन्वंतरिवचोयथा ॥

अर्थ-रेणुका (गंधद्रव्य) और पीपलके काढेमें हींग मिलाकर पीवे तो हिचकी तत्क्षण दूर हो ।

चंद्रसूरस्यबीजानिक्षिपेदष्टगुणेजले । यदामृदूनिगृह्णीयात्त-तोवाससिगालयेत् ॥ हिक्कातिवेगविकलस्तज्जलंपलमात्रया । पिबेत्पुनःपुनश्चापिहिक्काशीघ्रंप्रणश्यति ॥

अर्थ-हालोंके बीजोंको आठगुने जलमें औटावे जब सीजजावे तब उतार कपडेमें छान ले, उस जलको जब जब हिचकीका वेग उठे तभी तभी ४ तोलेके पीवे । इसप्रकार करनेसे हिचकी शीघ्र दूर हो ।

इति हिक्काचिकित्सा समाप्ता ।

श्वासाधिकारः ।

हिक्काश्वासातुरेपूर्वंतैलाक्तेस्वेदइष्यते । स्निग्धैर्लवणयोगैश्च मृदुवातानुलोमनैः ॥ ऊर्ध्वाधःशोधनंशक्तेदुर्बलेशमनंमतं ।

अर्थ-हिचकी और श्वासरोगीको प्रथम तेल लगाकर स्वेदनविधि करे, और जो रोगी बली हो तो चिकने, नोनके, नम्र और वातको अनुलोमनकर्त्ता योगोंसें ऊपर और नीचेका (वमन विरेचनद्वारा) शोधन करे । और जो रोगी निर्बल हो तो प्रथम शमनकर्त्ता औषध देवे ।

घोडाचोलीरसः।

पारदंटंकणंगंधंविषंव्योषंफलत्रयं । तालकंचसमंसर्वंजेपालं चापितत्समं ॥ मर्दयेद्भृंगनीरेणभावनातुत्रिसप्तधा । गुंजामात्रांवटींकृत्वाछायायांशोषयेद्बुधः । शृंगवेररसैःसार्द्धंवटीमेकां प्रयोजयेत् ॥ उष्णेनवातशूलेचकासेश्वासेचयक्ष्मिणे । घोडाचोलीतिविख्यातानाम्नानागार्जुनोदिता ॥ एकावटीचमधुनावलितंपलितंजयेत् । सौभांजनांघ्रिरसगोघृताभ्यांजठरशूलंजयेत् । दध्नाजीर्णं । शतपत्ररसेनशीतज्वरं । पुनर्नवारसेन पांडुं । तिलपर्णीरसेननेत्रांजितेनेत्ररोगान् । तंदुलोदकेनविषं जीरशर्करयाज्वरं । बहुदिनसेवनेनसुभगोभवेत् । वचादेवदारुकुष्ठैरस्थिवातं । मस्तककेशान्दूरीकृत्यछित्त्वानिंबुनीरेणमर्दयेत् ॥ दंतानिर्मुक्तंभवति । गोमूत्रेणपूगफलभ्रव्यथांहरेत् । आर्द्रकरसेनविरेचनंभवति । जातीफलेनार्शसांनाशयति । पुत्रजीवारसेनवंध्यायाःपुत्रप्राप्तिः । शिरीषरसेनकटिवातं । आढरूषकरसेनश्वासकासे ॥

अर्थ–पारा, सुहागा, गंधक, सिंगियाविष, त्रिकुटा, त्रिफला, प्रत्येक समान भाग लेवे। और सबकी बराबर तबकिया हरताल ले, तथा हरतालकी बराबर जमालगोटा ले, सबको खरल कर भांगरेके रसकी २१ भावना दे १ रत्तीकी गोली बनावे उनको छायामें सुखाय १ गोली अदरखके रसको कुछ गरम करके देवे तो वातशूल खांसी, श्वास, और खई दूर हो। यह नागार्जुनकी कही घोडाचोलीगोली है–१ गोली सहतके साथ खाय तो वलीपलितता दूर हो, सहजनेकी जडका रस और गौके घीसें उदरशूलको नष्ट करे, दहीमें अजीर्ण, गुलाबके रससें शीतज्वर दूर हो, सांठके रससें पांडुरोग, तिलवनके रससें घिसके आंजनेसें नेत्ररोग, चामलके पानीसें विषरोग, जीरा और मिश्रीके साथ ज्वर, और इसीके साथ बहुत दिन सेवन करनेसें देहका उज्ज्वल वर्ण हो, वच, कूट, और देवदारुके साथ हड्डीकी बादी दूर हो। माथेको मूंडके नीबूके रसमें पीस लगावे तो दांतभीचे खुलजावे, गोमूत्रसे सुपारी अटकनेकी पीडाको, अदरखके रससें दस्त हो, जायफलके साथ बवासी-

रको, जीवापोताके रसमें दे तो वंध्याके पुत्र हो, सिरसके रससें कमरकी वादी, और अडूसेके रससें श्वास और खांसी दूर हो ।

कृष्णामलकशुंठीनांचूर्णंमधुसिताघृतं । मुहुर्मुहुःप्रयोक्तव्यं हिक्काश्वासनिवारणम् ॥ हिक्काश्वासीपिबेद्भार्ङ्गींसविश्वामुष्ण-वारिणा ।

अर्थ-पीपल, आमले, और सोंठ, इनके चूर्णमें सहत मिश्री और घृत मिलाय वारंवार देनेसे हिचकी और श्वास दूर हो । अथवा हिचकी और श्वासवाला मनुष्य गरम जलके साथ सोंठ और भारंगीके चूर्णको पीवे ।

शृंग्यादिचूर्णम्

शृंगीकटुत्रिकफलत्रयकंटकारीभार्ङ्गीसपुष्करजटालवणानि पंच । चूर्णंपिबेदशिशिरेणजलेनहिक्काश्वासोर्ध्ववातकसना-रुचिपीनसेषु ॥

अर्थ-काकडासिंगी, त्रिफला, त्रिकुटा, कटेरी, भारंगी, पुहकरमूल, जटामांसी, पांचोनोन, इन सबका चूर्ण कर गरम जलके साथ लेय तो हिचकी, श्वास, ऊर्ध्ववात, खांसी, अरुचि, और पीनसरोग दूर होवे ।

सूर्यावर्त्तरसः

सूतार्द्धंबलिमेकयाममभितःकन्यारसैर्मर्दयेत्तद्द्वंद्वेनसमंतुशुल्व-जलदंलिप्त्वाघटीयंत्रके । पक्त्वैषाहमथाहरेन्निगदितोवह्नोन्मि-नःश्वासजित्सूर्यावर्त्तरसोऽथगंधमरिचंसाज्यंकफश्वासाजित् ॥

अर्थ-पारा १ टकेभर, गंधक आधे टकेभर ले दोनोंको घीगुवारके रससें १ प्रहर खरल करे, फिर पारे गंधककी बराबर शुद्ध ताम्रके कंटकवेधीपत्रोंपर लेप कर घटीयंत्र (तामेकी डिब्बी) में धर बालुकायंत्रमें १ दिन पचावे, तो यह सूर्यावर्त्तरस २ रत्ती गंधक मिरच और घीके साथ सेवन करनेसें कफ और श्वासको दूर करे ।

श्वासकुठारो रसः

रसंगंधंविषंचैवटंकणंचमनःशिला । एतानिटंकमात्राणिम-रिचंचाष्टटंककं ॥ एकैकंमरिचंदत्त्वाखल्वेसूक्ष्मंविधायच । कटुत्रयंटंकषट्कंदत्वापश्चाद्विचूर्णयेत् ॥ सर्वमेकत्रसंचूर्ण्यका-चकुप्यांविनिक्षिपेत् । गुंजामात्रंप्रदातव्यंपर्णखंडेनबुद्धिमा-

न् ॥ सन्निपातेचमूर्च्छायामपस्मारेतथापुनः । प्रतिमो-हत्वमापन्नेनस्यंदद्याद्विचक्षणः ॥ रसःश्वासकुठारोऽयं सर्वश्वासनिकृंतनः ।

अर्थ-शुद्ध पारा, गंधक, सिंगियाविष, सुहागा, मनसिल, प्रत्येक चार चार मासे ले, काली मिरच २॥ तोले ले, खरलमें एक एक मिरच डालके पीसे, फिर त्रिकुटा १ तोले डालके पीसे, फिर पारे गंधककी कजली कर और सर्व औषध मिलाय पीसे, इसको काचकी शीशीमें भरके धरदेवे सन्निपात, मूर्च्छा, मिरगी, इनमें १ रत्ती यह रस नागरवेलपानके साथ देवे, यदि सन्निपातसैं अत्यंत बेहोस हो तो इसकी नाश देवे यह श्वासकुठारस सर्व प्रकारकी श्वासोंको दूर करता है ।

अमृतार्णवो रसः ।

पारदंगंधकंशुद्धंमृतंलोहंचटंकणं ॥ रास्नाविडंगत्रिफलादेव-दारुकटुत्रयं। अमृतापद्मकंक्षौद्रंविषंतुल्यंसुचूर्णितम् ॥ त्रिगुं-जंश्वासकासार्त्तःसेवयेदमृतार्णवः ॥

अर्थ-पारा, गंधक, दोनों शुद्ध ले । सिंगियाविष, लोहभस्म, सुहागा, रास्ना, वायविडंग, त्रिफला, देवदारु, त्रिकुटा, गिलोय, विष, कमलगट्टा और सहत प्रत्येक समान भाग लेवे सबको कूट पीस सहत मिला ३ रत्तीकी गोली बनाय श्वास खांसीवालेको यह अमृतार्णवरस सेवन करना चाहिये ।

इति श्वासाधिकारः समाप्तः ।

स्वरभेदचिकित्सा ।

वातादिजनितश्वासकासघ्नायेप्रकीर्त्तिताः ।
योगास्तानत्रयुंजीतयथादोषंचिकित्सकः ॥

अर्थ-वातादिजनित श्वास और खांसीके नाशकर्त्ता जो योग कहे है उनको वैद्य स्वरभंगरोग (गला बैठ जाने)में दोषानुसार देवे ।

ब्राह्मीवचाभयावासापिप्पलीमधुसंयुता ।
अस्यप्रयोगात्सप्ताहात्किन्नरैःसहगायति ॥

अर्थ-ब्राह्मी, वच, हरडका वक्कल, अडूसा, और पीपल, इनको सहतमें मिला-कर ७ दिन सेवन करनेसैं किन्नरोंके तुल्य कंठकी आवाज हो ।

फलत्रिकंत्र्यूषणयावशूकचूर्णंनिहन्यात्स्वरभेदमाशु ।
किंवाकुलिंजंवदनांतरस्थंस्वरामयंहंत्यथपौष्करंवा ॥

अर्थ—त्रिफला, त्रिकुटा, जवाखार, इनका चूर्ण स्वरभंगको दूर करे । अथवा कुलीजनको मुखमें रखनेसें स्वरभंग दूर हो ।

प्रोच्चभाषणसंभूतेस्वरभ्रंशेपयःपिबेत् ।
मधुरैःसमथक्षौद्रसितायुक्तंघृतंपिबेत् ॥

अर्थ—उच्चस्वर बोलनेसे जो स्वरभंग प्रगटहुआ वह गरम गरम मिश्री मिला दूध पीनेसें दूर हो अथवा सहत और मिश्री मिला घी पीवे तो स्वरभंग दूर हो ।

चव्यादिचूर्णम् ।

चव्याम्लवेतसकटुत्रयतिंतिडीकंतालीसजीरकतुगादहनैःस-
मांशैः । चूर्णंगुडत्रिगुणितंत्रिसुगंधियुक्तंवैस्वर्यपीनसकफारु-
चिषुप्रशस्तम् ॥

अर्थ—चव्य, अमलवेत, त्रिकुटा, तंतडीक, तालीसपत्र, जीरा वंशलोचन, चीता, दालचीनी, तमालपत्र, और इलायची, प्रत्येक समान भाग ले सबसे तिगुना गुड मिलाय खावे तो स्वरभंग, पीनस, कफ, और अरुचि दूर होवे ।

गोरखवटी ।

रसभस्मार्कलोहस्यभावितस्यात्रिसप्तधा । क्षुद्राफलरसैर्मुद्ग-
तुल्याकार्यावटीशुभा ॥ मुखस्थाहरतेशीघ्रंस्वरभंगमसंशयं ।
गोरक्षनाथैर्गदितास्वरभंगिकृपालुभिः ॥

अर्थ—पारेकी भस्म (चंद्रोदय) ताम्रभस्म, लोहभस्म, इन सबको एकत्र कर कटेरीके रसकी २१ भावना देवे, फिर मूंगके समान गोली बनावे १ गोली मुखमें रखे तो स्वरभंग निश्चय दूर होवे । यह गोरखनाथने स्वरभंगवाले रोगियोंके ऊपर कृपाकरके कहा है ।

इति स्वरभेदचिकित्सा समाप्ता ।

अथारोचकचिकित्सा ।

त्वङ्मुस्तमेलाधान्यानिमुस्तमामलकस्यच । त्वक्चदार्वी-

यवान्यश्चापिप्पल्यस्तेजवत्यपि ॥ यवानीतिंतिडीकश्चपंचैते मुखशोधकाः । श्लोकपादैरभिहिताःसर्वारोचकनाशनाः ॥

अर्थ–दालचीनी, नागरमोथा, धनिया । किंवा नागरमोथा, आमले । किंवा-दालचीनी, दारुहलदी, अजमायन । अथवा पीपल, काली मिरच । अथवा अज-मायन, तंतिडीक ये पांच योग मुखकी शुद्धि और अरुचिको नाश करते हैं ।

विड्चूर्णमधुसंयुक्तोरसोदाडिमसंभवः ।
असाध्यमपिसंहन्यादरुचिंवक्त्रधारितः ॥

अर्थ–विडादिचूर्णमें सहत और अनारका रस मिलाय मुखमें रखनेसे अ-साध्यभी अरुचि दूर होवे ।

दाडिमाद्यं चूर्ण

द्वेपलेदाडिमादष्टौखंडात्व्योषात्पलत्रयम् । त्रिसुगंधिपलंचै-कंचूर्णमेकत्रकारयेत्॥दीपनंरोचनंहृद्यंपीनसश्वासकासजित्॥

अर्थ–अनारदाना ८ तोले, मिश्री ३२ तोले, सोंठ, मिरच और पीपल ये १२ तोले, दालचीनी, इलायची, और पत्रज ४ तोले ले, सबका चूर्ण कर २। टंक गरम जलसें लेवे तो पीनस, श्वास, और खांसी इनको दूर करे । दीपन है, रुचिकारी है, और हृदयको हितकारी है ।

भोजनाग्रेसदापथ्यंलवणार्द्रकभक्षणम् ।
रोचनंदीपनंवह्निजिह्वाकण्ठविशोधनम् ॥

अर्थ–भोजनके पूर्व सैंधानोन और अदरखका खाना सदैव पथ्य है । यह रो-चन और दीपन है तथा जीभ और कंठको शोधन करता है ।

शृंगवेररसंवापिमधुनासहयोजयेत् ।
अरुचिश्वासकासघ्नंप्रतिश्यायकफापहम् ॥

अर्थ–अदरखका रस सहत मिलाकर सेवन करना, अरुचि, श्वास, खांसी-सरेकमां, और कफको दूर करता है ।

अम्लीकापानकम्

पक्वाम्लीकासिताशीतवारिणावस्त्रगालिता । एलालवङ्गक-पूरमरिचैरवधूलिता ॥ पानकस्यास्यगंडूषंधारयित्वामुखेमु-हुः । अरुचिंनाशयत्येषपित्तंप्रशमयेत्तथा ॥

अर्थ-पकी इमलीको शीतल जलमें भिगो कपडेमें छान ले, फिर उसमें सपेद बूरा मिलाय छोटी इलायचीके दाने, लौंग, कपूर, और काली मिरच इनका चूरा डालके इसको पी थोडी थोडी देर मुखमें रखके उतार जावे तो यह अरुचिरोगको दूर करे, और पित्तको शमन करता है ।

लवंगादिचूर्णम्

लवंगकंकोलमुशीरचन्दनंनतंसनीलोत्पलकृष्णजरिकं । जलंसकृष्णागरुभृंगकेशरंकणासविश्वानलदंसहैलया ॥ तुषारजातीफलवंशलोचनाःसितार्द्धभागाःसकलंविचूर्णितं । सुरोचनंतर्पणमग्निदीपनंबलप्रदंवृष्यतमंत्रिदोषजित् ॥ उरोविबंधंतमकंगलग्रहंसकासहिक्कारुचियक्ष्मपीनसं । ग्रहण्यतीसारमुरःक्षतंतृषांतथाप्रमेहान्निखिलान्निहंतिहि ॥

अर्थ-लौंग, कंकोल, खस, सपेदचंदन, तगर, कमलगट्टा, काला जीरा, नेत्रवाला, अगर काली, नागकेशर, पीपल, सोंठ, वालछड, छोटी इलायची, कपूर, जायफल, वंशलोचन प्रत्येक समान भाग ले और सब औषधोंसें अर्द्धभाग मिश्री मिलावे । यह लवंगादिचूर्ण रुचिकारी, तृप्तकर्त्ता अग्निदीप्ती और बलप्रद, तथा शुक्रवर्द्धक है । त्रिदोष, हृदयके रोग, तमकश्वास, गलग्रह, खांसी, हिचकी, अरुचि, राजरोग, पीनस, संग्रहणी, अतिसार, उरःक्षत, प्यास, और सर्वप्रकारकी प्रमेहोंको नाश करे है ।

इति अरोचकचिकित्सा समाप्ता ।

छर्दिचिकित्सा ।

हितंतुलंघनंपुरावमीषुमारुताहृतेअथापिवामयेदमुंविरेचयेद्यथार्हतः । वराकणौषधांजनैःसलाजकोलमज्जभिर्विचूर्णितेर्मधुप्लुतैर्वमिर्विराममृच्छति ॥

अर्थ-वातकी छर्दिको त्याग कर सर्व वमनरोगोंमें प्रथम लंघन करना हित है । तथा इस रोगवालेको वमन कराकर युक्तिपूर्वक दस्त करावे । त्रिफला, पीपल, सोंठ, सुरमा, खील, बेरकी गुठली, इनको पीसके इस चूर्णको सहत मिलायके खावे तो उलटी होना रुकजावे ।

हन्यात्क्षीरोदकंपीतंछर्दिंपवनसंभवाम् ।
मुद्गामलकयूषोवाससर्पिष्कःससैंधवः ॥

अर्थ—वातकी वमन दूधजलके पीनेसें अथवा मूंग आमलेके यूषमें घृत और सैंधानिमक मिलायके पीवे तो दूर हो ।

क्षीरोदकंनासितस्यक्षीरस्यउदकंतथा । मसूरमुद्गलाजानां
यवागूर्मधुसंयुता॥ भुक्तमात्रोहरेदाशुवमिंपित्तसमुद्भवाम् ॥

अर्थ—दूधजलके नाश लेनेसें अथवा लहसीकी नाश लेनेसें पित्तकी वमन दूर हो, अथवा मसूर, मूंग, और खील, इनकी यवागु बनाय उसमें सहत मिलायके पीवे तो पित्तकी वमन दूर हो ।

पिबेद्धात्रीरसोपेतंमधुयुक्तंसुचंदनम् ।
अक्षमात्रंजयेत्तेनछर्दिमुग्रतरामपि ॥

अर्थ—सपेद चंदनके काढेमें आमलेका रस मिलाय और सहत डालके तोले-भर पीवे तो उग्रतर छर्दि दूर हो ।

गुडूचीत्रिफलानिंबपटोलैःक्वथितंजलम् ।
पिबेन्मधुयुतंतेनछर्दिर्नश्यातिपित्तजा ॥

अर्थ—गिलोय, त्रिफला, नींब, और पटोलपत्र, इनके काढेमें सहत डालके पीवे तो पित्तकी वमन दूर हो ।

हरीतकीनांचूर्णंतुलिह्यान्माक्षिकसंयुतम् ।
अधोमार्गीकृतेदोषेछर्दिःशीघ्रंनिवर्त्तते ॥

अर्थ—छोटीहरडके चूर्णको सहतमें मिलायके चाटे तो दोष दस्तके मार्ग होकर निकले और वमन तत्काल बंद होजाय ।

गुडूच्यारचितंहंतिहिमंमधुसमन्वितम् ।
दुर्न्निवारमपिछर्दिंत्रिदोषजनितांबलात् ॥

अर्थ—गिलोयके हिममें सहत डालके पीवे तो त्रिदोषजन्य घोर छर्दि दूर हो ।

एलालवंगगजकेशरकोलमज्जालाजाप्रियङ्गुघनचंदनापिप्पली-
नाम् । चूर्णानिमाक्षिकसितासहितानिलीढ्वाछर्दिंनिहंतिकफ-
मारुतपित्तजाताम् ॥

अर्थ–छोटी इलायची, लौंग, नागकेशर, वेरकी गुठली, खील, फूल प्रियंगु, नागरमोथा, सुपेद चंदन, और पीपल, इनके चूर्णको सहत मिश्रीके साथ चाटे तो त्रिदोषकी वमन दूर हो ।

अश्वत्थवल्कलंशुष्कंदग्धंनिर्वापितंजले ।
तज्जलंपानमात्रेणछर्दिंजयतिदुर्जयाम् ॥

अर्थ–सूखी पीपलकी छालको जलावे, जब जलजावे तब उसको पानीमें बुझाय देवे, उस पानीको नितार कर पीवे तो दुर्जय छर्दिका रोग दूर हो ।

कोलामलकमज्जानोमाक्षिकाविट्सितामधु ।
सकृष्णातंदुलोलेहश्छर्दिमाशुव्यपोहति ॥

अर्थ–वेरकी गुठली, आमलेकी गुठली, और मक्खीकी वीठ, इनमें मिश्री, सहत, पीपल, और चावल, इनकी लेह बनाकर पीनेसें छर्दि तत्काल दूर हो ।

आम्रास्थिबिल्वनिर्यूहःपीतःसमधुशर्करः ।
निहन्याच्छर्द्यतीसारंवैश्वानरमिवाहुतिम् ॥

अर्थ–आमकी गुठली और बेलगिरी इनका यूष बनाय सहत और मिश्री मिलायके पीवे तो वमन और अतिसारको दूर करे ।

मयूरपिच्छंसंदग्ध्वातद्भस्ममधुमिश्रितम् ।
लीढ्वानिवारयत्याशुछर्दिंसोपद्रवामपि ॥

अर्थ- मोरपंखको जलाय उस भस्मको सहतसे चाटे तो उपद्रवयुक्तभी छर्दि-रोग दूर हो ।

पुराणगोणीभस्मांभोमधुयुक्तंनिपीयच ।
छर्दिंनिहंतिमनुजःशून्यामिवहुताशनः ॥

अर्थ–पुराना टाट जलाय उस भस्मको जल डाल सहत मिलायके पीवे तो वमन होना बंद होय ।

वमिःशकृन्मूत्रविबंधरक्ताविट्पूयरुक्श्वासयुतासकासा ।
सचन्द्रिकाचातितरांप्रशस्तासोपद्रवाचेतिविवर्जनीया ॥

अर्थ–वारंवार वमनका होना, मलमूत्रका रुकना, मुखसें रुधिर, मल, राध निकले, पीडा हो, श्वास, खांसी, और उस वमनमें मोरकी चन्द्रिकाके समान चिह्न हो तथा उपद्रवयुक्त हो, ऐसे छर्दिरोगको वैद्य त्याग देवे ।

इति छर्दिचिकित्सा समाप्ता ।

अथपिपासा ।

विधिर्वातपित्तापहःप्रायइष्टःपिपासासुशीतेवहिश्चान्तरेच ।
सुशीतंचद्रिव्यंजलंक्षौद्रयुक्तंप्रतप्ताश्मलोष्टादिसिक्तंचभौमम् ॥

अर्थ-यदि बाहर भीतर शीतलता होय तो उस प्यासके रोगमें प्राय वात पित्त नाश कर्त्ता विधिहित है।तथा सुंदर दिव्यशीतल जलमें सहत मिलायके दे, यदि दिव्य जल न हो पृथ्वीकाही जल होवे तो उसमें गरम पत्थरको बुझायके देवे तो प्यास दूर हो।

वातोत्थायांपिपासायांपिवेद्दधिगुडान्वितम् । मृद्वीकाचन्द-नोशीरखर्जूरक्वथितंजलं ॥ पिवेत्क्षौद्रेणसंयुक्तंपित्ततृष्णानि-वृत्तये । श्रीपर्णीनलदमधूकधान्यशीतैःसक्षौद्रैरतिशिशिरः सितासमेतः । तृड्दाहभ्रममदमोहहातुफांटोवक्त्रस्थंहरतितृ-षांचयष्टिसंज्ञः ॥

अर्थ-वादीकी तृषामें दही गुड मिलायके पीवे । पित्तकी तृषामें दाख, सपेद चंदन, खस, और छुहारे इनका काढा कर उसमें सहत डालके पीवे । श्रीपर्णी, छड, मुलहटी, धनिया, और चंदन, इनमें सहत और मिश्री मिलाय शीतल कर पीवे तो प्यास, दाह, भ्रम, और मोह दूर हो । एवं मुलहटीका फांट बनायके मुखमें रक्खे तो तृषा रोग दूर हो ।

क्षौद्रान्वितंशीतजलंनिपीयप्रकाममाशूद्वमतःपिपासा ।
नश्यत्यथास्येविधृतावटीमांहरत्यवश्यंरजतोपजाता ॥

अर्थ-सहतके सरबतको पेट भरके पीवे, फिर उसको वमनके द्वारा निकाल डाले तो प्यास दूर हो । अथवा चांदीकी गोली मुखमें रखनेसे प्यास रोग दूर हो ।

खर्जूरमृद्वीकमधुसखंडपृथक्पलंमागधिकात्रिगंधे ।
तथार्द्धविल्वंमधुनागुटीयंतृण्मोहपित्तास्रजयेतिशस्ता ॥

अर्थ-छुहारे, दाख, मुलहटी, मिश्री, प्रत्येक ४ तोले । पीपल, दालचीनी, पत्रज और छोटी इलायची, ये २ तोले । इन सबकी सहतसे गोली करे, इसके सेवनसे प्यास, मोह, रक्तपित्त ये दूरहो ।

गदांतरेणनिर्जितंविरेचनंवमीयुता ।
वहीरसंज्ञमुद्धतातृषाविनाशयेन्नरम् ॥

अर्थ—जो तृषारोग अन्यज्वरादि रोगोंकरके निर्जित हो अर्थात् ज्वरादि अनेक रोग हो, दस्त और वमनहो, एवं जिसको बाहरका ज्ञान जाता रहाहो, उसरोगीको तृषारोग नष्ट करे है ।

इति पिपासाचिकित्सा समाप्ता ।

मूर्च्छा ।

मदेषुमूर्च्छासुचवातपित्तहरंहितंप्रायइहातिमात्रम् ।
पित्तेततःशीतविलेपसेकरत्नादिशस्तंव्यजनानिलाश्च ॥

अर्थ—मद्यजन्यरोग और मूर्च्छा रोगमें वातपित्त हरणकर्त्ता चिकित्सा हित है । यदि पित्तकी आधिक्यतासें मूर्च्छा आती होतो शीतल चंदनादिका लेप, शीतल जलका डालना, दिव्य रत्नोंका धारण करना, और पंखेसें पवन करना हित है ।

मूर्च्छांमदंचहन्यान्नस्येयुक्तंतथास्तन्यम् ।

अर्थ—स्त्रीके दूधकी नाश देनेसें मूर्च्छा और मदात्यय रोग नष्ट हो ।

समधुस्त्रिफलानिशिप्रयुक्तासगुडंप्रातरथार्द्रकंतथैव ।
दिनसप्तकयोजेयत्यवश्यंमदमूर्च्छाकसशोफकामलादीन् ॥

अर्थ—रात्रिमें मुलहटी और त्रिफला सेवन करे, और प्रातःकाल भिगोयाहुआ त्रिफलाको छान उसमें गुड अदरख मिलायके पीवे, इस प्रकार सात दिन करे तो अवश्य मदात्यय, मूर्च्छा, खांसी सूजन, और कमला दूर हो ।

पिबेद्दुरालभाक्काथंसघृतंभ्रमशांतये । शुंठीकृष्णाशताह्वानांसाभयानांपलंपलं ॥ गुडस्यषट्पलान्येषांगुटिकाभ्रमनाशिनी ।

अर्थ—भ्रमकी शांतिको धमासेका काढा घी मिलायके पीवे । सोंठ, पीपल, सतावर, और हरड, इनको एक एक पल ले गुड ६ पल ले गोली बनाय खावे तो भ्रम दूर हो ।

ताम्रंदुरालभाक्काथैःपीतंतुघृतसंयुतम् ।
निवारयेद्भ्रमिंशीघ्रंतांयथाशंभुभाषितं ॥

अर्थ—लाल चंदन, और धमासो इनके काढेमें घृत डालके पीवे तो तत्काल भ्रम रोगको दूर करे ।

इति मूर्च्छाचिकित्सा समाप्ता ।

अथ मदात्ययाधिकारः ।

मंथःखर्जूरमृद्वीकावृक्षाम्लाम्लीकदाडिमैः ।
परूषकैःसामलकैर्युक्तोमद्यविकारनुत् ॥

अर्थ—छुहारा, दाख, तंतडीक, इमली, अनारदाना, फालसे, और आमले, इनका मंथ पीवे, तो मद्यका विकार दूर करे ।

चूर्णस्तुपूरकमहौषधिहिंगुदीप्यसौवर्चलैः
सचविकैर्मदिरान्निपीतः ।

अर्थ—बिजोरा, सोंठ, हींग, अजमायन, संचरनोन, और चव्य, इनका चूर्ण सेवन करनेसें मद्यजन्यविकार दूर हो ।

कृष्णाधान्यपरूषकामरत्रुटीजीरैःसनागोषणैःसंपन्नंससितंम-
धूकसहितंयुक्तंदधित्थद्रवैः । कर्पूरेणसुवासितंमदगदान्पी-
तंजयेत्पानकंहृद्यंरोचकमग्निदीपनमिदंपूर्वैर्भिषग्भिःस्मृतम् ॥

अर्थ—पीपल, धनिया, फालसे, देवदारु, छोटी इलायची, जीरा, नागकेशर, कालीमिरच, सपेदबूरा, मुलहठी, और कमरखोंका रस, इनका पनाकरके उसको भीमसेनी कपूरसें सुवासित करे, इस पनेके देनेसें हृदयको प्रिय, रोचक, दीपक, और मदनाशक हैं ऐसे प्राचीन वैद्योंने कहाहै ।

पीत्वानुमद्यमचिरादनुलीढाशर्करासघृता ।
अतितीक्ष्णमद्यजातांमादकतामप्यपाकुरुते ॥

अर्थ—मद्य पीकर उसके पश्चात् घी और बूरा खायलेवे तो अत्यंत तीक्ष्ण मद्यकीभी मादकताशक्तिको शांत करे ।

असाध्यलक्षणम् ।

अतीवशीतार्तममंददाहंतैलप्रभास्यंरुधिराभनेत्रम् ।
आपीतनीलाभरदौष्ठजिह्वंमदात्ययंक्षीणतमंचहन्यात् ॥

अर्थ—जिसको अत्यंत शीत लगरहा हो, अत्यंत दाह हो, तेलके समान मुखकी कांति हो, रुधिरके समान लाल नेत्र हो, तथा दांत, होठ, और जीभकी कांति कुछ पीततायुक्त नीली हो, और क्षीण होगया है । ऐसे रोगीको मदात्यय रोग नाश करे ।

कूष्माण्डजोगुडयुतःस्वरसोनिहंतिपीतस्तुकोद्रवमदंसासितं पयस्तु । धत्तूरजंमदमपाकुरुतेथपौगमातृप्तिपीतमतिशीत-जलंक्षणेन ।

अर्थ-कुह्मडेके स्वरसमें गुड मिलायके पीवे तो कोदोंका मद दूर हो, और मिश्री दूध गरमागरम पीवे तो धतूरेका मद दूर हो, एवं पेट भरके शीतल जल पीनेसें सुपारीका मद दूर होता है ।

आघ्राणतोनिहन्याद्वन्यकरीषंतुपूगमदम् ।
लवणंतथासितावाश्वेताहन्यादमुंत्वरितम् ॥

अर्थ-आरनेकंडेके सूंघनेसें सुपारीका मद दूर हो, एवं नोन और सपेदबूराके खानेसें सुपारीका मद दूर हो ।

जातीफलमदंशीघ्रंहन्तिपथ्यानिषेविता ।
शीततोयावगाहाश्वशर्करादधियोजिता ॥

अर्थ-जायफलके मदको हरड तत्काल दूर करती है, एवं शीतल जलमें स्नान करना तथा दही बूराके खानेसे दूर हो ।

धात्रीस्वरसनिपीतारसगंधकज्जलीसितासहिता ।
हरतिमदात्ययरोगानाशुगरुत्मानिवोरगान्सहसा ॥

अर्थ-पारेगंधककी कजली, सपेद बूरा, इनको आमलेके स्वरसमें मिलायके पीवे तो तत्काल मदात्यय रोगको दूर करे ।

इति मदात्ययाधिकारः समाप्तः ।

दाहचिकित्सा

शतधौतघृताभ्यक्तंलिह्यात्तुयवसक्तुभिः । कौलामलकयुक्तैर्वा धान्याम्लैरपिबुद्धिमान् ॥ छादयेत्तस्यसर्वांगमारनालार्द्रवाससा । पित्तज्वरेषुयत्प्रोक्तमन्नंलेपनमौषधम् ॥ तच्चसर्वंप्रयोक्तव्यंदाहार्त्तस्यभिषग्वरैः ।

अर्थ-सौवारधुले हुए घृतको लगानेसे अथवा जोंका सत्तू लगानेसे, अथवा बेर और आमले करके तथा धान्याम्ल (गेहूं चावल आदिकी कांजी)से, दाह-

वाले रोगीका देह आच्छादन करे । अथवा कांजीमें कपडा भिगोकर उढानेसे दाहरोग दूर हो एवं जो पित्तज्वरपर अन्नलेपन और औषधि कहीहै वो सब वैद्य दाहपीडितको प्रयोग करे ।

रसादिगुटी

रसवलिघनसारचन्दनानांसनलदसेव्यपयोदजीवनानाम् । अपहरतिगुटीमुखस्थितेयंसकलसमुत्थितदाहमाश्रयेत्तम् ॥

अर्थ–पारा, गंधक, कपूर, चंदन, छड, नागरमोथा, और घी, इनकी गोली मुखमें धरनेसे सर्वप्रकारके दाहोंको दूर करे ।

महाचंद्रकलारसः

प्रत्येकंतोलमादायसूतंताम्रंतथाभ्रकम् । द्विगुणंगंधकंचैवकृत्वाकज्जलिकांशुभाम् ॥ मुस्तादाडिमतोयेनकेतकीसूरवारिणा । सहदेव्याःकुमार्य्याश्चपर्पटोशीरमागधी ॥ श्रीगंधसारिवाचैषांसमानंचूर्णकंक्षिपेत् । द्राक्षाफलकषायेणसप्तधापरिभावयेत् ॥ छायाशुष्कांविधेयाथवटीकार्याचणोपमा । महाचन्द्रकलानाम्नारसेन्द्रोयन्निरूपितः ॥ अम्लपित्तप्रशमनः प्रदरध्वंसकारकः । अंतर्बाह्यमहादाहविध्वंसनघनाघनः ॥ ग्रीष्मकालेशरत्कालेविशेषेणप्रशस्यते । भ्रमंमूर्च्छांरक्तपित्तंपित्तज्वरदवानलः ॥ मूत्रकृच्छ्राणिसर्वाणिप्रमेहानपिदुस्तरान् । हरत्येषरसोनूनंमहाचंद्रकलाभिधः ॥

अर्थ–पारा, तामा, और अभ्रक प्रत्येक एक एक तोला । गंधक २ तोला ले, इन सबको मिलाय कजली करे, फिर इसमें मोथा, अनारका रस, केतकीके फूलोंका रस, कमल, सहदेई, और घीगुवार इनके रसमें खरल करे । फिर पित्तपापडा, खस, पीपल, चंदन, और सरिवन प्रत्येक तोला तोला लेकर चूर्ण करके मिलाय देवे, और दाखके काढेकी सात भावना देय । छायामें सुखाय चनेकी बराबर गोली बनावे यह महाचंद्रकला नामक रसेन्द्र कहा है इसके सेवनसे अम्लपित्त, प्रदर, घोर अतरदाह, बाह्यदाह, भ्रम, मूर्च्छा, रक्तपित्त, पित्तज्वर मूत्रकृच्छ्र घोर प्रमेह, इनको यह महाचंद्रकलारस शांत करता है । इस रसको गरमीकी ऋतुमें और शरद ऋतुमें सेवन करे, यह मंदाग्नि नाश करे ।

इति दाहचिकित्सा समाप्ता ।

अथ उन्मादचिकित्सा ।

वातिकेस्नेहपानंप्राग्विरेकःपित्तसंभवे ।
कफजेवमनंकार्यंपरोबस्त्यादिकःक्रमः ॥

अर्थ–वातके उन्माद रोगमें प्रथम स्नेहपान (घृत तैल आदि पीना) और पित्तकमें दस्त कराना; कफजन्य उन्मादमें वमन कराना, शेष उन्मादोंमें बस्ती आदिकर्म करने चाहिये ।

जलाग्निद्रुमशैलेभ्योविषमेभ्यश्चतंसदा ।
रक्षेदुन्मादिनंचैवसद्यःप्राणहरंहितत् ॥

अर्थ–उन्माद रोगीको जल, अग्नि, वृक्ष, पर्वत, और विषमस्थानसे सदैव रक्षा करना अर्थात् इनके समीप नहिं जाने देना, क्योंकि ये तत्काल प्राणके हर्त्ता है ।

ब्राह्मीकूष्मांडीफलषड्ग्रंथाशंखपुष्पिकास्वरसाः ।
उन्मादहराद्दष्टाः पृथगेतेकुष्ठमधुमिश्राः ॥

अर्थ–ब्राह्मी, पेठा, वच, संखाहूली, इनके पृथक् पृथक् स्वरसमें कूट सहत मिलाकर देनेसे उन्मादनाशक है ।

ब्राह्मीरसःस्यात्सवचःसकुष्ठःसशंखपुष्पःससुवर्णचूर्णः ।
उन्मादिनामुन्मदमानसानामपस्मृतौभूतहतात्मनांच ॥

अर्थ–ब्राह्मीका रस, वच, कूठ, संखाहूली, और नागकेशर इनके चूर्णकी युक्तिसैं नस्य अंजन किंवा पीनेको देवे तो उन्माद, मृगी, भूतोन्माद, ये रोग दूर हो ।

कृष्णाधत्तूरजैर्बीजैःपंचभिःपर्पटीरसः ।
साज्योयोज्यःप्रशांत्यर्थमुन्मादस्याशुनावने ॥

अर्थ–पीपल, धतूरेके पांच बीज, और पर्पटीरस इनको घीके साथ नाश देवे तो उन्माद रोग दूर हो ।

उन्मादगजकेशरी रसः

सूतंगंधंशिलातुल्यंस्वर्णबीजंविचूर्णयेत् । भावयेदुग्रगंधायाः क्वाथेनमुनिशःपृथक् ॥ ब्राह्मीरसेनसतैवभावयित्वाविचूर्णयेत् । रसःसंजायतेनूनमुन्मादगजकेसरी ॥ अस्यमाषःससर्पिष्कोलीढोहंतिहठाद्द्रुदम् । उन्मादाख्यमपस्मारंभूतोन्मादमपिज्वरम् ॥

अर्थ-पारा, गंधक, मनसिल, प्रत्येक समान ले। और सबकी बराबर धतूरेके बीज ले, ये सब एकत्र खरलकर वचके रसकी और अगस्तियाके रसकी एवं ब्राह्मीके रसकी सात सात भावना देय तो यह उन्मादगजकेशरी रस बने, इस रसको घीके साथ १ मासे चाटे तो अत्यंत शीघ्रतासें उन्माद, अपस्मार, भूतोन्माद, और ज्वर इनका नाश करे ।

अशुचीन्यन्नपानानिनदीरुच्चावचानिच ।
प्रासादाच्छाखिनोऽस्त्राणिसेवेतोन्मादवान्नच ॥

अर्थ-उन्मादरोगी अपवित्र अन्नजल, नदी, ऊंचेनीचे स्थान, देवस्थान वृक्ष, और तलवार, छुरी आदि शस्त्रोंको कदाचित् सेवन न करे, अर्थात् इनसें बचा रहै ।

इति उन्मादचिकित्सा समाप्ता ।

अथापस्मारचिकित्सा ।

तैलेनलशुनःसेव्यःपयसाचशतावरीम् ।
ब्राह्मीरसश्चमधुनासर्वापस्मारभेषजम् ॥

अर्थ-तेलके साथ लहसन, अथवा दूधके साथ सतावर, एवं सहतके साथ ब्राह्मीका रस सेवन करना, मृगी रोगको दूर करनेवाला है ।

यःखादेत्क्षीरभक्ताशीमाध्वीकेनवचारजः ।
अपस्मारंमहाघोरंसुचिरोत्थंजयेद्ध्रुवम् ॥

अर्थ-जो मनुष्य सहतके साथ वचका चूर्ण खाय ऊपरसें दूधका पथ्य करे तो बहुत दिनका महाघोर अपस्मार रोग निश्चय दूर हो ।

कूष्मांडकफलोत्थेनरसेनपरिपेषयेत् ।
अपस्मारविनाशाययष्ट्याह्वंनापिबेत्त्र्यहम् ॥

अर्थ-मुलहटीको पेटेके रसमें पीसके तीन दिनसे बनकरे तो मृगीरोग शांतिहो ।

कूष्मांडकरसेसर्पिरष्टादशगुणंपचेत् ।
यष्ट्याह्वकल्कंतत्पानमपस्मारविनाशनम् ॥

अर्थ-अठारहगुने पेठेके रसमें घृतको परिपक्व कर मुलहटीके कल्कके साथ इस घृतको देय तो मृगीरोग दूर होवे ।

द्रोकीटमेषोविधवदानीयरविवासरे ।
कंठेभुजेवासंधार्यंजयेदुग्रामपस्मृतिम् ॥

अर्थ-रविवारके दिन विधिपूर्वक मेढाके सिरके दो कीडे लावे, उनको किसीयंत्रमें धरके कंठमें, अथवा भुजामें धारण करे तो, उग्र अपस्माररोग दूर हो ।

उल्लंबितनरग्रीवापाशंदग्ध्वामषीकृता ।
शीताम्बुनासमापीताहंत्यपस्मारमुद्धतम् ॥

अर्थ-जिस रस्सीमें चोरका सिर टांगा होवे उस रस्सीको जलाय भस्म करे उस भस्मको शीतल जलके साथ पीवे तो घोर मृगीका रोग दूर हो ।

शंखपुष्पीवचाब्राह्मीकुष्ठमेषांरसैःसह ।
भस्मसूतःपर्पटीवासेव्यापस्मारशांतये ॥

अर्थ-संखाहूली, वच, ब्राह्मी और कूठ, इनके रसके साथ पारेकी भस्म, अथवा पर्पटी सेवनकरना मृगीरोगको शांति करे है ।

इति अपस्मारचिकित्सा समाप्ता ।

वातव्याधिचिकित्सा ।

शिरोग्रहेतुकर्त्तव्याशिरोगतमरुत्क्रिया ।
दशमूलीकषायेणमातुलुंगरसेनच ॥
शृतेनतैलेनाभ्यंगःशिरोबस्तिःप्रयुज्यते ।

अर्थ-यदि वादी मस्तकको पकडलेवे तो जो शिरोगतवादीकी चिकित्सा लिखीहै वो करे । एवं दशमूलके काढेमें अथवा विजोरेके रसमें तेलको पकाय देहमें और मस्तकमें मर्दन करे तथा शिरोबस्तीका प्रयोग करे ।

शुंठीपिप्पल्यूषणंदीप्यकश्चसिंधूद्भूतंचेतिसर्वंपृथग्वा ।
तद्रूपंवासूक्ष्मचूर्णीकृतंवाजृंभाभंगस्तत्कृतःस्यात्तदेव ॥

अर्थ-सोंठ, पीपल, कालीमिरच, अजमायन, और सेंधानिमक इन सबको अथवा एक एकको पृथक् पृथक् पीस सेवन करे तो बहुत जंभाई आना दूर हो ।

जृंभावेगेसमुत्पन्नेशोभनेशयनेनरं ।
स्वापयेत्तेननियमाज्जृंभावेगःप्रशाम्यति ॥

अर्थ-जिस मनुष्यको जंभाईका वेग हो उसको उत्तम शय्यापर सुलावे तो निश्चय जंभाईका वेग दूर हो ।

जृंभावेगःक्षयंयातिकटुतैलेनमर्दनात् ।
भोजनात्स्वादुभोज्यानांतथाताम्बूलभक्षणात् ॥

अर्थ—कडुए तेलकी मालिस करनेसें जंभाईका बहुत आना बंद हो, एवं स्वादु भोजन करनेसे और बीडी चबानेसैभी जंभाई दूर हो ।

संवृत्तांचिबुकंस्निग्धंस्विन्नमुन्नमयेद्भिषक् ।
विवृत्तंनमयित्वातुकुर्यात्प्रोक्तामिहाक्रियाम् ।

अर्थ—यादि मुखवादीके कारण बंद होगया हो तो स्निग्ध पदार्थ चुपड बफारा देकर उघाडे, और यदि मुख खुला हुआ रहजाय तो उसपर कहे हुए उपचार कर और दाबके दूर करे ।

पिप्पलीमार्द्रकंचापिसंचर्व्यचमुहुर्मुहुः । निष्ठीवेत्तततोयेन शोधयेद्वदनांतरम् ॥ निष्कुल्यलशुनंसम्यक्संक्षुद्यातिलतैलवत् । सैंधवेनान्वितंखादेद्धनुस्तंभार्दितोनरः ॥

अर्थ—पीपल, और अदरखको वारंवार चबाय कर थूकदेवे, और गरम जलसें मुखको शुद्ध करडाले, तो मुखदोष दूर हो । लहसनको छील तिलोंके तेलमें पीस सैंधेनिमकके साथ खावे तो हनुस्तंभ (ठोडीका जिकडना) दूर हो ।

रसोनगुटिकामाषविदलंपरिपेष्यच । योजयेत्पिष्टिकांतांचसैंधवार्द्रकहिंगुभिः ॥ ततस्तुवटकान्कृत्वातिलतैलेपचेच्छनैः । भक्षयेत्तान्यथावह्निहनुस्तंभीसुखीभवेत् ॥

अर्थ—लहसनका गोला, और धुलीहुई उडदकी दाल, दोनोंको पीस पिट्ठी करे उसमें सैंधानिमक, अदरख, और हिंग मिलाय बडे बनावे, उनको तेलमें पक कर यथा जठराग्निके अनुसार खाय तो हनुस्तंभी मनुष्य सुखी होय ।

जिह्वास्तंभेयथावस्थंवातव्याधिचिकित्सितं ।
सामान्योक्ताक्रियाचात्रार्दितास्यापिहितामता ॥

अर्थ—जिव्हास्तंभपर अवस्थानुसार वातव्याधिकी चिकित्सा करे, और जो अर्दितरोगपर सामान्य चिकित्सा कही है वोभी जिह्वास्तंभपर हितहै ।

कल्याणकावलेहः ।

सहरिद्रावचाकुष्ठंपिप्पलीविश्वभेषजं । अजाजीचाजमोदा

चयष्टीमधुकसैंधवं ॥ एतानिसमभागानिसूक्ष्मचूर्णानिकार-
येत् । तच्चूर्णंसर्पिषालोडय्यप्रत्यहंभक्षयेन्नरः ॥ एकविंशतिरा-
त्रेणभवेच्छ्रुतिधरोनरः । मेघदुंदुभिनिर्घोषोमत्तकोकिलनिःस्वनः॥

अर्थ—हलदी, वच, कूठ, पीपल, सोंठ, जीरा, अजमोद, मुलहटी, और सैंधानिमक, ये सब बराबर लेकर महीन चूर्ण करे । इस चूर्णको गौके घीमें मिलायके भक्षण करे तो २१ रात्रिमें अनेक शास्त्रको धारण करनेवाला हो, तथा मेघ और दुंदुभीके समान शब्द और मतवाली कोकिलके समान स्वर होवे ।

वरतिक्तोक्तपर्पटः

सतगरवरतिक्तारेवतांभोदतिक्तानलदतुरगगंधाभारतीहारहूराः । मलयजदशमूलीशंखपुष्पीसुपक्काप्रलपनमपहन्युःपानतोनातिदूरात् ॥

अर्थ—तगर, पित्तपापडा, नागरमोथा, छड, असगंध, कुटकी, ब्राह्मी, अमलतास, मुनक्का, सपेदचंदन, दशमूल, और संखाहूली, इनका काढा करके पीवे तो यह तत्काल प्रलाप रोगको दूर करे ।

घर्षेज्जिह्वांजडांसिंधुत्र्यूषणैःसाम्लवेतसैः । किराततिक्तकःकट्वीकुटजस्यफलंत्वचः ॥ ब्राह्मीफलंचपालाशंराजिकाकृष्णजीरकं । पिप्पलीपिप्पलीमूलंचित्रंनागरमूषणं ॥ एषांकल्कैर्मुहुर्घर्ष्येजिह्विकामार्द्रकेरसैः । तेनसम्यग्विजानातिरसनासकलान्रसान् ॥

अर्थ—यदि वादीसें जीभ जड होगई हो तो सैंधानिमक, सोंठ मिरच, पीपल, और अमलवेत इनके चूर्णसें जीभको घिसें (अमलवेतके अभावमें चूक लेना चाहिये) । अथवा चिरायता, नीमकी छाल, कुटकी, इन्द्रजौ, कुडाकी छाल, ब्राह्मी, पलाशपापडी, राई, कालाजीरा, पीपल, पीपलामूल, चित्रक, सोंठ, और मिरच, इनका चूर्ण करके अथवा अदरखके रससे उक्त औषधोंका कल्क करके इससें जीभको घिसै तो जीभ सर्व रसोंको जानने लगे ।

कल्कःकिराततिक्ताजिह्वायाःशून्यतांहरेत् ।
सुप्तवातेत्वसृङ्मोक्षंकारयेद्बहुशोभिषक् ॥

अर्थ-किरात तिक्तादि कल्क जो ऊपर कह आएहैं वह जीव्हाकी शून्यताको हरण करे । और सुप्तवातपर वारंवार रुधिर मोक्षण करना चाहिये ।

दिह्याच्चलवणांगारधूमैस्तैलसमन्वितैः । स्नेहपानानिनस्यंच भोज्यान्यनिलहंतिच ॥ उपनाहाश्चशस्यंतेस्वेदनंवस्तयोऽर्दिते ।

अर्थ-एवं सैंधानिमक, घरका धूँआ, और तेल मिलाय इसका लेप करे तो सुप्तवात दूर हो । स्नेह पान, नस्य, वातनाशक भक्ष पदार्थ, और पसीने काढने इत्यादि उपचार अर्दितवातपर उत्तम है ।

रसोनकल्कंतिलतैलमिश्रंखादेन्नरोयोर्दितरोगयुक्तः ।
तस्यार्दितंनाशमुपैतिशीघ्रंवृन्दंघनानामिववायुवेगात् ॥

अर्थ-लहसनका कल्क तिलके तेलमें मिलायके खाय तो अर्दितवायु नाश होय, जैसे मेघोंका समुदाय पवनके वेगसें नाश होता है ।

कुक्कुटांडद्रवैरुष्णैःसैंधवाज्यसमन्वितैः ।
ग्रीवांसंमर्दयेत्तेनमन्यास्तंभःप्रशाम्याति ॥

अर्थ-मुरगेके अंडेका सोरुआ, सैंधानिमक, और घी डालके गरमकर मन्यानाडी (जो नाडके पिछाडी होती है,) उसपर मालिस करे तो मन्यास्तंभ शांत होय ।

बाहुशोषेपिबेद्भुक्त्वासर्पिःकल्याणकंमहत् । बलामूलशृतंतोयं सैंधवेनसमन्वितम् ॥ परमौषधमपबाहुकमन्यास्तंभोर्द्धजत्रुगतरोगे ॥ शीतलजलेननस्यंतदुपशमेजिंगिनीचपुरः ॥

अर्थ-बाहुशोष होनेसें भोजन करके फिर बृहत्कल्याणघृत पीवे, अथवा गंगेरनकी जडका काढा करके सैंधानिमक मिलायके देवे । यह यत्न बाहुशोष और मन्यास्तंभ वात इनपर उत्तम है कि मजीठ और गूगल शीतल जलमें भिजो उसका नस्य देवे ।

माषबलाशुकसिम्बीकत्तृणरास्नाश्वगंधरुबुकानां । क्वाथःप्रातः पीतोरामठलवणान्वितःकोष्णः ॥ अपहरतिपक्षवातंमन्यास्तंभंसकर्णरुजं । दुर्जयमर्दितवातंसप्ताहाज्जयतिचावश्यम् ॥

अर्थ-उडद, गंगेरन, कौंचके बीज, रोहिषतृण, रास्ना, असगंध, और अंडकी जड इनका काढाकर हिंग और सैंधानिमक मिलायकर गरम प्रातःकाल पीवे तो पक्षाघात मन्यास्तंभ, कर्णनाद, और अर्दितवायु इनको सात दिनमें पराजय करे ।

मूलंबलायास्त्वथपारिभद्रात्तथात्मगुप्तास्वरसंपिवेद्वा ।

युंजीतयोमाषरसेननस्यंभवेदसौवज्रसमानबाहुः ।

अर्थ–गंगेरनकी जड, अथवा बकायनकी जड, तथा कौंच, इनका स्वरस पीवे और उडदके क्वाथकी नाश लेवे तो वह वज्रके समान भुजावाला हो ।

दशमूलीबलामाषक्वाथंतैलाज्यमिश्रितम् ।
सायंभुक्त्वाचरेन्नस्यंविश्वाच्यामपबाहुके ॥

अर्थ–दशमूल, गंगेरन, उडद इनके काढेमें तेल और घी मिलाय सायंकालमें भोजन करके इसकी नस्य लेवे तो विश्वाची और अपबाहुक दूर हो ।

माषसिंधुबलारास्नादशमूलकहिंगुभिः । वचाशतजटाख्याभिःसिद्धंतैलंसनागरम् ॥ ऊर्ध्वंभक्ताशनाद्धन्याद्बाहुशोषापबाहुकौ । विश्वाचीमुद्धतांचापिपक्षाघातंतथार्दितम् ॥ अर्दिते शोफसंयुक्तेकुर्याद्वासृग्विमोक्षणम् ॥

अर्थ–उडद, सैंधानिमक, गंगेरन, रास्ना, दशमूल, हींग, वच, शतावर, इनसें सिद्धकराहुआ तेल सोंठके साथ भोजनोत्तर सेवन करे तो बाहुशोष, अपबाहुक, विश्वाची, पक्षाघात, और अर्दितरोग इनका नाश करे । सूजनयुक्त अर्दित रोगमें सिंगी आदि लगाकर रुधिर निकलवाना चाहिये ।

भागास्तुदशविश्वायास्तत्तुल्योवृद्धदारुकश्चापि । पथ्यात्रिपंचभागाचतुरसंहिङ्गुसंभृष्टम् ॥ एकःसैंधवभागस्तत्तुल्यंचित्रकंचात्र । संवृद्धमूर्ध्ववातंहन्त्येतच्चूर्णितंभुक्तम् ॥

अर्थ–सोंठ १० तोले, विधायरा १० तोले, हरड ५ तोले, हींगभूनी ४ तोले, सैंधानिमक, और चीता, प्रत्येक एक एक तोले ले; इन सबका चूर्ण कर सेवन करे तो बढा हुआ ऊर्ध्ववातका नाश होवे ।

कर्षमात्राभवेत्कृष्णात्रिवृतास्यात्पलोन्मिता । खंडादपिपलंग्राह्यंचूर्णमेकत्रकारयेत् ॥ मधुनाक्षमितंलिह्याच्चूर्णमाध्माननाशनम् ।

अर्थ–पीपल १ तोले, निसोथ ४ तोले, मिश्री ४ तोले, इसप्रमाण चूर्ण कर ३ मासे सहतके साथ सेवन करे तो पेटका फूलना दूर हो ।

बृहद्रास्नादि ।

रास्नावातारिमूलंचवासकंचदुरालभा ॥ सटीदारुबलामुस्ता

नागरातिविषाभया । स्वदंष्ट्राव्याधिघातश्चामिसिधान्यंपुनर्नवा ॥ अश्वगंधामृताकृष्णावृद्धदारुःशतावरी । वचासहचरश्चैवचविकाबृहतीद्वयम् ॥ समभागानितैरेतैरास्नात्रिगुणभागिका । कषायंपाययेत्सिद्धमष्टभागावशेषितम् ॥ शुंठीचूर्णसमायुक्तमाभाद्येनचसंयुतं । अलंबुषाचूर्णयुक्तंपिप्पलीचूर्णसंयुतम् ॥ यथादोषंयथाव्याधिप्रक्षेपंकारयेद्भिषक् । सर्वेषुवातरोगेषुसंधिमज्जागतेषुच ॥ आनाहेषुचसर्वेषुसर्ववातानुकम्पने । कुब्जकेवामनेचैवपक्षाघातेतथार्दिते ॥ जानुजंघास्थिपीडासुगृध्रस्यांचहनुग्रहे।प्रशस्तंवातरक्तेस्यादूरुस्तंभेतथार्शसि ॥ विश्वाचीगुल्महृद्रोगेविषूचीक्रोष्टुशीर्षके ।

अर्थ—रास्ना, अंडकीजड, अडूसा, धमासो, कचूर, देवदारु, गंगरन, नागरमोथा, सोंठ, अतीस, हरड, गोखरू, अमलतास, साफ, धनिया, सोंठ, असगंध, गिलोय, पीपल, विधायरो, सतावर, वच, पियावांसा, चव्य, दोनोकटेली, ये सब वस्तु समान ले । और रास्ना एक औषधसे तिगुनी लेवे । इन सबका अष्टावशेष काढा करे, उसमें सोंठका चूर्ण और अमरवेल अथवा लजालूके चूर्णके साथ अथवा पीपलका चूर्ण ये दोषोंके अनुसार वैद्यको मिलाने चाहिये तो सर्व संधि मज्जागत वातके रोग, अफरा, कंपवात, कुब्जकवात, वामनवात, पक्षाघात, अर्दित, घोटू, पींडरी, हड्डी इनकी पीडा । गृध्रसी, हनुग्रह, वातरक्त, ऊरुस्तंभ, बवासीर, विश्वाची, गोला, हृद्रोग, विषूचिका, और क्रोष्टुशीर्षक, इन रोगोंका यह बृहद्रास्नादिक्काथ दूर करता है ।

नाराचरसः ।

अभयारग्वधोधात्रीदंतीतिक्तास्नुहीत्रिवृत् ॥ मुस्ताप्रत्येकमेतानिग्राह्याणिपलमात्रया । तानिसंक्षुद्यसर्वाणिजलाढकयुगेपचेत् ॥ तत्रतोयेष्टमेभागेकषायमवतारयेत् । निस्त्वग्जैपालबीजानिनवानिपलमात्रया ॥ तनुवस्त्रधृतान्येवतस्मिन्क्वाथेशनैःपचेत् । ज्वालयेदनलंमंदंयावत्क्वाथोघनोभवेत् ॥ ततःखल्वेक्षिपेद्भागानष्टौजैपालबीजतः । भागांस्त्रीन्नागरात्

द्वौचमरिचात्द्वौचपारदात्॥ गंधकात्द्वौचतानीहयावद्यामंवि-मर्दयेत् । रसोनाराचनामायंभक्षितोरक्तिकामितः ॥ जलेन शीतलेनैवरोगानेतान्विनाशयेत् । आध्मानंशूलमानाहंप्रत्याध्मानंतथैवच ॥ उदावर्त्ततथागुल्ममुदराणिचनाशयेत् । वेगेशांतेचभुंजीतशर्करासहितंदधि ॥ ततस्तत्सैंधवेनापिततो दध्योदनंमनाक् ।

अर्थ–हरड, अमलतासका गूदा, आमले, जमालगोटा, कुटकी, थूहर, निसोथ, और नागरमोथा, ये प्रत्येक चार चार तोले लेय । सबको कूट पीस ५१२ तोले जलमें अष्टावशेष काढा करके छानले, फिर इस काढेमें छिले जमालगोटा ४ तोले वस्त्रमें बांधके लटकाय देवे और मंदाग्निसें जबतक काढा न हो पक्क करे, फिर उनको पोटलीसें खोल खरलमें जमालगोटाके ८ भाग, सोंठ ३ भाग, कालीमिरच, पारा, गंधक, ये दो दो भाग ले सबको एकत्र कर प्रहरभर खरल करे, यह नाराचरस शीतल जलसें १रत्ती लेवे तो अफरा, शूल, वायुका अवरोध, प्रत्याध्मान, उदावर्त्त, गुल्म, और सर्व प्रकारके उदर रोगोंको नाश करे।जब दस्त होना बंद होजावे तब दही खांड और भात मिलायके भोजन करे, अथवा दहीभात और सैंधानिमक ये पथ्यमें अल्प देवे।

लघुशुंठीकृतंचूर्णपलंसप्तामितंबुधैः ॥ तत्समंगोघृतंदत्वाभर्जयित्वाततोबुधः ॥ शुंठीसमंरसोनंचपिष्टातत्रविनिःक्षिपेत् । पलसप्तमिदंज्ञेयंमधुशुभ्रंप्रयत्नतः ॥ सर्वमेकत्रसंयोज्यंपलमात्रंतुभक्षयेत् । पक्षाघातंहनुस्तंभंकटिभंगंतथैवच ॥ बाहुपीडांजयेत्तीव्रांवातरोगंचनाशयेत् ।

अर्थ–सोंठका चूर्ण २८ तोले गौका घी २८ तोले डालके उस सोंठको घीमें भूने, फिर लहसनकी छील और पीस २८ तोले उसमें डाले, और २८ तोले, इसमें सहत मिलावे, सबको एकत्र कर ४ तोले नित्य भक्षण करे तो यह सोंठ पक्षाघात, हनुस्तंभ, कटिभंग, बाहुपीडा, और वातरोग, इनका नाश करे ।

ज्योतिष्मतीचंद्रसूरःकालाजाजीयवानिका ॥ मेथीतिलांश्च संपीड्ययंत्रेतैलंसमुद्धरेत् । अभ्यंगान्मारुतव्याधीन्समस्तान्संप्रणाशयेत् ॥

अर्थ-मालकांगनी, हालो, कालाजीरा, अजमायन, मेथी, और तिल, इनको यं-त्रमें दाबकर तेल निकाले, इस तेलके मालिस करनेसें सर्वप्रकारकी वातव्याधि दूर हो॥

विजयभैरववर्त्तीतैलं।

पारदंगंधकंचैवहरितालंमनःशिला। समभागानिसर्वाणिसू-क्ष्मचूर्णानिकारयेत्॥ त्रिदिनंतुप्रयत्नेनकांजिकेनविमर्दयेत्। हस्तमात्रंततोवस्त्रंसंप्रसार्यविलेपयेत्॥ वामहस्तेधृतांवर्तिं कृत्वाचैवत्वधोमुखीं। लोहपात्रमधोधृत्वातैलमूर्ध्वंप्रदाप-येत्॥ द्रव्यतस्तिलजंतैलंदातव्यंचचतुर्गुणम्। पादशेषंत-तोज्ञात्वाततःसिद्धंप्रजायते॥ हस्तबाहुशिरोग्रीवाजंघाजानु षुकंपजं। मर्दनादेवनश्यंतिवज्राभिंद्राशनिर्यथा॥

अर्थ-पारा, गंधक, हरताल, और मनसिल, ये समान भाग लेकर तीनदिन कांजीमें खरल करे। फिर १ हाथ कपडाको बिछाय उसपर उक्तपिट्टीका लेप करदेवे उसको सुखाय बत्ती बनावे। उसको वाएहाथसे इस प्रकार पकडेकि उसका मुख नीचेको रहे और उस बत्तीके नीचे लोहका थाल रखदेवे, और उस बत्तीके ऊपर तिलका तेल डालता जावे, परंतु तैल पारेआदि औषधोंसे चौगुना चाहिये, जब सब तैल टपक जावे तब उस बत्तीको दूर करे और तेलको उठाय कर धरलेवे। इसके लगानेसें हाथ पैर मस्तक नाड पीडरी घोटू इनकी वात तथा कंपवात शीघ्र नष्ट हो।

बृहद्विजया वटी।

पलत्रयंहरीतक्याश्चित्रकस्यपलत्रयम्। एलात्वक्पत्रमुस्तानां भागोर्द्धपलिकोमतः॥ रेणुकार्द्धपलःप्रोक्तस्तदर्द्धं नागकेश-रम्। व्योषंच पिप्पलीमूलंविषंचपलमात्रकम्॥ लोहचूर्ण-पलंचैकंत्वक्क्षीर्य्याश्च पलंस्मृतम्। रसंपलंपलंगंधंसूक्ष्मचू-र्णानिकारयेत्॥ पुराणगुडपक्केषुतुलार्द्धंतद्विनिक्षिपेत्। हि-मस्पर्शंचमृद्नीयात् घृतेनाक्तांततोबुधः॥ प्रकुर्याद्गुटिकांवैद्यो विजयांबदरास्थिवत्। शुभेहनिप्रयुंजीतवटीमेकांयथाबलम्॥ घृतेनभोजयेत्तावद्यावदस्यबलंभवेत्। तद्बलोपचयंज्ञात्वा पुनर्द्वेद्वेप्रयोजयेत्॥ अथवागुटिकांसार्द्धांयथानपरिपीडयेत्।

मासद्वयेनश्लेष्माणंपित्तंचैवत्रिभिर्हरेत् ॥ चतुर्भिर्वायुदोषांश्च नाशयेन्नात्रसंशयः । मासैस्तुसप्तभिर्द्वंद्वजातान्रोगान्व्यपोहति ॥ सर्वव्याधिविनिर्मुक्तोवर्षेणैकेनजायते । वर्षद्वयप्रयोगेनवलीपलितवर्जितः ॥ जीवेद्वर्षशतंचैवनात्रकार्याविचारणा ॥

अर्थ—हरडकी छाल १२ तोले, चीतेकी छाल १२ तोले, इलायची, दालचीनी, पत्रज, और नागरमोथा प्रत्येक दो दो तोले लेवे । अंडकी जड २ तोले, नागकेशर १ तोला, सोंठ, मिरच, पीपल, पीपरामूल, और विष प्रत्येक चार चार तोले लेवे, लोहभस्म ४ तोले, वंशलोचन ४ तोले, पारा और गंधक प्रत्येक चार चार तोले लेवे । सबका चूर्ण कर अर्धतुला पुराने गुडकी चासनी कर उसमें सब औषध मिलायदेवे, फिर शीतल स्थानमें कुछ घी डालके घोट बेरकी गुठलीके बराबरकी गोली बनावे । इसको वैद्य शुभमुहूर्त्तमें रोगीको १ गोली घीके साथ जबतक देवे कि जबतक रोगीके देहमें बल न आवे, जब बल आयजावे तब २ गोली देवे, अथवा १॥ गोली देवे, तो दो महिनेमें कफको, तीन महिनेमें पित्तको और ४ महिनेमें सर्व वातविकारोंको दूर करे, इसमें संदेह नहीं है । सात महिने सेवन करनेसें द्वंद्वजरोगोंको, वर्षदिनमें सर्व रोगरहित होताहै । और दोवर्ष इसके सेवन करनेसें वलीपलित रहित हो । सौ वर्षकी आयु हो, इसमें संदेह नहीं है ।

अष्ठीलायाःक्रियाकार्यागुल्मस्यांतरविद्रधेः॥कारयेद्वालुकास्वेदंत्रिकशूलीप्रयत्नतः।खट्वाधस्तात्करीषाग्निंधारयेत्सततंनरः॥

अर्थ—अष्ठीलानामक वातव्याधिमें गुल्मरोग और अंतरविद्रधिकी जो चिकित्सा कहीहै वह करे । और त्रिकशूली रोगवाला वालुकासें स्वेदन करे, और खाटके नीचे प्रत्येक समय लीदकी अग्निको रक्खा करे ।

त्रयोदशांगो गुग्गुलुः ।

आभाश्वगंधाहपुषागुडूचीशतावरीगोक्षुरकश्वरास्ना । श्यामाशताह्वाचसटीयवानीसनागरैश्चेतिसमंविचूर्ण्य ॥ सर्वैःसमं गुग्गुलमत्रदद्यात्क्षिपेदिहाज्यंचतदर्द्धभागम् । तद्भक्षयेदर्द्धपिचुप्रमाणंप्रभातकालेसुरयाथयूषैः[1] ॥ मद्येनवाकोष्णजलेनवापिक्षीरेणवामांसरसेनवापि । त्रिकग्रहेजानुग्रहेचवातेभुजास्थितेवाचरणास्थितेच ॥ संधिस्थितेचास्थिगतेचतस्मिन्मज्ज-

१ सुरपाद्यूषैरितिपाठांतरम् ।

स्थितेस्नायुगतेचकोष्ठे । रोगान्हरेद्वातकफानुबंधान्वातोरितान् हृद्ग्रहयोनिदोषान् ॥ भग्नास्थिवृद्धेषुचखंजतायांसगृध्रसीकेस्व-लुपक्षवाते।महौषधंगुग्गुलमेतमाहुस्त्रयोदशांगंभिषजःपुराणाः।

अर्थ–बबूलकी छाल, असगंध, हौऊबेर, गिलोय, सतावर, गोखरू, रास्ना, निसोथ, सौंफ, कचूर, अजमायन, और सोंठ, सब समान भाग ले चूर्ण करे। और सब औषधोंकी बराबर शुद्ध गूगल डाले, और गूगलसे चौथाई भाग घी डाले, सबका एक जीव कर ५ मासे नित्य मद्यके साथ अथवा गरम जलके साथ, अथवा मांसके सोरुआके साथ अथवा दूधके साथ सेवन करे तो त्रिकशूल, घोटू और ठोडीका जिकडजाना, भुजाकी पैरकी संधिकी हड्डीकी मज्जाकी स्नायुकी कोठेकी ये सर्व प्रकारकी वात दूर हो । वातकफके रोग, हृदय, और योनिके दोष, टूटी, हड्डी, वृद्धताका रोग, खंजवायु, गृध्रसी, पक्षाघात, इन सब रोगोंको यह परमोत्तम औषधी है प्राचीन वैद्य इसको त्रयोदशांगगुग्गुल कहते हैं ।

बलामूलत्वचश्चूर्णंससितं कर्षसंमितम् ।
पिबेत्कुडवदुग्धेनमुहुर्मूत्रप्रशांतये ॥

अर्थ–गंगेरनकी जडकी छालका चूर्ण १ तोला, और मिश्री १ तोला, दोनोंको मिला १६ तोले, दूधके साथ पीवे तो वारंवार मूत्र होना बंद होय ।

पथ्याविभीतधात्रीणांचूर्णंचूर्णमृतायसः ।
मधुनासहसंलीढंमुहुर्मूत्रप्रशांतिकृत् ॥

अर्थ–हरड, बहेडा, आमला, इनका चूर्ण तथा लोहकी भस्म, एकत्र कर सहतसें चाटे तो वारंवार मूत्र उतरना शांत हो ।

यवक्षारस्यचूर्णंतुसंयोज्यसितयासह । भक्षयेन्नियतंतस्यप्रशाम्येन्मूत्रनिग्रहः ॥ कूष्मांडकस्यबीजानिबीजानित्रपुसस्य च । बस्तौसंधारयेत्तेनप्रशाम्येन्मूत्रनिग्रहः ॥ आमलक्याश्च कल्केनबस्तिभागंप्रलेपयेत् । तेनप्रशाम्यतिक्षिप्रंनियमान्मूत्रनिग्रहः ॥

अर्थ–जवाखारका चूर्ण मिश्रीके साथ लेनेसें मूत्रकी रुकावट दूर हो । पेठेके बीज, और खीरेके बीज दोनोंको पानीसें महीन पीस बस्तीपर टिकिया धरेतो मूत्रनिग्रहशांति हो । आमलेका कल्क बस्तिभागपर लगानेसें निश्चय मूत्रका रुकना दूर होवे ।

सिंहास्यदंतीकृतमालकानांपिबेत्कषायंरुबुतैलमिश्रम् । योगृध्रसीनष्टगतिप्रसुप्तःसशीघ्रगःस्याद्धिकिमत्रचित्रम् ॥

अर्थ–अडूसा, दंती, और अमलतास, इनका काढा अंडीके तेलमें मिलाय पीवे तो जिसका गृध्रसी रोगसें चलना फिरना बंद होगया हो और स्पर्श मालूम न हो वह शीघ्र गमन करनेवाला हो, इसमें आश्चर्य नहीं है ।

शेफालिकादलैःक्काथोमृद्वग्निपरिपाचितः । दुर्वारंगृध्रसीरोगं पीतमात्रःप्रणाशयेत् ॥ रास्नामृतारग्वधदेवदारुत्रिकंटकैरंड-पुनर्नवानाम् । क्काथंपिबेन्नागरचूर्णमिश्रंजंघोरुपृष्ठत्रिकपा-र्श्वशूली ॥

अर्थ–सह्मालूके पत्तोंका काढा करके पीवे तो दुर्निवारभी गृध्रसीरोग पीतेही दूर हो । रास्ना, गिलोय, अमलतासका गूदो, देवदारु, गोखरू, अंडकी जड, और साँठकी जड, इनके काढेमें सोंठका चूरा मिलायके पीवें तो जंघा ऊरू पीठ और त्रिकस्थान इनकी पीडाको दूर करे । यह रास्नासप्तकक्काथहै ।

पथ्यादिगुग्गुलुः ।

पथ्याविभीतामलकीफलानांशतंक्रमेणाद्विगुणाभिवृद्धम् । प्र-स्थेनयुक्तंचपलंकषाणांद्रोणेजलेसंस्थितमेकरात्रम् ॥ अर्द्धा-वशेषंक्कथितंकषायंभांडेपचेत्तत्पुनरेवलौहे । अमूनिवह्नेरवता-र्यदद्याद्द्रव्याणिसंचूर्ण्यपलार्द्धकानि ॥ विडंगदंतीत्रिफलागुडू-चीकृष्णात्रिवृन्नागरसोषणानि । यथेष्टचेष्टस्यनरस्यशीघ्रंहि-माम्बुपानानिचभोजनानि ॥ निषेव्यमानोविनिहंतिरोगा-न्संगृध्रसींनूतनखंजताश्च । प्लीहानमुग्रंजठराणिगुल्मंपांडु-त्वकंडूवमिवातरक्तम् ॥ पथ्यादिगुग्गुलुर्वदंतिचएषनाम्नाख्या-तःक्षितावप्रमितप्रभावः । बलेननागेनसमंमनुष्यंजवेनकुर्या-त्तुरगेनतुल्यम् ॥ आयुःप्रकर्षंविदधातिचक्षुर्बलंतथापुष्टिकरो विषघ्नः । क्षतस्यसंधानकरोविशेषाद्रोगेषुशस्तःसकलेषुतज्ज्ञैः ॥

अर्थ–हरडका वक्कल १००, बहेडेका २००, आमले ४००, और कणगूगल ६४ तोले, इन सबको १०२४ तोले पानीमें भिगादेवे, प्रातःकाल हातेही नि-

कालके उसको ओटावे, जब आधापानी रहजावे तब उतारके छानलेवे, फिर लोहेकी कढाईमें चढाय आंच देवे, तदनंतर जब कुछ गाढा होजाय तब उतारके उसमें वायविडंग, दंती त्रिफला, गिलोय, पीपल, निसोथ, सोंठ, और कालीमिरच, ये प्रत्येक दोदो तोले ले चूर्ण कर डाले तो यह गूगल तयार हो यह यथेष्ट आचरण और यथेष्ट भोजन करनेवाला मनुष्य सेवन करे तो गृध्रसी, नवीन खंजता, प्लीह, उग्रउदर, पंगुता, पांडुत्व, खुजली, वमन, और वातरक्त इनको नाश करे। पथ्यादिगूगल पृथ्वीवर अप्रतिमसामर्थ्यवान् प्रसिद्ध है। और बलकरके हाथीके समान, वेगकरके घोडेके समान मनुष्यको करे। तथा आयुष्य, नेत्रबल, और पुष्टि करे, तथा विषनाशक, घावको पूरनेवाला। तथा सर्व रोगोंमें वैद्योंने उत्तम कहा है।

वातरक्तक्रमंकुर्यात्पाददाहेविशेषतः। मसूरविदलैःपिष्टैःशृतशीतेनवारिणा ॥ चरणौलेपयेत्सम्यक्पददाहप्रशांतये ॥

अर्थ–यदि पैरोंमें दाह होता होय तो वातरक्तका क्रम इस जगे करना चाहिये एवं मसूरकी दाल पीस जलमें डालके काढा करे फिर उसको शीतल कर पैरमें लेप करे तो पाददाह दूर होवे।

नवनीतेनसंलिप्तौवह्निनापरितापितौ।
मुच्येतेचरणौक्षिप्रंपरितापात्सुदारुणात् ॥

अर्थ–पैरोंमें मक्खन लगाय आंचसें सेकैं तो पैरोंका दारुण ताप दूर हो।

वातारिबीजंदुग्धेनपिष्ट्वापादौप्रलेपयेत्।
करावपिमहादाहंशमयेन्नात्रसंशयः ॥

अर्थ–अंडीके बीजोंको दूधमें पीस पैरोंमें लेप करे तो पैरोंका दाह दूर होऔर हाथमें लेप करे तो हाथका दाह जाय।

दंडापतानकादौमहाबलातैलं —– बाह्यायामेन्तरायामेहनुस्तंभेचकूलुके ॥ योज्यंप्रसारणीतैलंतेनतेषांशमोभवेत्। चरकोक्तंमहामाषादितैलंशार्ङ्गधरोक्तंमाषादितैलं ॥ मध्यनारायणतैलंचसर्वस्मिन्वातव्याधौहितं ॥

अर्थ–दंडापतानक रोगमें महाबला तैल लगावे,–बाह्यायाम अंतरायाम हनुस्तंभ और कूलकी वात इन रोगोंमें प्रसारणी तैल लगावे तो दूर हो। चरकोक्त महामाषादि तैल, शार्ङ्गधरोक्त माषादि तैल, मध्यनारायण तैल, ये सर्व तैल वातव्याधिपर हित है।

योगराजगुग्गुलुः ।

नागरंपिप्पलीमूलंचव्यमूषणचित्रके । भृष्टंहिंग्वजमोदाच सर्षपोजीरकद्वयं ॥ रेणुकेन्द्रयवापाठाविडंगंगजपिप्पली । कटुकातिविषाभार्ङ्गीवचामूर्वाचपत्रकम् ॥ देवदारुकणाकुष्ठं रास्नामुस्ताचसैंधवम् । एलात्रिकंटकःपथ्याधान्यकंचविभीतकं ॥ धात्रीचत्वगुशीरंचयवक्षारोऽखिलान्यपि । एतानि समभागानिसूक्ष्मचूर्णानिकारयेत् ॥ यावन्त्येतानिसर्वाणि तावदेवात्रगुग्गुलुः । संमर्द्यसर्पिषापश्चात्सर्वंसंमिश्रयेद्दृढं ॥ एकंपिंडंततःकृत्वाधारयेद्घृतभाजने । गुटिकाटंकमात्रास्तु खादेत्ताश्चयथोचिताः ॥ गुग्गुलुयोगराजोयंमहान्मुख्योरसायनं । मैथुनाहारपानान्नंनियमोनात्रविद्यते ॥ सर्वान्वातामयान्हन्यादामवातमपस्मृतिं । वातरक्तंतथाकुष्ठंतथादुष्टव्रणानपि ॥ अर्शांसिग्रहणीरोगंप्लीहगुल्मोदराण्यपि । आनाहमग्निमांद्यंचश्वासंकासमरोचकम् ॥प्रमेहंनाभिशूलंचकृमिक्षयमुरोग्रहम् । शुक्रदोषरजोदोषमुदावर्त्तभगंदरम् ॥

अर्थ—सोंठ, पीपलामूल, चव्य, कालीमिरच, चीतेकी छाल, भुनीहींग, अजमोद, सरसो, दोनों जीरे, रेणुका, इन्द्रजो, पाढ, वायविडंग, गजपीपल, कुटकी, अतीस, भारंगी, वच, मूर्वा, पत्रज, देवदारु, पीपल, कूठ, रास्ना, नागरमोथा, सेंधानिमक, इलायची, गोखरू, हरड, धनिया, बहेडा, आमले, दालचीनी, खस और जवखार य सब औषध समान भाग लेवे। परंतु त्रिफला सब औषधोंमें दूनी लेना यह वृद्धवैद्योंकी आज्ञा है[1]। सबका चूर्ण कर सबकी बराबर शुद्ध गूगल डाल, सबको घी मिलायके एक जीव करे, एक पिंडकरके घीके बरतनमें धर रखे ४ मासेकी गोली बनायके खावे, यह योगराजगूगल महान् मुख्य रसायन है। इसपर मैथुन, भोजन, पान, और अन्नका नियम नहीं है। अर्थात् यथा इच्छापूवक भोजन करे तो सर्व प्रकारके वातविकार, आमवात, मृगी, वातरक्त, कोढ, दुष्टव्रण, बवासीर, संग्रहणी, प्लीह, गोला, उदररोग, अफ-

---

१ द्रव्येभ्यःसकलेभ्यश्चत्रिफलाद्विगुणाभवेत् इतिवृद्धाः ।

रा, मंदाग्नि, श्वास, खांसी, अरुचि, प्रमेह, नाभिशूल, कृमि, क्षय, उरग्रह, शुक्रदोष, रजोदोष, उदावर्त्त, और भगंदर, इनसबको दूर करे ।

रसोनाष्टकम् ।

पक्वंकंदरसोनस्यगुटिकानिस्तुषीकृताः । पाटयित्वाचतन्मध्यंदूरीकुर्यात्तदङ्कुरम्॥क्षिप्त्वागंधविनाशायदध्नासन्नीयरक्षयेत्। ततःप्रक्षाल्यसंशोष्यशिलायांपरिपेषयेत् ॥कल्कस्यपंचमंभागंचूर्णमेषांविनिःक्षिपेत् । सौवर्चलंयवानीचभर्जितंहिंगुसैंधवं ॥ कटुत्रयंजीरकंचसमभागंविचूर्णयेत् । खादेत्कर्षमितंप्रातःकिंवादोषाद्यपेक्षया ॥ अनुपानंप्रकुर्वीतवातारिसृतमन्वहं । सर्वांगैकांगजंवातमर्दितंचापतंत्रकं ॥ अपस्मारंतथोन्मादमूरुस्तंभंचगृध्रसीम् । ऊरुपृष्ठकटीपार्श्वकुक्षिपीडांकृमीन्हरेत् । मद्यंमांसंतथाम्लंचरसंसेवेतनित्यशः ॥ व्यायाममातपंरोषमतिनीरंगुडंस्त्रियम् । रसोनमश्नन्पुरुषस्त्यजेदेतान्निरंतरं ॥ वर्जयेत्तदतीसारीप्रमेहीपांडुरोगवान् । अरोचकीगर्भिणीच मूर्च्छार्शोरोगसंयुतः॥रक्तपित्तीचशोषीचयक्ष्मीचछर्दितोनरः। पिबेत्तुपथ्ययाकुर्यात्प्रयोगांतेविरेचनम् ॥ अन्यथातस्यजायंतेकुष्ठपांड्वामयादयः ।

अर्थ–पकी लहसन छीलके और चीरके उसके अंकुरदूरकर उसकी दुर्गंध दूर करनेको दहीमें डाल देवे, तीनदिनके पीछे दहीसें निकाल, जलसें धोय शुद्ध कर पीसके पीठी (कल्क) करे, फिर कल्कका पंचम भाग इन औषधोंको डाले संचरनोन, अजमायन, भुनीहींग, सैंधानिमक, त्रिकुटा, जीरा, प्रत्येक समान भाग लेके चूर्ण करे । इसको पूर्वोक्त कल्कमें मिलाय १ तोलेके प्रमाण प्रातःकाल खावे, अथवा दोषोंके अनुसार खाय, और अनुपानसें रहे इसके ऊपर वातादिरस खायतो सर्वांगवात, एकांगवात, अपतंत्र, अर्दित, अपस्मार, उन्माद, ऊरुस्तंभ, गृध्रसी, हृदयकी पीठकी कमरकी पसवाडेकी और कूखकी इन स्थानोंकी पीडाको और कृमिरोगको दूर करे । लहसनका खानेवाला मद्य, मांस, और खट्टे रसोंको अवश्य सेवन करे । तथा दंडकसरत, धूपमें डोलना, क्रोध, अत्यंत जलपान, गुड, स्त्रीसंग, इनको लहसन खानेवाला निरंतर त्याग देवे, यह औषध अतिसारी, प्रमेही,

पांडुरोगी, अरुचिवाला, गर्भिणी, मूर्च्छा, बवासीर, रक्तपित्ती, शोषी, खईवाला, और वमन रोगवाला न सेवन करे, यदि इसके सेवनसैं पित्त प्रबल होवे तो हरडसैं दस्त करावे, यदि दस्त न होय तो कोढ और पीलिया आदि रोग होवे। स्त्रीके दूधमें बालकोंको विना इच्छाकेभी देय तो उनके रोग दूर हो।

वातारिरसः।

रसोगंधवरावह्निगुग्गुलुःक्रमवर्द्धिताः। तत्रैकभागःसूतस्यगंधकोद्विगुणोमतः॥ त्रिभागात्रिफलायोज्याचतुर्भागस्तुचित्रकः। गुग्गुलोःपंचभागाःस्युरुबुतैलेनमर्दिताः॥ क्षिप्त्वातत्रोदितंचूर्णंतेनतैलेनमर्दयेत्। गुटिकाकर्षमात्रंतुभक्षयेत्प्रातरेव हि॥ नागरेरंडमूलानांकषायंप्रपिबेदनु। अभ्यज्यैरंडतैलेनस्वेदयेत्पृष्ठदेशकं॥ विरेकपरिणामेतुस्निग्धमुष्णंचभोजनम्॥

अर्थ-पारा १, गंधक २, त्रिफला ३, चित्रक ४, और गूगल ५, इस प्रमाण भाग लेकर, चूर्ण कर अंडीके तेलसैं खरल करे, फिर इसकी १ तोलेकी गोली बनावे, एक गोली नित्य प्रातःकाल खाय ऊपरसैं सोंठ अंडकीजड इनका काढा पीवे, तथा पीठको अंडीके तेलकी मालिश कर सेक करावे, इसके खानेसैं दस्त होते हैं, जब दस्त होचुके तब चिकना और गरमागरम पदार्थ भोजन करावे, इस वातारिरसका सेवन करनेवाला पवनसैं बचे, यह १ महिनेमें सकल वातव्याधियोंको दूर करे इसपर मैथुन करना निषध है।

समीरपन्नगो रसः।

अभ्रंगंधंविषंयोषंग्राह्यटंकान्समांशकान्। भावयेत्सप्तधाभृंगरसेनस्यात्समीरहा॥ आर्द्रद्रवेणवल्लोवाखंडव्योषेणयोजितः। महावातान्जयत्याशुनासाध्मातःकुसंज्ञकृत्॥

अर्थ-अभ्रक भस्म, गंधक, विष, सोंठ, मिरच, पीपल, और सुहागा, ये सब समान भाग ले सबको भांगरेके रसकी सात भावना देवे, तो समीरपन्नगरस बने इसको अदरखके रसके साथ अथवा मिश्री और त्रिकुटाके चूर्णके साथ २ रत्ती देवे तो वात व्याधिको दूर करे, और इस रसकी नाश लेनेसैं संज्ञा करे है।

समीरगजकेसरीरसः।

नवाहिफेनंकुचिलंनवानिमरिचानिच। समभागानिसर्वाणि रक्तिकाप्रमितानिच॥ देयानिप्रातरेतानिपुनस्ताम्बूलचर्व-

णम् । कुब्जेचखंजवातेचसर्वेजेगृध्रसीगदे ॥ अपबाहौप्रयोक्तव्यंशोफेकंपप्रतानके । विषूच्यामरुचौदेयअपस्मारेविशेषतः ॥

अर्थ—नई अफीम, कुचला, नवीन काली मिरच, इनका समान भाग चूर्ण एकत्र करे। और इसमेंसे १ रत्ती खानेको देवे ऊपर बीडा खाय तो कुब्जवात, खंजवात, सर्वजवात, गृध्रसी, अपबाहुक, सूजन, कंप, प्रतानकवायु, हैजा, अरुचि, और अपस्मार, इनका नाश करे।

इति वातव्याधिचिकित्सा समाप्ता ।

अथोरुस्तंभः ।

स्नेहासृक्स्रावमनंबस्तिकर्मविरेचनम् । वर्जयेदाढ्यवातेषुयतस्तैस्तस्यकोपनम् ॥ त्रिफलाग्रंथिकव्योषचूर्णलिह्यात्समाक्षिकम् । ऊरुस्तंभविनाशायपुरंमूत्रेणवापिबेत् ॥

अर्थ—स्नेहपान, रुधिर निकालना, वमन, बस्तिकर्म, और जुल्लाब इनको वातयुक्तरोगी त्याग देवे। क्यों कि ये सब वातको कुपित करता है। त्रिफला, पीपलामूल, और त्रिकुटा इनका चूर्ण सहतके साथ चाटे अथवा ऊरुस्तंभके नाश करनेको गोमूत्रके साथ गूगल पीवे।

भल्लातकामृताशुंठीदारुपथ्यापुनर्नवाः ।
पंचमूलीद्वयोन्मिश्राऊरुस्तंभनिबर्हणः ॥

अर्थ—भिलाए, गिलोय, सोंठ, देवदारु, हरड, सांठकी जड, इनमें लघुपंचमूल और बृहत्पंचमूल मिलायके काढा करे, इसके पीनेसे ऊरुस्तंभरोग दूर होवे।

क्षौद्रसर्षपवल्मीकमृत्तिकासंयुतंभिषक् ।
गाढमुत्सादनंकुर्यादूरुस्तंभेसवेदने ॥

अर्थ—सहत, सरसों, और बांबीकी मिट्टी, सबका एकत्र कर मर्दन करे तो पीडायुक्त ऊरुस्तंभ दूर होवे।

पिबेत्षट्चरणंचूर्णंऊरुस्तंभेशृतांबुना । पिप्पलीपिप्पलीमूलेभल्लातक्काथएववा । कल्कोवासमधुःपेयऊरुस्तंभविनाशनः ॥

अर्थ-बचका चूर्ण गरम जलके साथ पीवे तो ऊरुस्तंभ दूर हो, अथवा पीपल, पीपलामूल, और भिलाए, इनका काढा अथवा कल्क कर सहत डालके पीवे तो ऊरुस्तंभ नाश होवे ।

इति ऊरुस्तम्भचिकित्सा समाप्ता ।

अथामवातचिकित्सा ।

लंघनंस्वेदनंतिक्तदीपनानिकटूनिच ।
विरेचनंस्नेहनंचवस्तयश्चाममारुते ॥

अर्थ-लंघन, स्वेदन, तिक्तपदार्थ, दीपन और कटु पदार्थ, विरेचन, स्नेहन, और बस्ती, ये वस्तु आमवातरोगमें हित है ।

रास्नादिक्काथ ।

रास्नाऽमृतारग्वधदेवदारुत्रिकंटकैरंडपुनर्नवानाम् ।
क्काथंपिवेन्मिश्रितशृंगवेरंजंघोरुपार्श्वत्रिकपृष्ठशूली ॥

अर्थ-रास्ना, गिलोय, अमलतासका गूदा, देवदारु, गोखरू, अंडकी जड, और सोंठ, इनका काढा कर उसमें अदरख मिलायकर पीवे तो जंघा, ऊरू, पसवाडा, त्रिकस्थान, और पीठका दर्द ये दूर होवे ।

दशमूलीकषायेणपिवेद्वानागरांभसा ।
कुक्षिबस्तिकटीशूलेतैलमेरंडसंभवम् ॥

अर्थ-अंडीके तेलको दशमूलके काढेके साथ अथवा सोंठके काढेके साथ पीवे तो कूख, बस्ती, कमर, इनकी पीडाको दूर करे ।

अजमोदादिमोदकः चूर्णं वा ।

अजमोदमरिचपिप्पलिविडंगसुरदारुचित्रकशताह्वाः । सैंधवमागधिमूलंभागाचविकस्यपलिकाःस्युः ॥ शुंठीदशपलिका स्यात्पलानितावंतिवृद्धदारुश्च । अभयापलानिपंचश्लक्ष्णंचूर्णंविधापयेदेषाम् ॥ समगुडवटकानदतश्चूर्णवाकोष्णवारिणा पिबतः । नश्यंत्यामानिलजाःसर्वेरोगास्तुदारुणाःशीघ्रं ॥आनाहशूलतूणीप्रत्यूणीगृध्रसीगुल्माः । कटिपृष्ठपरिस्फुटनंस्फु-

टनंचैवास्थिजंघयोस्तीव्रं ॥ श्वयथुस्तब्धांगसंधिषुयेचान्येप्या-
मवातजारोगाः । सर्वेप्रयांतिशांतितमइवसूर्यांशुविध्वस्तम् ॥

अर्थ-अजमोद, काली मिरच, पीपल, वायविडंग, देवदारु, चित्रक, सोंफ, सैंधानिमक पीपलामूल, और चव्य प्रत्येक एक एक पल लेवे । सोंठ १० पल, विधायरो १० पल, हरड ५ पल, इन सबका बारीक चूर्ण कर बराबरका गुड मिलाय गोली बनावे । १ गोली नित्य गरम जलके साथ खाय तो आमवात, अफरा, शूल, तूणी, प्रतूणी, गृध्रसी, गोला, कमर और पीठका टूटना, तथा हड्डी और जंघाका टूटना सूजन, अंगोंका जिकडना, और सब आमवातके रोगोंको यह अजमोदादि चूर्ण दूर करे ।

सौभाग्यशुंठी ।

विश्वौषधिपलान्यष्टौसर्पिषःपलविंशतिः । प्रस्थद्वयंचगोक्षीरं शर्कराद्धतुलातथा ॥ त्रिकुटत्रिसुगंधंचप्रत्येकंचपलंपलं । साधयेल्लेहविधिनासम्यक्शुंठीरसायनं । नाम्नासौभाग्यशुं-ठीयंवपुःसौभाग्यदायिनी । आमवातंहरेदाशुत्वचिकांतिप्र-यच्छति ॥ धातुवृद्धिंबलंबुद्धिमायुश्चकुरुतेचिरम् । वलीपलि-तनाशंचकुर्याद्वंध्यात्वनाशनम् ॥

अर्थ-सोंठघाडकी ८ टके भर, गौका घी १ शेर, गौका दूध ४ सेर, मिश्री १०० पलें, त्रिकुटा, त्रिसुगंध, प्रत्येक एक एक टकेभर ले, सबको लेहकी विधिसें बनायकर तयार करलेवे । तो यह सुंठी रसायन सौभाग्यसोंठके नामसें प्रसिद्ध देहको सुंदर करे, आमवातको दूर करे, त्वचामें कांति करे, धातुवृद्धि, बलवृद्धि, और दीर्घायु करे बली (गुजलट) और पलित (सपेद बाल)को एवं वंध्यापनेको दूर करे ।

रसोनपिंडः

निस्तुषस्यरसोनस्यनयेत्पलशतंबुधः । तिलानांकुडवंचात्र प्रक्षिपेच्चपलंपलं ॥ प्रत्येकंत्र्यूषणंहिंगुक्षारौद्वौशतपुष्पिका । लवणानिचपंचैवकुष्ठग्रंथिकचित्रकम् ॥ अजमोदायवानीच धान्याकंचविचूर्णितं । एकत्रपिंडितंसर्वंघृतभांडेविनिःक्षि-पेत् ॥ यावत्स्युःषोडशाहानिततस्तैलंचकांजिकं । प्रस्थार्धं चपृथक्देयंखादेत्कर्षप्रमाणकम् ॥ जलंचानुपिबेत्तस्यजयेद्वा-

तामयांस्ततः । आमवातंचसर्वांगवातमेकांगमारुतम् ॥ अप-स्मारंतथोन्मादंकासंश्वासामयंतथा । भग्नवातंतथाशूलंविनि-हंतिनसंशयः ॥

अर्थ-तुषरहित लहसन १०० पल लेवे, तिलोंकी पिट्टी १६ तोले मिलावे, फिर त्रिकुटा, हींग, सज्जीखार, जवाखार, सोंफ, पांचोंनोन, कूठ, पीपरामूल, चीता, अजमोद, अजमायन, और धनिया, प्रत्येक चार चार तोले लेवे । सबको कूट पीस लहसनमें मिलाय गोलासा बांध चिकने बासनमें रखदेवे, जब १६ दिन बीत जावे तब तेल और कांजी आद आद सेर मिलाय इसमेंसे ४ तोलेके प्रमाण भक्षण कर ऊपरसे जल पीलेवे तो सर्व वातके विकारोंको जीते । आमवात, सर्वांग-वात, एकांगवात, मृगी, उन्माद, खांसी, श्वास, भग्नवात, और शूलरोग इनको निःसंदेह दूर करे ।

व्याधिशार्दूलो गुग्गुलुः

पिंडितंगुग्गुलोःप्रस्थंकटुतैलंपलाष्टकं ॥ प्रत्येकंत्रिफलाप्रस्थं सार्द्धद्रोणेजलेपचेत् । पादशेषंततःपूर्वंपुनरग्नाविधिश्रयेत् ॥ त्रिकटुत्रिफलामुस्तंविडंगंसुरदारुच । गुडूच्याग्नित्रिवृद्दंतीव-चासूरणमानकम्॥पारदंगंधकंचैवप्रत्येकंशुक्तिसंमितम् । शु-द्धंसहस्रंप्रत्यग्रंजयपालफलंबुधः ॥ त्वगंकुरविनिर्मुक्तंसिद्धे संचूर्ण्यनिक्षिपेत् । ततोमाषद्वयंजग्ध्वापिबेत्तप्तजलादिकं ॥ अग्निंचकुरुतेदीप्तंवडवानलसन्निभम् । धातुवृद्धिंवयोवृद्धिं बलंसुविपुलंतथा ॥ आमवातंशिरोवातंग्रंथिवातंभगंदरम् । जानुजंघाश्रितंवातंकटीवातंतथैवच ॥ शोथंवृद्धिंचशूलादि-गुदजानिविनाशयेत् ।

अर्थ-शुद्धकरी भैसागुग्गुल १ सेर, कडुआतेल ३२ तोले, हरड, बहेडा, और आमला, प्रत्येक सेर सेर भर ले । इनको १५४२ तोले जलमें ओंटावे, जब चौथाई रहे तब उतार इसमें त्रिकुटा, त्रिफला, नागरमोथा, वायविडंग, देवदारु, गिलोय, चीता, निसोथ, दंती, वच, जिमीकंद, वराहीकंद, पारा, और गंधक, प्रत्येक पैसे-पैसे भर लेवे । और शुद्ध करे जमालगोटेके बीज १००० लेवे, सबको कूट पीस उक्त क्राथमें डालके ओंटावे, जब गाढा होजावे तब उतारके किसी उत्तम

पात्रमें धररक्खे, इसमेंसे २ मासे गरम जलके साथ सेवन करे तो यह अग्निको दीप्त करे, धातुवृद्धि, अवस्थाकी वृद्धि, और अत्यंत बल बढे, आमवात, मस्तककी वात, गांठोकी वात, भगंदर घोंटुओंकी, पीडरीकी कमरकीवात, मूत्रन, अंडवृद्धि और गुदाआदिके शूलको दूर करे ।

आमवातारिरसः

अभयासैंधवंश्यामाविशालाविश्वभेषजम् ॥ इन्द्रवारुणिकामज्जात-यासर्वंविमर्दयेत्।लोहभांडेविनिक्षिप्यदद्यादग्निंशनैःशनैः ॥ बदरा-भाप्रमाणेनवटीकार्याभिषग्वरैः । उष्णोदकांबुपानेनभुक्तादो-षाद्यपेक्षया ॥ पथ्यंघृतोदनंदेयमामरोगविनाशकृत् ।

अर्थ–हरडका वक्कल, सेंधानिमक, निसोथ, इन्द्रायनकी जड, और सोंठ, इनको बराबर ले कूट पीस इन्द्रायनके बीज रहित गूदेमें मिलाय खरल करे । फिर लोहेकी कढाहीमें चढाय मंदाग्निसें पकावे जब गाढा होजाय तब बेरके समान गोली बनावे । दोषोंके अनुसार गरम जलके साथ सेवन करे तो आमवातरोग दूर होवे इसके ऊपर घृत मिला भातका भोजन करे ।

मेथीपाक

मेथिकायाःपलान्यष्टौशुंठीचाष्टपलानिच ॥ तयोश्चूर्णपटे पूतंदुग्धेमृद्वग्निनापचेत् । दुग्धाढकयुगंगव्यंघृतमष्टपलंक्षिपे-त ॥ तत्तावत्सुपचेद्यावद्भवेदतिघनंपयः । पुनःपचेच्छनैस्त-त्रदत्वाढकमितांसिताम् ॥ ततःपाकेसुविज्ञातेज्वलनादवतार-येत् । मरिचंपिप्पलीशुंठीकणामूलंसचित्रकम् ॥ यवानीजी-रकोधान्यंकारवीशतपुष्पिका । जातीफलंसटीत्वक्चपत्रकं भद्रमुस्तकम् ॥ गृह्णीयात्पलमेतेषांसर्वेषांचपृथक्पृथक् । षडक्षंनागरंतत्रमरिचंचषडक्षकम् ॥ एषांचूर्णंपरिक्षिप्यसर्वसं-मिश्र्यरक्षयेत् । एतत्तुभेषजंप्रोक्तंमेथिकापाकसंज्ञकम् ॥ भक्ष-येत्पलमात्रंतद्यथाचाग्निबलंतथा । आमवातंनिहंत्येतत्सर्वा-श्चपवनामयान् ॥ ज्वरांश्चविषमान्हंतिपांडुरोगंसकामलां । हन्त्युन्मादमपस्मारंप्रमेहंवातशोणितं ॥ अम्लपित्तंशीतापि-

त्तंशिरःपीडांहृदामयम् । प्रदरंसूतिकारोगंहन्यादेतन्नसंशयः॥ वपुषःपुष्टिकृद्बल्यंवीर्यवृद्धिकरंपरम् । सामान्यवातव्याधि-चिकित्सायांलिखितंरसोनाष्टकमामवातेऽतीवगुणदम् ॥

अर्थ-मेथी ३२ तोले, सोंठ ३२ तोले, इन दोनोंका चूर्ण कपडछन कर ४ सेर गौके दूधमें मंदाग्निसें ओटावे। परंतु प्रथम दोनोंके चूर्णको ३२ तोले घीमें मिलायके खोहा करे, जब गाढा खोहा होजावे, तब उतार ४ सेर खांडकी चास-नी कर उसमें इस खोहेको मिलायदेवे। और ये औषध कडाहीको आंचसें उता-रकर मिलावे। कालीमिरच, पीपल, सोंठ, पीपरामूल, चीता, अजमायन, जीरा, धनिया, सोंफ, हालो, जायफल, कचूर, तज, पत्रज, और नागरमोथा, ये प्र-त्येक चार चार तोले लेवे । परंतु मिरच और सोंठ ये दोनों छः छः तोले लेवे सबका चूर्ण कर उक्त चासनीमें मिलाय कतली जमाय ले । इसको मेथीपाक कहते हैं ४ तोलेके अनुमान नित्य भक्षण करे तो आमवात, और सर्व वातके रोग, विषमज्वर, पांडुरोग, कामला, अपस्मार, प्रमेह, वातरक्त, अम्लपित्त, शी-तपित्त, मस्तकपीडा, हृदयरोग, प्रदर, सूतिकाके रोग इन सबको दूर कर देह-को पुष्ट, बली, तथा वीर्यको बढावे।

सामान्य वातव्याधिकी चिकित्सामें जो रसोनाष्टक कहआए हैं वह आमवातमें अतीव गुणदायक है।

पथ्य

दधिमत्स्यगुडक्षीरपोतकीमाषपिष्टकम् ।
वर्जयेदामवातार्त्तोगुरुमांसमनूपजम् ॥

अर्थ-आमवातवाला रोगी दही, मछली, गुड, दूध, पोईका साग, उडद, और मेदाआदि पिष्ट पदार्थ, तथा भारी पदार्थ, और अनूपदेशका मांसखाना त्याग दे। इति आमवातचिकित्सा समाप्ता ।

वातरक्तचिकित्सा ।

वातशोणितनोरक्तंस्निग्धस्यबहुशोहरेत् । अल्पाल्पंरक्षयेद्वायुं यथादोषंयथाबलम् ॥ रुग्रागदाहतोदेषुजलौकाभिर्विनिर्हरेत् ।

शृंगीतुंबैश्चिमचिमाकंडूरुग्वेदनान्वितम् । प्रच्छन्नेनशिराभि-र्वादेशादेशांतरंव्रजन् ॥

अर्थ-स्निग्धवातरक्त रोगीका बहुतसा रुधिर न निकलवावे, किंतु जैसे घाव न बढे इस प्रकार थोडा थोडा रुधिर दोषानुसार निकलवावे, यदि देहमें पीडा लाली दाह और चपका चलतेहो तो जोख, सिंगी और तूंबीसें निकलवावे । यदि चिमचिमाटहो खुजली और पीडाहोय तो पछने और फस्तखुलानेसें रुधिरको निकलवावे, जिस्सें एकस्थानसे दूसरेमें न जाय ।

लघुमंजिष्ठादि ।

मंजिष्ठोग्रावरातिक्तानिशानिंबामृतामरैः ।
सत्रिवृत्खदिरैःक्वाथःसर्वकुष्ठानिलासृजे ॥

अर्थ-मजीठ, वच, त्रिफला, कुटकी हलदी नीमकी छाल, गिलोय, देवदारु, निसोथ और खैरसार इनका काढा पीवे तो सर्व कुष्ठ और वातरक्त दूर होवे ।

गुडूच्यादिक्वाथः ।

गुडूचीवाकुचीचक्रमर्दश्चपिचुमन्दकः । हरीतकीहरिद्राचधा-त्रीवासाशतावरी ॥ वालंनागबलायष्टीमधुकंक्षुरकोऽपिच । पटोलस्यलतोशीरंमांजिष्ठारक्तचन्दनम् ॥ गुडूच्यादिरयंक्वाथो वातरक्तांतकारकः । कुष्ठानांश्रेष्ठसंहर्त्ताकंडूमण्डलखण्डनः ॥

अर्थ-गिलोय, बावची, पमारके बीज, नीमकी छाल, हरडका वक्कल, हरदी, आमले । अडूसा, सतावर, नेत्रवाला, कगईकी छाल, मुलहटी, महुआ, तालम-खाना, पटोलपत्र, खस, मजीठ, और चंदन, यह गुडूच्यादिकाढा वातरक्त, कोढ, खुजली, और चकत्ते इन सबको सेवन करनेसें दूर करे ।

कैशोरगुग्गुलुः ।

वनमाहिषलोचनोदरसन्निभवर्णस्यगुग्गुलोःप्रस्थम् । संशोष्य तोयराशौप्रत्येकंत्रैफलंप्रस्थम् ॥ द्वात्रिंशच्छिन्नरुहापलानि सर्वाणिसंक्षुद्य । क्षिप्त्वापचेत्सयत्नोदर्व्यासंघट्टयन्मुहुर्वै-द्यः ॥ अर्द्धक्षयेतुयावत्तोयंस्यात्तत्पचेत्तावत् । अवतार्यव-स्त्रपूतंपुनरपिसंसाधयेदयःपात्रे ॥ सान्द्रीभूतेगुग्गुलुरवतार्य धारयेद्भूमौ । शीतेक्षिपेच्चतास्मिन्नन्यानिद्रव्याणितान्याह ।

पारदगौरीरजसोःकज्जलिकांबिल्वपरिमाणम् । त्रिफलापृथ-
गर्द्धपलंप्रत्येकंत्रिकटुबिल्वार्द्धम् ॥ बिल्वार्द्धंकांविडंगंकर्षंकर्षं
त्रिवृद्दंत्योः । पलमेकंचगुडूच्याःसंचूर्ण्यप्राक्षिपेत्सर्वम् । आदौ
शाणोन्मितंखादेत्ततःशाणद्वयोन्मितम् ॥ ततःशाणत्रयोन्मानं
गुग्गुलुंभक्षयेत्सदा । उपयुज्यचानुपेयंक्षीरंयूषंसुगंधिसलि-
लंच ॥ इच्छाहारविहारीभेषजमितिसर्वकालानाम् । तनुरो-
धिवातशोणितमेकजमथसर्वजंहरति ॥ व्रणकासगुल्मकुष्ठ-
श्वयथूदरपांडुमेहश्च । मंदाग्निंचविबंधंप्रमेहपिडकाश्चनाश-
यत्याशु ॥ सततंनिषेव्यमाणःसर्वान्रोगान्हरत्येषः । अ-
भिभूयजरादोषान्करोतिकैशोरकंरूपम् ॥

अर्थ-भैस गूगल १ सेर लेवे तथा त्रिफला १ सेर, गिलोय ३२ पल, इनको ६४ सेर जलमें चढाय यत्नपूर्वक मंदाग्निसे लोहेकी कढाईमें पचावे, और कलछीसे चलाता जाय, जब जल आधा जलजावे तब उस जलको कपडेमें छान लेवे, और दूसरी कढाईमें भरके भट्टीपर चढावे, इसमें पूर्वोक्त सेरभर गुग्गुलको डालके ओटावे जब पानी जलकर गाढा होजाय तब इतनी ओषधी और मिलावे। पारे गंधककी कजली १ पल डाले, त्रिफला २ तोले, त्रिकुटा २ तोले, वायविडंग २ तोले, निसोथ १ तोले, दंती १ तोले, और गिलोय ४ तोले इन सबको कूट पीस उसी गाढे जलमें मिलाय देवे, सबको एकत्र मर्दन कर ४ मासेकी गोली घीके संयोगसे बनावे। प्रथम १ गोली खाय फिर दो और कुछ दिनके बाद तीन गोली खाय इसके ऊपर दूध, यूष, अथवा सुगंधित जल पीवे। इसपर यथेच्छ इच्छाहारविहार करे तो यह किशोरगूगल वातरक्त, एकांगवात, सर्वांगवात, व्रण, खांसी, गोला, कोढ सूजन, उदररोग, पांडुरोग, प्रमेह, मंदाग्नि, बद्धकोष्ठ, प्रमेहकी पिडिका, इन सबरोगोंको दूर करे। इसको बराबर नित्य सेवन करे तो सर्व रोगोंको दूर करे, और बुढापेको दूर कर तरुणावस्थाको करे है।

अमृतभल्लातकावलेह।

निमज्जंतिजलेयास्तुभल्लातक्यश्चताहिताः । ताश्चसर्वाविधा-
तव्यास्संच्छन्नेमुखमुद्रिका ॥ तासांप्रस्थद्वयेक्षिप्त्वाजलद्रो-
णेपरिक्षिपेत । चतुर्थांशावशेषंतुकषायमवतारयेत् ॥ प्रस्थ-

द्वयंगुडूच्याश्चक्षुण्णंतत्रांभसिक्षिपेत् । तत्रक्षेप्याणिचूर्णानित्रू-मोबिल्वमितामृता ॥ वाकुचीचक्रमर्दश्चपिचुमंदहरीतकी । धात्रीरात्रिश्चमंजिष्ठामरिचंनागरंकणा ॥ यवानीसैंधवंमुस्तंत्वगेलानागकेसरम् । पर्पटःपत्रकंबालमुशीरंचंदनंतथा ॥ गोक्षुरस्यचबीजानिमर्कटीरक्तचंदनम् । पृथक्पलार्द्धमानानामेषांचूर्णमिहक्षिपेत् ॥ सम्यक्संयम्यतद्रक्षेद्भाजनेमृन्मयेनवे । प्रभातेभक्षितोजीर्णेऽमृतभल्लातकाभिधम् ॥अवलेहंसमश्रीयात्पलमात्रंजलेनहि । वातरक्तसमुद्भूतान्विकारानाशुनाशयेत् ॥ कुष्ठानिसकलान्येवदुर्नामानिहरेदरम् । विसर्पमंडलंकंडूंशमयेदेषसेवितः ॥ विकारान्वातजान्सर्वांस्तथारुधिरसंभवान् । हरत्येवप्रयोगोऽयंयत्नतःसेवितस्सदा ॥ व्यायाममातपंवह्निमम्लंमांसंदधिस्त्रियम् । तैलाभ्यंगंतथाध्वानंनरोभल्लातकीत्यजेत् ॥

अर्थ—जो जलमें गेरनेसैं डूबजावे ऐसें भिलाए लेवे, उनके मुखको कूकुआसें घिसके २ सेरोंको १०२४ तोले जलमें ओटावे, जब जल चौथाई बाकी रहे तब उतारले फिर २ सेर गिलोयका काढा कर उसी भिलाएके जलमें मिलावे, और इतनी औषध और मिलावे । गिलोय ४ तोले, बावची, पमाडके बीज, नीमकी छाल, हरडका वक्कल, आमरे, हलदी, मजीठ, कालीमिरच, सोंठ, पीपल, अजमायन, सैंधानिमक, नागरमोथा, तज, छोटी इलायचीके बीज, नागकेशर, पित्तपापडा, पत्रज, नेत्रवाला, खस, चंदन, गोखरू, कौंचके बीज, और लाल चंदन, ये प्रत्येक दो दो तोले लेवे । सबको कूट पीस उस भिलाएके काढेमें डाले, सबको एकजीव कर किसी चीनी अथवा अमृतवानमें इस अवलेहको भरके धरदेवे, प्रातःकाल ४ तोलेके अनुमान जलसैं भक्षण करे तो वातरक्तके विकार, कोढ, बवासीर, विसर्प, चकत्ते, खुजली सर्व वातके विकार, रुधिरके विकार, इन सबको यह दूर करे इसको बडे यत्नसें साथ सेवन करे और भिलाएका खानेवाला दंडकसरत, धूप, अग्नि, खटाई, मांस, दही, स्त्रीसंग, तैलकी मालिस, तथा रस्ताका चलना, इत्यादि वस्तुओंका सेवन त्याग दे ।

उमादुग्धपिष्टाथवैरंडबीजंप्रलेपेनवातास्रदाहार्तिहारि ।

अर्थ–अलसीको दूधमें पीसके अथवा अंडीको दूधमें पीसकर देहमें लेप करें तो वातरक्तकी पीडा और दाह दूर हो।

गोपीसर्जमधुस्थैर्मंजिष्ठासंयुतैःसिद्धम् ॥
तैलंसमीररुधिरंहन्यादभ्यंजनात्सपादि।

अर्थ–सारिवा (गौरीसर) राल, मोम, और मजीठ, इनको मिलाकर सिद्ध करेहुये तेलकी मालिस करनेसें वातरक्तको तत्काल दूर करे।

चतुरंगुलामृतलतावृषजातःक्वथितःपुरेणरुबुतैलसमेतः ॥
अखिलांगसंगतमुदग्रतरार्त्तिजयतिद्ययंपवनशोणितरोगम्।

अर्थ–अमलतासको गूदो, गिलोय, और अडूसा, इनका काढा कर उसमें गूगल डाल और अंडीका तेल मिलायके पीवे तो सर्व देहकी पीडा और वातरक्तको दूर करे।

मूर्च्छामंदज्वरार्त्तेऽस्वप्नेयद्वातशोणितंवर्ज्यम् ॥
युक्तंशिरोग्रहोर्ध्वश्वासैःसस्फोटकोथसंकोचैः।

अर्थ–जिस वातरक्तमें मूर्च्छा, मदज्वर, निद्रानाश, मस्तकपीडा, ऊर्ध्वश्वास, फोडा, उंगलियोंका सडकर गिरना, तथा संकोच होय, वो वैद्यकरके त्यागने योग्य है।

इति वातरक्तचिकित्सा समाप्ता।

अथ शूलचिकित्सा।

वमनंलंघनंस्वेदःपाचनंफलवर्त्तयः । क्षारचूर्णानिगुटिकाः
शस्यंतेशूलशांतये ॥ विज्ञायवातशूलानिस्नेहस्वेदैरुपाचरेत् ॥

अर्थ–शूलरोगमें वमन, लंघन, पसीने निकालना, पाचनवस्तुका भक्षण, फलवर्त्तीका देना, खार, चूर्ण, और गोली, इनका सेवन करे तो शूल शांत होवे। और वातशूलको स्नेहनक्रिया, स्वेदनक्रिया करके उपचार करे।

यवानीसैंधवंहिंगुक्षारसौवर्चलाभयाः।
पिबेत्कोष्णांबुनावातोद्भवशूलनिवृत्तये ॥

अर्थ–अजमायन, सेंधानिमक, हींग, जवाखार, कालानोन, हरडकी छाल, इनका चूर्ण कर ६ मासेके अनुमान गरम जलके साथ लेय तो वादीका शूल दूर होवे।

सौवर्चलादिगुटिका ।

सौवर्चलाम्लिकाजाजीमरिचैर्द्विगुणोत्तरैः ।
मातुलुंगरसैर्बद्धागुटिकावातशूलनुत् ॥

अर्थ–कालानोन, इमली, जीरा, प्रत्येक एकसे दूसरी दूगनी ले बिजोरेके रससे गोली बनावे यह गोली खाय तो वातका शूल दूर हो ।

पंचसमंचूर्णम् ।

शुंठीहरीतकीकृष्णात्रिवृत्सौवर्चलंतथा । समभागानिसर्वाणिसूक्ष्ममेकत्रचूर्णयेत् ॥ ज्ञेयंपंचसमंनामसर्वशूलहरंपरम् । आध्मानंजठरार्शोघ्नमामवातविनाशनम् ॥

अर्थ–सोंठ घाडकी, हरडकी छाल, पीपल, निसोथ, संचरनोन, इनको समान भाग लेकर चूर्ण करे । इसे पंचसम चूर्ण कहते हैं । यह सर्वप्रकारके शूल, अफरा, उदररोग, बवासीर, और आमावात इनको दूर करे ।

कार्पासास्थिकुलत्थकातिलयवैरेरंडमूलातसीवर्षाभूशणबीजकांजिकयुतैरेकीकृतैर्वापृथक् । स्वेदःस्यादथकूर्परोदरशिरःस्फिग्जानुपादाङ्गुलीगुल्फस्कंधकटीरुजोविजयतेनिःशेषवातार्त्तिहा ॥

अर्थ–बिनोलेकी मींगी, कुलथी, तिल, जो, अंडकीजड, अलसी, साँठकीजड, सनके बीज, इनको कांजीमें उबालकर जहां शूल चलताहो उस जगे पोटलीसें सेक करे तो शूल दूर हो, एक एक वस्तुका अथवा सबको मिलायके पहुचेमें, उदरपर, मस्तक, कूले, घोटू, पैरकी उंगली, एडी, कंधा, और कमरमें सेक करे तो संपूर्ण वातकी पीडा दूर हो ।

विश्वमेरंडजंमूलंक्काथयित्वाशृतंपिबेत् ।
हिंगुसौवर्चलोपेतंसद्यःशूलनिवारणम् ॥

अर्थ–सोंठ और अंडकी जडका काढाकर उसमें हींग और संचरनोन डालके पीवे तो तत्काल शूलका नाश होय ।

विश्वजलंरुबुतैलविमिश्रंहिंगुयुतंरुचकेनचयुक्तम् ॥
पीतमतित्वरितंविनिहन्याच्छूलममूलमिदंहियथास्यात् ॥

अर्थ–सोंठके काढेमें अंडीका तेल, हींग, और संचरनोन, इनको एकत्र करके पीवे तो तत्काल शूलको दूर करे ।

शूलनाशनचूर्णम् ।

शंखरजोलवणंचसहिंगुव्योषयुतंतुहिमांबुनिपीतम् । शूलमुदग्रतरंविनिहन्यान्नाभिविलेपनतोमदनंच ॥

अर्थ–शंखका बुरादा, संचरनोन, हींग, सोंठ, मिरच, पीपल, इनका चूर्ण शीतल जलमें पीवे तो घोर शूल दूर हो । उसी प्रकार मैनफलको घिसके नाभिपर लेप करे तो शूल जाय ।

भास्वद्वटी ।

गरलहुतभुग्विश्वाजाजीवचोषणहिंगुभिर्विधिविमृदितैर्भृंगद्रावैर्गुटीहरिमंथवत् । हरतिविविधंभुक्ताशूलंतथानिलमूढतामनलविरतिंसैषाभास्वद्वटीभुविविश्रुता ॥

अर्थ–सिंगियाविष, चीतेकी छाल, सोंठ, जीरा, वच, कालीमिरच, और हींग इनका चूर्ण कर उसमें भांगरेका रस डाल खरल कर जब गाढा होजाय तब चनेके प्रमाण गोली बनावे इसके सेवन करनेमें अनेक प्रकारके भोजन करनेसे जो शूल उठा तथा पवनकी गांठ आर पवन (अधोवायुका) न निकलना इनको यह भास्वद्वटी दूर करे ।

शूलनाशनचूर्णम् ।

शंखंदग्धंकरंजंचहिंगुत्र्यूषणसैंधवम् । एतच्चूर्णीकृतंसर्वपिबेच्चोष्णेनवारिणा ॥ सर्वशूलहरंचूर्णविख्यातंरससागरे ।

अर्थ–शंखकी भस्म, कंजा, हींग, सोंठ, मिरच, पीपल, और सेंधानिमक, इनका चूर्ण कर गरम जलके साथ अनुमानमाफिक पीवे तो यह सर्व प्रकारके शूलोंको दूर करे ।

चित्रकंरामठंपाठाव्योषंलवणपंचकम् ॥ अजाजीधान्यकंहिंस्रादीप्यकंग्रंथिकंतथा । एतानिसमभागानिसूक्ष्मचूर्णानिकारयेत् ॥ जंबीरस्यरसेनैववटकान्कारयेद्बुधः । हृच्छूलंपार्श्वजंशूलमामशूलमरोचकम् ॥ अशीतिवातजान्रोगान्क्षणान्नाशयतिध्रुवात् ।

अर्थ-चीतेकी छाल, हींग, पाढ, सोंठ, मिरच, पीपर, पांचोंनोन, जीरा, धनिया, छड, अजमायन, और पीपरामूल, इनका बारीक चूर्ण कर जंभीरीके रससें गोली बनावे। यह गोली हृदयके शूलको, पसवाडेके शूलको, आमवातके शूलको, अरुचि, और अस्सीप्रकारके वातरोगोंको तत्काल दूर करे।

शूलनाशिनीवटी।

हरीतकीत्रिकटुकंकुचिलागंधहिंगुच ॥ सैंधवंचसमंसर्वंवटीं कुर्यात्सुखावहाम्। लघुकोलप्रमाणांतांभक्षयेत्प्रातरेवहि॥ एकाएववटीभुक्ताजन्मशूलनिवारिणी। ग्रहण्यांतामतीसारे साजीर्णेमंदपावके॥ उष्णोदकानुपानेनसुखमाप्नोतिनित्यशः।

अर्थ-हरडकी छाल, सोंठ, मिरच, पीपल, कुचिला, गंधक, हींग, और सैंधानिमक, प्रत्येक समान भाग लेय, सबको कूट पीस पानीमें छोटे बेरकी बराबर गोली बनावे। प्रातःकाल १ गोली नित्य खाय तो यह एकही गोली जन्मके शूलको दूर करे, संग्रहणी, अतीसार, अजीर्ण, मंदाग्नि, इनमें यह गोली गरम जलमें देवे तो रोगीका रोग दूर होय, और सुख मिले।

कुबेराख्यवटकम्।

कर्षैकंचकुबेराख्यंकर्षैकंचमहौषधम् ॥सौवर्चलंचकर्षार्द्धंकर्षार्द्धंभृष्टहिंगुकम्। शिग्रुमूलीरसेनैवरसोनस्यरसेनवा॥ पिष्ट्वा सर्वंप्रयत्नेनस्वच्छांगारेविपाचयेत्। भुक्त्वातेनविनश्यंतिशूलमष्टविधंतथा॥

अर्थ-कुचिला १ तोले, सोंठ १ तोले, संचरनोन ६ मासे, भुनीहींग ६ मासे, इनका चूर्ण कर सहजनेके रसमें अथवा लहसनके रसमें पीसके उसकी टिकिया बनाकर स्वच्छ अंगारोंपर सेके, १ टिकिया गरम जलसें खाय तो आठ प्रकारका शूल दूर होय।

त्रिदोषशूलहरो लेहः।

त्रिफलालोहजंचूर्णंयष्टीमधुकमेवच।
मधुसर्पिर्युतंलीढ्वाशूलंहंतित्रिदोषजम्॥

अर्थ-त्रिफला, लोहभस्म, मुलहटी, और महुआ, इनके चूर्णको सहत और घी मिलायकर सेवन करे तो त्रिदोषजन्य शूल दूर हो।

शूलदावानलः ।

शुद्धंसूतंविषंगंधंप्रत्येकंपलमात्रकम् । मरिचंपिप्पलीशुंठी हिंगुचैवपलद्वयम्॥पलाष्टपंचलवणंचिंचाक्षारंपलाष्टकम् । सप्तवारंदग्धशंखंजंबीराम्लेनसेचयेत् ॥ पलाष्टकंचसंयोज्यंतत्सर्वंनिंबुकद्रवैः । दिनंमर्द्यंकोलमात्रंभक्षयेत्सर्वशूलनुत् ॥ शूलदावानलोनाम्नाशूलरोगनिकृंतनः ॥

अर्थ–शुद्ध पारा, सिंगियाविष, शुद्ध गंधक, प्रत्येक चार चार तोले लेय। काली मिरच, पीपल, सोंठ, और हींग ये प्रत्येक आठ आठ तोले लेय। पांचोंनोन ३२ तोले, इमलीका खार ३२ तोले, फिर शंखके टुकडेको सातवार आंचमें तपायके जंभीरीके रसमें बुझावे, जब भस्म होजाय तब आठ तोले पूर्वोक्त औषधोंमें मिलाय नींबूके रससे १ दिन खरल कर झडवेरी बेरके बराबर गोली बनावे तो यह शूलदावानलरस सर्वप्रकारके शूलोंको दूर करे।

दशाभ्रकंहैमवतीसमेतात्स्विन्नातुषोदेविषतिंदुबीजात् । कटुत्रिकंक्षारयुगंत्रिदीप्यक्रमिघ्नहिंगुत्रिपटुत्रिबिल्वम् ॥ पृथक्प्लुतंजंभजलैर्वटीयमगस्तपूर्वाबदरप्रमाणा शूलानिगुल्मंक्रिमिमंदवह्निप्लीहामवातान्जयतिप्रसह्य ॥

अर्थ–दशमूल, हरड, और कुचिला, इनको तुषोदक (कांजीका भेद है उस) में औटावे, जब कुचिलाके ऊपरका छिलका उतरने लगे तब उनको निकाल सोंठ, मिरच, पीपल, सज्जीखार, जवाखार, अजमायन, जीरा, अजमोद, वायविडंग, हींग, संचरनोन, सामरनोन, और सैंधानिमक, बेलगिरी, कैथ, और आमले इनको कूट पीस जंभीरीके रसमें छोटे बेरके समान गोली बनावे, यह शूल, गोला, कृमिरोग, मंदाग्नि, प्लीहरोग, और आमवातको दूर करे।

शंखद्राव ।

कासीसात्पलषट्कमूषकचतुर्बिल्वंविचूर्णंक्षिपेत्कुप्यांकाचभवंद्वयोस्तुनालिकाप्रोत्तोत्तरामित्युभे । विन्यस्यज्वलनेयदूर्ध्वनलिकावक्रात्स्रवेत्तत्स्फुटंशंखद्रावइतिस्मृतंजलमिदंवह्नोन्मितंसर्षिपा ॥ लिप्ताग्रेरसनांविधायनालिकायंत्रेप्रसेन्नस्पृशेद्दंतैरेतदुदग्रशूलविविधःप्लीहादिदुष्टोदरी । गुल्मीतूर्णियुगोर्ध्व-

वातगुदजाजीर्णानलाशाययुक्स्यादेतस्यनिषेवणादचिरतो नैषांपुनर्भोजनम् ॥

अर्थ–कसीस ६ पल, सैंधानिमक, १ पल, साझर १ पल, खारीनिमक १ पल, फिटकरि १ पल, इन सबको कांचकी शीशीमें भरे, फिर दूसरी शीशी इसके मुखपर लगाय दोनोंके बीच नली लगायदेवे, फिर जिसमें औषध भरीहो उसको ऊपर रख अग्नि जलावे तो इसमेंसें अर्क टपककर दूसरी नीचेकी शीशीमें भरे, यह शंखद्रावजल है। इसको ३ रत्ती सेवन करे परंतु प्रथम जीभको घीसें चुपड लेवे और गलेमें नली लगायकर पीवे, इस्से दांत न लगने पावे, [दांतोंके स्पर्श होनेसें दांत निर्बल हो जल्दी उखड जाते हैं] यह घोर शूल, तापतिल्ली, दुष्ट उदररोग, गोला, तूणी, और प्रतूणीवात, गुदाके रोग, अजीर्ण और मंदाग्नि, इन सब रोगोंको यह शंखद्राव तत्काल दूर करे और फिर कदाचित् यह रोग नहीं हो।

षट्पलमूषकतःसहपाक्यात्सिधुभवःककुभद्वितयंच । मृतकुडवार्द्धमतोनवसारस्त्वर्द्धविभागइदंदरपिष्टम् ॥ पूर्ववदेवविपाच्यतुयंत्रेवीष्यजलंतुततोनिपतेद्यत् । शूलमनेकविधं गुरुगुल्मंहंतिहिवल्लमितंविधिपीतम् ॥

अर्थ–सोरा ६ पल, खारीनिमक २ पल, सैंधानिमक, २ तोले, [फिटकरी २ तोले, जवाखार २ तोले,] नोसदर आदपा, और सब औषधोंसे आधा शंखका चूरा लेवे। इन सब औषधोंका पूर्व विधिसें नलिकायंत्रद्वारा अर्क निकाल लेवे। यह अनेक प्रकारके शूल, और गोला इनको ३ रत्ती पीनेसें दूर करे।

शूलगजकेसरीरसः

गंधार्द्धोंशुद्धसूतंप्रहरयुगलकंमर्दयेद्द्वतुल्यंशुल्वंशुद्धंनिरुद्धं लवणपरिगतेमार्तमादायभांडे। पक्त्वातत्स्वांगशीतंसुमृदितमथवावल्लतोनागवल्लीपत्रेणाद्यात्सशूलद्विपहरिरुदितोहंति शूलंसमूलं॥

अर्थ–पारा १ तोले, गंधक २ तोले, दोनोंको २ प्रहर खरल करे, फिर शुद्ध तामेके कंटकवेधी पत्रोंपर लेप कर, उनके ऊपर नीचे नोन दे सराव संपुटमें धर कपडमिट्टी कर भट्टीपर चढाय देवे, ४ प्रहरकी अग्नि देके उतार ले, सरावमेंसें रसको निकालके पीसडाले २ रत्ती पानके साथ देवे, वो शूलको तत्काल हरण करे इसे शूलगजकेसरीरस कहते हैं।

अजाजिकौषधोपणंसरामठोग्रगंधिकं ॥
विचूर्ण्यकार्षिकंपिबेदशीतवारिणानुच ॥

अर्थ–जीरा, सोंठ, कालीमिरच, हींग, और वच, इनका चूर्ण कर तोलेभर गरम जलमें पीवे तो शूलरोग दूर होय ।

गंधकरसायनं

पलैकंत्रिफलाचूर्णपलार्द्धंगंधकस्यतु । लोहभस्मतुकर्षैकंस-
र्वसंचूर्ण्यमिश्रयेत् ॥ कर्षार्द्धंमधुसर्पिर्भ्यांलेहयेत्सर्वशूलनुत् ।
वातविस्फोटकान्हंतिसेवनात्त्रिमासतः ॥ गताःकेशाःपुनर्या-
तिगंधकस्यरसायनात् ॥

अर्थ–त्रिफलाका चूर्ण ४ तोले, गंधक शुद्ध २ तोले, लोहकी भस्म १ तोले, सबको एकत्र पीस छः मासे सहत और घीके साथ खाय तो शूलरोग दूर होवे तीन महिने सेवन करनेसें वादीके फोडे दूर हो, और इस गंधकरसायनके सेवन करनेसें गए हुए मस्तकके वाल फिर ऊग आवे ।

गुडाद्यमंडूरं

गुडामलकपथ्यानांचूर्णंप्रत्येकशःपलं । त्रिपलंलोहकिट्टस्य
तत्सर्वंमधुसर्पिषा ॥ समालोड्यततःखादेदक्षमात्रप्रमाणतः ।
आदिमध्यावसानेषुभोजनस्यनिहंतितत् ॥ अन्नद्रवंजरत्पि-
त्तमम्लपित्तंसुदारुणम् । परिणामसमुत्थंचशूलंसंवत्सरोत्थितम्॥

अर्थ–गुड, आमले, हरडका वकल, प्रत्येक चार तोले । लोहेकी कीट १२ तोले ले, सबको कूट पीस सहत घीमें मिलाय १ तोले भोजनके आदि मध्य और अंतमें खाय तो अन्नद्रव, जरत्पित्त, अम्लपित्त, और वर्षदिनका घोर परिणाम शूलको गुडाद्यमंडूर दूर करे ।

ताराभंडूरोगुडः

विडंगंचित्रकंचव्यंत्रिफलात्र्यूषणानिच । नवभागानिचैता-
निलोहकिट्टसमानिच ॥ गोमूत्रंद्विगुणंदद्यान्मूत्रार्द्धंकगुडान्वि-
तं । शनैर्मृद्वग्निनापक्त्वासुसिद्धंपिंडतांगतं ॥ स्निग्धभांडे वि-
निक्षिप्यभक्षयेत्कोलमात्रया । प्राङ्मध्यान्तेक्रमेणैवभोजन-
स्यप्रयोगतः॥योगोऽयंशमयत्याशुपक्तिशूलंसुदारुणम्॥ काम-

लांपांडुरोगंचशोथंमंदाग्नितामपि ॥ अर्शांसिग्रहणीरोगकृमि- गुल्मोदराणिच । नाशयेदम्लपित्तंचस्थौल्यंचैवापकर्षति ॥ वर्जयेच्छुष्कशाकानिविदाह्यम्लकटूनिच । पक्तिशूलान्तको ह्येषगुडोमंडूरसंज्ञकः॥शूलार्त्तानांकृपाहेतोस्तारयापरिकीर्त्तितः॥

अर्थ–वायविडंग, चीता, चव्य, त्रिफला, त्रिकुटा, ये नौ भाग ले, लोहकी कीट नौ भाग ले; इनमें दुगना गोमूत्र मिलावे और मूत्रसें आधा गुड डाले, फिर इसको चूल्हेपर चढाय मंदाग्निसें पक्क करे, जब गाढा होकर गोलासा बंधने लगे तब उतारकर चिकने पात्रमें धररक्खे । इसमेंसें ८ मासे भोजनके प्रथम मध्य और अंतमें खाय तो यह परिणाम शूलको, कामला, पांडुरोग, सूजन, मंदाग्नि, बवासीर, संग्रहणी, कृमि, गोला, उदर, और अम्लपित्त, इन सब रोगोंको यह मंडूरसंज्ञकगुड दूर करे । इसके खानेसे देहकी स्थूलता दूर हो इसका खानेवाला सूखेसाग, विदाहकारी, खट्टे, चरपरे, पदार्थोंको न खाय ।

शूलगजकेसरीगुटिका ।

पथ्याटंकणविश्वहिंगुमरिचंवन्हिर्विडंगंधकं तुल्यंसैंधवसंयु- तंतुकुचिलंसर्वैःसमंसंमतं ।शूलाध्मानविबंधगुल्मकसनश्लेष्मा- मवातापहातूर्णाल्पाग्न्युदरारुचिज्वरहरीशूलद्विपघ्नीवटी ॥

अर्थ–हरडकी छाल, सुहागा, सोंठ, हींग, कालीमिरच, चीता, वायविडंग, गंधक, और सैंधानिमक ये सब बराबर ले सबकी बराबर कुचिला डाल, खरल कर गोली बनावे यह शूल, अफरा, बद्धकोष्ठ, गोला, खांसी, कफ, आमवात, मंदाग्नि, उदर, अरुचि, ज्वर, इन रोगोंको शूलगजकेसरीगुटिका तत्काल दूर करे ।

करंजहिंगुसौभाग्यवरनागरजंरजः ।
तप्तोदकेनसंपीतंमहाशूलनिवारणम् ॥

अर्थ–कंजा, हींग, सहजना और सोंठ, इनका चूर्ण कर गरम जलसें पीवे तो घोर शूल दूर हो ।

शूलरोगे पथ्यम् ।

विरुद्धान्यन्नपानानिजागरंविषमाशनं । रूक्षतिक्तकषाया- निशीतलानिगुरूणिच ॥ व्यायामंमैथुनंमद्यंद्विदलंलवणंकटु । वेगरोधंशुचंक्रोधंवर्जयेच्छूलवान्नरः ॥

अर्थ—अपनी आत्माके विरुद्ध अन्न, जल, रात्रिमें जागना, कुसमय थोडा वा बहुत भोजन, रूखा, करूआ, कषेला, शीतल, भारी, ऐसे पदार्थोंका भोजन तथा दंडकसरत, स्त्रीसंग, मद्यपान, दोदलका अन्न, नोन, चरपरे पदार्थ, मलमूत्रादिवेगोंका रोकना शोक और क्रोध करना इनको शूलरोगी त्यागदेवे ।

इति शूलचिकित्सा समाप्ता ।

उदावर्त्तचिकित्सा ।

सर्वेष्वेतेषुविधिवदुदावर्त्तेषुकृत्स्नशः ।
वायोःक्रियाविधातव्यास्वमार्गप्रतिपत्तये ॥

अर्थ—संपूर्ण उदावर्त्तोंमें विधिपूर्वक जैसे वायु अपने मार्गहोकर गमन करनेलगे वो क्रिया कर्त्तव्य है ।

त्रिवृतादिगुटिका ।

त्रिवृत्कृष्णाहरीतक्योद्विचतुःपंचभागिकाः ।
गुटिकागुडतुल्यास्ताविड्विबंधगदापहाः ।

अर्थ—निसोथ, पीपल, हरडकी छाल, क्रमसे २–४–५ भाग ले; सबको पीस गुडमें गोली बनावे, इसके खानेसे मलका रुकना दूर हो ।

नाराचरसः ।

खंडपलंत्रिवृतासममुपकुल्याचूर्णितंसूक्ष्मम् । प्राग्भोजनस्यमधुनाविडालपदकंलिहेत्प्राज्ञः ॥ एतद्गाढपुरीषवातेपित्ते कफेचविनियोज्यं । नृपयोग्यमिदंस्वादुचूर्णंनाराचकंनाम्ना ॥

अर्थ—खांड ४ तोले, निसोथ ४ तोले, और पीपर इनका बारीक चूर्ण कर भोजनके पूर्व ८ मासे सहतके साथ चाटे, इसे विड्बंध, वातरोग, और पित्तके रोगमें देय, यह राजाके योग्य स्वादु चूर्ण है, इसे नाराचरस कहते हैं ।

जैपालस्यसमंसूतंव्योषटंकणगंधकैः । नाराचःस्याद्रसोनाम्ना माषःसर्पिसितायुतः ॥ इत्युदावर्त्तमानाहमुदरानाहगुल्मकम् ।

अर्थ—पारा, गंधक, सोंठ, मिरच, पीपल, सुहागो, सब बराबर ले; सबके बराबर शुद्ध जमालगोटा डाले; यह नाराचरस १ मासे घी खांडके साथ खाय तो उदावर्त्त, अफरा, उदररोग और गुल्मरोगको दूर करे ।

वचाद्यंचूर्ण ।

वचाभयाचित्रकयावशूकान्सपिप्पलीकातिविषान्सकुष्ठान् ।
उष्णाम्बुनानाहविमूढवातान्पीत्वाजयेदाशुरसौदनाशी ॥

अर्थ-वच, हरडकी छाल, चीतेकी छाल, जवाखार, पीपल, अतीस, और कूठ, इनका चूर्ण कर गरम जलके साथ सेवन करे तो अफरा, विमूढवात, इनको दूर करे । इसके ऊपर मूंगका यूष और भातका पथ्य देवे ।

राडधूमविडव्योषगुडमूत्रैर्विपाचिता ।
गुदेङ्गुष्ठसमावर्त्तिर्विधेयानाहशूलनुत् ॥

अर्थ-मैनफल, घरकाधूंआ, विडनोन, त्रिकुटा, और गुड इनको गौके मूत्रमें पचाके अंगुठेके समान बत्ती बनाय गुदामें रक्खे तो अफरा और शूल दूर हो ।

इति उदावर्त्तचिकित्सा समाप्ता ।

अथगुल्मचिकित्सा ।

गुल्मेप्रायशइष्टाःस्युःस्नेहाःस्वेदाश्चवातघ्नाः ।
संतर्पणानितद्वत्स्निग्धोष्णान्यन्नपानानि ॥

अर्थ-गुल्म कहिये गोलाके रोगमें प्रायः वातनाशक स्नेहविधि, स्वेदविधि, संतर्पण और चिकने तथा गरम अन्नपान सेवन करना हित कहा है ।

स्वर्जिकाशाणमानास्यात्तावदेवगुडंभवेत् ।
उभयोर्वटिकांखादेद्गुल्मामयविनाशिनी ॥

अर्थ-सज्जी ४ मासे, गुड ४ मासे, दोनोंकी गोली बनायके खाय तो गोलेका रोग दूर हो ।

क्षाराष्टकम् ।

पलाशवज्रिशिखरीचिंचार्कतिलनालजाः । यवजःस्व-
र्जिकाचेतिक्षारात्वष्टौप्रकीर्त्तिताः । गुल्मशूलहराःक्षा-
राअजीर्णस्यचपाचनाः ॥

अर्थ-ढाक, थूहर, ओंगा, इमली, आक, तिल, और जो, इनका खार और सज्जी खार ये आठ क्षार गोला, शूलको हरण करे और अजीर्णको पाचन करते हैं ।

वज्रक्षारः ।

सामुद्रंसैंधवंकाचंयवक्षारंसुवर्चलम् । टंकणंस्वर्जिकाक्षारस्तुल्यंचूर्णंप्रकल्पयेत् ॥ वज्रीक्षीरैरर्कक्षीरैरातपेभावयेत्र्यहं । वेष्टयेदर्कपत्रेणरुद्धाभांडेपुटेपचेत् ॥ तत्क्षारंचूर्णयेत्पश्चात्त्र्यूषणंत्रिफलातथा । यवानीजीरकोवह्निश्चूर्णमेषांचकारयेत् ॥ सर्वचूर्णसमःक्षारःसर्वमेकत्रकारयेत् । तच्चूर्णटंकयुगलंसलिलेनप्रयोजयेत् ॥ गुल्मशूलेतथाजीर्णेशोथेसर्वोदरेषुच । मंदवह्नावुदावर्तेप्लीह्निचापिपरंहितम् ॥ वातेऽधिकेजलैःकोष्णेहितंपित्ताधिकेघृतैः । गोमूत्रेणकफाधिक्येकांजिकेनत्रिदोषजे ॥ वज्रक्षारइतिख्यातःप्रोक्तःपूर्वस्वयंभुवा । सेवितोहरतेजीर्णंतथाजीर्णभवान्गदान् ॥

अर्थ—समुद्रनोन, सेंधानोन, कचियानोन, जवाखार, संचरनोन, सुहागा, और सज्जीखार, इनको समान लेकर चूर्ण करे । फिर थूहरके दूधकी और आकके दूधकी धूपमें धरके तीन दिन भावना देवे, फिर आकके पत्तोंमें लपेट किसी पात्रमें भर मुख बंद करे चूल्हेपर धरके पचावे, जब पक होजाय तब निकालकर चूर्ण कर, फिर त्रिफला, त्रिकुटा, अजमायन, जीरा, और चीता इनका चूर्ण करे इन सबकी बराबर क्षार मिलावे सबको एकत्र कर चूर्ण करे, ८ मासे चूर्ण जलके साथ लेवे तो गोला, शूल, अजीर्ण, सूजन, सर्वप्रकारके उदररोग, मंदाग्नि, उदावर्त्त और प्लीहा, इन सबको दूर करे । इस औषधको वातकी अधिकतामें गरम जलके साथ दे, पित्तकी अधिकतामें घीके साथ, और कफकी अधिकतामें गोमूत्रके साथ, एवं त्रिदोषकी अधिकतामें कांजीके साथ देवे, यह वज्रखार ब्रह्मदेवने कहाहै । सेवन करनेसे अजीर्ण और अजीर्णके रोगोंको दूर करे ।

सुवर्चिकाटंकमिताशाणमानामताद्रका ।
उभौभुंजीतयुगपद्गुल्मामयनिवृत्तये ॥

अर्थ—सोरा ४ मासे, अदरक ४ मासे, दोनो मिलाकर खाय तो गोलाका रोग दूर होय ।

शुक्तिकाचूर्णगुटिकांटंकमात्रांसुवेष्टयेत् ।
गुडेनशाणमानेनतांगिलेद्गुल्मरोगवान् ॥

अर्थ–सीपकी भस्मका चूर्ण ४ मासेको चार मासे गुडमें धर गोली बनाकरके निगल जावे तो गोलेका रोग दूर होय ।

गुल्मीकुमारिकामांसंकर्षार्द्धंगोघृतान्वितम् ।
गिलेत्व्योषाभयासिंधुसूक्ष्मचूर्णावचूर्णितम् ॥

अर्थ–घी गुवारका गूदा ८ मासे, सोंठ, मिरच, पीपल, हरडका वक्कल, और सैंधानिमक, इनका चूर्ण मिलाय घीमें सानके खाय तो गोलेका रोग दूर हो ।

पथ्यापथ्यं ।

वल्लूरंमूलकंमत्स्यंशुष्कशाकानिद्विदलम् ।
नखादेद्वालुकंगुल्मीमधुराणिफलानिच ॥

अर्थ–सूखा मांस, मूली, मछली, सूखे साग, द्विदल अन्न (मूंग उडद आदि दाल) खीरा, ककडी, और मीठे फलको गोलेका रोगी सेवन करना त्याग देवे ।

कुडवंलशुनाद्विशुष्कशुद्धाद्विपचेत्क्षीरजलेष्टभागवृद्धे ।
प्रपिवेच्चपयोविशेषमेतत्स्वातिगुल्मज्वरशूलविद्रधिघ्नम् ॥

अर्थ–लहसन ६४ टंकको आठगुने जल मिले हुए दूधमें औटावे, जब जल जरके दूधमात्र बाकी रहे, तब इस दूधको छानके पीवे तो गोला, ज्वर, शूल, और विद्रधिरोग दूर होय ।

एरंडबिल्वशुंठीकृष्णामूलोद्भवःक्काथः ।
विडसिंधुहिंगुयुक्तोविष्टंभानाहशूलघ्नः ॥

अर्थ–अंडकीजड, बेलगिरी, सोंठ, पीपरामूल, इनके काढेमें बिडनोन, सैंधानोन, और हींग मिलायके पीवे तो विष्टंभ, अफरा और शूल, ये दूर हो ।

कांकायनगुटिका ।

यवानीजीरकंधान्यंमरिचंगिरिकर्णिका । अजमोदोपकुंचीच चतुःशाणंपृथक्पृथक्॥हिंगुपट्शाणिकंकार्यंक्षारौलवणपंचकं । त्रिवृदष्टामितैःशाणैःप्रत्येकंकल्पयेत्सुधीः ॥ दंतीसठीपौष्करंच विडंगंदाडिमंशिवा । चित्रोऽम्लवेतसःशुंठीशाणैःषोडशाभिःपृथक् ॥ बीजपूररसेनैषांगुटिकांकारयेद्भिषक् । घृतेनपयसामद्यैरम्लैरुष्णोदकेनवा ॥ पिबेत्कांकायनप्रोक्तांगुटिकांगुल्मनाशिनीम्।मद्येनवातिकंगुल्मंगोक्षीरेणचपैत्तिकम्॥मूत्रेणकफगु-

ल्मंचदशमूलैस्त्रिदोषजम् । उष्ट्रीदुग्धेननारीणांरक्तगुल्मंनिवारयेत् ॥ हृद्रोगंग्रहणीशूलंकृमीनर्शांसिनाशयेत् । भास्करलवणमन्यदपिशंखद्रावादिदेयम् ॥

अर्थ—अजमायन, जीरा, धनिया, कालीमिरच, उपलसिरी, अजमोद, पीपल, प्रत्येक चार चार मासे ले । हींग २४ मासे, जवाखार, सज्जीखार, पांचोनोन, और निसोथ, प्रत्येक ३२ मासे । दंती, कचूर, पोहकरमूल, वायविडंग, अनारदाना, हरडकी छाल, अमलवेत, और सोंठ, प्रत्येक ६४ मासे, सबको कूट पीस बिजोरेके रसमें खरल करे गाढा होनेपर गोली बनावे, इस कांकायनगुटिकाको घृत, दूध, मद्य, खटाई, और गरम जलके साथ सेवन करे तो गोलेका रोग दूर हो । वातके गुल्ममें मद्यकेसाथ, पित्तमें गोदूधके साथ कफमें गोमूत्रके साथ, दशमूलके काढेमें त्रिदोषको, उंटनीके दूधमें स्त्रीके रक्तगुल्मको, हृद्रोग, संग्रहणी, शूल, कृमि, बवासीर, इन सबको दूर करे ।
इस गोलके रोगमें लवणभास्कर चूर्ण तथा शंखद्राव आदिभी देने चाहिये

समतीतसूतिकालोनारीगुल्मेऽस्रजेस्निग्धाः ।
स्विन्नाचतज्जयायस्नेहविरेकंभजेद्युक्त्या ॥

अर्थ—स्त्रीके रक्तगुल्ममें प्रसूतसमयके व्यतीत होनेपर स्निग्ध और स्वेदनविधि करके उस रक्तगुल्म, दूर करनेको स्नेहन और विरेचनविधि युक्तपूर्वक करे ।

तिलक्काथोपञ्जागुडघृतकणाविश्वमरिचैर्युतःपीतोगुल्मंरुधिरभवमेकोविजयते । कणाभार्ङ्गीमूलामरतरुकरंजोद्भवरजास्तिलक्काथैःपुष्पप्रतिहतिमसृग्गुल्ममपिच ॥

अर्थ—तिलके काढेको मजीठ, गुड, घृत, पीपल, सोंठ, मिरच, मिलायके पीवेतो रक्तगुल्म, दूर हो । अथवा पीपल, भारंगीकीजड, देवदारु, और कंजा, इनका चूर्ण तिलके काढेमें मिलायके पीवे तो स्त्रीके पुष्पका माराजाना और गुल्म दूर हो ।

विद्याधरोरसः ।

शिलातालताप्यानिगंधोथशुल्वंमृतंशुद्धसूतश्चतुल्यांशमेतत् । कणावारिणावज्रिनीरेणमर्द्यंदिनैकंरसोयातिविद्याधराख्यः ॥ तमद्धानिष्कमात्रंविलिह्यसारघेणतु । पिबेच्चगोजलैनरःसुतीव्रगुल्मशूलवान् ॥

अर्थ-मनसिल, हरताल, सोनामक्खी, गंधक, ताम्रभस्म, शुद्धपारा, ये सब समान भाग लेवे, सबका चूर्ण कर पीपलके काढेमें. थूहरके दूधमें एकदिन खरल करे तो विद्याधररस तयार हो, इसमेंसे दो मासे सहतके साथ अथवा गोमूत्रके साथ लेवे तो तीव्र गोला, और शूल दूर हो ।

गुल्मकुठारोरसः ।

पारदंटंकणंगंधंत्रिफलाव्योषतालकम् । विषंताम्रंचजैपालं भृंगस्वरसमर्दितम् । गुंजामात्रावटीकार्याआर्द्रकस्यरसा-न्विताः । गुल्मेकुठारकःप्रोक्तःसर्वगुल्मनिवारणः ॥

अर्थ-पारा, गंधक, सुहागा, त्रिफला, त्रिकुटा, हरताल, विष, ताम्रभस्म, और जमालगोटा, प्रत्येक समान भाग ले । सबको भांगरेके रसमें खरल कर १ रत्तीकी गोली कर अदरकके रससे इस गोलीको खायतो गोलामात्रको दूर करे इस्से गुल्मकुठार रस कहते हैं ।

परीणाहीकुर्मोन्नतघनशिरानद्धवमनज्वराध्मानश्वासातिसृ-तिकसनोपद्रवयुतः । प्रतिश्याहृल्लासानुगतिगुरुहिध्मार्त्तिरु-दितः सशोफोगुल्मोऽयंनियतमितिवर्ज्यस्तुभिषजा ॥

अर्थ-जो फैलता चला जावे कछुएके समान ऊंचा उठआवे, कठोर और नसोंसे आच्छादित हो, जिसमें ज्वर, वमन, अफरा, श्वास, कफका गिरना, उपद्रवयुक्त खांसी, सरेकमा, सूखीरह, हिचकी, पीडा, और सूजन, ये लक्षण जिस गुल्ममें हो उसको वैद्य अवश्य त्याग देवे ।

इति गुल्मचिकित्सा समाप्ता ।

प्लीहचिकित्सा ।

पातव्योयुक्तितःक्षारःक्षीरेणोदधिशुक्तिजः ।
तथादुग्धेनपातव्यापिप्पल्यःप्लीहशांतये ॥

अर्थ-प्लीहरोगकी शांतिके लिये समुद्रकी सीपका खार युक्तिपूर्वक पीवे । अथवा पीपलका चूर्ण दूधके साथ पीवेतो प्लीह (तापतिल्ली) दूर हो ।

सार्द्धपलंसैंधवमष्टगुणेजलेप्रक्षिप्यचतुर्थाऽवशेषंतज्जलंपिबेत्
गुल्मप्लीहादिशमोभवति ॥

अर्थ–सेंधानिमक ५ तोलेको आठगुने जलमें डालके औटावे जब चतुर्थांश जल रहे तब उतारके थोडा थोडा पीवे तो गोला और प्लीहादिरोग दूर हो।

अर्कपत्रंसलवणंपुटदग्धंतुचूर्णितं ।
निहंतिमस्तुनापीतंप्लीहानमतिदारुणम् ॥

अर्थ–आकके पत्तोंमें नोन लगायके आंचमें फूँक देवे, जब भस्म होजाय तब चूर्ण कर छाछके साथ पीवे तो दारुण प्लीहका रोग दूर हो।

हिंगुत्रिकटुकंकुष्ठंयवक्षारश्चसैंधवम् ।
मातुलुंगरसैःपीतंप्लीहशूलहरंरजः ॥

अर्थ–हींग, त्रिकुटा, कूठ, जवाखार, और सेंधानिमक, इनका चूर्ण बिजोरेके रसमें पीवेतो प्लीहके शूलको दूर करे।

पलाशक्षारतोयेनपिप्पलीपरिभाविता ।
प्लीहगुल्मार्त्तिशमनीवह्निमांद्यहरीमता ॥

अर्थ–ढाकके क्षार जलका पीपलोंमें पुट देकर सुखावे ये पीपल खानेसें प्लीह, गुल्मकी पीडा और मंदाग्निको दूर करे।

रसेनजंबीरफलस्यशंखनाभेरजःपीतमवश्यमेव ।
शाणप्रमाणंशमयेदशेषंप्लीहामयंकूर्मसमानमाशु ॥

अर्थ–शंखनाभिके चूर्णको जंभीरीके रससे ४ मासे पीवे तो सर्व प्रकारकी प्लीहोंको दूर करे।

शरपुंखामूलकल्कस्तक्रेणालोडितःपीतः ।
प्लीहांयदिचनहस्तेशैलोऽपितदाजलेप्लवते ॥

अर्थ–सरफोकाकी जडके कल्कको छाछमें मिलायके पीवे तो प्लीहरोग दूर हो।

सुपक्वसहकारस्यरसःक्षौद्रसमान्वितः ।
पीतःप्रशमयत्येवप्लीहानंनेहसंशयः ॥

अर्थ–पके आमके रसमें सहत मिलायके देवे तो अवश्य प्लीह रोगको दूर करे।

सुस्विन्नंशाल्मलीपुष्पंनिशापर्युषितंनरः ।
राजिकाचूर्णसंयुक्तंखादेत्प्लीहोपशांतये ॥

अर्थ-सेमरके फूलको उबाल कर रात्रिभर धरा रहने दे प्रातःकाल राईके चूर्णमें मिलायके खाय तो प्लीहकी शांति हो ।

यवानिकाचित्रकयावशूकषड्ग्रंथिदंतीमगधोद्भवानां ।
चूर्णंहरेत्प्लीहगदंनिपीतमुष्णांबुनामस्तुसुरासवैर्वा ॥

अर्थ-अजमायन, चीतेकी छाल, जवाखार, वच, दंती, और पीपल, इनके चूर्णको गरम जलके अथवा दारूके अथवा दहीके जलके साथ पीवे तो प्लीहरोग दूर हो ।

इति प्लीहचिकित्सा समाप्ता ।

अथ यकृत्‌रोगचिकित्सा ।

प्लीहोद्दिष्टाःक्रियाःसर्वायकृतोपिसमाचरेत् ।
कार्यंचदक्षिणेबाहौतत्रशोणितमोक्षणम् ॥

अर्थ-जो चिकित्सा प्लीहरोगपर कही है वही यकृत (कलेजे)के रोगपर करे, तथा दहने हाथकी फस्तखोले तो यकृत रोग शांति हो ।

क्षारंचविडकृष्णाभ्यांपूतिकस्याम्बुनिःसृतम् ।
पिबेत्प्रातर्यथावह्नियकृत्प्लीहप्रशांतये ॥

अर्थ-जवाखार, विडनोन, और पीपल इनको लहसनके रसमें मिलाय प्रातःकाल पीवे तो यकृत् और प्लीहरोग शांत हो ।

इति यकृतरोगचिकित्सा ।

हृद्रोगचिकित्सा ।

घृतेनदुग्धेनगुडांभसावापिबंतिचूर्णंककुभत्वचोये ।
हृद्रोगजीर्णज्वररक्तपित्तंहत्वाभवेयुश्चिरजीविनस्ते ॥

अर्थ-जो मनुष्य कोहकी छालको घृत, दूध, अथवा गुडका जल, इनमेंसे किसी एकके साथ पीवे तो हृद्रोग, जीर्णज्वर, रक्तपित्त, ये नष्ट हो, और दीर्घ जीवी होवे ।

पिबेन्मूत्रेणसंयुक्तंचूर्णंकुष्ठविडंगयोः । हृदयस्यपतंत्येवक्रम-
योत्हृद्रुजावहाः । नारायणचूर्णंचदेयम् ॥

अर्थ–कूठ और वायविडंगके चूर्णको गोमूत्रके साथ पीवे तो हृदयके कीडे गिरजावे, और हृदयकी पीडा शांति हो जाय । इस हृदयरोगमें नारायणचूर्णभी देना चाहिये ।

मूलंनागवलायास्तुचूर्णंदुग्धेनपाययेत् ।
हृद्रोगश्वासकासघ्नंककुभस्यचवल्कलम् ॥

अर्थ–खरेटीकी जडके चूर्णको, दूधके साथ पीवे तो हृद्रोग, श्वास, खांसी, दूर हो । उसीप्रकार कोहकी छालका चूर्ण दूधके साथ पीवे तो गुण करे ।

चूर्णंपुष्करजंलिह्यान्माक्षिकेणसमायुतं ।
हृच्छूलश्वासकासघ्नंवमिहिक्कानिवारणम् ॥

अर्थ–अथवा पुहकरमूलके चूर्णको सहतके साथ चाटे तो हृदयका शूल, श्वास, खांसी, वमन, और हिचकी दूर हो ।

हरीतकीवचारास्नापिप्पलीनागरोद्भवम् ।
शठीपुष्करमूलस्यचूर्णंहृद्रोगनाशनम् ॥

अर्थ–हरडकी छाल, वच, रास्ना, पीपल, सोंठ, कचूर, और पुहकरमूल, इनका चूर्ण हृद्रोगको नाश करे ।

पुटदग्धहरिणशृंगंपिष्टंगव्येनसर्पिषाप्रपिबेत् ।
हृत्पृष्ठशूलमचिरादुपैतिशांतिंसकुष्ठमपि ॥

अर्थ–हरिणके सींगको पुटपाक करके पीसै गौके घृतके साथ पीवे तो हृदय, पीठका शूल, और कुष्ठ, ये शीघ्र शांति हो ।

वातोपसृष्टेहृदयेवामयेत्स्निग्धमातुरम् ।
द्विपंचमूलीक्वाथेनसस्नेहलवणेनवा ॥

अर्थ–वादीके हृदयरोगमें स्निग्ध करके रोगीको वमन करावे, अथवा दशमूलके काढे करके, अथवा घृतादिमें नोन मिलायके पिवावे, फिर वमन करना चाहिये ।

सपुष्कराख्यंफलपूरमूलंमहौषधंशठ्यभयाचकल्काः ।
क्षाराम्लसर्पिर्लवणैर्विमिश्राःस्युर्वातहृद्रोगहरानराणाम् ॥

अर्थ–पुहकरमूल, विजोरेकी जड, सोंठ, कचूर, हरडकी छाल, इनके कल्कमें क्षार, खटाई, घृत, और नोन मिलायके पीवे तो मनुष्योंका हृदयरोग दूर हो ।

द्राक्षाहरीतक्योस्तुल्यशर्करयोरजः ।
पीतंहिमाम्बुनाहंतिपित्तहृद्रोगमंजसा ॥

अर्थ-मुनक्कादाख, हरड, दोनोंको समान ले; इन दोनोंकी बराबर मिश्री मिलावे, शीतल जलके साथ पीवे तो पित्तके हृदयरोगको शीघ्र शांति करे ।

हिंगूग्रगंधाविडविश्वकृष्णाकुष्ठाभयाचित्रकयावशूकं । पिबेत्ससौवर्चलपौष्कराख्यंयवांभसाशूलहृदामयघ्नम् ॥ ककुभाद्यंघृतमपिहितम् ।

अर्थ-हींग, वच, विडनिमक, सोंठ, पीपल, कूठ, हरडकी छाल, चीता, जवाखार, संचरनोन, और पुहकरमूल, इनको भीगेहुए जोंके पानीसें पीवे तो शूल और हृदयरोग दूर हो ।

इस हृदयरोगपर ककुभादिघृतभी सेवन करना हित है ।

तैलाम्लतक्रगुर्वन्नकषायश्रममातपं । रोषस्त्रीमार्गचिंतोच्चभाष्यंहृद्रोगवांस्त्यजेत् ॥ शालिमुद्गोयवोमांसंजांगलंमरिचान्वितम् । पटोलंकारवेल्लंचपथ्यंप्रोक्तंभिषग्वरैः ॥

अर्थ-तेल, खटाई, छाछ, भारीअन्न, कषेले पदार्थ, परिश्रम, धूप, क्रोध, स्त्रीसेवन, मार्गका चलना, चिंता, और ऊंचे स्वरसें बोलना, इतनी वस्तुओंका सेवन हृदयरोगवाला त्याग देवे ।

शालीचामर, मूंग, जौं, जंगली जीवोंका मांस, काली मिरच, पटोलपत्र, करेले, इतनी वस्तू वैद्योंने हृदयरोगवालेको पथ्य कही है ।

इति हृद्रोगचिकित्सा समाप्ता ।

अथ मूत्रकृच्छ्रचिकित्सा ।

त्रिकंटकारग्वधदर्भकाशंयवासधात्रीगिरभेदपथ्याः ।
निघ्नंतिपीतामधुनाश्मरींचसमीपमृत्योरपिमूत्रकृच्छ्रम् ॥

अर्थ-गोखरू, अमलतासका गूदा, कुशकी और कांसकीजड, जवासा, आमला, पाषाणभेद, और हरड, इनके चूर्णको सहतके साथ पीवे तो पथरी और असाध्य मूत्रकृच्छ्र दूर करे ।

अमृतानागरंधात्रीवाजिगंधात्रिकंटकम् ।
क्वाथंपिबेन्माक्षिकसंप्रयुक्तंकृच्छ्रेसदाहेसरुजेविबंधे ॥

अर्थ-गिलोय, सोंठ, आमले, असगंध, और गोखरू, इनके काढेमें सहत डालके पीवे तो दाह, और विबंधयुक्त मूत्रकृच्छ्र दूर हो ।

तृणपंचकम् ।

कुशःकाशःशरोदभइक्षुश्चेतितृणोद्भवम् । पित्तकृच्छ्रंहरेत्पंच-मूलंबस्तिविशोधनम् । एतत्सिद्धंपयःपीतंमेढ्रगंहंतिशोणितम् ॥

अर्थ-कुश, कांस, रामशर (सरपता), डाभ, और ईख यह तृणपंचक है । इनकी जडको घोटकर पीवेतो पित्तका मूत्रकृच्छ्र दूर हो और बस्ती शुद्ध करे, और इसी तृणपंचककी जडोंमें दूधको सिद्धकरके पीवे तो लिंगके रुधिरको दूर करे ।

कूष्मांडस्यरसःपीतःसितयामूत्रकृच्छ्रजित् ॥

अर्थ-पेठेके रसमें खांड मिलायके पीवे तो मूत्रकृच्छ्र दूर हो ।

एलाश्मभेदकशिलाजतुपिप्पलीनांचूर्णानितंदुलजलैर्लुलिता-निपीत्वा । यद्वागुडेनसहितानिविलिह्यसम्यगासन्नमृत्युरपि जीवतिमूत्रकृच्छ्री ॥

अर्थ-छोटी इलायची, पाषाणभेद, शिलाजीत, और पीपल इनके चूर्णको चावलके धोवनके जलसे पीवे, अथवा गुडके साथ पीवे तो आसन्न मृत्युवाला मूत्रकृच्छ्री जीवे

अयोरजःश्लक्ष्णपिष्टंमधुनासहयोजितम् ।
मूत्रकृच्छ्रंजयत्याशुत्रिभिर्लेहैर्नसंशयः ॥

अर्थ-लोहभस्मको पीसके सहतके साथ चाटे इस प्रकार तीनवार चाटनेसे मूत्रकृच्छ्र दूर हो ।

सितातुल्योयवक्षारःसर्वकृच्छ्रनिवारणः ।
निदग्धिकारसोवापिसक्षौद्रःकृच्छ्रनाशनः ॥

अर्थ-जवाखारकी बराबर मिश्री मिलायके पीवे तो मूत्रकृच्छ्र जाय, अथवा कटेरीकी जडके रसमें सहत, मिलायके चाटे तो मूत्रकृच्छ्र दूर हो ।

गोक्षुरादिगुग्गुलुः ।

अष्टाविंशतिसंख्यानिपलान्यानीयगोक्षुरैः । विपचेत्षड्गु-णेनीरेक्वाथोमार्धावशेषिकः ॥ ततःपुनःपचेत्तत्रपुरंसप्तपलं

क्षिपेत् । त्रिकटुत्रिफलामुस्तंचूर्णितंपलसप्तकम् ॥ वातास्रं वातरोगांश्चशुक्रदोषंतथाऽश्मराम् ॥

अर्थ-गोखरू १८ पलको छः गुने पानीमें औटावे जब आधा रहे तब छान सातपल गूगल डालके फिर पचावे, और इसमें त्रिकुटा, त्रिफला, नागरमोथा, सात सात पल डाले जब अवलेह हो जाय तब उतार ले इसके सेवन करनेसे वातरक्त, वातके रोग, वीर्यके दोष, तथा पथरी और मूत्रकृच्छ्र दूर हो ।

अजाजीगुडसंयुक्ताप्रत्येकंद्विपलोन्मिता ।
भुक्त्वानिवारयत्याशुमूत्रकृच्छ्रंसुदारुणम् ॥

अर्थ-जीरा और गुड प्रत्येक दो पल ले मिलायके खाय तो दारुण मूत्रकृच्छ्र दूर हो ।

यवक्षारेणसंयुक्तंपिबेत्तक्रंचकामतः ।
मूत्रकृच्छ्रप्रशांत्यर्थमश्मरीनाशनायच ॥

अर्थ-छाछमें जवाखार मिलायके पीवे तो मूत्रकृच्छ्र और पथरी दूर हो ।

गुडेनमिश्रितंक्षीरंकदुष्णंकामतःपिबेत् ।
मूत्रकृच्छ्रेषुसर्वेषुशर्करायांचनित्यशः ॥

अर्थ-थोडे गरम दूधमें गुड मिलायके पीवे अथवा खांड मिलायके पीवे तो मूत्रकृच्छ्र दूर हो ।

लघुलोकेश्वरोरसः ।

रसभस्मचभागैकंचत्वारःशुद्धगंधकात् ।पिष्ट्वावराटिकाःपूर्य्या रसपादेनटंकणं ॥ क्षारैःपिष्ट्वाथरुध्वास्यंभांडेकृत्वापुटेपचेत् । स्वांगशीतंविचूर्ण्याथलघुलोकेश्वरोरसः ॥ चतुर्गुंजोघृतैर्देयोमरिचैकोनविंशतिः । जातीमूलपलैकंतुअजाक्षीरेणपाचयेत् ॥ शर्कराभावितंचानुपीतंकृच्छ्रहरंपरम् ।

अर्थ-पारा १ तोले, शुद्धगंधक ४ तोले दोनोंको पीसके कौडियोंके भीतर भरके तीन मासे सुहागेसे उन कौडियोंके मुखको बंद कर देवे फिर उनको एक बरतनमें भरके संपुटमें पचावे, जब स्वांग शीतल होजाय तब कौडियोंमेंसे उस रसको निकालके चूर्ण करे तो यह लघुलोकेश्वर रस बने ४ रत्ती रस २१ मिरचके

चूर्णमें मिलायके देवे और चमेलीकी जडको ४ तोले बकरीके दूधमें औटाय उस दूधमें खांड डालके ऊपरसें पीवे तो मूत्रकृच्छ्र दूर हो ।

निंबूफलरसंक्षिप्त्वागोमयंकामतःपिबेत् ।
योनिदोषजरुग्दाहमेहकृच्छ्रहरंपरम् ॥

अर्थ- नींबूके रसमें गोबरका रस मिलाय पीवे तो योनिके दोष पीडा दाह और मूत्रकृच्छ्रको दूर करे ।

पथ्यापथ्यं ।

व्यायामंमैथुनंतीक्ष्णंमद्यमातपमामिषं। अध्वानंचविदाह्यन्नंमूत्रकृच्छ्रीविवर्जयेत्॥मुद्गशालियवाजीर्णगोधूमाअपिशर्करा। पयश्चामलकंसर्पिस्तंदुलीयंकठिल्लकं॥पटोलंचेतिपथ्यंस्यान्मूत्रकृच्छ्रजुषांनृणाम् ।

अर्थ-मूत्रकृच्छ्रवाला रोगी दंडकसरत, मैथुन, तीक्ष्णवस्तु, मद्य, धूप, मांस, रास्तेका चलना, विदाहकारी अन्न, इनको त्याग दे ये अपथ्य है ।

मूंग, शालीचावल, जौ, पुरानेगेंहू, खांड, दूध, आमले, घी, चौलाई, करेले, और परवलका साग ये मूत्रकृच्छ्रवाले रोगीको पथ्य है ।

इति मूत्रकृच्छ्रचिकित्सा समाप्ता ।

मूत्राघातचिकित्सा ।

मूत्राघातान्यथादोषंमूत्रकृच्छ्रहरैर्जयेत् ।
बस्तिमुत्तरबस्तिंचदद्यात्स्निग्धंविरेचनं ॥

अर्थ-मूत्राघातको मूत्रकृच्छ्रके यत्नोंकरके जीते तथा बस्ती और उत्तरबस्ती देय और स्निग्धकरके विरेचन (जुल्लाब) देवे ।

नलकाशकुशेक्षुशिफाक्वथितंप्रातःसुशीतलंससितम् ।
पिबतःप्रयातिनियतंमूत्रकृच्छ्रमित्युवाचकविः ॥

अर्थ-नरपता, कांस, कुश, ईख, इनकी जडको औटाय प्रातःकाल शीतल करे खांड मिलायके पीवे तो निश्चै मूत्रकृच्छ्र दूर होय ।

मूत्रेविबंधेकर्पूरचूर्णंलिंगेप्रवेशयेत् ॥

अर्थ–मूतके रुकनेमें कपूरका चूरा लिंगमें प्रवेश करे तो मूत्र उतरे ।

घृतशीतपयोन्नाशीचंदनंतंदुलाम्बुना ॥
पिबेत्सशर्करंश्वेतंउष्णवाते सशोणिते ॥

अर्थ–घृत, शीतल दूध, और शीतल अन्नका भोजन करे, तथा चंदन चूरेको चावलोंके पानीमें डाल सपेद खांड मिलायके पीवे तो रुधिरयुक्त उष्णवात (सुजाक वा गरमी) दूर हो ।

स्वगुप्ताफलमृद्वीकाकृष्णाक्षुरसितारजः । अर्द्धभागानिसर्वाणिक्षीरक्षौद्रघृतानिच ॥ सर्वंसम्यग्विपथ्याक्षमानंलिह्यापयः पिबेत् । हंतिशुक्राशयोत्थांश्चदोषान्वंध्यासुतप्रदम् ॥

अर्थ–कौचके बीज, दाख, पीपर, तालमखाने और मिश्री ये सब आधे भाग लेवे और दूध सहत घृत ये सब एक भाग ले सबको मिलाय ले, प्रथम कौच आदिके चूर्णको १ तोले खायकर ऊपरसे दूध पीवे तो शुक्राशयके दोषोंको दूर करे और वंध्याको पुत्र देवे ।

पिष्ट्वाखुवर्चःकोष्णेनकांजिकेनप्रलेपयत् ।
रुद्धमूत्रंनिहंत्याशुरंभाकंदंतथैवच ॥

अर्थ–मूसेकी वीठको गरम कांजीसें लेप करे तो रुके हुए मूत्रको खोल देवे एवं केलाके कंदको पीसके लगावे तो मूत्र उतरने लगे ।

पीतोगोकंटकक्काथःसशिलाजतुकौशकः ।
मूत्रक्षयान्मूत्रशुक्रान्मूत्रोत्संगाच्चमुच्यते ॥

अर्थ–गोखरू, शिलाजीत, और कुशा, इनका काढा पीवे तो मूत्रक्षय, मूत्रमें वीर्यका निकलना, और अत्यंत मूत्रके उतरनेको दूर करे ।

इति मूत्राघातचिकित्सा समाप्ता ।

अथाश्मरीचिकित्सा ।

अश्मरीदारुणोव्याधिरंतकप्रतिमोमतः ।
औषधैस्तरुणःसाध्यःप्रवृद्धोभेदमर्हति ॥

अर्थ–पथरी, घोर दारुण व्याधि, कालके समान है, नवीन उठी पथरी औषधोंसे साध्य होती है और जब बढजाती है, तब प्राणांत करनेवाली हो जाती है ।

वरुणक्वाथः

वरुणस्यत्वचांश्रेष्ठांशुंठीगोक्षुरसंयुतं । क्वाथयित्वाश्रृतंतस्या यवक्षारगुडान्वितं ॥ पीतंवाताश्मरींहंतिचिरकालानुबंधनीम् ।

अर्थ–वरनाकी छाल, सोंठ, और गोखरू, प्रत्येक समान ले काढा करे शीतल होनेपर जवाखार और गुड मिलायके पीवे तो वातकी पथरी बहुत दिनोंकी दूर हो।

शुंठ्यादिक्वाथः ।

शुंठ्यग्निमंथपाषाणभिद्गुग्वरुणगोक्षुरैः । अभयारग्वधयुतैःक्वाथंकृत्वाविचक्षणः ॥ रामठक्षारलवणचूर्णंक्षिप्त्वापिवेन्नरः । अश्मरींमूत्रकृच्छ्रंचनाशमायातिनिश्चितं ॥ क्वाथःशुंठ्यादिनामायंदीपनंपाचनंपरम् । हंतिकोष्ठाश्रितंवातंकटचूरुगुदमेढ्रजम् ॥

अर्थ–सोंठ, अरनी, पाखानभेद, कूठ, वरनाकी छाल, गोखरू, हरड और अमलतासका गूदा, इनका काढा कर उसमें हींग जवाखार और निमक मिलायके पीवे तो पथरी मूत्रकृच्छ्र अवश्य दूर हो यह शुंठ्यादिकाढा दीपन पाचन है और कोठेकी कमरकी जांघकी और लिंगकी वादीको दूर करे है ।

एलोपकुल्यामधुकाश्मभेदकौंतीस्वदंष्ट्रावृषकोरुबूकैः ।
श्रृतंपिबेदश्मजतुप्रधानंसशर्करेसाश्मरिमूत्रकृच्छ्रे ॥

अर्थ–इलायची, पीपल, मुलहटी, पाखानभेद, रेणुका, गोखरू, अडूसा, और अंडकी जड, इनका काढा कर उसमें शिलाजित डालके पीवेतो शर्करा पथरी और मूत्रकृच्छ्र दूर हो ।

यवक्षारंगुडोन्मिश्रंपिबेत्पुष्पफलोद्भवम् ।
रसंमूत्रविबंधघ्नंशर्कराश्मरिनाशनम् ॥

अर्थ–पुष्प और फलकावने जवाखारमें गुड मिलायके पीवे तो यह रस मूत्रके रुकनेको शर्कराको और पथरीको दूर करे ।

त्रिकंटकस्यबीजानांचूर्णमाक्षिकसंयुतम् ।
अविक्षीरेणसप्ताहादश्मरीनाशनंपिबेत् ॥

अर्थ–गोखरूके चूर्णको सहत मिलाय भेडके दूधसैं सातदिन पीवे तो पथरीका नाश होय ।

वरुणत्वक्कषायस्तुपीतोगुडसमान्वितः ।

अश्मरींपातयत्याशुबस्तिशूलंचनाशयेत् ॥

अर्थ–वरनाकी छालका काढा गुड मिलायके पीवे तो पथरीको तत्काल गेरदेवे और पेडूका दर्द दूर हो ।

पथ्यापथ्यम् ।

मुद्गायवाश्चगोधूमाःशालयःक्षीरसर्पिषा ।
डिंडिशःसैंधवंचेतिपथ्यमश्मरिभेदनम् ॥

अर्थ–मूंग जों गेहू सालीचावल घी टेडसका साग और सैंधानिमक ये पथरीवाले रोगीको पथ्य है ।

इति अश्मरीचिकित्सा समाप्ता ।

अथ प्रमेहचिकित्सा ।

बलीविशोध्यःप्रथमप्रमेहीनिकुंभकुंभाक्षकरंजतैलैः ।
स्निग्धस्ततोऽयंशमनैश्चिकित्स्योविशोधनानर्हइहोदितस्तु ॥

अर्थ–यदि प्रमेहवाला रोगी बली होवे तो प्रथम उसको जमालगोटा, निसोथ, हरड, और कंजेके तेलकरके शोधन करे, अर्थात् जुलाब देवे । और जो शोधनेयोग्य न हो उनको प्रथम स्निग्ध करके दोषोंका शमन करे ।

दोषावसानेसमधुःशिवाद्भिर्दोषानिपीताजयतिप्रमेहान् । गौरीवरावह्निकलिंगयुक्तंसमाक्षिकंमेहहरंप्रयुक्तम् ॥ छिन्नोद्भवावारिसमाक्षिकंवाशिवाजलंतद्वदिहप्रदिष्टं ॥

अर्थ–जब दोषोंका शमन करचुके तब आमलोंके जलमें सहत डालके पीवे तो प्रमेह दूर हो । अथवा हलदी, त्रिफला, चिता, इन्द्रजो, इनके काढेमें सहत मिलाके पीवे तो प्रमेह दूर हो अथवा गिलोयके रसमें सहत मिलायके पीवे अथवा आमलेके रसमें सहत मिलायके पीवे तो प्रमेहराग दूर हो ।

चन्द्रप्रभावटी ।

चंद्रप्रभावचामुस्ताभूनिंबसुरदारुच । हरिद्रातिविषादार्वीपिप्पलीमूलचित्रकं ॥ धान्यकंत्रिफलाचव्यंविडंगंगजपिप्पली । सुवर्णमाक्षिकंव्योषंक्षारौचलवणत्रयम् ॥ एतानिटंकमात्राणिगृह्णीयाच्चपृथक्पृथक् । त्रिवृद्दंतीपत्रकंचत्वगेलावंशलोच-

ना ॥ प्रत्येककर्षमात्राणिकुर्यादेतानिबुद्धिमान् । द्विकर्षहत-
लोहंस्याच्चतुःकर्षासिताभवेत् ॥ शिलाजत्वष्टकर्षस्यादष्टौक-
र्षाश्चगुग्गुलुः । विधिनायोजितैरेतैःकर्त्तव्यागुटिकाःशुभाः ॥
चन्द्रप्रभेतिविख्यातासर्वरोगप्रणाशिनी । भुक्त्वाचन्द्रप्र-
भाख्यामुषसिकिलवटींक्षौद्रसर्पिःसमेतांहन्यान्मेहान्गुदार्शःक्षय-
मपिचरजःशुक्रदृग्दन्तरोगान् ॥ पांडुंकंडुंचशूलंकटिरुजमु
दरानाहकृच्छ्राणिमूत्राघातप्लीहांत्रवृद्ध्यर्बुदकसनमहन्मेहनग्रं-
थिकुष्ठम् । अत्रचंद्रप्रभाभैषज्येकोचित्सूतगंधाभ्रंप्रत्येकंपलमे-
तंददातिगुणोत्कर्षाय ॥

अर्थ—कचूर, वच, नागरमोथा, चिरायता, देवदारु, हरदी, अतीस, दारुह-
लदी, पीपरामूल, चीता, धनिया, त्रिफला, चव्य, वायविडंग, गजपीपर, सो-
नामक्खी, त्रिकुटा, सज्जीखार, जवाखार, संचरनोन, सैंधानोन, साह्मानोन, ये
प्रत्येक चार चार मासे लेवे । निसोथ, दंती, पत्रज, दालचीनी, छोटि इलायची,
और वंशलोचन, ये प्रत्येक एक एक तोले लेय । लोहेका भस्म २ तोले, मिश्री ४
तोले, शिलाजीत ८ तोले, गूगल ८ तोले, इन सब औषधोंको कूट पीस विधिपूर्वक
गोली बनावे, यह चंद्रप्रभानामसे विख्यात सर्वरोगोंको नाश करनेवाली है १
गोली प्रातःकाल घी और सहतके साथ खाय तो वीस प्रकारके प्रमेह, बवासीर,
खई, स्त्रियोंके रजदोष, वीर्यके दोष, नेत्र और दांतके रोग, पांडु, खुजली, शूल,
कमरका दर्द, उदररोग, अफरा, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, प्लीह, अंत्रवृद्धि, अर्बुद,
खांसी, गांठ, और कोढ, इन सब रोगोंको यह चंद्रप्रभावटी दूर करे इस चंद्रप्रभावटीमें
कोई वैद्य पारा, गंधक, और अभ्रक प्रत्येक चार चार तोले गुणके बढनेको मिलाते हैं।

प्रमेहारिरसः ।

त्रिफलाजीरकंधान्यंतृणमर्कटतंदुलाः । चतुःपलानिस्वच्छा-
निप्रत्येकंकारयेद्बुधः॥सूक्ष्मैलादारुचीनीचलवंगंनागकेशरं।
बीजानितुम्बरैयाचद्विकर्षंकारयेत्पृथक् । चूर्णंकृत्वाततःसर्वं
वस्त्रपूतंप्रकल्पयेत् । शर्करासघृतंदत्वामोदकान्कारयेत्पुनः॥
प्रातःकालेततोभुक्त्वाप्रमेहमखिलंजयेत् ।

अर्थ-त्रिफला, जीरा, धनिया, ओंगाके चावल, प्रत्येक चार चार पल लेय, छोटी इलायची, दालचीनी, लौंग, नागकेशर, तुखमलैयके बीज, प्रत्येक, दो दो तोले लेवे, सबका चूर्ण कपड छानकर लेवे, फिर इसमें खांड और घी मिलायके लड्डू बनावे, १ लड्डू प्रातःकाल खाय तो सर्व प्रकारके प्रमेह दूर हो ।

इन्दुवटी ।

मृतंसूतंमृतंगंधमर्जुनस्यत्वचासिता । तुल्यांशंमर्दयेद्द्वयोशाल्मल्यामूलजैर्जलैः ॥ दिनांतेवटिकाभक्ष्यामाषमात्रप्रमेहहा । एषाइन्दुवटीनाम्नामधुमेहविनाशिनी ॥

अर्थ-चंद्रोदय, गंधककी भस्म, कोहवृक्षकी छाल, और मिश्री सब समान भाग लेकर सेमरके मूसलाके रसमें१दिन खरल करे, १ माशेकी गोली बनावे, रात्रिको१ गोली खाय तो सर्व प्रकारके प्रमेह दूर हो इसे इन्दुवटी कहते हैं, यह मधुमेहकोभी दूर करती है ।

बलाक्काथयुतंलोध्रचूर्णंमधुसमन्वितं । प्रमेहंहंतिबब्बूलगोदंचघृतभर्जितं ॥ वाजिगंधातदर्द्धकं । मधुनाभक्षयेन्नित्यंप्रमेहंदारुणंजयेत् ॥

अर्थ-खरटीके काढेमें लोधका चूर्ण डाल सहत मिलायके पीवे तो प्रमेह दूर हो, अथवा बबूलके गोंदको घीमें भून उससे आधी असगंधका चूर्ण मिलाय अनुमानमाफिक सहतके साथ खाय तो दारुण प्रमेह दूर हो ।

सिताशृंगाटकंचैवरेवच्चीनीतथैवच । कृत्वाचूर्णमिदंदेयंकर्षमात्रंप्रमाणतः ॥ प्रमेहमखिलंहंतिमधुमेहंचदारुणम् ।

अर्थ-मिश्री, सिंघाडे, और रेवतचीनी, इनका चूर्ण कर १ तोले नित्य खाय तो सर्वप्रकारकी प्रमेह और मधुमेहको दूर करे ।

वंगेश्वररसः ।

रसस्यभस्मनातुल्यंवंगभस्मप्रकल्पयेत् । अस्यमाषद्वयंहंतिमेहान्क्षौद्रसमन्वितं । पक्कोदुम्बरचूर्णंचमधुनाचानुपानकम् ॥

अर्थ-चंद्रोदयकी बराबर वंगभस्म मिलावे इसमेंसे २ मासे सहतके साथ खाय ऊपरसैं पके गूलरका चूर्ण सहतमें मिलायके खाय तो सर्व प्रकारके प्रमेह दूर हो ।

पूगपाकः ।

हेमाम्भोधरचंदनंत्रिकटुकंधात्रीकुहूचारजामज्ञानास्त्रिसुगंध-

जीरकयुगंशृङ्गाटकंवंशजं । जातीकोशलवंगधान्यकयुतंप्र-
त्येककर्षद्वयम्पूगस्याष्टपलंविचूर्ण्यचपयःप्रस्थत्रयेसर्प्पिषः ॥
दद्याद्द्रोकुडवंसिताद्धंकतुलांधात्रीवराद्वयंजलीमन्दाग्नौविपचे-
द्भिषक्शुभदिनेसुस्निग्धभांडेक्षिपेत् । यःखादेद्दिनशःप्रभातस-
मयेमेहांश्चजीर्णज्वरंपित्तंसाम्लमसृक्श्रुतिंगुदहृशोवक्त्राक्षिना-
सासुच ॥ मन्दाग्निंचविजित्यपुष्टिमतुलांकुर्य्याच्चशुक्रप्रदंपूगंग-
र्भकरंपरंगदहरंस्त्रीणामसृग्दोषाजित् ।

अर्थ—नागेकशर, नागरमोथा, सपेदचंदन, त्रिकुटा, बेरकी मींगी, चिरोजी, बदाम, त्रिसुगंध, काला जीरा, सपेद जीरा, सिंघाडे, वंशलोचन, जायफल, लौंग, और धनिया, प्रत्येक २ तोले लेय । दक्षणी सुपारी ३२ तोले ले, उनको कूट पीस तीन शेर दूधमें औंटावे, जब खोहा होजाय तब उस खोहेको ६४ टंक गौके घृतमें भूने, जब भुनके कुछ लाल होजावे जब उतारके धरले और दूसरी कढाहीमें ८०८ टांक मिश्रीकी चासनी कर उसमें भुने हुए खोहेको डालके मिला-यदेवे फिर उज्ज्वल परातमें इसकी कतली जमाय उनको उत्तमपात्रमें भरके धररक्खे, शुभदिन प्रातःकाल २ तोलेके अनुमान नित्य खाय तो प्रमह, जीर्णज्वर, अम्लपित्त, रुधिरका निकलना, गुदाके नेत्रके मुखके नाकके रोग, मंदाग्नि, इनको दूर करे । पुष्टाई करे, वीर्य बढावे, स्त्रियोंको गर्भ देवे, और स्त्रियोंके रुधिरवि-कारोंको दूर करे ।

गोखरूपाकः ।

चूर्णंगोक्षुरतश्चतुःकुडविकंनिक्षिप्यदुग्धाढकेश्रीसंज्ञोषणलोह-
जातित्रिफलाकूपारशोषोषणा । एलेंदूष्टकजातिपत्ररजनीधा-
त्र्यःकुबेराक्षतोबीजंसर्पजफेनजात्यखिलमित्येतत्पृथक्कार्षिकं ।
श्वेतासर्वसमार्द्धतश्चविजयासर्पिः पुनःप्रास्थिकंपक्त्वायुक्तित-
एतदक्षतुलितंप्रातर्भजेद्भेषजं । मेहस्तंभनपोषतापकृदतिप्रौ-
ढाङ्गनासंगमोद्दामानेकमनोजसंगरभिधातव्यंतुतेजःप्रदम् ॥

अर्थ—गोखरूके चूर्ण १ सेरको ४ सेर दूधमें डालके औंटावे, और इसमें लौंग पीपल, लोहभस्म, जायफल, त्रिफला, हौऊबेर, समुद्रशोष, काली मिरच, इला-यची, कपूर, तालमखाना, जावित्री, हलदी, आमले, कौंचके बीज, नागकेशर,

और अफीम, प्रत्येक एक एक तोले लेवे। इन सब औषधोंमें आधी शुद्ध भांग लेवे, गौका घी १ सेर, और सबकी बराबर मिश्रीकी चासनी कर उसमें उक्त औषधोंको मिलाय पाककी विधिसें बनावे। इसमेंसें १ तोले प्रातःकाल भक्षण करे तो प्रमेहको दूर करे, स्त्रीके संगमें स्त्रीको प्रसन्न करे, कामदेवको प्रचंड करे, और तेजको बढावे।

पंचाननवटी।

चित्रकंगंधपाषाणंत्र्यूषणंपारदोविषं। त्रिफलामुस्तकं चैषांश्लक्ष्णचूर्णीकृतंशुभं॥ गुंजानुमानकांतांतुप्रातरे- कांचभक्षयेत्। अष्टादशविधंकुष्ठंवातगुल्मंसशूलकम्॥ वातरोगंकफंसर्वंप्रमेहाश्मरिकृच्छ्रजं। प्लीहानंराजरोगं चवह्निसादमरोचकं॥त्वरितंहंतिचाभ्यासाज्ज्वरघ्नीसं- प्रकीर्त्तिता। पंचाननवटीह्येषारोगाणांक्षयकारिणी॥

अर्थ–चीतेकी छाल, गंधक, सोंठ, मिरच, पीपल, पारा, सिंगियाविष, त्रिफला, नागरमोथा, इनको पीस जलसें १ रत्तीकी गोली बनावे। १ गोली प्रातःकाल सेवन करे तो अठारे प्रकारके कुष्ठ, वायगोला, शूल, वादीके रोग, कफके रोग, प्रमेह, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, प्लीह, राजरोग, मंदाग्नि, अरुचि, और ज्वरको शीघ्र दूर करे यह अभ्याससें अनेक रोगोंको दूर करती है इसे पंचाननवटी कहते हैं।

मेहीगुल्मीवातरोगीचकुष्ठीरक्तीचापस्माररोगीक्षयीच। वर्ज्याःक्षीणाअल्पमात्रेऽपिरोगेप्रोक्ताएतेयस्तथैवोदरार्त्तः॥

अर्थ–प्रमेहवाला, गोलाका रोगी, कोढी, वातरोगी, रक्तपित्तवाला, मृगीवाला और क्षयीरोगवाला, इतने रोगी यदि दुर्बल होगएहो तो यद्यपि थोडाभी रोग देहमें हो तौभी वैद्य त्याग दे उसीप्रकार उदररोगीको त्याग देवे।

शराविकाद्याःपिडिकाअपक्वाःशोफोपचारैर्व्रणवत्तुपक्वाः। सिध्यंतिबस्ताम्बुतदीयपूर्वरूपेपिबेत्क्षीरितरूदकंच॥

अर्थ–प्रमेहकी शराविका आदि पिटिका कच्चीनको जैसे व्रणकी सूजनको पकाते है उसीप्रकार पकायके उनका मल निकालके भरनेकी औषधसें अच्छी करे। इन पिटकाओंमें बकरेका मूत्र पीवे, और पिडकाके पूर्वरूपमें क्षीरकाकोलीका रस पीवे तो शमन हो।

इति प्रमेहचिकित्सा समाप्ता।

मेदश्चिकित्सा ।

श्रमचिंताव्यवायाध्वक्षौद्रजागरणप्रियः ।
हंत्यवश्यमतिस्थौल्यंयवश्यामाकभोजनः ॥

अर्थ-परिश्रम करना, चिंता, मैथुन, मार्ग चलना, जागना, सहत जल मिलायके पीना, जों सामाखिया, आदि रूक्षपदार्थका भोजन ये अत्यंत स्थूलता (मोटेपने)को दूर करते हैं ।

प्रातर्मधुयुतंवारिसेवितंस्थौल्यनाशनम् । चणकान्नंचोष्णमंडंपथ्यंदेयंकृशोभवेत् ॥ पिप्पलीमधुनासेव्यामेदःकफविनाशिनी । धत्तूरपत्रस्वरसेनगाढमुद्वर्त्तनंस्थौल्यहरंप्रदिष्टम् ॥

अर्थ-प्रातःकाल जलमें सहत गेरके पीवे तो स्थूलता जाती रहे और चना गरमागरम मंड पथ्यमें देय तो मनुष्य कृश होजाय । अथवा पीपलके चूर्णको सहतमें मिलायके चाटे तो मेद और कफ दूर हो । अथवा धतूरेके पत्तोंका रस निकालके शरीरमें मालिस करे तो स्थूलता जाती रहे ।

बिल्वपत्ररसोवापिदेहदौर्गंध्यनाशनः । निंबपत्रस्वरसप्रोक्षितकक्षादियोजितंजयति । दग्धहरिद्रोद्वर्त्तनमचिराद्देहस्यदौर्गंध्यम् ॥

अर्थ-बेलपत्रके रसको देहमें मालिश करे तो देहकी दुर्गंधता जाती रहे । नींबके पत्तोंका रस निकाल कांखआदिमें मालिस करे तो दुर्गंध दूर हो । अथवा हलदीको भूनके देहमें मालिश करनेसे देहकी दुर्गंधता दूर हो ।

वाडवानलो रसः ।

मृतंताम्रमयोबोलंमर्दयेत्सूर्यवारिणा[1] । तद्वल्लंमधुनालीढ्वापिबेच्चसजलंमधु ॥ मेदुरंतंजयेन्मासाद्रसोऽयंवाडवानलः ।

अर्थ-पारा, ताम्रभस्म, लोहभस्म, और बोल इनको आकके दूधमें खरल करे फिर दो रत्तीकी गोली बनावे, १ गोली सहत जलके साथ सेवन करे तो यह वाडवानलरस अत्यंत स्थूलताको दूर करे ।

इति मेदश्चिकित्सा समाप्ता ।

---

१ शुद्धसूतं मृतं ताम्रं तालं बोलं समंसमम् इति पाठांतरम् ।

कार्श्यचिकित्सा ।

रूक्षान्नादिनिमित्तैस्तुकृशेयुंजीतभेषजं ।
बृंहणंबलवद्वृष्यंतथावाजीकरंचयत् ॥

अर्थ-जो मनुष्य रूक्ष अन्नादि सेवनके कारण कृश (पतला) होगयाहो उसको बृंहण बलके बढानेवाली वृष्य और जो वाजीकरणकर्त्ता औषध है वो देनी चाहिये ।

स्वभावात्कृशकायोयःस्वभावादल्पपावकः ।
स्वभावादबलोयश्चतस्यनास्तिचिकित्सितम् ॥

अर्थ-जो स्वतःस्वभावसेही कृशदेहवाला है, और जिस्की स्वयंही मंदाग्नि है और जो स्वभावसेही निर्बल है, उसकी औषध शास्त्रमें नही है ।

इति कार्श्यचिकित्सा समाप्ता ।

अथोदरचिकित्सा ।

शस्तोविरेचनविधिर्जठरेषुपूर्वंमूत्रेणवापिपयसाप्युरुबूकतैलम् ।
मासंतथाद्विगुणमप्यपिबेत्सगव्यंमूत्रंतदिष्टमथमाहिषमन्वहंच ॥

अर्थ-उदररोगमें प्रथम गोमूत्रसें अथवा थूहरके दूधसें अथवा अंडीके तेलसें रोगीको दस्त कराने चाहिये, फिर १ मास या अधिक दिन गोमूत्र और मक्खन पीवे अथवा भेंसका घी मिलायके गोमूत्र पीवे तो उदररोग दूर हो ।

गोक्षीरभुग्भवेद्वाकारभदुग्धैकवर्त्तनोयद्वा ।
दाहानाहपिपासामूर्च्छाशूलीविशेषेण ॥

अर्थ-उदररोगीको गौका दूध अथवा ऊंटनीका दूध केवल पीना चाहिये, और जिसके दाह, अफरा, प्यास, मूर्च्छा तथा शूल हो उनको विशेष करके गौ, वा ऊंटनीका दूध पीना चाहिये ।

पुनर्नवादिकाथः ।

पुनर्नवादारुनिशासतिक्तापटोलपथ्यापिचुमंददारु । सनागराछिन्नरुहेतिसर्वैःकृतःकषायोविधिनाविधिज्ञैः ॥ गोमूत्रकंगु-

ग्गुलुनाचयुक्तःपीतःप्रभातेनियतंनराणाम् । सर्वांगशोथोदर-
पार्श्वशूलश्वासान्वितान्पांडुगदान्निहंति ॥

अर्थ–सोंठ, देवदारु, हलदि, कुटकी, पटोलपत्र, हरडकी छाल, नीमकी छाल, दारुहलदी, और सोंठ गिलोय इनका काढा करके उसमें गोमूत्र और गूगल डालके प्रातःकाल पीवे तो सर्वांगसोथ, उदररोग, पसवाडेका दरद, और श्वासयुक्त पांडुरोगको दूर करे।

यवानींशुद्धमादायचतुर्दशपलानिच । द्विपलंटंकणंभृष्टंचूर्णं
कृत्वाविनिक्षिपेत् ॥ कर्षमात्रंततोभुक्त्वाजठरामयनाशनम्॥

अर्थ–शुद्ध अजमायन १४ पल, भुनासुहागा २ टंक, दोनोंका चूर्ण कर १ तोले जलके साथ लेवे तो उदररोग दूर हो।

पिप्पलीपंचपलिकांस्नुहीक्षीरेविनिक्षिपेत् । छायाशुष्कंततःकृ-
त्वादापयेत्पुटसप्तकम् ॥ चूर्णंकृत्वाततःसर्वंशाणमात्रंचभक्ष-
येत् । दिनान्तरेततोभुक्त्वाजठरामयनाशनम् ॥ तक्रोदनंच-
रेत्पथ्यंनाशयेन्नात्रसंशयः ।

अर्थ–पीपल २० तोलेनको थूहरके दूधमें भिगोय छायाशुष्क करलेवे, इस प्रकार सात पुट देवे, फिर सुखायके चूर्ण करलेवे, १ तोले गरम जलसें लेय तो जलंधर आदि सर्व उदरके रोग दूर हो इसके ऊपर छाछभातका पथ्य देवे।

नारायणचूर्णम्।

दीप्यव्योषोत्तमिल्लामिशिजरणयुगक्षारयुग्मातिसद्योवाग्राह्वं
स्वर्णदुग्धाकृमिरिपुहपुषाग्रंथिकुष्टंपटूनि। पंचैकोग्राजगंधा-
सुपविसमलवंसर्वमेकत्रिभागादंतीश्यामाविशालेद्विरपिचतु-
र्भागिकाशातलेषः ॥ देयःसर्वोदराशोंनिलरुजिभिषजातक्र-
साराम्बुमद्यैर्गुल्मानाहार्त्तिशूलेबदरजलसुरातिंतिडीकोदकैश्च।
विड्संगेमस्तुनाथोविषकसनगरानाग्निपांडुज्वरार्त्तिश्वासेस्तत्कं-
ठरोधेप्यशिशिरसलिलैश्चूर्णनारायणाख्यः ॥

अर्थ–अजमायन, सोंठ, मिरच, पीपल, कचूर, सोफ, जीरा सपेद, जीरा काला, सज्जीखार, जवाखार, कंकोल, त्रिफला, चीता, चोक, वायविडंग, हाउबेर, पीपरामूल, कूठ, पांचोंनोंन, बच, अजमोद, और कलोंजी, ये समान भाग ले सबकी तिहाई

दंती ले, दो भाग निशोथ, और दोही भाग इन्द्रायनके फलका गूदा ले, थूहरका दूध चौगुना डालके चूर्ण सुखाय ले इस चूर्णको सर्व प्रकारके उदररोग, बवासीर, वादीके रोग, इनमें वैद्य छाछमें; जोके काढेमें, अथवा मद्यमें देवे, और गोला, अफरा, और शूल इनमें बेरकी छालके काढेमें दारूमें, तंतडीकके काढेमें देवे, मलके रुकनेमें तोडके साथ दे। विषरोग, खांसी, मंदाग्नि, पांडुरोग, ज्वर, श्वास, हृदयकंठके रुकनेमें इस नारायणचूर्णको शीतल जलके साथ देवे।

सहस्रसंमितोषणस्नुहीपयोविभाविता।
हरीतकीचगोजलैरशेषजाठरार्त्तिहृत्॥

अर्थ-१००० पीपलोंको थूहरके दूधकी पुट दे, एवं छोटी हरडोंको गोमूत्रका पुट देवे तो सर्व उदरकी पीडाको दूर करे।

निकुंभोषणानागरंतुल्यमंशद्वयंहेमवत्याविडार्द्धांशयुक्तम्।
रजोऽशीततोयेनपीतंनिहन्यादितिप्लीहगुल्मानलापायपांडून्॥

अर्थ-जमालगोटा, पीपल, सोंठ, सब बराबर ले चौक एक औषधोंसे दूना लेवे, विडनोन आधा भाग ले, सबका, चूर्णकर शीतल जलसें अनुमानमाफिक लेवे तो प्लीह, गोला, मंदाग्नि, और पांडुरोग दूर हो।

अंतर्धूमंसिंधुयुग्भानुपत्रंदग्ध्वाशीतंमस्तुनैतंपिबेद्यः।
दोषाकल्कोपेतकन्यारसंवातस्यप्लीहासप्तरात्राद्विनश्येत्॥

अर्थ-सैंधानिमक, और संचरनिमक, इनको आकके पत्तोंपर लगायके अग्निमें इस रीतिसे जलावे की इनका धूआं बाहर निकलने न पावे फिर इस भस्मको दहीके जलसें पीवे अथवा हलदीके कल्कमें घी गुवारका रस डालके पीवे तो उसके प्लीह सात रातमें दूर हो।

संभूतिर्वह्निसीदादुरजनितरुजोस्तेनयद्दापनीयं
भेदीस्यादन्नपानंलघुचहितमतोवर्जनीयंयदन्यत्।

अर्थ-उदरके रोगमें जैसें इस प्राणीकी जठराग्नि प्रबल हो, तथा दस्तावर ऐसे अन्नपान और हलके तथा हितकारी पदार्थ देने चाहिये। अन्य गरिष्ठादि पदार्थवर्जित है।

मूर्च्छाछर्द्यतिसारदुर्बलमहाहिध्माविबंधज्वरश्वासभ्रांतियुता-
तिशूनमयनंरेकोद्गतानाहकम्। आनद्धतमभीक्ष्णमत्रकुटि-
लोपस्थंचदूरात्त्यजेत्संक्लिन्नाभतनुत्वचंजवरिणंवैद्योयशोर्थीयदि॥

अर्थ-यदि वैद्य यशकी इच्छा रखता हो तो ऐसे उदर रोगीका दूरसेंही त्याग

दे कि जो मूर्च्छा, वमन, अतिसार, दुर्बलता, अत्यन्त हिचकी, मलबंध, ज्वर, श्वास, और सूजन, इनकरके युक्त हो दस्त होनेपरभी जिसके अफरा हो और कांच निकल पडी हो ।

इति उदरचिकित्सा समाप्ता ।

श्वयथुचिकित्सा ।

पथ्यानिशाभार्ङ्ग्यमृताग्निदार्वीपुनर्नवादारुमहौषधानां ।
क्वाथःप्रपीयोदरपाणिपादमुखोत्थितंहंत्यचिरेणशोथम् ॥

अर्थ–हरडकी छाल, हलदी, भारंगी, गिलोय, चीतेकी छाल, दारुहलदी, सांठकी जड, देवदार, और सोंठ इनका काढा करके पीवे तो बहुत दिनकी पेट, हाथ, पैर मुखकी सूजन दूर हो ।

गुडार्द्रकंवागुडनागरंवागुडाभयांवागुडपिप्पलींवा । कर्षाभि-
वृद्ध्यात्रिपलप्रमाणंखादेन्नरःपक्षमथापिमासं ॥ शोथप्रति-
श्यायगतांश्चरोगान्सश्वासकासारुचिपीनसादीन् । जीर्णज्व-
राशोग्रहणीविकारान्हन्यात्तथान्यान्कफवातरोगान् ॥

अर्थ–गुड, अदरख । वा गुड, सोंठ । वा गुड, और हरड । वा गुड, पीपल । इनमेंसे किसी एक योगको एक कर्षसे बढायके तीन पल (१२ कर्ष) पंद्रह दिन या महिनेभर खाय तो सूजन, सरेकमां, श्वास, खांसी, अरुचि, पीनस, अजीर्ण, ज्वर, बवासीर, संग्रहणी, तथा और कफवातके रोगोंको दूर करे ।

कर्षकस्तुगुडःपलमितेनार्द्रकरसेनालोड्यपेयःशोफोनश्यति
निश्चितम् ॥

अर्थ–१ तोले गुडको ४ तोले अदरखके रसमें मिलायके पीवे तो निश्चय सोथरोग दूर हो ।

भूनिंबविश्वकल्पंजग्ध्वापेयःपुनर्नवाक्वाथः ।
अपहरतिनियतमाशुशोथंसर्वांगगंनृणाम् ॥

अर्थ–चिरायता और सोंठके कल्कको पीके ऊपर सांठका काढा पीवे तो मनुष्योंके सर्वांगसोथको निश्चय हरण करे ।

विल्वपत्ररसःपेयःसोपणश्वयथौत्रिजे । विड्वंधेचैवदुर्नाम्नि विदग्ध्याकामलास्वपि ॥ सर्वांगगंतथाशोथंहन्यात्वृषणसंभवम् ॥

अर्थ–संनिपातकी सूजनमें कालीमिरच मिलायके बेलपत्रका रस पीवे तथा बद्धकोष्ठमें बवासीरमें और कामलामे पीवे तो दूर हो । तथा सर्व देहकी और अंडकोशकी सूजन दूर हो ।

वृश्चीवदेवद्रुमनागरैर्वादंतीत्रिवृत्त्र्यूषणचित्रकैर्वा ।
दुग्धंसुसिद्धंविधिनानिपीतंशीतंपरंशोथहरंभिषग्भिः ॥

अर्थ–विषखपरा, देवदार, और सोंठ । अथवा दंती, निसोथ, सोंठ, मिरच, पीपल और चीतेकी छाल, इनसें दूधको सिद्धकर विधिपूर्वक पीवे तो सूजन दूर हो ।

सेकस्तथार्कवर्षाभूनिंबक्काथेनशोथहृत् ।
गोमूत्रेणचकुर्वीतसुखोष्णेनावसेचनम् ॥

अर्थ–गोमूत्रको गरम करके सूजनके ऊपर तरडा देय तो सूजन दूर हो ।

पुनर्नवादारुशुंठीशिग्रुसिद्धार्थकस्तथा ।
अम्लपिष्टःसुखोष्णोऽयंप्रलेपः सर्वशोथहृत् ॥

अर्थ–सांठकी जड, देवदार, सोंठ, सहनेकी छाल, और सपेद सरसों इनको नीबूके रसमें पीस गुनागुना लेप करे तो सर्व प्रकारकी सूजन दूर हो ।

विभीतकानांफलमध्यलेपःशोथेषुदाहार्त्तिहरःप्रदिष्टः ।

अर्थ–बहेडेके भीतरकी गीरीको पीसके लेप करे तो सूजन और दाहकी पीडाको दूर करे ।

पुनर्नवाद्यं चूर्णम् ।

पुनर्नवादार्व्यमृतापाठाविश्वंश्वदंष्ट्रिका । समभागानिसंचूर्ण्यगवांमूत्रेणनापिबेत् ॥ बहुप्रकारंश्वयथुंसर्वगात्रविशारिणम् । हंतिचाशूदराण्यष्टौव्रणांश्चैवोद्धतानपि ॥

अर्थ–सांठकी जड, दारुहलदी, गिलोय, पाढ, सोंठ, और गोखरू, समान भाग ले चूर्णकरके गौके मूत्रसें पीवे तो अनेक प्रकारकी सूजन और आठ प्रकारके उदररोग तथा घोर व्रण ये सब दूर हो ।

भल्ला[illegible]क्यंहरेच्छोथंसतिलाकृष्णमृत्तिका । महिषीक्षीरसंपि[illegible]तेनसंयुतः ॥ शोथमारुष्करंहंतिचूर्णैःशालिदलस्यच।

अर्थ–तिल, काली मिट्टी, इनको भैसके दूधमें पीस मक्खन मिलायके लेप करे तो भिलाएकी सूजन दूर हो, उसीप्रकार चावलोंके पीसको लगावे तो भिलाएकी सूजन जाय ।

पथ्यापथ्यम् ।

स्त्रीतैलघृतमद्यानिगुर्वम्ललवणानिच ।
जांगलंचदिवास्वापंशोफवान्परिवर्जयेत् ॥

अर्थ–सूजनरोगवाला स्त्रीसंग, तैलकी मालिस, घृत, मद्य, भारीपदार्थ, खटाई, नोनके पदार्थ, जांगली जीवोंका मांस, दिनमें सोना, त्याग देवे ।

इति श्वयथुचिकित्सा समाप्ता ।

अंडवृद्धिचिकित्सा ।

वृद्धावत्यशनंमार्गमुपवासंगुरूणिच ।
वेगाघातंपृष्ठजानांव्यायामंमैथुनंत्यजेत् ॥

अर्थ–अंडवृद्धिवाला बहुत भोजन, मार्गका चलना, उपवास (व्रत) करना, भारी पदार्थ भक्षण, मलमूत्रादि वेगोंका रोकना, घोडे आदिकी पीठपर बैठना, दंडकसरत, और मैथुनकरना त्याग देवे ।

वातवृद्धौपिबेत्तैलंमासमेरंडसंभवम् ।
जलौकाभिर्हरेद्रक्तंवृद्धौपित्तसमुद्भवे ॥

अर्थ–वातकी अंडवृद्धिमें १ महिने अंडीका तेल पीवे, और पित्तकी अंडवृद्धिमें जोख लगाकर रुधिर निकलवाना चाहिये ।

चंदनंमधुकंपद्ममुशीरंनीलमुत्पलम् ।
क्षीरपिष्टंप्रलेपेनदाहशोथरुजापहम् ॥

अर्थ–चंदन सपेद, मुलहटी, कमलगट्टा, खस, नीलकमल, इनको दूधमें पीस अंडवृद्धिपर लेप करे तो दाह, सूजन, और पीडा दूर हो ।

त्रिकटुत्रिफलाक्वाथंसक्षारलवणंपिबेत् ।
विरेचनमिदंश्रेष्ठंकफवृद्धिविनाशनम् ॥

अर्थ–त्रिकुटा त्रिफला इनके काढेमें जवाखार और नोन मिलायके पीनेको देवे तो यह विरेचन कफकी वृद्धिको दूर करे ।

लेपनंकटुतीक्ष्णोष्णंस्वेदनंरूक्षमेवच ।
परिषेकोपनाहौचसर्वमुष्णमिहेष्यते ॥

अर्थ-इस कफकी अंडवृद्धिमें चरपरे, तीखे, गरम, लेप करना स्वेदन और रूक्षविधि, परिषेक, और उपनाह तथा सर्व गरम यत्न करने चाहिये ।

रास्नायष्ट्यमृतैरंडबलारग्वधगोक्षुरैः । पटोलेनवृषेणापिविधिनाविहितंशृतं । रुबुतैलेनसंयुक्तमंत्रवृद्धिंव्यपोहति ॥

अर्थ-रास्ना, मुलहटी, गिलोय, खरेटी, अमलतास, गोखरू, पटोलपत्र, और अडूसा, इनका काढा कर उसमें अंडाका तेल डालके पीवे तो अंडवृद्धि दूर हो ।

गंधर्वहस्ततैलेनक्षीरेणचयुतंपिबेत् ।
विशालामूलजंचूर्णंवृद्धिंहन्यान्नसंशयः

अर्थ-दूधमें अंडीका तेल डालके पीवे अथवा इन्द्रायनकी जडके चूर्णको दूधमें मिलायके पीवे तो अंडवृद्धि जाय ।

वचासर्षपकल्केनप्रलेपःशोथनाशनम् ।

अर्थ-वच सरसों इनके कल्कका लेप करनेसें अंडवृद्धिकी सूजन दूर हो ।

वृद्धिबाधिकावटी ।

शुद्धंसूतंतथागंधंमृतान्येतानियोजयेत् । लोहंरंगंतथाताम्रं कांस्यंचाथविशोधितम् ॥ तालकंतुत्थकंचापितथाशंखवराटिकाम् । त्रिकटुत्रिफलाचव्यंविडंगंवृद्धदारुकम् ॥ कर्चूरंमागधीमूलंपाठाचहबुषावचा । एलाबीजंदेवकाष्ठंतथालवणपंचकं ॥ एतानिसमभागानिचूर्णयेद्विधिनाभिषक् । कषायेण हरीतक्यावटिकांटंकसंमिताम् ॥ एकांतांवटिकांयस्तुनिगिलेद्वारिणासह । अंडवृद्धिरसाध्योपितस्यनश्यातिसत्वरम् ॥

अर्थ-शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, लोहभस्म, वंगभस्म, ताम्रभस्म, कांसेकी भस्म, शुद्ध हरताल, नीला थोथा, शंख, कौडी, ये सब शुद्ध करेहुए लेवे । त्रिकुटा, त्रिफला, चव्य, वायविडंग, विधायरो, कचूर, पीपरामूल, पाठ, हौऊबेर, वच, इलायचीके बीज, देवदार, और पांचोंनोन, ये सब समानभाग लेकर चूर्ण करे हरडके काढेसे चार चार मासेकी गोली बनावे । एक गोली जलके साथ निगल जावे तो असाध्यभी अंडवृद्धि तत्काल शांति हो ।

हरीतकीद्विभूनिंबधनिकाक्षद्वयंपृथक् । लवंगंसार्धकर्षस्यात्स-
नाप्यक्षचतुष्टयम् ॥ सर्वतःसार्धगुणितासितातावत्तथामधु ।
लेहोंडवृद्धिनाशायद्वितीयोनास्त्यतःपरम् ॥

अर्थ–हरडकी छाल, चिरायता, और धनिया, प्रत्येक एक एक तोले, लौंग १॥ तोले, सनाय ४ तोले ले, सबसैं डेढी खांड ले, और इतनाही सहत डाले इस अवलेहके समान अंडवृद्धिके दूर करनेको दूसरी औषध नहीं है ।

मृतमात्रेतुवैकाकेविशस्तेषुप्रवेशयेत् ।
वद्धंमुहूर्त्तमेधावीतत्क्षणादरुजोभवेत् ॥

अस्यार्थः–सद्योमारितेविशस्तेपाटितेतस्मिन्किंचिदुष्णेव्रध्म-
प्रवेशयेत्ततोवंधःकार्यः ॥

अर्थ–कौआको मारिके उसके परवगैरह दूर कर पेट फाडके अंडवृद्धिवाला रोगी अपने आंडोको उस कौआके गरम करेहुए पेटमें धरदेवे ऊपरसैं पट्टी बांध देवे तो अंडवृद्धि तत्क्षण दूर हो ।

अजाजीहपुषाकुष्टगोधूमबदराणिच ।
कांजिकेनसमंपिष्ट्वाकुर्याद्व्रध्मप्रलेपनम् ॥

अर्थ–जीरा, हऊवेर, कूठ, गेंहू, और बेर इनको कांजीमें पीस लेप करे तो अंडवृद्धि दूर हो ।

पातालयंत्रयोगेनतैलंवृश्चिकसंभवम् ।
प्रलेपान्नाशयत्येववृद्धिंमासान्नसंशयः ॥

अर्थ–पातालयंत्रद्वारा बिच्छूका तेल निकालके लगावे तो एक महिनेमें अवश्य अंडवृद्धि दूर हो ।

चिखुरीमांसस्वेदेनकुरंडोयातीतित्रिमल्लरहस्यं ॥

अर्थ–गिलहरीके मांससें संस्वेदन करे तो कुरंडरोग जाय, यह त्रिमल्लरहस्य-ग्रंथमें लिखा है ।

गोघृतंसैंधवोपेतंशंबूकस्यरवेःकरैः ।
पक्वंसप्तदिनंहन्याच्छीघ्रंवृद्धंकुरंडकम् ॥

अर्थ–गौके घीमें सेंधानिमक मिलाय उसमें घेंघेका मांस डालके ७ दिन धूपमें धरा रहनेदे, आठवे दिन लगावे तो बढे हुए कुरंडक रोगको दूर करे ।

पथ्यापथ्यम् ।

वेगरोधंपृष्ठयानंव्यायामंमैथुनंतथा ।
अत्याशनंतथाक्रोधंगुरुद्रव्याणिवर्जयेत् ॥

अर्थ—मलमूत्रादि वेगोंका रोकना, घोडाआदि सवारीकी खाली पीठपर चढना, मैथुन करना, अत्यंत भोजन, क्रोध, और भारी पदार्थोंका सेवन करना, इतनी वस्तुओंको अंडवृद्धि और कुरंडकरोगवाला त्याग देवे ।

इति अंडवृद्धिचिकित्सा समाप्ता ।

गंडमालाचिकित्सा ।

सर्षपाश्छिग्रुबीजानिशणबीजातसीजवान् । मूलकस्यतुबीजानितक्रेणाम्लेनपेषयेत् ॥ गलगंडोगंडमालाग्रंथयश्चैवदारुणाः । प्रलेपादस्यनश्यंतिविलयंयांतिसत्वरम् ॥

अर्थ—सरसों, सहजनेके बीज; सनके बीज, अलसी, जों, और मूलीके बीज, इनको खट्टी छाछमें पीस लेप करे तो गलगंड, गंडमाला, और दारुण गांठ, तत्काल नाश हो, और छिपजावे ।

रक्षोघ्नतैलयुक्तेनजलकुंभीकभस्मना ।
लेपनंगलगंडस्यचिरोत्थमपिनाशयेत् ॥

अर्थ—पानीकी डोडीकी भस्मको सरसोंके तेलमें मिलायके लेप करे तो बहुत दिनकाभी गलगंडरोग दूर होवे ।

यवमुद्गपटोलादिकटुरूक्षान्नभोजनम् ।
वमनंरक्तमोक्षंचगलगंडेप्रयोजयेत् ॥

अर्थ—जों, मूंग, परवल, कडुए और रूखे अन्नका भोजन, वमन, और फस्तका खोलना, ये सर्ववस्तु गलगंडरोगपर प्रयोग करे ।

दापयेद्गलगंडेषुप्रच्छन्नानिबहूनिच । गंडगोपालिकांपिष्ट्वातत्र लेपंप्रकल्पयेत् ॥ अवश्यंनश्यतिक्षिप्रंगलगंडगदोऽमुना । प्रलेपस्त्वनुभूतोऽयंबहुधाबहुभिर्जनैः ॥

अर्थ—गलगंडके रोगमें पछने बहुतसें लगावे, तथा बडी गिजाइयोंको पीसके

उसपर लेप करे तो अवश्य गलगंडरोग शीघ्र दूर हो, यह लेप बहुतसे मनुष्योंका अनुभव करा (आजमाया) हुआ है ।

लवणंजलकुंभ्यास्तुकणाचूर्णेनसंयुतम् ।
प्रभातेनित्यमश्नीयाद्गलगंडप्रशांतये ॥

अर्थ–नोन, पानीकी डोडी, और पीपरका चूर्ण इनको समान भाग ले चूर्ण कर प्रातःकाल नित्य भक्षण करे तो गलगंडरोग दूर हो ।

कांचनारत्वचःक्काथःशुंठीचूर्णेनसंयुतः । माक्षिकाढ्यः सकृत्पीतःक्काथोवरुणमूलजः ॥ गंडमालांहरत्याशुचि-रकालानुबंधिनीम् ॥

अर्थ–कचनारकी छालका काढा सोंठके चूर्णके साथ लेय अथवा वरनाकी छालके काढेमें सहत मिलायके पीवे तो बहुतदिनकी गंडमाला दूर हो ।

आरग्वधशिफाक्षिप्रंपिष्टातंदुलवारिणा ।
सम्यङ्नस्यप्रलेपाभ्यांगंडमालामपोहति ॥

अर्थ–अमलतासकी गूदो और बडीसोंफ इनको चावलके धोवनसें पीसनास और लेप करनेसें गंडमाला दूर हो ।

गंडमालामयार्त्तानांनस्यकर्मणियोजयेत् । निर्गुंड्यास्तुशि-फासम्यग्वारिणापरिपेषिता ॥ हस्तिकर्णपलाशस्यमूलेनप-रिलेपितः । तंदुलोदकपिष्टेनगलगंडःप्रशाम्यति ॥

अर्थ–गंडमालावाले रोगीको नस्य देना चाहिये । निर्गुंडी, और बडीसोफको जलमें पीसके लेप करे, अथवा लाल अंडकी जड और ढाककी जडको चावलोंके पानीसे पीस लेप करे तो गलगंड शांति हो ।

पीतसर्षपकंचैवशुष्कंवाराहजंमलम् । समभागद्वयंचैवकृ-त्वाभस्मप्रयत्नतः ॥ वस्त्रपूतंततःकृत्वाकटुतैलेनलेपयेत् । गंडमालांजयत्युग्रांसाध्यासाध्यांनसंशयः ॥

अर्थ–पीलीसरसों, सूखी सूअरकी बीठ, दोनों बराबर ले दोनोंकी भस्म कर कपडेमें छान कडुए तेलमें सानके लेप करे तो घोर गंडमाला असाध्यभी नष्ट हो इसमें संदेह नहीं है ।

गंधकाद्यंचूर्णम् ।

गंधकंकर्षमात्रंचशिवास्यात्कर्षसंमिता । द्विकर्षमाक्षिकंचैव गोघृतंचपलोन्मितम् ॥ एकीकृत्वाततःसर्वंकर्षंकंचापिबेत्पुनः। गोमूत्रेणैवसंयुक्तंगलरोगंविनाशयेत् ॥

अर्थ–गंधक १ तोले, आमले १ तोले, सहत २ तोले, गौका घी ४ तोले सबको एकत्र कर १ तोले पीवे परंतु इसमें गौमूत्र और मिलाय ले, इससे गलगंड दूर हो।

पिप्पलीशाणपंचैकंशुंठीपंचमितंतथा । सैंधवंचद्वयंमाषंगुडं जीर्णपलोन्मितम् ॥ जलेनदेयंनस्यंतुगलरोगंविनाशयेत् ॥

अर्थ–पीपल ५ टंक, सोंठ ५ टंक, सैंधानिमक २ मासे, और गुड पुराना ४ तोले, सबको पीस जलसें नस्य देवे तो गलगंडरोग नाश होय ।

कांचनारगुग्गुलुश्चक्रमर्द्दकंतैलंगंडमालायांभावप्रकाशादौप्रसिद्धं । गुंजादितैलंव्योषादितैलमपिपंचांगचंदनादितैलमपि ॥ ग्रंथौहरिद्रादिलेपश्चयोगतरंगिण्यांतुंबीतैलंगंडमालायांकंठरोगे ॥ तिक्तालाबुफलेपक्वेसप्ताहमुषितंजलं । मद्यंवागलगंडघ्नंपानात्पथ्यानुसेविनाम् ॥

अर्थ–कांचनार गूगल, और पमारके बीजका तैल भावप्रकाशादि ग्रंथोंमें लिखे है वो गंडमाला और गलगंड रोगपर देने चाहिये। गुंजादि तैल, व्योषादि तैल, पंचांग चंदनादिभी गंडमाला और गलगंडरोगमें देवे, ग्रंथिरोगमें हरिद्रादि लेप करना चाहिये। और योगतरंगिणीमें कडुई तूंबीका तैल गंडमाला और कंठरोगपर लिखा है ।

कडुईतूंबीके पके फलमें ७ दिन जलको धरा रहने दे फिर पीवे अथवा मद्यपान करे और पथ्यसें रहे तो गलगंडरोग दूर हो ।

सूर्यावर्त्तरसोनाभ्यांगलगंडोपनाहने ।
स्फोटास्रावौशमंयातिगलगंडोनसंशयः ॥

अर्थ–गलगंडरोग दूर करनेको हुलहुल और कांदेका रससे उपनाहन करे तो फोडाओंका स्राव होना और गलगंडरोग दूर हो ।

कोशातकीनांस्वरसेननस्यंतुंब्यास्तुवापिप्पलिसंयुतेन ।
तैलेनवारिष्टभवेनकुर्य्याद्वचापकुल्यसहमाक्षिकेण ॥

अर्थ-कडुई तोरईके स्वरसकी नस्य लेनेसें अथवा कडुई तूंबीके रसमें पीपलका चूर्ण मिलायके नस्य लेवे, अथवा नीमके तेलकी नस्य अथवा वच और पीपलके चूर्णको सहतमें सानके नस्य लेवे तो गलगंडरोग दूर हो ।

इति गंडमालाचिकित्सा समाप्ता ।

अथ श्लीपदचिकित्सा ।

लंघनालेपनस्वेदरेचनैरक्तमोक्षणैः ।
प्रायःश्लेष्महरैरुष्णैःश्लीपदंसमुपाचरेत् ॥

अर्थ-लंघन, लेपन, स्वेदन, रेचन (जुल्लाब), फस्त खोलना, और जो कफके हरण कर्त्ता उष्ण यत्न है वो श्लीपदरोगमें करने चाहिये ।

सिद्धार्थसौभांजनदेवदारुविश्वौषधैर्मूत्रयुतैःप्रलिंपेत् । पुनर्नवानागरसर्षपाणांकल्केनवाकांजिकमिश्रितेन ॥ श्लीपदमितिशेषः ।

अर्थ-सरसों, सहजनेकी छाल, देवदार, और सोंठ इनको गोमूत्रमें पीसके लेप करे अथवा सांटकी जड, सोंठ, सरसो, इनके कल्कमें कांजी मिलायके लेप करे तो श्लीपदरोग दूर हो ।

धत्तुरैरंडनिर्गुंडीवर्षाभूशिग्रुसर्षपैः ।
प्रलेपःश्लीपदंहंतिचिरोत्थमपिदारुणम् ॥

अर्थ-धतूरा, अंडकी जड, वंदाल, सहजना, और सरसों इनको जलमें पीस लेप करे तो बहुत दिनकीभी श्लीपदरोग दूर हो ।

गंधर्वतैलभृष्टांहरीतकींगोजलेनयःपिबति ।
श्लीपदबंधनमुक्तोभवत्यसौसप्तरात्रेण ॥

अर्थ-छोटी हरडको अंडीके तेलमें भूनकर चूर्ण कर गोमूत्रसें पीवे तो ७ रात्रमें श्लीपदरोग दूर हो ।

योगतरंगिण्यांवृद्धदारुकचूर्णपिप्पलाद्यंचूर्णम् ।
कृष्णाद्योमोदकःसुरेश्वरघृतंविडंगाद्यंतैलंप्रसिद्धं ॥

अर्थ-योगतरंगिणी ग्रंथमें वृद्धदारक चूर्ण, पिप्पल्यादि चूर्ण, कृष्णादिमोदक, सुरेश्वरघृत, और विडंगादि तैल प्रसिद्ध है वो श्लीपदरोगमें वर्त्तने चाहिये ।

धत्तूरकस्यबीजानिपिप्पलीवद्धमानवत् ।
शीतोदकेनपीतानिश्लीपदंकुष्ठनाशनम् ॥

अर्थ-वर्द्धमान पीपलके सदृश धतूरेके बीजोंको नित्य बढायके शीतल जलके साथ पीवे तो श्लीपदरोग और कोढ दूर हो ।

वर्षाभूत्रिफलाचूर्णंपिप्पलीसहयोजितम् ।
सक्षौद्रंविलिहेल्लेहंचिरोत्थंश्लीपदंजयेत् ॥

अर्थ-साँठकी जड, त्रिफलाका चूर्ण, इनमें पीपलका चूर्ण मिलाय सहतके साथ चाटे तो बहुत दिनोंका श्लीपदरोग दूर हो ।

इति श्लीपदचिकित्सा समाप्ता ।

अथ विद्राधिचाकित्सा ।

जलौकापातनंशस्तंसर्वस्मिन्नपिविद्रधौ । मृदुर्विरेकोलघ्वन्नं स्वेदःपित्तोत्तरंविना॥अपक्वेविद्रधौयुंज्याद्व्रणशोथवदौषधम् । वातघ्नमूलकल्कैस्तुवासातैलघृतान्वितैः ॥ सुखोष्णोबहुलो लेपःप्रयोज्योवातविद्रधौ ।

अर्थ-त्रिदोषकी विद्रधिमें जोखोंका लगाना उत्तम है । हलका जुलाब हलका अन्नभोजन पसीनोंका निकालना ये पित्तकी विद्रधिको त्याग सबमें करे । और कच्ची विद्रधिमें व्रणशोथके समान यत्न करे । वातविद्रधिमें वातहरण कर्त्ता जडोंके कल्क, वासा तैल, घृत, सुखोष्ण और बहुतसे लेप इत्यादि कर्म करे ।

यवगोधूममुद्गैश्चपिष्टैराज्येनलेपयेत् । विलीयतेक्षणेनैवह्य- विपक्वस्तुविद्रधिः ॥ पैत्तिकंविद्रधिंवैद्यःप्रदिह्यात्सर्पिषायुतैः । पयस्योशीरमधुकैश्चंदनैर्दुग्धपेषितैः ॥ पयस्याक्षीरकाकोली तदभावेऽश्वगंधाग्राह्या ।

अर्थ-जौं, गेहूं, मूंग, इनके चूनमें राई पीसके मिलावे और लेप करे तो कच्ची विद्रधि क्षणमात्रमें नष्ट होय । पित्तकी विद्रधिमें वैद्य क्षीरकाकोली, खस, महुआ,

और सपेदचंदन इनको दूधमें पीस घृत मिलाय गुना गुना लेप करे । क्षीरकाकोली न मिले तो उसके अभावमें असगंध लेनी चाहिये ।

विद्रध्योःकुशलःकुर्याद्रक्तागंतुनिमित्तयोः ।रक्तचन्दनमंजिष्ठानिशामधुकगैरिकैः ॥ क्षीरेणविद्रधौलेपोरक्तागंतुनिमित्तके । इष्टकासिकतालोहगोशकृत्तुषपांसुभिः ॥ मूत्रपिष्टैश्चसततंस्वेदयेच्छ्लेष्मविद्रधिम् ।

अर्थ–रक्तजविद्रधि और आगंतुज विद्रधिमें इनका जाननेवाला कुशलतापूर्वक कर्म करे । लाल चंदन, मजीठ, हलदी, महुआ और गेरू, इनको गोमूत्रमें पीस लेप करे तो रक्तजन्य और आगंतुज विद्रधि दूर हो । ईंट, वालु, लोह चूरा, गोवर, भूसा और धूल, इनको गोमूत्रमें पीस गरम गरम सुहाता सेक करे तो कफकी विद्रधि दूर हो ।

सौभांजनकनिर्यूहोहिंगुसैंधवसंयुतः ।
सहंतिविद्रधिंशीघ्रंप्रातःप्रातर्निषेवितः ॥

अर्थ–सहजनेकी जडके काढेमें हींग और सैंधानिमक मिलाय प्रातःकाल पीवे तो भीतरकी विद्रधि जाती रहे ।

शिग्रुमूलंजलेधौतंपिष्टंवस्त्रेणगालयेत् ।
तद्रसंमधुनापीत्वाहंतिचांतरविद्रधिम् ॥

अर्थ–सहजनेकी जडको जलमें धोय पीस रस छानले उसमें सहत मिलायके पीवे तो अंतरविद्रधि दूर हो ।

कासीससैंधवशिलाजतुहिंगुचूर्णमिश्रीकृतोवरुणवल्कलजःकषायः । अभ्यंतरोत्थितमपक्कमतिप्रमाणंनॄणामयंजयति विद्रधिमुग्रशोफम् ॥

अर्थ-कसीस, सेंधानिमक, शिलाजीत और हींगका चूरा, इनको वरनाकी छालके काढेमें मिलायके पीवे तो भीतरकी कच्ची विद्रधिको और विद्रधिकी सूजनको दूर करे ।

इति विद्रधिचिकित्सा समाप्ता ।

व्रणशोथव्रणचिकित्सा।

आदौविस्रावनंकुर्याद्द्वितीयमवसेचनम्। तृतीयमुपनाहंचच-
तुर्थीपाटनक्रिया॥ पंचमंशोधनंकुर्यात्षष्ठंरोपणमिष्यते। ए-
तेक्रमाव्रणस्योक्ताःसप्तमंवैकृतापहम्॥

अर्थ-प्रथम विस्रावन (जहांका तहां बैठारना) करे, दूसरे रुधिरका निकालना, तीसरे वफारादे, चतुर्थ पकावना, पंचम शोधनक्रम, छटे रोपण (भरना) कर्म, और सातवे व्रणकी यह क्रिया करे कि उसकी गूंथको देहके वर्णमें मिलाय देवे। ये व्रणकी सातक्रिया क्रमसे करे।

बीजपूरजटाहिंस्रादेवदारुमहौषधम्।
रास्नाग्निमंथोलेपोऽयंवातशोथविनाशनः॥

अर्थ-बिजोरा, जटामांसी हींसकी जड, देवदार, सोंठ, रास्ना, और अरनी इनको पीसके लेप करे तो वादीकी सूजन दूर हो।

मधुकंचंदनंदूर्वानलमूलंचपद्मकम्।
उशीरंवालकंपद्मंलेपोऽयंपित्तशोथहा॥

अर्थ-महुआ, चंदन, दूध, सरपतेकी जड, पद्माख, खस, नेत्रवाला, और कमल इनको जलमें पीस लेप करे तो पित्तकी सूजन दूर हो।

न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थप्लक्षवेतसवल्कलैः।ससर्पिष्कैःप्रलेपो-
ऽयंशोथेकफसमुद्भवे। आगंतुजेरक्तजेचलेपएषोऽतिपूजितः॥

अर्थ-बड, गूलर, पीपर, पाखर और बेत, इनकी छालको पीस घृत मिलाय लेप करे यह पित्तकी सूजन, आगंतुज, रक्तजन्य सूजन, इनपर अत्यंत गुणदायक है।

कृष्णापुराणपिण्याकंशिग्रुत्वक्सिकताशिवाः।
मूत्रपिष्टःसुखोष्णोऽयंप्रलेपःश्लेष्मशोथहा॥

अर्थ-पीपल, पुरानी खल, सहजनेकी छाल, रेत, और आमले, इनको गोमूत्रमें पीस गरम सुहाता सुहाता लेप करे तो कफकी सूजन दूर हो।

नरात्रौलेपनंदद्याद्दत्तंचपतितंतथा।
नचपर्युषितंशुष्यमाणंतत्रैवधारयेत्॥

अर्थ-रात्रिमें लेप नहीं करना, लेप करके फिर लेप न करे, जो लेप करा और वो जहां जहांसे गिर गया हो उसजगे फिर न देवे वासी लेप न करे । और सूखेहुए लेपपर फिर लेप न करे किंतु सूखेको झारेबी नहीं ।

रात्रावपिप्रलेपस्तुविधातव्योविचक्षणैः ।
अपाकिशोथेगंभीरेरक्तपित्तसमुद्भवे ॥

अर्थ-जो अपाक सूजनवाले और गंभीर तथा रक्तपित्तसैं होनेवाले व्रण है उनपर रात्रिमेंभी लेप चतुर वैद्य करे ।

शुष्यमाणमुपेक्षेतप्रदेहंपीडनंप्रति ।
नचापिसुखमालिंपेत्तेनदोषःप्रसिच्यते ॥

अर्थ-तहाँ व्रणको पकाकर फोडनेवाला लेप सुखजावे तब उसको धीरे धीरे दवावे कि वह फोडा फूटजाय । बिना फूटे फोडेके दोष (मवाद) नहीं निकलता और जबतक दोष न निकलेगा तबतक रोगीको सुख नही होता ।

सतिलासातसीबीजंदध्यम्लासक्तुपिंडिका ।
सकुष्ठःकिण्वलवणाशस्यास्यादुपनाहने ॥

अर्थ-तिल, अलसी, दही, खटाई, और सत्तूकी पिंडी, कुष्ठ, सुराबीज और निमक ये उपनाहनविधि (वफारेकी विधि)में उत्तम कहे है ।

एकतस्तुक्रियाःसर्वारक्तमोक्षणमेकतः ।
रक्तंहिवेदनामूलंतच्चेन्नास्तिनचापिरुक् ॥

अर्थ-एक तरफ तो सर्व क्रिया है और फस्त खोलना एक एक तरफ है कारण कि रुधिरही पीडाका कारण है यदि रुधिर न रहे तो पीडाभी नही रहती ।

विवर्णेकठिनेश्यावेव्रणेचात्यंतवेदने ।
सविषेचविशेषेणजलौकाभिःपदैरपि ॥

अर्थ-जिस व्रणका विवर्ण होगया हो, करडाहो, कालाहो, जिसमें अत्यंत पीडा होती हो, और उसमें कुछ विषका अंश हो उसको प्राय जोख लगायके अथवा फस्तसैं रुधिर निकलवाय डाले ।

शोथयोरुपनाहंतुदद्यादामविदग्धयोः ।
प्रशाम्यत्यविदग्धस्तुविदग्धःपाकमेतिच ॥

अर्थ-कच्ची और विदग्ध सूजनमें स्वेदनविधि करे कि अविदग्ध (कच्चा) शांत हो और विदग्ध (कुछ कुछ पका) पकजावे ।

पुनर्नवादारुशुंठीशिग्रुसिद्धार्थएवच । अम्लपिष्टःसुखोष्णो ऽयंप्रलेपादिविधानतः ॥ नप्रशाम्यतियःशोथप्रलेपादिविधानतः । द्रव्याणिपाचनीयानिदद्यात्तत्रोपनाहने । अन्यच्चोष्णद्रव्यंव्रणस्यपाचनंभवति ॥

अर्थ–साँठकी जड, देवदार, सोंठ, सहजनेकी छाल, और सरसों, इनको कांजीमें पीस वा नीबूके रसमें पीस कुछ गरम कर सुहाता सुहाता लेप करे। जो सूजन लेपआदि करनेसे शांति न हो उसपर पाचन द्रव्योंका काढा करके तरडा देवे तथा और जो गरम औषध है उनसे उपनाहन करे तो व्रण पचे।

अंतःपूयेष्ववक्त्रेषुतथैवोत्संगवत्स्वपि । गतिमत्सुचरोगेषुभेदनंसंप्रयुज्यते ॥ रोगेव्यधनसाध्येतुयथादेशप्रमाणतः । शस्त्रंविधायदोषांस्तुस्रावयेत्कथितंयथा ॥

अर्थ–जिन व्रणोंके भीतर राध है और मुखहुआ नही हो तथा फैलनेवाले और नाडीव्रणआदि रोगोंमें चीरा देना चाहिये। जो रोग चीरा देने योग्य है उनको यथा देशके अनुसार शस्त्रसे चीरा देकर उसके दोष (राधरुधिरआदिको) निकाले।

वालवृद्धासहक्षीणभीरूणांयोषितामपि ।
व्रणेषुमर्मजातेषुभेदनंद्रव्यलेपनम् ॥

अर्थ–अब कहते हैं कि जो बालक है, वृद्ध है, जो चीराको सह न सके, डरपोक है, स्त्री और जो फोडा मर्मस्थानमें हुआ उनके भेदनकर्ता औषधी लगावे, चीरा न देय।

चिरबिल्वोग्निकोदंतीचित्रकोहयमारकः। कपोतकंकगृध्राणां मलंलेपेनदारणम् ॥ हस्तिदंतोजलेपिष्टाविंदुमात्रप्रलेपतः। अत्यर्थकठिनेशोथेकथितोभेदनःपरः ॥

अर्थ–अब भेदन द्रव्योंको कहते हैं कंजा, वेल, भिलाए, दंती, चीता, कनेर, खबूतरकी वीठ, कंक (कुंजपक्षी) की बीठ, और गीधकी बीट, इनमेंसे किसीका लेप करे तो फोडा फूट राध निकल जावे। अथवा हाथी दांतको जलमें पीस इसकी बूंद फोडेपर धरे तो कठिन सूजनवालाभी फोडा तत्काल फूट जावे।

पूयगर्भाननुद्वारान्व्रणान्मर्मगतानपि ।
यथोक्तैःपीडनद्रव्यैःसमंतात्परिपीडयेत ॥

अर्थ-जिन फोडोंके भीतर राध भरी हुई हो और जो मर्मगत व्रण हो उनको पीडन द्रव्य चारों तरफ लगायके पीडन करे । अर्थात् दावे कि जिससे सब मल बाहर निकल जावे ।

यवगोधूममाषाणांचूर्णानिचसमांशतः ।
शुष्यमाणमुपेक्षेतप्रलेपंपीडनंप्रति ॥

अर्थ-जों गेंहूं और उडद इनके चूनको जलमें सानके फोडेके मुखको बचाय कर लेप करदेवे और सूखनेपरभी इसको लगा रहने देवे ।

व्रणस्यत्वविशुद्धस्यक्काथःशुद्धिकरःपरः । पटोलनिंबपत्रो-
त्थःसर्वत्रैवप्रयुज्यते ॥ पंचमूलद्वयंवातेन्यग्रोधादिश्चपैत्तिके ।
आरग्वधादिकोयोज्यःकफजेसर्वकर्मसु ॥

अर्थ-जो व्रण भीतरसे अशुद्ध रह गया है उसको काढा शुद्धि करता है । पटोलपत्र और नीमके पत्तोंका काढा सर्व व्रणोंको शुद्ध करे है, दोनों पंचमूलका काढा वादीके व्रणोंको, न्यग्रोधादि काढा पित्तके व्रणोंको और आरग्वधादि काढा कफके व्रणोंको शुद्ध करेहै ।

तिलसैंधवयष्टचाह्वनिम्बपत्रनिशायुगैः । त्रिवृद्धनयुतैःपिष्टैः
प्रलेपोव्रणशोधनः ॥ निंबपत्रोद्भवोलेपोव्रणशोधनरोपणः ॥
पक्काम्लिकाभवैर्बीजैर्लेपःशोधनरोपणः ॥ दाहपीडास्रकंडूति-
हरःप्रत्ययकारकः । निंबपत्रोद्भवोलेपःसपटुव्रणशोधनः ॥

अर्थ-तिल, सैंधानिमक, मुलहटी, नीमके पत्ते, हलदी, दारुहलदी, निसोथ, और नागरमोथा, इनको पीसके लेप करे तो ये व्रणको शुद्ध करे । अथवा नीमके पत्तोंको पीसके लेप करे तो व्रणका शोधन और रोपण हो । पकी इमलीके बीजोंको पीस लेप करे तो शोधन रोपण हो और दाह, पीडा, रुधिर, तथा खुजलीको हरण करे और परचा दिखानेवाला है । अथवा नीमके पत्तेन्में निमक मिलायके लेप करे तो व्रणका शोधन रोपण होवे ।

व्रणान्विशोधयेद्वर्त्यासूक्ष्मास्यान्सन्धिमर्मगान् । अपेतपूत-
मांसानांमांसस्थानामरोहताम् ॥ कल्कस्तुरोपणेदेयास्तिलजो
मधुसंयुतः ।

अर्थ–जो व्रण संधि और मर्मगत है तथा जिनका मुख छोटा है उनको बत्ती बनाय व्रणके भीतर प्रवेश करके शुद्ध करे । अब व्रणका रोपण कहते हैं जिनका सडा हुआ मांस निकल गया हो और मांसवाले व्रण भरते न हो उनको तिलके कल्कमें सहत मिलायके तरडा देवे तो व्रण भरजावे ।

रालादिमलहरः (मल्हम)

कटुतैलसमंनीरंपाणिभ्यांमर्दयेद्दृढम् । पंचशुक्तिमितंतस्मिन्रालचूर्णंचनिक्षिपेत् ॥ खादिरंपलमानंचकंकुष्ठंचपलार्द्धकम् । क्षित्वासम्यग्विनिर्मथ्यस्थाप्योमलहरःपरः ॥ शोधनोरोपणोसर्वव्रणानांनास्त्यतःपरम् ।

अर्थ–कडुए तेलके बराबर पानी डालके कांसेकी थालीमें हथेलीसे खूब रगडे, फिर इसमें १० तोले रालका चूर्ण डाले, ४ तोले कत्था, २ तोले मुरदा, शंख, डालके फिर मथन करे फिर इसको किसी उत्तम पात्रमें भरके धररक्खे, इसको रालादिमल्हम कहते हैं व्रणोंके शोधन और रोपण करनेमें इसके बराबर दूसरी औषध नही है ।

प्रियंगुधातकीपुष्पयष्टीमधुजतूनिच । सूक्ष्मचूर्णीकृतानिस्यू रोपणान्यवधूलनात् ॥ यवचूर्णसमधुकंसतैलंसहसर्पिषा । दद्यादालेपनंकोष्णंदाहशूलोपशांतये ॥

अर्थ–फूल प्रियंगु, धायके फूल, मुलहटी, सहत, और लाख इन्होंका बारीक चूर्ण कर व्रणमें लगावे तो व्रण भर आवे । जोंका चून और मुलहटीका चूर्ण इनको तेल और घीमें मिलाय गरम गरम लेप करे तो फोडेका दाह और शूल शांति हो ।

अर्कमूलंरसोवंगंतालष्टंकामितःपृथक् शरावसंपुटस्थस्यरजसोऽस्यसमाचरेत् ॥ धूपोनलिकयाशुद्धोव्रणोभवतिसर्वथा ॥

अर्थ–आककी जड, पारा, जस्तभस्म, हरताल, प्रत्येक आठ आठ टंक लेय, सबको सरावसंपुटमें धर भस्म करे, इस भस्ममें गंधक मिलाय व्रणको नलीके छिद्रद्वारा धूनी देय तो व्रण शुद्ध होय ।

रंगकंकुष्ठकांपिल्लसमंसर्पिर्विमिश्रितम् ।
नाडीव्रणादौलेपोऽयंयुक्त्यातिविगुणप्रदः ॥

अर्थ–जस्त, मुरदाशंख, और कवीला, इनको पीस, घी मिलाय नाडीव्रण (नासूर) आदिमें युक्तिसें लेप करे तो अत्यन्त गुणदायक हो।

मस्तकीटंकणंतद्वद्दाडिमस्यत्वचातथा। व्रणंशुष्कंकरोत्येतच्छ्रेष्ठमस्यावधूलनम्॥ चूर्णकंकुष्ठकंपिल्लरजसश्चावधूलनम्।

अर्थ–मस्तंगी, सुहागा, और अनारकी छाल, इने पीस घावमें भरे तो घाव सूखजावे। यह अवधूलन श्रेष्ठ है। चूना, मुरदाशंख, और कवीला इनका चूर्ण कर घावमें भरे।

तुत्थटंकणकंपिल्लकंकुष्ठंरंगनागजम्।
मरिचंसर्पिषाचूर्णकंडूव्रणनिषूदनम्॥

अर्थ–लीलाथोथा, सुहागा, कवीला, मुरदासंग, पारा, गंधक, सीसेकी भस्म, और काली मिरच, इनको पीस, घीमें मिलाय लगावे तो व्रण अच्छा होय।

मस्तकीटंकणेनपूर्ववद्व्रणमवधूलयेच्छुष्कंभवति।

अर्थ–मस्तंगी और सुहागेको व्रणमें भरे तो व्रण सूखजावे।

रसगंधकयोश्चूर्णंतत्समंमूर्दशंखकम्। सर्वतुल्यंतुकंपिल्लंकिंचित्तुत्थसमन्वितम्॥ सर्वंसंमेलयेत्सम्यग्घृतमेतच्चतुर्गुणम्। पिचुप्लुतंप्रदातव्यंदुष्टव्रणविशोधनम्॥ नाडीव्रणहरश्चैवतथादुष्टव्रणानपि।

अर्थ–पारा, गंधक, इनके चूर्णमें बराबरका मुरदाशंख मिलावे, और सबकी बराबर कवीला और थोडासा लीलाथोथा मिलावे, सबको एकत्र बारीक पीस इसमें चौगुना घी मिलाय ले फिर इसमें रुईका फोहा बोडके घावके ऊपर धरे तो दुष्टव्रण शुद्ध हो। नाडीव्रण(नासूर) को, तथा और प्रकारके सब व्रणोंको दूर करे।

स्वर्जिकाचयवक्षारःकंपिल्लंचामिहंदिका। टंकणंश्वेतखदिरंतुत्थंसंचूर्ण्यगोघृतैः॥ मर्दयेत्प्रहरद्वंद्वंव्रणशोधनरोपणम्। अथवाबहुधाशरीरेबहुस्थलेषुपुनः पुनःजायमानानांव्रणानांशोधनंचिकित्साच॥

अर्थ–सज्जी, जवाखार, कवीला, मेंहदी, सुहागा, सुपेद कत्था, और लीलाथोथा, इनको बारीक पीस गौके घीमें मिलाय दोप्रहर कांसेकी थालीमें खूब

रगडे फिर किसीपात्रमें भरकर धर रक्खे, इसे लगावे तो घाव तत्काल शुद्ध होकर भर जावे। अब शरीरमें बहुतसे फोडा जगे जगे होगएहो उनका शोधन और चिकित्सा कहते हैं।

विडंगादिगुग्गुलुः।

विडंगत्रिफलाव्योषचूर्णगुग्गुलुनासमम्। सर्पिषावाटिकाकृत्वाखादेद्धाहितभोजनम्॥दुष्टव्रणापचीमेहकुष्ठनाडीविशोधनम्।

अर्थ–वायविडंग, त्रिफला, त्रिकुटा, इनका चूर्ण करे और इसचूर्णकी बराबर गूगल मिलावे, सबको कूट पीस घीसैं बेरकी बराबर गोली बनावे, १ गोली नित्य खाय उपरसैं हित भोजन करे तो दुष्टव्रण, अपची, प्रमेह, कोढ, और नासूरका घाव इनको यह दूर करे।

अमृतादिगुग्गुलुः।

अमृतापटोलमूलंत्रिकटुत्रिफलाक्रिमिघ्नानाम्। समभागानां चूर्णंकृत्वातत्तुल्यगुग्गुलुर्योज्यः॥ प्रतिवासरमेकैकांगुटिकांखादेत्तथाक्षपरिमाणम्। जेतुंव्रणवातासृग्गुल्मोदरपांडुशोथादीन्॥

अर्थ–गिलोय, पटोलपत्र, पीपरामूल, त्रिकुटा, त्रिफला, और वायविडंग ये समान भाग लेवे, और सबकी बराबर शुद्ध गूगल ले, सबको कूट पीस घीसैं गोली बनावे। नित्य गोली १ तोलेके प्रमाण खाय तो घाव, वातरक्त, गोला, उदररोग, पांडुरोग, और सूजन आदि रोगोंको दूर करे।

जात्यादिघृतम्।

जातीनिंबपटोलपत्रकटुकादार्वीनिशासारिवामांजिष्ठाभयासिक्थतुत्थमधुकैर्नक्ताह्वबीजैःसमैः। सर्पिःसिद्धमनेनसूक्ष्मवदनाममर्माश्रिताःस्राविणोगंभीराः सरुजोव्रणाःसगतिकाःशुध्यंति रोहंतिच॥ जातीनिंबपटोलपत्रस्वरसस्तैलाक्तसंसर्पिषश्चतुर्गुणोदेयःकटुकादीनांकल्कइतिविवेकः।

अर्थ–चमेलीके पत्ते, नीमके पत्ते, पटोलपत्र, इनका स्वरस, तथा कुटकी, दारुहलदी, हलदी, सारिवन, मजीठ, हरड, मोम लीलाथोथा, सहत, कंजाके बीज, सब समान ले इन औषधोंके स्वरस और काढेसैं घीको सिद्ध करे, इस

घीके लगानेसें छोटे मुखके, मर्माश्रितव्रण और स्रावबाले, गंभीर, पीडावाले, और फैलनेवाले व्रण शुद्ध हो और भरे । इस घृतमें कुटकी आदिका कल्क चौगुना डालना चाहिये ।

करंजारिष्टनिर्गुंडीलेपोहन्याद्व्रणकृमीन् ।
लशुनस्याथवालेपोहिंगुनिंबकृतोथवा ॥

अर्थ-कंजा, नीमकी छाल, सह्मालू, इनको पीस लेप करे तो व्रणके कीडे दूर हो । अथवा लहसनको पीसके लेप करे, अथवा हिंग और नीमका लेप करे तो व्रणकी कृमी दूर हो ।

व्रणे भोजनम् ।

जीर्णशाल्योदनंस्निग्धमल्पमुष्णद्रवोत्तरम् । भुंजानोजांगलैर्मांसैःशीघ्रंव्रणमपोहति ॥ तंदुलीयंचवास्तूकजीवंतीसुनिषण्णकैः । बालमूलकवार्त्ताकपटोलैःकारवेल्लकैः ॥

अर्थ-पुराने शाली चावल, चिकना थोडा गरम और पतला तथा जंगलके जीवोंका मांस, इन वस्तुओंका सेवन करे तो घाव जल्दी भरजावे । चौलाईका साग, वथुआ, जीवंती (डोडी) का साग, सिरवाली, कच्ची मूली, बेंगन परवल और करेले ये वस्तु व्रणरोगीको सेवन करनी चाहिये ।

अम्लंदधिचशाकंचमांसमानूपमौदकम् ।
क्षीरंगुरूणिसर्वाणिव्रणिनःपरिवर्जयेत् ॥

अर्थ-खटाई, दही, सागमात्र, अनूपदेशके जीवोंका और जलसंचारी जीवोंका मांस, दूध और भारी पदार्थ, इन सर्व वस्तुओंको व्रणरोगी त्याग देवे ।

व्रणेश्वयथुरायासात्सचरागश्चजागरात् ।
तौचरुक्चदिवास्वापात्ताश्चमृत्युश्चमैथुनात् ॥

अर्थ-घावमें परिश्रम करनेसे सूजन होती है रात्रिमें जागनेसें सूजन और लाल रंग होता है दिनमें सोनेसें सूजन लाली और पीडा होती है और व्रणरोगमें मैथुन करे तो मृत्यु हो ।

इति व्रणशोथव्रणचिकित्सा समाप्ता ।

सद्योव्रणचिकित्सा।

बुद्ध्यागंतुव्रणेवैद्योघृतक्षौद्रसमन्विताम्।
शीतांक्रियांचरेदाशुरक्तपित्तोष्मनाशिनीम्॥

अर्थ–आगंतुव्रण (जो तलवार तीर छुरी आदिसे हुआहो उस) को वैद्य घृत सहत मिलायके लेप करे तथा सर्व शीतल क्रिया तथा पित्तकी गरमी दूर करनेवाली क्रिया शीघ्र करे।

क्रुद्धेसद्योव्रणेयुंज्यादूर्द्ध्वंचाधश्चशोधनम्।
लंघनंचबलंज्ञात्वाभोजनंचास्रमोक्षणम्॥

अर्थ–सद्यव्रण (घिसगया) या फटगया हो उसमें ऊपर नीचे शोधन करे और बलाबल जानके लंघन करना, भोजन देना, रुधिरका निकालना करे।

घृष्टेविदलितेचैवसुतरामिष्यतेविधिः। तयोरल्पंस्रवत्यस्रंपाकस्तेनाशुजायते॥ छिन्नेभिन्नेतथाविद्धेक्षतेवास्रगतिस्रवेत्। रक्तक्षयात्तत्ररुजःकरोतिपवनोभृशम्॥

अर्थ–यह घिसेहुएमें और फटेहुए घावमें विधि कही है। और जिन फटे घिसेहुए घावोंसे रुधिर थोडा निकले उसका पाक तत्काल होवे। जो स्थान छिन्न भिन्न विद्ध और घाव हो गया हो उस मार्गसे रुधिर निकलता है। जब रुधिर निकलकर क्षय हो जाता है तब उस जगे पवन प्रवेश होकर निरंतर पीडा करती है।

स्नेहपानपरीषेकलेपस्वेदोपनाहनम्। कुर्वीतस्नेहबस्तिंचमारुतघ्नौषधैःसृतैः॥ खड्गादिच्छिन्नगात्रस्यतत्कालंपरितोव्रणः॥ गांगेरुकीमूलरसैःसद्यःस्याद्गतवेदनः॥ पट्टसूत्रेणसंसीव्यनिवातभवनेस्थितः। क्लिन्नायावाजिमूत्रेणखरमूत्रेणवाशनैः॥ लोविकांस्वेदयित्वातुसामितायांकवोष्णया। तथासंस्वेदयेत्सद्योव्रणंव्रणविशारदः॥ मुहुर्मुहुर्यथादुःखंनप्राप्नोतिव्रणीनरः।

अर्थ–अतएव स्नेहपान तरडा लेप स्वेद उपनाहनविधि तथा वादीके नाश कर्त्ता औषधोंके काढेसे स्नेहवस्ती करे। तलवारआदिसे कटे हुए अंगको चारों तरफसे सींकर खरेटीकी जडके रसका लेप करे तो तत्काल पीडा दूर हो। जब घावको

सींए तब रेसमी डोरिसैं जहां हवा न हो तहां सींए । और उस डोरिको घोडेके मूत्रमें अथवा गधेके मूत्रमें भिगोकर धीरे धीरे सीवे फिर मेंदाकी लोईको कुछ गरम करके उसको सेके । तथा व्रणका जाननेवाला सद्यव्रणको संस्वेदन करे । और व्रणको वारंवार सेकता रहे कि जिस्सैं व्रणवाला दुःख न पावे ।

अथवादीप्यलवणंपोटल्यास्वेदयेन्मुहुः । संततयाततलोह-
पात्रसंयोगतःक्रमात् ॥ दुष्टंरक्तंस्थितंवापिशृंग्यलाम्ब्वादिभि-
र्हरेत् । सद्यःक्षतंव्रणंवैद्यःसशूलंपरिषेचयेत् । यष्टीमधुकमि-
श्रेणनातिशीतेनसर्पिषा । कषायमधुराःशीताःक्रियाःसर्वा-
स्तुयोजयेत् ॥

अर्थ—अथवा अजमायन और नोनकी पोटली बना लोहेके तवेपर गरम कर सुहाता सुहाता स्वेदन और सेक करे । यदि दुष्ट रुधिर घावमें इकट्ठा होरहा हो तो उसको सिंगी और तूंबी आदिसैं निकलवावे । सद्य व्रणमें वैद्य मुलहटी और महुआ घी मिले शीतल जलसैं सेचन करे तो शूल दूर हो । एवं जो काढे मधुर है और जितनी शीतल क्रिया है वो सब सद्यव्रणमें वैद्यको करनी चाहिये ।

सद्योव्रणानांसप्ताहात्पश्चात्पूर्वोक्तमाचरेत् ।
चिकित्सितंतुतत्सर्वंसामान्यव्रणनाशनम् ॥

अर्थ—सद्योव्रणोंका सात दिनके वाद पूर्वोक्त मधुर शीतल कषाय आदिसैं यत्न करै । और जो सामान्य व्रणके यत्न लिखे है वो सब सद्य व्रणमें करे ।

आमाशयस्थेरुधिरेविदध्याद्वमनंनरः ।
पक्काशयस्थेकार्यंचविरेचनमसंशयम् ॥

अर्थ—यदि चोटका रुधिर आमाशयमें चलाजाय तो वमनद्वारा निकाल दे । और वही रुधिर पक्काशयमें स्थित होवे तो जुल्लाव देवे ।

क्काथोवंशत्वगेरंडश्वदंष्ट्राश्मभिदाकृतः ।
हिंगुसैंधवसंयुक्तःकोष्ठस्थंस्रावयेदसृक् ॥

अर्थ—वांसकी छाल, अंडकी जड, गोखरु, और पाखानभेद, इनका काढा कर हींग और सेंधानिमक मिलायके पीवे तो कोठेमें स्थित रुधिरको निकाल देवे ।

यवकोलकुलत्थानांनिस्नेहेनरसेनच ।
भुंजीतान्नंयवागूंवापिबेत्सैंधवसंयुताम् ॥

अर्थ–यव, वेर, और कुलथी, इनका रस विना चिकनाईके अथवा विना रसईके अन्न वा सैंधानिमक डालके यवागू पीवे ।

शस्त्रक्षतेदशनचर्वितवाणपुंखामूलोद्भवंसुविनिधीतरसंप्रयत्नात् । तस्मिन्पुरीषमथवामहिषीसुतस्यप्राङ्गनिःसृतंमसृणचूर्णितमाशुदद्यात् ॥

अर्थ–शस्त्रक्षतमें सरफोकेकी जडको दांतोंसें चवाय उसका जो रस निकले उसको लगावे, अथवा इसी सरफोकाके रसमें भैंसे तत्काल हुए भैंसके बच्चेका गोवरका चूर्ण करके मिलाय घावमें लगावे, तो शस्त्रव्रण तत्काल अच्छा होजाय ।

इति सद्योव्रणचिकित्सा समाप्ता ।

अथाग्निदग्धचिकित्सा ।

प्लुष्टस्याग्निप्रतपनंकार्यमुष्णंतथौषधम् । शीतमुष्णंचदुर्दग्धे क्रियांकुर्यात्ततःपुनः ॥ घृतालेपप्रसेकांस्तुशीतानेवास्यकारयेत् । सम्यग्दग्धेतुगोक्षीरीप्लक्षचंदनगैरिकैः ॥ सामृतैःसर्पिषायुक्तैरालेपंकारयेद्भिषक् ।

अर्थ–तहां किंचिन्मात्र जलेहुए मनुष्यको अग्निसें तपावे, और गरम औषधी लगावे, दुर्दग्ध पुरुषके शीतल और गरम क्रिया करनी चाहिये । तथा घृत, लेप, और तरडे आदि शीतलही करे । जो उत्तम दग्ध है उसपर वंशलोचन, पाखर, चंदन, गेरू, और गिलोय इनको कूट पीस घी मिलायके लेप करे तो अच्छा होय ।

व्रणंगुडूचीपत्रैर्वाछादयेदथवोदकैः । मधूच्छिष्टंसमधुकंलोध्रं सर्जरसंतथा ॥ मंजिष्ठाचंदनंमूर्वापिष्ट्वासर्पिर्विपाचयेत् । सर्वेषामग्निदग्धानामेतद्रोपणमुत्तमम् ॥

अर्थ–[दग्ध मनुष्यको गामके जीव, जलसमीप, और जलसंचारी जीवोंके मांससें तथा पिष्टपदार्थोंसें लेप करे, तथा अतिदग्धमें विखरेहुए मांसको निकालकर शीतल क्रिया करे फिर शाली चावलोंकी किनकी और तंदुके काटमें घी मिलायके लेप करे । अग्निसें जलेहुएके घावको गिलोयके पत्तेसें ढके अथवा कमल आदिके पत्तेसें ढके ।] मोम, महुआ, लोध, राल, मजीठ, चंदन, और मूर्वा इनको पीसके घीमें पचावे फिर इस घीको जलेहुए मात्रोंके लेप करे तो घाव भरजावे

* इति सिक्थकादिघृतम् * ।

सुधांपुरातनींदग्ध्वावारिणापरिपेषिता ।
लेपनंतैलदग्धस्यविस्फोटव्याधिनाशनम् ॥

अर्थ–पुरानी चूनेकी गचको आंचमें जलाय जलमें पीसे तेलसें जलेहुएके लगावे तो तेलके फफोले बैठजावे ।

तिलतैलेयवान्दग्ध्वाएतल्लेपेननिश्चितम् ।
अग्निदग्धाव्रणारोहंयांतिदुःखंप्रशाम्यति ॥

अर्थ–तिलके तेलमें जवोंको जलाय उनको पीस लेप करे तो अग्निसें पडेहुए छाले शीघ्र भरजावे, और दुःख जाता रहे ।

जीरकपक्कंपश्चात्सिक्थसर्जरसमिश्रितंहराति ।
घृतमभ्यंगात्पावकदग्धजदुःखंक्षणार्द्धेन ॥

अर्थ–जीरेको भून उसमें मोम, राल, और घी मिलाय मालिस करे तो अग्निदग्धका दुःख क्षणमात्रमें दूर हो ।

वातोस्रमस्रुतंदुष्टंसंशोष्यग्रंथितंव्रणम् ।
कुर्यात्सदाहंकंडूाढ्यंव्रणग्रंथिस्तुसस्मृतः ॥

अर्थ–वादी घावमेंसें दुष्ट रुधिरको विना निकाले उसी जगे सुखाय गाँठदार (गूंथ) को प्रगट करे उसमें दाह खुजली हो उसे व्रणग्रंथी कहते हैं ।

कंपिल्लकंविडंगानित्वचंदार्व्यास्तथैवच ।
पिष्ट्वातैलंपचेत्तत्तुव्रणग्रंथिहरंपरम् ॥

अर्थ–कवीला, वायविडंग, तज, दारुहलदी, इनको पीस तेलमें डालके पचावे, जब सिद्ध होजावे तब लगावे तो व्रणकी गूंथका चिह्न जाता रहे । त्वचाके वर्णमें वर्ण मिलजावे ।

इति अग्निदग्धचिकित्सा समाप्ता ।

अथ भग्नचिकित्सा ।

भग्नानुपालयेद्धीमान्सेकालेपनबंधनैः ।
शीतलैरेवविविधैःप्रयोगैश्चसमीरितैः ॥

अर्थ-भग्न (जिसकी हड्डी आदि टूटगई हो) उसको बुद्धिमान् वैद्य सेक लेपन और बंधन तथा शीतल अनेक प्रकारके प्रयोगोंसे रक्षा करे।

तत्रातिशिथिलेबंधेसंधिस्थैर्यंनजायते । गाढेनापित्वगादीनां शोथोरुक्पाकएवच ॥ तस्मात्साधारणंबंधंभग्नेशंसंतितद्विदः॥

अर्थ-तहां अत्यंत शिथिल (ढीले) बंधनसें संधीकी स्थिरता ठीक नहीं हो तथा बहुत करडा बंधन (पट्टीआदि) बांधनेसें त्वचा आदिका सूजना पीडा और पाक होता है। अतएव साधारण (न बहुत ढीला और न बहुत करडा) बंधन टूटेहुएपर बांधना उत्तम है।

आदौभग्नंविदित्वातुसेचयेच्छीतलांबुना॥ पंकेनालेपनंकार्यंबंधनंचकुशान्वितम्।भग्नेलेपायमंजिष्ठामधुकंचाम्बुपेषितम्। शतधौतघृतोन्मिश्रंशालिपिष्टंचलेपनम्। सघृतंचास्थिसंहारंलाक्षागोधूममर्जुनम् ॥ सन्धिभग्नेऽस्थिभग्नेचपिबेत्क्षीरेणवापुनः ॥

अर्थ-प्रथम टूटेहुए स्थानको जानके शीतल जलसें सेचन करे फिर कीचका लेप करे और कुशायुक्त बंधन बांधे। टूटेहुए स्थानमें मंजीठ, महुआ, इनको जलमें पीसके लेप करे। अथवा सौंवार धुलेहुए घृतमें शाली चावलोंका चून मिलायके लेप करे अथवा वेर पीपलकी लाख गेंहू और कोहकी छालके चूर्णको और घृत इनको दूधमें मिलायके पीवे तो संधिभग्न (संधी हटगई हो) और हड्डी टूटगई हो इनको अच्छा करे।

लाक्षास्थिसंहृत्ककुभाश्वगंधाचूर्णीकृतानागबलापुरश्च।
संभग्नमुक्तास्थिरुजंनिहन्यादंगानिकुर्यात्कुलिशोपमानि॥

अर्थ-लाख, हडसंकरी, कोहकी छाल, असगंध, खरेटी, और गूगल, इनको महीन पीस एक जीव करे। इसके सेवन करनेसें टूटी हड्डी तथा स्थानसें हटी हुई हड्डीकी पीडा दूर करे और अंग वज्रके समान हो।

ईषद्विदग्धोगोधूमचूर्णपीतंसमाक्षिकम्।
कटिसंधिषुभग्नेषुभग्नेष्वस्थिषुपूजितम्॥

अर्थ-गेंहुओंको ठीकरेमें अधजले करके पीस डाले तोलेभर सहतमें मिलायके चाटे तो कमर, संधि, इनकी टूटीहुई हड्डी जुडे।

धात्रीमेदातिलैर्लेपःपिष्टैरम्बुभिरेवच ।
अस्थिभग्नेसंधिभग्नेघृताक्तोऽतिप्रपूजितः ॥

अर्थ-आमले, मेदालकडी, तिल, इनको जलमें पीस घृत मिलायके लेप करे तो अस्थिभग्न, और संधिभग्न, अच्छे हों ।

नृमधुसमुत्थंबोल्लंलीढंक्षौद्रेणमात्रयाबुद्ध्या ।
अस्थिस्नायुशिरासंध्याशयभग्नानिसंधयति ॥

अर्थ-मनुष्यके मांसकी मिमाई, और बीजाबोल इनको अनुमानमाफिक लेकर सहतसें चाटे तो हड्डी, स्नायु, शिरा, संधी, आशय, ये टूटेहुये जुडे ।

मांसंमांसरसंक्षीरंसर्पिर्यूषःकलायजः ।
बृंहणंचान्नपानंचदेयंभग्नायजानता ॥

अर्थ-चोटलगेहुये मनुष्यको मांसका सोरुआ मांस दूध घृत मटरका यूष और जो पुष्टाई करनेवाले अन्नपान है उसके बुद्धिमान् वैद्य देवे ।

लवणंकटुकंक्षारंसाम्लंमैथुनमातपम् ।
व्यायामंचनसेवेतभग्नोरूक्षान्नमेवच ॥

अर्थ-निमक, कडवी, खारी, खटाई, मैथुन, धूप, दंडकसरत, रूखाअन्न, इतनी वस्तुओंको भग्नरोगी सेवन न करे ।

बालानांतरुणानांचभग्नान्याशुभवंतिवै ।
शाम्यंतिनतुवृद्धानामुग्राणांचविशेषतः ॥

अर्थ-बालक, तरुण, इनकी टूटीहुई हड्डीआदि शीघ्र अच्छी होजाती है । और वृद्ध है तथा उग्र स्वभावके है उनकी हड्डीआदि जुडना कठिन है ।

नाडीनांगतिमन्विष्यशस्त्रेणोत्कृत्यकर्मवित् ।
सर्वंव्रणक्रमंकुर्याच्छोधनारोपणादिकम् ॥

अर्थ-अब नाडीव्रण (नासूर) की चिकित्सा कहते हैं-तहां वैद्य नाडीन्की गतिको जानकर शस्त्रसें चीरा दे, राध निकाल सर्व शोधन रोपणादि कर्म व्रणके सदृश करे ।

स्नुह्यर्कदुग्धदार्वीभिर्वर्तिंकृत्वाप्रपूरयेत् ।
एषसर्वशरीरस्थांनाडींहन्यात्प्रयोगराट् ॥

अर्थ-थूहरका दूध, आकका दूध, और दारुहल्दी, इनकी वत्ती बनाय नासूरके घावमें भर देवे तो यह प्रयोगराट् सर्व शरीरके नाडीव्रणोंको अर्थात् नासूरोंको दूर करे ।

आरग्वधनिशाकालाचूर्णाज्यक्षौद्रसंयुता ।

सूत्रवर्त्तिर्व्रणेयोज्याशोधनीगतिनाशिनी ॥

अर्थ–अमलतास, हलदी, मजीठ, इनके चूर्णमें घृत सहत मिलाय बत्ती बनावे, इसको नाडीव्रणके भीतर भरे तो शोधन रोपण करे।

नाडयाःशस्त्रेणवदनंबृहत्कृत्वाप्रवेशयेत्। कुशलोबास्तिविधिनातैलंजात्यादिसाधितम् ॥ एवमन्यच्चयत्तैलंघृतंवास्वरसंतथा। नाडयाअभ्यंतरेवैद्योलघुहस्तंप्रवेशयेत् ॥

अर्थ–नाडीव्रणका मुख शस्त्रसें बडा करके बत्ती प्रवेश करनी चाहिये। तथा कुशल वैद्य, बस्तीविधि करके जात्यादि तैल, तथा अन्य तैल घृत और स्वरसोंको नाडीव्रणके भीतर हलके हाथसें भरे तो अच्छा होय।

सप्तांगो गुग्गुलुः।

गुग्गुलुत्रिफलाव्योषैःसमांशैराज्ययोजिताम्। अक्षप्रमाणां गुटिकांखादेच्छीतांबुनानरः ॥ नाडीदुष्टव्रणंशूलमुदावर्त्तंभगंदरम्। गुल्मंचगुदजान्हन्यात्पक्षिराट्पन्नगानिव ॥

अर्थ–गूगल, त्रिफला, त्रिकुटा, इनको समान भाग ले चूर्ण कर घृतसें तोलेभरकी गोली बनावे, एक गोली शीतल जलसें लेय तो नाडीव्रण, दुष्टव्रण, शूल, उदावर्त्त, भगंदर, गोला, गुदाके रोग, इन सबको यह सप्तांगगूगल दूर करे।

इति भग्नरोगचिकित्सा समाप्ता।

अथ भगन्दरचिकित्सा।

अथास्यापिडकानेवतथायत्नादुपाचरेत्।
शुद्धयस्रस्रुतिसेकाद्यैर्यथापाकंनगच्छति ॥

अर्थ–भगंदरकी फुंसीन्का वैद्य यत्नसें उपचार करे। जैसे ये भगंदरकी फुंसी पके नहीं ऐसी रुधिरका निकालना औषधोंके जलका तरडा देना आदि चिकित्सा करनी चाहिये।

वटपत्रेष्टिकाशुंठीगुडूच्यःसपुनर्नवाः।
सुपिष्टाःपिडकावस्थेलेपःशस्तोभगंदरे ॥

अर्थ—वरके कोमल पत्ते, मुलहटी, सोंठ, गिलोय, सांठकी जड, इनको महीन पीस गरम कर सुहाता सुहाता लेप करे तो भगंदरकी पिडिका शांति हो ।

पयःपिष्टैस्तिलारिष्टमधुकैःशीतलैःकृतः ।
लेपोभगंदरेशस्तःपैत्तिकेवेदनावति ॥

अर्थ—तिल, निमकी छाल, और महुआ इनको दूधमें पीस शीतलही लेप करे तो पीडावाला पित्तका भगंदर तत्काल अच्छा होय ।

सुमनावटपत्त्राणिगुडूचीविश्वभेषजम् ।
सैंधवंतक्रसंपिष्टंलेपाद्धंतिभगंदरम् ॥

अर्थ—चमेलीके पत्ते, वडके पत्ते, गिलोय, सोंठ, और सेंधानिमक इनको छाछसें पीसके लेप करे तो भगंदर दूर हो ।

रसांजनंहरिद्रेद्वेमंजिष्ठानिंवपल्लवाः ।
त्रिवृत्तेजोवतीकल्कोनाडीव्रणरुजापहः ।

अर्थ—रसोत, हलदी, दारुहलदी, मजीठ, नीमके पत्ते, निसोथ, और मालकांगनी, इनका कल्क कर धोवे तो नाडीव्रणकी पीडाको और भगंदरको दूर करे ।

खररुधिरसमेतंभूलतायाःशरीरंदृषदिसहितमस्थासारमेयस्य पिष्टम् । भवतिसमुपलेपादाशुभागंदराणामपिविषमतराणा-मापदांनाशहेतुः ॥

अर्थ—केंचुआ, और कुत्तेकी हड्डी, इनको गधेके रुधिरसें पत्थरपर पीस भगंदर-पर लेप करे तो सर्व प्रकारकी पीडा जाय ।

त्रिफलारससंयुक्तंबिडालास्थिप्रलेपनम् ।
भगंदरंहरत्याशुदुष्टव्रणहरंपरम् ॥

अर्थ—त्रिफलाके रसमें बिल्लीकी हड्डीको पीस लेप करे तो भगंदरका दुष्टघाव तत्काल अच्छा होय ।

बिडालास्थिभवंभस्मश्वास्थिभस्माथवायसे । पात्रेगोसर्प्पिषा पिष्ट्वाव्रणलेपनमाचरेत् ॥ एतद्भगंदरेदुष्टव्रणेऽन्यस्मिंश्चशस्यते ।

अर्थ—बिलावके हाडकी भस्म, कुत्तेकी हड्डीकी भस्म, दोनोंको लोहेके पात्रमें गौके घीमें सानके लेप करे तो भगंदर तथा और जो दुष्टव्रण है उनकोभी नाश करे ।

नवकार्षिको गुग्गुलुः ।

त्रिफलापुरकृष्णानांत्रिपंचैकांशयोजिताः ।
गुटिकाशोथगुल्मार्शोभगंदरविनाशिनी ॥

अर्थ-त्रिफला ३ तोले, गूगल ५ तोले, और पीपल १ तोले, इनकी गोली बनाय सेवन करे तो सूजन, गोला, बवासीर, और भगंदर नष्ट होय ।

शंबूकंभक्षयेन्मांसंप्रकारैर्व्यंजनादिभिः ।
अजीर्णवर्जीमासेनमुच्यतेतुभगंदरात् ॥

अर्थ-छोटे शंख (घोघे) के मांसको व्यंजनके प्रकारसैं बनायके खाय, और अजीर्णकारी पदार्थ खाय नहीं तो एक महिनेमें भगंदर अवश्य दूर हो ।

रूपराजरसः ।

रसेन्द्रभागद्वितयंम्लेक्षक्षारंचतुर्गुणम् । काकजंघारसैर्मर्द्यंख-ल्वेदिवसपंचकम् ॥ ताम्रसंपुटकेरुद्ध्वासच्छिद्रेहंडिकांतरे। नि-वेश्यवालुकांदत्वादेयोऽग्निःप्रहराष्टकम् ॥ स्वांगशीतंसमुद्धृ-त्यमधुटंकणसंयुतम् । धमेन्मूषागतंतावद्यावद्भ्रमतितारवत् ॥ रूपराजरसोह्येषभगंदरकुलांतकः । वल्लमानंसमंलीढ्वामधु-नासहपथ्यभुक् ॥ त्रिफलायाःपिबेत्क्वाथंपश्चात्पथ्यंहितंचरे-त् । मुक्तःस्वल्पैरहोभिःस्याद्भगंदरमहागदात् ॥

अर्थ-शुद्ध पारा २ भाग, सुंबलखार ४ भाग, दोनोंको कागलहरीके रसमें ५ दिन खरल करे, फिर तामेके संपुटमें भरके पैंदेमें छेदवाली हंडियामें रख वालू-भर देवे, फिर इसे चूल्हेपर चढाय ८ प्रहरकी आंच देवे, जब स्वांग शीतल हो-जाय तब निकालके मूसमें भरके सहत सुहागा डाल आंचमें धरके वंकनाल धो-कनीसैं धोंके, जब चांदीके समान चक्कर खाने लगे तब उतार लेवे. यह रूपरा-जरस भगंदरके समूहोंको नष्ट करे; २ रत्ती सहतके साथ खाय ऊपरसें त्रिफ-लेका काढा पीवे, और पथ्यसे रहे तो थोडेही दिनोंमें घोर भगंदरकी पीडासें छूटजावे ।

भगंदरे पथ्यम् ।

व्यायामंमैथुनंयुद्धंपृष्ठयानंगुरूणिच ।
रूढव्रणेऽपियत्नेनवर्जयेत्सततं नरः ॥

अर्थ—दंडकसरत, मैथुन, कुस्ती, घोडाआदिकी सवारी, और भारी पदार्थोंका भोजन, इतनी वस्तु भगंदरका घाव भरवी आवे तोभी कुछकालपर्यंत त्याग देवे ।

इति भगंदरचिकित्सा समाप्ता ।

अथोपदंशचिकित्सा ।

उपदंशेषुसर्वेषुस्निग्धस्विन्नस्यदेहिनः । मेढ्रमध्येशिरांविध्ये-त्पातयेद्वाजलौकसः ॥ सद्योनिर्हंतिदोषस्यरुक्छोथावुपशा-म्यतः । पाकोनिवार्योयतेनाशिश्नक्षयकरश्चयत् ॥

अर्थ—सर्व उपदंश मात्रमें स्निग्ध और स्वेदित मनुष्यके लिंगकी फस्त खुलावे, अथवा जोख लगायकर रुधिर निकलवाय डाले क्योंकि रुधिरके द्वारा जहां दोष निकले कि उसी समय पीडा और सूजन शांति हो जाते हैं । इस उपदंशरोगमें पाकका यत्न अवश्य करे, अर्थात् पाक न होने दे क्योंकि पाक होनेसे लिंग गलके गिरजाता है ।

वटप्ररोहार्जुननिंबलोध्रपथ्याहरिद्राराचितःप्रलेपः ।
व्यथास्तथाशोफमपाकरोतिसर्वोपदंशेषुततोहितोऽयम् ॥

अर्थ—वडके कोमलपत्ते, कोहकी छाल, नीमके पत्ते, लोध, और हलदी, इनको पीसके लेप करे तो उपदंशकी पीडा और सूजनको दूर करे । अतएव यह लेप सर्व उपदंशोंमें हित है ।

पूगीफलंहरिद्रांचश्लक्ष्णंपिष्ट्वाप्रलेपयेत् ।
लिंगशोथव्यथाकंडूनाशयन्नास्त्यतःपरम् ॥

अर्थ—सुपारी, और हलदीको महीन पीसके लेप करे तो लिंगकी सूजन पीडा और खुजलीको दूर करे ।

दहेत्कटाहेत्रिफलातन्मषीमधुसंयुता ।
प्रलेपेनोपदंशस्यव्रणःसद्यःप्ररोहयेत् ॥

अर्थ—कडाईमें त्रिफलाको जलायके उसकी स्याही सहतमें मिलाय उपदंशके घावपर लगावे तो घाव तत्काल भर आवे ।

पटोलनिंबत्रिफलाकिरातक्वाथंपिबेद्वाखदिरासनाभ्याम् । स-

गुग्गुलुंवात्रिफलायुतंवासर्वोपदंशापहरःप्रयोगः ॥ भूनिंबादिघृतंचात्राहितम् ।

अर्थ–पटोलपत्र, नीमके पत्ते, त्रिफला, और चिरायता इनका काढा अथवा खैरसार और विजेसार इनके काढेमें गूगल वा त्रिफला मिलायके पीवे तो सर्व प्रकारके उपदंश दूर हो। इस उपदंश रोगमें भूनिंबादिघृत देना हित है।

घृतानियानिप्रोक्तानिकुष्ठेनाडीव्रणेव्रणे ।
उपदंशेप्रयोज्यानिसेकाभ्यंजनभोजने ॥

अर्थ–जो घृत कुष्ठमें नाडीव्रणमें और व्रणरोगमें कहे हैं वो सेक अभ्यंजन और भोजन इस उपदंश रोगमें देवे।

पारदाद्यं सर्पिः।

पारदंगंधकंतालंसिंदूरंचमनःशिला । ताम्रपात्रेतुसघृतेताम्रेणैवविमर्दयेत् ॥ घर्मेदिनैकंमृदितएतत्कंडूपदंशजित् ।

अर्थ–पारा, गंधक, हरताल, सिंदूर, मनसिल, इनको तामेके पात्रमें डाल तामेकेही मूसले आदिसें १ दिन धूपमें धरके रगडे, इसके लगानेसें खुजली और उपदंश दूर हो।

इति उपदंशचिकित्सा समाप्ता।

शूकदोषचिकित्सा।

हितंचसर्पिषःपानंपथ्यंचापिविरेचनम् । हितःशोणितमोक्षश्चशूकरोगेषुदेहिनाम् ॥ उपदंशोक्तासर्वाक्रियाप्रशस्ता ।

अर्थ–इस शूकदोषमें घृतपान करना पथ्य है, जुल्लाब देना, रुधिरका निकालना, ये हित है तथा इस रोगमें उपदंश रोगकी कहीहुई सब क्रिया करनी चाहिये।

इति शूकदोषचिकित्सा समाप्ता।

अथ कुष्ठचिकित्सा।

वातोत्तरेषुसर्पिर्वमनंश्लेष्मोत्तरेषुकुष्ठेषु ।
पित्तोत्तरेषुमोक्षोरक्तस्यविरेचनंश्रेष्ठम् ॥

अर्थ-वातजन्य कुष्ठोंमें घृतपान करना, कफजन्य कुष्ठोंमें वमन करना, और पित्तके कुष्ठोंमें फस्त खोलना और जुल्लाबकी औषध देना श्रेष्ठ कही है ।

पथ्याकरंजसिद्धार्थनिशावल्गुजसैंधवैः ।
विडंगसहितैःपिष्टैर्लेपोमूत्रेणकुष्ठनुत् ॥

अर्थ-हरडकी छाल, कंजा, सपेद सरसो, हलदी, बावचीके बीज, सैंधानिमक, और वायविडंग, इनको गोमूत्रमें पीसके लेप करे तो कुष्ठरोग दूर हो ।

सोमराजीभवंचूर्णंशृंगवेररसान्वितम् ।
उद्वर्त्तनमिदंहंतिकुष्ठरोगंकृतास्पदम् ॥

अर्थ-बावचीके चूर्णमें अदरखका रस मिलाय उबटना करे तो कुष्ठरोग दूर हो ।

एकविंशतिको गुग्गुलुः ।

चित्रकंत्रिफलाव्योषमजाजीकारवीवचा । सैंधवातीविषेकुष्ठे चव्यैलायावशूकजम् ॥ विडंगान्यजमोदाचमुस्ताचामरदारु च । यावंत्येतानिसर्वाणितावन्मात्रंतुगुग्गुलुः ॥ संक्षुद्यसर्पिषासार्द्धंगुटिकांकारयेद्भिषक् । प्रातर्भोजनकालेचखादेदग्निबलंयथा ॥ हंत्यष्टादशकुष्ठानिकृमीन्दुष्टव्रणानिच । ग्रहण्यर्शोविकारांश्चमुखामयगलग्रहान् ॥ गृध्रसीमथभग्नंचगुल्मंचापि नियच्छति । व्याधीन्कोष्ठगतांश्चापिजयेद्विष्णुरिवासुरान् ॥ भावप्रकाशोक्तोऽमृतभल्लातकावलेहोमहाभल्लातकश्चात्रहितः॥

अर्थ-चित्रक, त्रिफला, त्रिकुटा, जीरा, सौंफ, वच, सैंधानिमक, अतीस, कूठ, चव्य, इलायची, जवाखार, वायविडंग, अजमोद, नागरमोथा और देवदारु, ये सब बराबर ले सबकी बराबर शुद्ध गूगल लेय, सबको घी डाल कूट पीस गोली बनावे, प्रातःकाल भोजनके समय अग्निबलके अनुसार मात्रा सेवन करे तो अठारे प्रकारके कोढ, कृमि, दुष्टव्रण, संग्रहणी, बवासीर, मुखके रोग, गलग्रह, गृध्रसी, भग्नरोग, गोला, और कोठेकी व्याधियोंको यह एकविंशति गूगल दूर करे है । भावप्रकाशोक्त अमृतभल्लातकावलेह महाभल्लातकावलेह देना हित है ।

हरिद्राखंड ।

हरिद्रायाःपलान्यष्टौषट्पलंहविषस्तथा । क्षीराढकेनसंयुक्तं खंडस्यार्धशतंपचेत् ॥ व्योषंत्रिजातकंचैवकृमिघ्नंत्रिवृतात-

था। त्रिफलाकेसरंमुस्तंप्रत्येकंचपलंपलम्॥ संचूर्ण्यप्रक्षिपेत्त-
त्रस्निग्धभांडेनिधापयेत्। सप्तरात्रात्परंचैवपलमेकंतुभक्षयेत्॥
कंडूविस्फोटदद्रूणांनाशनंपरमौषधम्। प्रतप्तकांचनाभासंदे-
हंकुर्याच्चनान्यथा॥

अर्थ—हलदी ३२ तोले, गौका घी २४ तोले, दूध ४ शेर, खांड ५० टकेभर, त्रिकुटा, त्रिजातक, वायविडंग, निसोथ, त्रिफला, केशर, नागरमोथा, प्रत्येक ४ तोले ले, प्रथम हलदी और घीको दूधमें डालके पचावे फिर मिश्री और त्रिकुटा आदि औषधोंका चूर्ण डालके पाक करे, फिर इसको निकाल चिकने बासनमें भरके धररक्खें, सातरात्रिके बाद ४ तोले भक्षण करे तो खुजली, विस्फोटक, दाद, इनके नाश करनेको परमोत्तम औषधी है। यह सुवर्णके समान देहको करे।

पंचनिंबचूर्णम्।

पिचुमंदफलंपुष्पंत्वक्पत्रंमूलमेवच। पंचैतानितुसूक्ष्माणि
समचूर्णानिकारयेत्॥ अष्टभागावशेषेणखादिरासनवारिणा।
भावयित्वातुसंयोज्यद्रव्याण्येतानिदापयेत्॥ चित्रकोथवि
डंगानिव्याधिघातकशर्कराः। भल्लातकहरीतक्यौशुंठ्यामल-
कगोक्षुरौ॥ चक्रमर्दकवाकुच्यौपिप्पलीमरिचंनिशा। लोह-
चूर्णसमायुक्तंसमभागंप्रमाणतः॥ भावयेद्भृंगराजेनपुनःशु-
ष्कानिकारयेत्। निंबार्द्धंचूर्णमेतेषामेकीकृत्यनिधापयेत्॥
बिडालपदमात्रंतुसर्पिषापयसापिवा। प्रातःप्रातर्निषेवेतख-
दिरासनवारिणा॥ परिहारोनचात्रास्तिपंचनिंबेवतिष्ठति।
मासमात्रप्रयोगेणकुष्ठंहंतिरसायनम्॥ त्वग्दोषंनीलिकाव्यंगं
तथैवतिलकालकम्। अष्टादशविधंकुष्ठंसप्तचैवमहाक्षयान्॥
सर्वव्याधिविनिर्मुक्तोजीवेद्वर्षशतंसुखी।

अर्थ—नीमके फल, फूल, छाल, पत्ते, और जड ले, इन पांचोंको बारीक चूर्ण करे, फिर खैरसार और विजेसारके अष्टभागशेष काढेकी भावना देकर इतनी औषधी और मिलावे, चीतेकी छाल, वायविडंग, अमलतास, पित्तपापडा, भिलाए, हरडकी छाल, सोंठ, आमले, गोखरू, पमारके बीज, बाकुची, पीपर, कालीमिरच

हलदी, और लोहभस्म, ये समान भाग लेवे, सब एकत्र कूट पीस भांगरेके रसकी भावना देकर सुखाय लेवे, फिर इसमें उक्त औषध आधी और आधानीमका पंचांगका चूर्ण मिलावे सबको इकट्ठा करके धररक्खे प्रातःकाल १ तोलेभर चूर्ण घृतके अथवा दूधके साथ लेवे, अथवा खैरसार और विजेसारके क्काथसें लेवे, इस पंचनिंबचूर्णपर किसी वस्तुका परहेज नहीं है एक महिनेके लेनेसें सर्वप्रकारके कुष्ठोंको, त्वचाके दोष, नीलिका, व्यंग, तिल, अठारे प्रकारके कुष्ठ, सातप्रकारकी खुई, दूर हो। और सर्व रोगरहित हो मनुष्य १०० वर्ष जीवे यह रसायन है ।

लघुमंजिष्ठादिक्काथः ।

मंजिष्ठात्रिफलातिक्तावचादारुनिशामृता । निंबश्चैषांकृतः क्वाथःसर्वकुष्ठानिनाशयेत् ॥ भावप्रकाशोक्तोबृहन्मंजिष्ठादिक्काथमरिचादितैलेचहिते ।

अर्थ—मजीठ, त्रिफला, कुटकी, वच, देवदारु, हलदी, गिलोय, और नीम इनका काढा करके पीवे तो सर्वप्रकारके कुष्ठ दूर हो। भावप्रकाशोक्त बृहन्मंजिष्ठादि क्काथ और मरिचादि तैल इस कुष्ठरोगपर देना हित है ।

हरतालमारणम् ।

जंबीरद्रवमध्येतुप्रक्षाल्यनटमंडनम्।दशांशंटंकणंदत्वाखंडशः परिमेलयेत् ॥ चतुर्गुणेगाढपटेनिबध्यप्रहरद्वयम् । दोलायंत्रेणसंस्वेद्यप्रदीपप्रमितेऽनले ॥ चूर्णतोयेकांजिकेचकुष्मांडांबुनितैलके । त्रिफलाम्बुनितत्पश्चात्क्षालयित्वाम्लवारिभिः ॥ ततःपलाशत्वग्वारिपिष्टंघर्मेप्रशोषयेत् । तंगोलकंशरावाभ्यां संपुटीकृत्ययत्नतः ॥ खातेगजाख्येपक्त्वातुस्वांगशीतंसमुद्धरेत् ।अजादुग्धैःपुनःपिष्ट्वाशोषयेद्गोलकीकृतम् ॥ आढकंभस्म पालाशंहंडिकायांदृढंक्षिपेत् । सम्यक्चूर्णस्यकुडवंदत्वा सम्यग्विचक्षणः ॥ स्थापयेद्गोलकंतत्रपुनश्चूर्णंचभस्मच । यथाधूमोबहिर्यातिनतथामुद्रयेच्चताम् ॥ द्वात्रिंशत्प्रहरान्वह्निं भक्तवद्दापयेत्तथा । स्वांगशीतंसमुद्धृत्यसंचूर्ण्यनटमंडनम् ॥ हिमकुंदप्रभाकाशंनिर्धूमंकृष्णवर्त्मनि । रक्तिकास्यप्रदातव्यापुराणगुडयोगतः ॥ पथ्यंचचणकस्योक्तंषष्टिकाकोद्रवो-

दनम्।एकविंशद्दिनंयावल्लवणाम्लौविवर्जयेत्॥अष्टादशानिकु-
ष्ठानिवातरक्तंतथोद्धतम्।फिरंगदेशजंरोगंदुस्तरंचव्यपोहति ॥

अर्थ-तबकिया हरतालको जँभीरीके रसमें धोयकर हरतालका दशांश भाग सुहागा डाल, उस हरतालके टुकडे कर डाले, फिर सुहागा और हरतालके टुकडेन्को चौलड कपडेमें पोटली बांध जंभीरीके रसमें दोलायंत्रद्वारा दीपककी अग्निके समान अग्निसें दो प्रहर स्वेदन करे फिर चूनेके पानीसें कांजीमें पेठेके रसमें तेलमें और त्रिफलाके काढेमें औटावे फिर खटाईके पानीसें धोय सुखाय लेवे, फिर ढाककी छालको और हरताल दोनोंको पीस गोला बनावे उसको धूपमें सुखाय लेवे फिर इस गोलेको सरावसंपुटमें बंद कर गजपुटकी अग्निमें फूंक देवे, जब स्वांगशीतल होय तब निकास लेवे, फिर बकरीके दूधमें उस हरतालको पीस गोला बनाय धूपमें सुखाय ले, फिर ४ सेर ढाककी राखको हांडिमें भर बीचमें उस हरतालके गोलेको रक्खे ऊपर राख, और कलीका चूना पाव भरके खूब दाब देवे। जैसे धूआं न निकले एसे यत्नसें मुखपर्यंत दाब देवे, फिर इसको चुल्हेपर चढाय ३२ प्रहरकी अग्नि देवे जहांसें धूआँ निकले उसे ढाककी राखसे दाब दियाकरे स्वांगशीतल होनेपर हरतालको निकाल लेय, तो यह बर्फ कुंदके समान सपेद भस्म हो। और अग्निमें डालनेसें निर्धूम होती है इसका चूर्णकर किसी शीशीआदि पात्रमें भरके धर देवे, इसकी १ रत्ती मात्रा पुराने गुडके साथ देवे, इसपर पथ्य चनाकी रोटी सांठी चावल और कोदो अन्नका भात है। इकीस दिन पर्यंत नोन, खटाई त्याग देवे, तो अठारह प्रकारके कोढ, वातरक्त, फिरंगरोग. इनको यह हरताल दूर करे।

पारदंगंधकंशुद्धंहरितालंमनःशिला। वल्गुजंधूमसिंदूरंतथा
चरजनीद्वयम् ॥ नवकर्षाणिचैतानिसोमराजीद्विकार्षिकी।
घृतेनलेपयेच्चूर्णमातपेसंस्थितोभवेत् ॥ यामैकंयामयुग्मंवा
ततःस्नानंसमाचरेत्। कंडूंदद्रूकृमिकुष्ठंत्र्यहादेवविनाशयेत् ॥

अर्थ-पारा, गंधक, हरताल, मनसिल, ये शुद्ध करेहुए ले, घरका धूआं, सिंदूर, हलदी, दारुहलदी, ये सब नौ तोले लेवे और बावची २ तोले ले, इन सबको पीस घीसें देहमें लेप कर धूपमें प्रहर या दो प्रहर बैठे फिर स्नान कर डाले तो खुजली, दाद, कृमि, कोढ, ए तीनही दिनमें दूर हो।

द्वितीयतालकेश्वरो रसः।

पुनर्नवायाःस्वरसेतालकंताद्विमर्दयेत्। दिनमेकंततस्तस्मि
न्घनत्वंगमितेसति॥ कुर्वीतचक्रिकांतांतुशोषयेत्सम्यगातपे।

पुनर्नवासमस्तांगक्षौरःस्थालींगलावधि ॥ पूरयेच्चततःक्षारं दृढयेत्पीडयेदिह। क्षारस्योपरितांदध्यात्तालकस्यतुचक्रिकां॥ ततआच्छादनंदत्वामुद्रांकृत्वाविशोषयेत् । स्थालींचुल्ल्यां निधायाग्निममंदंज्वालयेद्भिषक् ॥ निरंतरमहोरात्रपंचकंतेन सिध्यति । स्वांगशीतेसमुत्तार्येगृह्णीयाद्रसमुत्तमम् ॥ गुडू-च्यादिकषायेणगदानेतान्विनाशयेत् । अष्टादशानिकुष्ठानि वातरक्तंतथोद्धतम् ॥ फिरंगदेशजंरोगंदुस्तरंचव्यपोहति।एत-द्भेषजसेवीतुलवणाम्लौविवर्जयेत् । तथाकटुरसंवह्निमातपं दूरतस्त्यजेत् ॥ लवणंतुपरित्यक्तुंनशक्नोतिकथंचन । सतुसैं-धवमश्नीयान्मधुरोहिरसोहिसः ॥

अर्थ–सांठके रसमें हरतालको १ दिन खरल करे, जब गाढी होजावे तब उसकी टिकिया बनाय धूपमें सुखाय लेवे, फिर सांठके पंचांगका खार कर हांडीमें दाबकर भरे बीचमें हरतालकी टिकियाओंको रखके फिर ऊपरसैं खार (राख)सैं मुखको बंद कर मुद्रा कर देवे, उस मुद्राको सुखाय उस पात्रको चूल्हेपर चढाय बराबर मंद मंद अग्नि पांचदिनपर्यंत देवे, तो हरताल सिद्ध हो, जब स्वांगशीतल होजावे तब चूल्हेसैं उतार हरतालको निकास लेवे, यह ताल-केश्वर रस १ रत्ति गुडूच्यादि काढेके साथ लेवे, तो इतने रोग दूर हो । अठारे प्रकारके कोढ, घोर वातरक्त, और दुस्तर फिरंगरोग, इनको यह दूर करे इस औषधका सेवन करनेवाला नोन खटाईको त्याग देवे तथा चरपरा रस अग्निसैं तापना, धूप, इनको त्याग दे । यदि नोनके विना न रहा जाय तो थोडा सैंधा-निमक सेवन करे ।

लघुमरिचादितैलं ।

मरिचंत्रिवृतामुस्तंहरितालंमनःशिला । देवदारुहरिद्रेद्वेमां-सीकुष्ठंसचंदनम् ॥ विशालांकारवीरंचक्षीरमर्कसमुद्भवम् ।गो-मयस्यरसंकुर्यात्प्रत्येकंकर्षसंमितम् ॥ विषस्यार्द्धपलंदेयंतैलं प्रस्थमितंकटु । पचेच्चतुर्गुणेनीरेगोमूत्रेद्विगुणेतथा ॥ मरिचा-द्यमिदंतैलमभ्यंगात्कुष्ठनाशनम् । एतस्याभ्यंगताश्वित्रांविवर्ण-

स्तत्क्षणाद्भवेत् ॥ तैलमेतत्त्यजेत्कंडूंपामासिध्मंविचर्चिकाम्। पुण्डरीकंतथादद्रूशून्यतांनित्यसेविनाम् ॥

अर्थ-कालीमिरच, निसोथ, नागरमोथा, हरताल, मनसिल, देवदार, हलदी, दारुहलदी, जटामांसी, कूठ, चंदन, इन्द्रायनकी जड, सोंफ, आकका दूध, और गोबरका रस, प्रत्येक एक एक तोले लेवे। सिंगियाविष २ तोले, कडुआ तेल १ सेर, जल चौगुना और गोमूत्र दुगना डालके तैलपाककी विधिसें इस मरिचादितैलको बनायले इसके मालिस करनेसें कुष्ठ दूर हो और चित्रकुष्ठ (सपेद-दाग) तत्काल काला पडजावे। खुजली, पामा, भभूत, विचर्चिका, पुंडरीक, दाद, और देहकी शून्यताको दूर करे।

चित्रकगुंजावल्गुजमलयूवल्कंप्रपिष्टमिभमूत्रैः। लेपाद्धंतिश्वित्रंकतिचिदहोभिश्चिरस्थमपि ॥

अर्थ-चीतेकी छाल, घूंघची, बावची, जंगली अंजीर, इन सबको हाथीके मूत्रमें पीसके लेप करे तो थोडेही दिनोंमें चित्रकुष्ठ (सपेद दाग) दूर हो।

तीसरा तालकेश्वररस।

पलाशजटावल्कलंसंशोष्यभस्मकारयेत् तद्भस्मपंचविंशतिपलपरिमितंतन्मध्येप्रकृष्टतालकं पंचविंशतिमाषकपरिमितंखंडशःकारयित्वाभस्मनासहमिश्रयेत् नूतनहंडिकायांदृढंयथास्यादेवंरक्षयेत् हंडिकोपरिशरावंदत्वाविनामुद्रां चुल्ह्यांस्थापयेत् यामदशकपर्यंतंहठाग्निनादाहयेत् सम्यग्दग्धं ज्ञात्वावस्त्रपूतंकारयेत् तद्भस्मरक्तिकाद्वयपरिमितं अदग्धजीरकचूर्णमाषपरिमितंएकीकृत्यपर्णखंडेनसहभक्षयेत् शीतलजलमनुपाययेत्। पथ्यंचणकचूर्णंचणकरोटिकांभर्जितचणकं वादापयेत् एवंमंडलपर्यंतंबहुवातातपौवर्जयेत् तदाष्टादशकुष्ठविविधवातशोणितविविधव्रणप्रमेहपिडिकामवातवातव्याध्यादीन्नाशयेत् ॥ अनुभूतोऽयंप्रयोगः ॥

अर्थ-ढाककी छालको सुखायके भस्म करे यह भस्म २५ पल लेवे, इसमें शुद्ध करी हरतालके टूकडे २५ मासेके अनुमान रखके ऊपरसें वसी ढाककी भस्मसें मुखपर्यंत दाबके नवीन हांडी भर देवे, उसके ऊपर सरावको ढक बिना मुद्रा करेही

चूल्हेपर चढाय १० प्रहरकी हठाग्नि देवे, जब जानेकि स्वांगशीतल होगया तब हरतालको निकाश चूर्ण कर कपडछन करलेवे, यह हरताल २ रत्ती विना भुने हुए १ मासे जीरेके चूर्णमें मिलाय पानमें धरके खावे ऊपरसें शीतल जल पिवावे, पथ्यमें चनेके चूनकी रोटी भुने चने देवे, इस प्रकार एक मंडल (४९ दिन) पर्यंत पथ्यसें रहे अत्यंत हवा और धूप खाय नहीं तो यह अठारे प्रकारके कुष्ठ, अनेक प्रकारके वातशोणित, अनेक प्रकारके फोडे, प्रमेह, पिडिका, आमवात, और वातव्याधिको नाश करे । यह प्रयोग अनुभव करा हुआ है ।

विशिष्टानां कुष्ठानां चिकित्सा ।

कुष्ठंमूलकबीजंप्रियंगवःसर्षपारजनी ।
एतत्केशरषष्ठंनिहंतिबहुवार्षिकंसिध्मम् ॥

अर्थ-कूठ, मूलीके बीज, फूलप्रियंगु, सपेद सरसों, हलदी, और केशर इनको पीस मालिस करे तो बहुत दिनोंकी भभूतरोग दूर हो ।

शिखरीरसेनपिष्टंमूलकबीजंप्रलेपतःसिध्मम् ।
क्षारेणवाकदल्यारजनीमिश्रेणनाशयति ॥

अर्थ-ओंगा (चिरचिटा)के रसमें मूलीके बीज पीस मालिस करे तो विभूतरोग नष्ट हो अथवा मूलीके खारमें हलदी मिलायके लगावे तो विभूत दूर हो ।

दार्वीमूलकबीजानितालकःसुरदारुच ।तांबूलपत्रंसर्वाणिकार्षिकाणिपृथक्पृथक् ॥शंखचूर्णंतुशाणंस्यात्सर्वाण्येकत्रवारिणा ।
पेषयेत्तत्प्रलेपोऽयंसिध्मानांनाशनंपरम् ॥

अर्थ-दारुहलदी, मूलीके बीज, हरताल, देवदार, और पान सब एक एक तोले लेवे, शंखका चूरा ४ मासे ले, सबको एकत्र कर जलसें पीसे इसका लेप करे तो विभूतरोग दूर हो ।

कर्षत्रयंचमरिचंगंधकंचपलार्द्धकम् । घृतंसार्द्धपलंकोलन्यूनं मधुपलाष्टकम् ॥ सर्वंदिनाष्टकंभक्ष्यंदद्रूकंडूविनाशनम् ॥

अर्थ-काली मिरच ३ तोले, गंधक २ तोले, घृत ६ तोले, सहत ८ टके भर, इन सबको एकत्र कर आठदिन भक्षण करे तो दाद खुजली दूर हो ।

रसगंधकयोःपिष्टिंकटुतैलेनभृंगजैः ।
द्रवैःसंमर्द्यतल्लेपात्सर्वकुष्ठंविनश्यति ॥

अर्थ–पारा गंधक दोनोंकी कजलीको कडुए तेल और भांगरेके रसमें खरल करे। इसके लेपसैं सर्व प्रकारके कुष्ठ दूर हो।

सलिलेत्वाम्रपेशीतुकिंचित्सैंधवसंयुता।
ताम्रपात्रेविनिर्घृष्टालेपाच्चर्मदलापहा॥

अर्थ–आमकी गुठलीको जलमें पीस थोडा सैंधानिमक मिलाय तामेंके पात्रमें रगडे इसके लेप करनेसैं चर्मदलकुष्ठ दूर हो।

सलिलेनतुशुष्काणिघृष्ट्वाधात्रीफलानिच।
कराभ्यांसुखमाप्नोतिनरश्चर्मदलान्वितः॥

अर्थ–सूखे आमलोंको जलमें पीसके लेप करे तो चर्मदलकुष्ठ दूर हो।

प्रपुन्नाटस्यबीजानिबाकुचीसर्षपास्तिलाः। कुष्ठंनिशाद्वयंमुस्तं पिष्ट्वातक्रेणचैकतः॥ प्रलेपादस्यनश्यंतिदद्रूकंडूविचर्चिकाः।

अर्थ–पवारके बीज, बावची, सरसो, तिल, कूठ, हलदी, दारुहलदी, और नागरमोथा, इनको छाछमें पीस लेप करनेसैं दाद, खुजली, और विचर्चिका दूर हो।

पलाशभवबीजानांपिष्टानांनिंबकद्रवैः।
लेपान्नश्यतिदद्रूश्चचिरकालानुबंधिनी॥

अर्थ–ढाकके बीजोंको नींबूके रसमें पीस लेप करे तो तत्काल बहुत दिनोंकाभी दाद दूर हो।

चक्रमर्दकसिंधूत्थरुक्सिद्धार्थांजनैःकृतः।
सविडंगैरयंलेपोदद्रूमंडलसिध्मनुत्॥

अर्थ–पमारके बीज, सैंधानिमक, कूठ, सरसों, रसोत और वायविडंग इनको पीस लेप करे तो दाद, चकत्ते, मंडल, और भभूत दूर हो।

पत्राण्यारग्वधस्याथपेषयेदारनालकैः।
लेपनात्कुष्ठकिटिभदद्रूसिध्महराणिवै॥

अर्थ–अमलतासके पत्तोंको कांजीमें पीस लेप करे तो कोढ, किटिभ, दाद, और भिभूत ये दूर हो।

गुंजाफलाग्निचूर्णेनलेपितंश्वेतकुष्ठकम्।
निहंत्येतन्नसंदेहःपूर्वाचार्यैःप्रकाशितम्॥

अर्थ-घुंघची और चीतेकी छाल इनको पीस लेप करे तो सपेद कोढ अवश्य दूर होय यह प्राचीन वैद्योंने कहा है ।

पारदंटंकणंगंधंमूलकार्द्रकयोर्द्रवैः ।
दिनंमर्द्यंचतल्लेपाद्यातिसिध्मोरसातलम् ॥

अर्थ-पारा, सुहागा और गंधक इनको मूली और अदरकके रसमें १ दिन खरल कर लेप करे तो विभूत दूर हो ।

नारिकेलोदरेन्यस्तंतंदुलंपरितांगतम् ।
विपादिकांजयेदेतल्लेपनंचिरकालजाम् ॥

अर्थ-नारियलके भीतर चांवलोंको भरके थोडे दिन धरे रहने दे फिर इनको पीसके लेप करे तो बहुत दिनकी विपादिका (पेरोंका फटना) दूर हों ।

पिबतिचयःकटुतैलंगंधकचूर्णबलानुमानेन । रविकिरणेनसुतप्तस्त्रिदिनंप्रातप्रमाणंसः ॥ तदनुस्नातोविधिनाक्षीराशीशीघ्रमालभते । सर्वसुवर्णशरीरंस्मरसौंदर्याधिकंजंतुः ॥

अर्थ-जो मनुष्य बलाबल विचारके कडुए तेलमें गंधकका चूरा मिलायके पीवे और धूपमें बैठ जावे इस प्रकार तीन दिन करे फिर विधिपूर्वक स्नान करके दूध पीवे तो देह सुवर्णके समान सुंदर हो जाय ।

दूर्वादोषाकल्कलेपःकंडूपामाविनाशनः ।
दद्रूकृमिहरःशीतकुष्टजित्परिकीर्त्तितः ॥

अर्थ-दूब और हलदीके कल्कका लेप करे तो खुजली, पामा, दाद, कृमि, और शीत कुष्ठ दूर हो ।

तंदुलंकोद्रवस्याथगृहीत्वासेटकार्द्धकम् । भावयित्वार्कदुग्धेनछायाशुष्कीकृतंतथा ॥ खरमंजरिकाक्षारंचतुःकर्षंविमिश्रितम्। अरण्योपलिकेनाथसंघृष्यांगंविमर्दयेत् ॥ तदौषधंसप्तदिनान्नाशयेद्दद्रुमंडलम् ।अलंचर्मदलंरक्तंवातपूर्वंनसंशयः॥

अर्थ-कोदोंके चावल आध सेर ले, उनको आकके दूधकी भावना देकर छायामें सुखाय लेवे, फिर इसमें ओंगा (चिरचिटे) का खार ४ तोले मिलावे, सबको जलमें पीस फिर आरने उपलेसे देहको घीसके लगावे तो दाद, चकत्ते, चर्मदलकुष्ठ, और वातरक्त ये सातदिनमें सब दूर हो ।

सिंदूरस्यपलंपिष्ट्वाद्विपलंजीरकस्यच ।
कटुतैलंपचेत्ताभ्यांद्रुतंपामार्त्तिनुद्भवेत् ॥

अर्थ–सिंदूर ४ तोले, जीरा ८ तोले, दोनोंको कडुए तेलमें डालके पकावे तो यह तेल तत्काल खाजको दूर करे ।

अर्कपत्ररसैर्दोषाकल्कैस्तैलंपचेत्कटु ।
पामाविचर्चिकाकंडुनाशनंसुभिषङ्मतम् ॥

अर्थ–आकका रस और हलदीके कल्कसें कडुए तेलको पचावे यह पामा विचर्चिका और खुजलीको दूर करे ।

बिभीतकत्वङ्मलयूजटानांक्काथेनपीतंगुडसंयुतेन ।
अवल्गुजंबीजमपाकरोतिचित्राणिकृच्छ्राण्यपिपुंडरीकम् ॥

अर्थ–बहेडेकी छाल, जंगली अंजीरकी जड, इनका काढा कर गुडके साथ बावचीके बीजोंको पीवे तो चित्रकुष्ठ और घोर पुंडरीकादि कोढ दूर हो ।

कुडवोवल्गुजबीजंहरितालंतच्चतुर्थांशम् । मनःशिलाताल-
कार्द्धागुंजाफलमग्निमूलंच॥मूत्रेणगवांपिष्टंसवर्णताकारकंश्वित्रे ।

अर्थ–पावभर बावची और हरताल छटाक, मनसिल, घुंघची, चीतेकी छाल, इनको गौके मूत्रसे पीसके सपेद दागपर लगावे तो वह देहके रंगमें मिल जावे ।

तुत्थटंकणयोर्भागौद्विभागासोमराजिका । भृंगराजरसेनैव
भावयेद्दिनसप्तकम् ॥चित्रेलेपःप्रशस्तोऽयमनुभूतोभिषग्वरैः ।

अर्थ–नीलाथोथा, सुहागा, प्रत्येक एक एक भाग, बावची २ भाग, इनको भांगरेके रसमें ७ दिन घोंटे फिर चित्रकुष्ठपर लगावे तो अच्छा होय ।

पथ्यम् ।

नीचरोमनखोनित्यंनित्यमौषधतत्परः ।
योषिन्मांससुरावर्जीकुष्ठीकुष्ठंव्यपोहति ॥

अर्थ–कुष्ठरोगवाला बाल और नखोंको कटाता रहे बढने न देवे, और नित्य औषध सेवन करता रहे, तथा स्त्रीसंग, मांस, और मद्यको त्यागे तो कुष्ठरोग दूर हो ।

इति कुष्ठरोगचिकित्सा समाप्ता ।

शीतपित्तचिकित्सा ।

शीतपित्तेतुवमनंपटोलारिष्टवासकैः ।
त्रिफलापुरकृष्णाभिर्विरेकश्चप्रशस्यते ॥

अर्थ-शीतपित्त (पित्ती)वाला पटोलपत्र, नीम, और अडूसा, इनका क्वाथ करके वमन करता रहे और त्रिफला, गूगल, पीपल इनकरके विरेचन करे तो उत्तम है ।

यःसर्पिःसैंधवाभ्यक्तदेहआरक्तकंबली ।
शयीततस्यशाम्यंतिशीतपित्तादयोगदाः ॥

अर्थ-जो मनुष्य घृत और सैंधेनिमकको पीसके देहमें लगाय कंबल ओढके सोय रहे तो उसके शीतपित्तादि रोगशांति होवे ।

अभ्यज्यकटुतैलेनसिंचेदुष्णेनवारिणा ।
त्रिफलांसमधुंचाद्यादुदर्दार्त्तिप्रशांतये ॥

अर्थ-उदर्दरोगके दूर करनेको कडुए तेलका मालिस कर गरमजलसैं स्नान कर डाले फिर त्रिफला और सहतको चाटे तो उक्तरोग दूर हो ।

सगुडंदीप्यकंयस्तुकिंचित्कटुकतैलकम् ।
भक्षयेत्तस्यनश्यंतिसोदर्दाःकोठसंज्ञकाः ॥

अर्थ-गुड और अजमायनको मिलाय किंचिन्मात्र कडुए तेलसैं भक्षण करे तो उदर्द संज्ञक कोठरोग दूर हो ।

घृतगैरिकसिंधूत्थकुसुंभकुसुमैःसमैः ।
उद्वर्त्तनंप्रशंसंतिकोठोदर्दादिनाशने ॥

अर्थ-घी, गेरू, सैंधानिमक, कसूम, इनको पीस मालिस करनेसैं कोठ और उदर्दरोग नाश होय ।

आर्द्रकस्यरसःपेयःपुराणगुडसंयुतः ।
शीतपित्तापहःश्रेष्ठोवह्निमांद्यविनाशनः ॥

अर्थ-पुराना गुड मिलायके अदरखका रस पीवे तो शीतपित्त और मंदाग्नि दूर हो ।

सिद्धार्थरजनीकल्कैःप्रपुन्नाटतिलैःसह ।
कटुतैलेनसंमिश्रयमेतदुद्वर्त्तनंहितम् ॥

अर्थ-सपेद सरसों, और हलदीका कल्क इनको पवाड और तिलके साथ कडुए तेलसैं पीस डाले फिर इसका मालिस करे तो उदर्दरोग दूर हो ।

भूनिंबवासाकटुकापटोलफलत्रिकंचंदननिंबसिद्धः ।
विसर्पदाहज्वरवक्रशोषविस्फोटतृष्णावमिनुत्कषायः ॥

अर्थ-चिरायता, अडूसा, कुटकी, पटोलपत्र, त्रिफला, चंदन, और नीमकी छाल, इनका काढा विसर्प, दाह, ज्वर, मुखका सूखना, विस्फोटक, प्यास और वमन इनको दूर करे ।

उद्वर्त्तनंशीतपित्तेगोशकृद्भस्मनातनौ । केवलंलशुनंवाथत्रिफलांमधुसंयुताम् ॥ क्षिप्रंनश्यतिसप्ताहादुदर्दःप्राशनेनच ॥

अर्थ-पित्तीके रोगमें आरनेउपलेकी खाकको देहमें लगावे, अथवा केवल लहसन अथवा त्रिफलाको सहतके साथ खाय तो ७ दिनमें उदर्दरोग शीघ्र शांति होय ।

असृजोमोक्षणंकार्यंकुष्टोक्तंचक्रमंचरेत् । शुष्कमूलकयूषेणकौलत्थेनरसेनवा ॥ भोजनंसर्वदाकार्यंलावतित्तिरजेनवा । यवानिगुडसंयुक्ताभस्मसूतोद्विवल्लकः ॥ शीतपित्तंनिहंत्याशुकटुतैलस्यमर्दनम् ।

अर्थ-इस उदर्दरोगमें कुष्ठका जो यत्न कहा है सो करे, और फस्त खुलवावे, सूखी मूलीके यूष करके अथवा कुलथीके यूषसैं अथवा लवा, तीतर इनके मांसरस करके सदैव भोजन करे । अजमायनको गुडमें मिलाय उसमें ४ रत्ती पारेकी भस्म धरके खाय तो पित्तीको शीघ्र दूर करे । एवं कडुए तेलकी मालिसभी पित्तीन्को दूर करे ।

सगुडांपिप्पलींयस्तुखादेत्पथ्यान्नभुङ्नरः । तस्यनश्यतिसप्ताहादुदर्दःसर्वदेहगः ॥ घृतंपीत्वामहातिक्तंशोणितंमोक्षयेत्तथा ।

अर्थ-जो मनुष्य पीपलके चूर्णको गुडमें मिलायके खाय और पथ्यसैं रहे तो ७ दिनमें संपूर्ण देहका उदर्दरोग दूर हो । तथा उदर्दरोगवाला महातिक्तघृतको पीवे और फस्त खुलवावे ।

आर्द्रकखंड ।

आर्द्रकंप्रस्थमेकंस्याद्द्रोघृतंकुडवद्वयम् । गोदुग्धंप्रस्थयुगलंतदर्द्धांशर्करामता ॥ पिप्पलीपिप्पलीमूलंमरिचंविश्वभेषजम् । चि-

त्रकंचविडंगंचमुस्तकंनागकेशरम् ॥ त्वगेलापत्रकंचूर्णंप्रत्येकं पलमात्रकम् । विधायपाकंविधिवत्खादेदेतत्पलोन्मितम् ॥ इदमार्द्रकखंडाख्यंप्रातर्भुक्तंव्यपोहति । शीतपित्तमुदर्दंच कोठमुत्कोठमेवच ॥ निंबचूर्णमामलकीचूर्णंमाषत्रयंत्रयम् । गोघृतंमाषयुगलंमिश्रितंखादयेत्पुनः ॥ दुग्धोदनंचरेत्पथ्यमितित्रिस्त्रिःप्रयोजयेत् ॥

अर्थ-छिला और कतराहुआ अदरख सेरभर, गौका घी आधसेर, गौका दूध २ सेर, मिश्री सेरभर, पीपल, पीपरामूल, काली मिरच, सोंठ, चीतेकी छाल, वायविडंग, नागरमोथा, नागकेशर, तज, छोटी इलायचीके बीज, और पत्रज, प्रत्येक एक एक टके भर लेवे। इसका पाककी विधिसे पाक बनायके टकेभर नित्य प्रातःकाल खाय तो आर्द्रकखंड शीतपित्त, उदर्द, कोढ, उत्कोढको, दूर करे। इसके ऊपर नीमका चूर्ण और आमलेका चूर्ण तीन मासे ले गौका घी २ मासेके साथ खाय, और दूधभातकी पथ्य लेय तो ९ दिनमें उक्तरोग दूर हो।

इति शीतपित्तचिकित्सा समाप्ता।

अथाम्लपित्तचिकित्सा।

अम्लपित्तेतुवमनंपटोलारिष्टवासकैः । कारयेन्मदनक्षौद्रसिंधुयुक्तैस्ततोभिषक् ॥ विरेचनंतृवृच्चूर्णमधुधात्रीफलद्रवैः । सम्यग्वांतविरक्तस्यसुस्निग्धस्यानुवासनम् ॥ आस्थापनंचिरोत्थेऽत्रदेयंदोषाद्यपेक्षया । तिक्तभूयिष्ठमाहारंपाचनंचप्रयोजयेत् ॥ यवगोधूमचणकमकुष्ठकमसूरिकाः । मुद्गाढकीयवाःपथ्याक्षीरंचसासितंनवम् ॥ पुराणशालिलाजानांसक्तून्समधुशर्करान् । घोलंप्तिताम्लपित्तार्त्तःपिबेत्तद्रोगशांतये ॥

अर्थ-अम्लपित्तरोगमें पटोलपत्र, नीमकी छाल, अडूसा, इनके काढेमें मैनफल, सैंधानिमक और सहत डालके पिवाय वमन करावे, तथा निसोथ सहत और आमलेके रसमें दस्त करावे, जब भले प्रकार वमन विरेचन होचुके तब स्निग्ध देहवालेको अनुवासन बस्ती करावे। और बहुत दिनका होय तो दोषानुसार आस्थापन बस्ती

करावे। और कटुप्रधान आहार, तथा पाचन द्रव्य देवे जो गेहूं चना सोंठ मसूर मूंग अरहर तत्कालका निकला मिश्री मिला दूध ये अम्लपित्त रोगवालेको पथ्य है। पुराने शाली चावलोंकी खील सहत और मिश्री मिले सत्तू और घोल इनको पित्त और अम्लपित्त रोगी पीवे।

पूतीकरंजशुंगानिघृतभृष्टानिभक्षयेत् । विदग्धेभोजनेकार्यं वमनंकोष्णवारिणा ॥ अन्नसंमूर्च्छितंतस्यसुखंनिर्हरतेयनः। ऊर्ध्वगंवमनैर्विद्वानधोगंरेचनैर्हरेत् ॥

अर्थ–कंजाकी नई कोपलोंको घीमें भून भक्षण करे। भोजन का हुआ विदग्ध होजावे तो गरम जल पिवाय उलटी कराय देवे तो यह संमूर्च्छित अन्नको सुखपूर्वक बाहर निकाल देता है। ऊर्ध्वगत अम्लपित्तमें वमन करावे और अधोगतमें विरेचन देवे।

कृतवमनविरेकस्यापिदोषोपशांतिर्नभवतियदिकार्योरक्तमोक्षोऽस्ययुक्त्या ॥

अर्थ–यदि वमन विरेचन करानेपरभी अम्लपित्त शांति न होवे तो युक्तिपूर्वक इस मनुष्यकी फस्त खोले।

भूनिंबनिंबत्रिफलापटोलवासामृतापर्पटमार्कवाणाम् । कषायकोमाक्षिकसंप्रयुक्तोनिहंतिसोपद्रवमम्लपित्तम् ॥

अर्थ–चिरायता, नीमकी छाल, त्रिफला, पटोलपत्र, अडूसा, गिलोय, पित्तपापडा, और भांगरा इनके काढेमें सहत मिलायके पीवे तो उपद्रवसहित अम्लपित्तको नष्ट करे।

द्राक्षापथ्येसमेकृत्वातयोस्तुल्यांसितांक्षिपेत् । संकुट्याक्षद्वयमितंतत्पिंडींरचयेद्भिषक् ॥ तांखादेदम्लपित्तार्त्तोहृत्कंठदहनापहम् । तृण्मूर्च्छाभ्रममंदाग्निनाशिनीमामवातहाम् ॥

अर्थ–मुनक्कादाख, और हरडकी छाल, बराबर ले दोनोंकी बराबर मिश्री मिलावे, सबको कूट पीस १ तोले प्रमाण गोली बनावे, एक गोली अम्लपित्तवाला रोगी खाय तो अम्लपित्त, कंठदाह हृदयका दाह,तृषा, मूर्च्छा, भ्रम, मंदाग्नि और आमवात ये दूर हो।

व्योषवरैलामुस्ताविडंगपत्रमखिलसममत्रलवंगं । तवृदापिस-

वेदद्विगुणितचूर्णात्सितासकलतुलितासमपूर्णा ॥ प्रागशनंशा-
णद्वयभुक्तंनालिकेरशीतलजलयुक्तम् । तदनंतरवमनंकरणीयं
क्षीररसादियथाकमनीयम् ॥ जनयतितेजोनलबलवृद्धिंहर-
तिमलद्वयबंधसमृद्धिम् । आमवातमतिशूलसमूहमम्लपित्तम-
पिहंतिदुरूहं ॥अविपत्तिकरमेतच्चूर्णरोगविपत्तिहरंकिलतूर्णम् ॥

अर्थ–त्रिकुटा, त्रिफला, इलायची, नागरमोथा, और वायविडंग, सब समान ले, सबकी बराबर लौंग और चूर्णसैं दूनी निसोथ ले, और सबकी बराबर मिश्री मिलावे प्रातःकाल भोजनसैं पूर्व ४ मासे नारियलके जलके साथ लेय और फिर वमन करडाले, भोजनके समय दूध मांसरस आदि उत्तम पदार्थ भोजन करे तो यह तेज बल अग्निको बढावे और बद्धकोष्ठ, आमवात, शूल, अम्लपित्त, इन सबको यह अविपत्तिकर चूर्ण हरण करे और सकल रोगोंको दूर करे ।

नालिकेरखंडः ।

कुडवंनालिकेरस्यसूक्ष्मंदृषदिपेषितम् । शुभ्रखंडस्यकुडवंस-
र्वमेतच्चतुर्गुणे ॥ आलोड्यनालिकेरस्यजलेमृद्वग्निनापचेत् ।
नालिकेरजलाभावेगव्येपयासितत्पचेत् ॥ धान्यकंपिप्पलीमू-
लंचातुर्जातंविचूर्णितम् । प्रत्येकंटंकमात्रंतुशीतेतस्मिन्विनि-
क्षिपेत्॥पलस्यार्द्धस्तदर्द्धोऽपिभक्षितःप्रत्यहंनरैः।नालिकेरक-
खंडोऽयंपुंस्त्वनिद्राबलप्रदः ॥ अम्लपित्तंरक्तपित्तंशूलंचपरि-
णामजम् । क्षयंक्षपयतिक्षिप्रंशुष्कंदारुयथानलम् । पलमात्रे
घृतेगव्येनालिकेरस्यगिरीभर्जनंकर्त्तव्यमितिसंप्रदायः ॥

अर्थ–पावभर नारियलकी गिरीको स्वच्छ पत्थरपर बारीक पीसलेवे, फिर ४ तोले घी डालके भूने फिर सवापा खांड डालके नारियलके जलमें मंदाग्निसें पचावे, यदि नारियलका जल न मिले तो गौके दूधमें पचावे, फिर इतनी वस्तु और डाले, धनिया पीपरामूल, चातुर्जात, प्रत्येक चार चार माशे लेवे; इनका चूर्ण कर शीतल होनेपर डाले, इसमेंसे ४ तोले वा २ तोले नित्य भक्षण करे तो यह नारिकेलखंड पुरुषार्थ, निद्रा, बल, इनको देवे । अम्लपित्त, रक्तपित्त, परिणामशूल, क्षय, इन सबको दूर करे ।

मृतसूतार्कलोहानांतुल्यंपथ्यांविचूर्णयेत् ।
माषत्रयंलिहेत्क्षौद्रैरम्लपित्तप्रशांतये ॥

अर्थ-चंद्रोदय, तांबेकी भस्म, लोहकी भस्म, समान भाग ले। सबकी बराबर हरडकी छाल ले, सबको पीस ३ मासे सहतके साथ लेवे तो अम्लपित्त दूर हो ।

गुडपिप्पलिपथ्याभिस्तुल्याभिर्मोदकःकृतः ।
पित्तश्लेष्महरःप्रोक्तोमंदाग्नित्वस्यनाशनः ॥

अर्थ-गुड, पीपल, और हरडकी छाल, ए समान लेकर लड्डू बनावे यह पित्तकफको और मंदाग्निको दूर करे ।

इति अम्लपित्तचिकित्सा समाप्ता ।

अथ विसर्पचिकित्सा ।

विरेकवमनालेपःसेचनास्रविमोक्षणैः ।
उपाचरेद्यथादोषंविसर्पानविदाहिभिः ॥

अर्थ-जिनमें दाह न होता हो ऐसी विसर्पोमें जुलाब, वमन, लेप, सेचन, और फस्तका खोलना इत्यादि उपचार यथा दोषानुसार करने चाहिये ।

शिरीषयष्टीनतचंदनैलामांसीहरिद्राद्वयकुष्ठवालैः ।
लेपोदशांगःसघृतःप्रयोज्योविसर्पकुष्ठज्वरशोथहारी ॥

अर्थ-शिरसकी छाल, मुलहटी, तगर, चंदन, छोटी इलायची, जटामांसी, हलदी, दारुहलदी, कूठ, नेत्रवाला, यह दशांग लेप है इसको घीमें मिलाय लेप करे तो विसर्प कोढज्वर और सूजनको दूर करे ।

शतधौतघृतविमिश्रःकल्कत्वक्पंचकस्यलेपेन। बहुदाहकलितमुच्चैरग्निविसर्पविनाशयति ॥ शीतपित्तचिकित्सायामुक्तभूनिंबादिकषायःविसर्पेशस्यते ॥

अर्थ-पंचवक्कलके कल्कमें सौवार धुलाहुआ घी मिलायके लेप करे तो अत्यंत दाह और अग्निविसर्प इनको दूर करे । शीतपित्तकी चिकित्सामें जो भूनिंबादि काढा लिखा है वो इस विसर्प रोगमें देना चाहिये ।

न्यग्रोधपादोगुंद्राचकदलीगर्भएवच ।
एतैर्ग्रंथिविसर्पघ्नोलेपोधौताज्यसंयुतः ॥

अर्थ–वडकी जटा, गोंदी, और केलाका गाभा इनको पीस धुलेहुए घीके साथ लेप करे तो ग्रंथिविसर्पको दूर करे ।

शतधौतघृतोन्मिश्रशिरीषत्वग्रजःकृतः ।
लेपःशमयतिक्षिप्रंविसर्पंकर्दमाभिधम् ॥

अर्थ–सौवार धुलेहुए घीमें सिरसकी छालका चूर्ण मिलाय लेप करे तो कर्दमाभिध विसर्प दूर हो ।

कुष्ठामयस्फोटमसूरिकोक्तचिकित्सयाप्याशुहरेद्विसर्पान् । जलौकापातनंशस्तंचातुर्जाताम्बुसेचनम् ।प्रसेकाःपरिषेकाश्चशस्यंतेपंचवल्कलैः ॥

अर्थ–कुष्ठ, विस्फोटक, और मसूरिका इनकी चिकित्सा करके शीघ्र विसर्पको दूर करे । इस विसर्परोगमें जोखोंका लगाना उत्तम है । तथा चातुर्जातके काढेसें सेचन करना तथा पंचवल्कल (नीम, कचनार, मौलसिरी, सिरस, और बबूल)सें प्रसेक और परिसेक करना उत्तम कहा है ।

इति विसर्पचिकित्सा समाप्ता ।

अथ स्नायुकचिकित्सा ।

स्नेहस्वेदप्रलेपादिकर्मकुर्याद्यथोदितम् ।
रामठंशीततोयेनपीतंस्नायुकरोगनुत् ॥

अर्थ–स्नायुक (नहरुआ) में स्नेहविधि, स्वेदविधि, और प्रलेपादि कर्म यथाविधि करने चाहिये । शीतल जलमें हींग डालके पीवे तो नहरुआका रोग दूर हो ।

कुष्ठनागरशिग्रूणांकल्कःशुंठीसमन्वितः ।
निहन्यात्स्नायुकरुजंलेपतःपानतोऽपिच ॥

अर्थ–कूठ, सोंठ, और सहजनेके कल्कमें सोंठ मिलायके लेप करे तो नहरुएकी पीडा दूर हो । अथवा इनको पीवे तोभी नहरुआकी पीडा जाय ।

धत्तूरकदलैःस्वेदस्तैलाभ्यंगश्चशस्यते ।
शोणितंस्रावयेद्धूयःस्नायुकेशोथकारिणि ॥

अर्थ–अथवा धत्तूरके पत्तोंसें स्वेदन करे । वा तेलका मालिस करे । अथवा सूजन करनेवाले नहरुआमेंसें रुधिर निकलवावे तो अच्छा होय ।

अंगारसिद्धवृंताकतैलरामठसैंधवैः ।
संयुतंस्नायुकंहंतिमुखेवद्धंनसंशयः ॥

अर्थ–बैंगनको अँगारेपर भूनके उसमें तेल, हींग, और सैंधानिमक मिलाय नहरुआके मुखपर बांधे तो नहरुआ दूर होवे ।

स्वेदात्कांजिकसंसिद्धिर्भेकैरपिविनश्यति ।
तद्वद्बब्बूलजंबीजंपिष्टंहंतिप्रलेपनात् ॥

अर्थ–मेंडकेको कांजीमें पकायके नहरुएको सेककर बांध देवे तो दूर हो । अथवा बबूलके बीजोंको पीसके लेप करे तो नहरुआ दूर हो ।

गव्यंसर्पिस्त्र्यहंपीत्वानिर्गुंडीस्वरसंत्र्यहम् ।
पिबेत्स्नायुकमत्युग्रंहंत्यवश्यंनसंशयः ॥

अर्थ–गौका घी तीन दिन पीवे और सम्भालूका स्वरस तीन दिन पीवे तो अत्युग्रभी नहरुएका रोग अवश्य दूर हो ।

शिग्रुमूलदलैःपिष्टैःकांजिकेनससैंधवैः ।
लेपःस्नायुकरोगाणांशमनंपरमुच्यते ॥

अर्थ–सहजनेकी जड पत्तेन्को कांजीमें सेंधानिमक डालके पीसे फिर इसका लेप करे तो स्नायुकरोग दूर हो ।

अथमंत्रः ।

विरूपनाथबाह्मनकेपूत सूतकाढिकौंकियेबहूत । पाकैफूटेपीराकरैविरूपनाथकीआज्ञाफुरै ॥ अनेनमार्जनंस्नायुकस्थलेसप्तवारंपठित्वा गुडंभक्षणेप्रदातव्यम् ॥

अर्थ–इस मंत्रसे नहरुएके स्थानमें हाथ धरके७वार मार्जन करे और गुड खवाय देवे तो नहरुआ दूर हो ।

अहिंस्रामूलकल्केनतोयपिष्टेनयत्नतः ।
लेपात्संबंधनस्तंतुर्निःसरेन्नैवसंशयः ॥

अर्थ–कलहीसकी जडको जलसे पीस लेप करे तो नहरुआ निकल पडे इसमें संदेह नहीं है ।

इति स्नायुकचिकित्सा समाप्ता ।

अथ विस्फोटकचिकित्सा ।

विस्फोटेलंघनंकार्यंवमनंपथ्यभोजनम् । यथादोषबलंवीक्ष्य प्रयुंज्याच्चविरेचनम् ॥जीर्णशालिर्यवामुद्गामसूराआढकीतथा। एतान्यन्नानिविस्फोटेहितानिमुनयोब्रुवन् ॥

अर्थ-विस्फोटरोगमें लंघन वमन और पथ्य भोजन करे, तथा दोषोंका बलाबल देख जुल्लाब देवे। पुराने शाली चावल, मूंग, मसूर, और अरहर, इतने अन्न विस्फोटकरोगमें हित कहे हैं।

किराततिक्तकारिष्टयष्ट्याह्वांबुदपर्पटैः । पटोलवासकोशीरत्रि-फलाकौटजैःशृतम् ॥ द्वादशांगंनरःपीत्वाविस्फोटेभ्योविमुच्य-ते । विसर्पोक्तोदशांगलेपोवातरक्तोक्तःकैशोरकश्चात्रहितः ॥

अर्थ-चिरायता, कुटकी, नीमकी छाल, मुलहटी, नागरमोथा, पित्तपापडा, पटोलपत्र, अडूसा, खस, त्रिफला, और इन्द्रजो इनका काढा करके पीवे तो विस्फोटक रोग दूर हो। विसर्परोगमें जो दशांगलेप कहा है और वातरक्तमें कैशोर गुग्गुल कही है वो इस विस्फोटकरोगमें देने चाहिये।

पुत्रजीवस्यमज्जानांजलेपिष्ट्वाप्रलेपयेत् । कालविस्फोटकंस-द्योहन्यात्सर्वंसवेदनम् ॥ कक्षाग्रंथिगलग्रंथिकर्णग्रंथिंचनाश-येत् । अन्यच्चस्फोटकंताम्रंपुत्रजीवोविनाशयेत् ॥

अर्थ-जीयापोताके बीजकी मिंगीको जलमें पीस लेप करे तो पीडायुक्त काल विस्फोटकरोग दूर हो तथा कखलाई, गलेकी गांठ, कानकी गांठको नष्ट करे तथा ताम्रविस्फोटककोभी जीयापोता दूर करता है।

इति विस्फोटकचिकित्सा समाप्ता।

अथ फिरंगवातचिकित्सा ।

हितंचसर्पिषःपानंपथ्यंवापिविरेचनम् ।
हितःशोणितमोक्षश्चहितंचलघुभोजनम् ॥

अर्थ-फिरंगरोगमें घृतपान करना हित है, और विरेचन तथा रुधिरका निकलवाना एवं हलका भोजन करना हित है।

सूतकंदरदंतुत्थंकासीसंगंधकंसमम् ।
अवघृष्योपदंशानांक्षतेलेपःप्रशस्यते ॥

अर्थ—पारा, हिंगलू, लीलाथोथा, कसीस, और गंधक इनको समान भाग ले, जलमें पीस घावपर लेप करे तो उपदंश दूर हो ।

आलतांगारशिखिनास्वेदनंकार्यतेबुधैः । सप्तरात्रादयंयोगः सुखिनंकुरुतेनरम् ॥ सूतकाद्योलेपःशिश्ने ॥

अर्थ—निर्धूम अग्निसें यदि उपदंशको स्वेदन करे, इस प्रकार सात रात्रि करनेसें रोगी सुखी होय । और इस फिरंगरोगमें लिंगके अधोभागमें सूतकादि लेप जो आगे कहेंगे सो लेप करे ।

एकोत्तरशतंधौतनवनीतप्रलेपनम् ।सतुत्थंचससिक्थंचकर्षमेवपृथक्पृथक् ॥ कंपिल्लकंचाविहरःसिंदूरंसोरकंचैव । मुरदाशंखंचेतिपित्तलपात्रेविपाचितंशिखिना ॥ मंदेनाथोन्मथ्यस्वपाणिनोद्धृत्यतत्सिद्धम् । सितवस्त्रेसंलिप्यव्रणोपरिस्थापयेत्सम्यक् ॥ क्षतमुपदंशंसर्वंसशूकदोषंफिरंगजंहन्यात् । शस्त्रकृतं नखजातंदंतजमाशुव्रणंशिखिजम् ॥ दृष्टप्रत्ययमेतत्प्रकाशितं बालबोधाय ।

अर्थ—एकसौ एकवार धुलेहुए मक्खनमें लीलाथोथा मोम प्रत्येक एक एक तोले एवं कवीला विहर सिंदूर सोरा और मुरदाशंख इनको पीतलके पात्रमें भर आंचपर पकावे जब पकजावे तब उतार ले और हाथसें मथडाले फिर इसको सफेद कपडेके टुकडेपर लगायके घावके ऊपर धरे तो घाव, उपदंश, शूकदोष, फिरंगदोष, शस्त्रका घाव, दांतका घाव, और अग्निका घाव, ए तत्काल दूर हो । यह हमारा आजमाया हुआ प्रयोग बालबोधके लिये लिखदीना है ।

सेटकस्याष्टमोभागःसिंदूरःसेटमात्रकं । गोसर्पिःसम्यगामर्द्यपश्चात्संलेपयेत्ततौ ॥ फिरंगिनांत्रिदिवसात्कोद्रवोत्थपलालकैः । संबद्धवपुषांपथ्येदुग्धौदननिषेविणाम् ॥ व्रणविस्फोटकाःसर्वेस्वयंसंशुष्यसर्वतः ।पतंत्यंगान्नसंदेहोगोपालकृतनिश्चयः॥

अर्थ—सिंदूर आदपा, और गौका घी सेरभर, दोनोंको मिलायके मथलेवे । फिर

इसको देहमें लगावे और पीछे कोदोंका परालको देहमें लपेटे और दूधभातका पथ्य करे तो व्रण, विस्फोटक, ए सब स्वयं सूख देहमेंसें गिरजावे, यह गोपाल-वैद्यका निश्चय करा प्रयोग है ।

रसनागौसमौशुद्धौसम्यक्खल्वेविमर्दयेत् । गोधूमवल्कलंचिंचाफलंनिंबदलंतथा ॥ अंगारधूमंसंमर्द्यनिंबूफलरसेनतु । शाणद्वयेनगुटिकांखदिरांगारकेक्षिपेत्। वस्त्रेणाच्छाद्यतत्पश्चात्सम्यग्धूमंचपाययेत् । सप्तरात्रप्रयोगेणसर्वविस्फोटनाशनः॥ क्षीरंशाल्योदनंदेयमेकविंशतिवासरान् ॥

अर्थ–पारा १ तोले, सीसा १ तोले, दोनोंको खरलमें डाल, गेंहूकी भूसी, इमलीके फल, नीमके पत्ते, घरका धूँआ, इन सबको नींबूके रसमें घोट ८ मासेकी गोली करे । १ गोली हुकेमें धरके ऊपर खैरके जलते हुए कोले भरके पीवे तो ७ दिनमें सर्वप्रकारके विस्फोटक (फोडा) दूर हो । इसके उपर दूधभात २१ दिन पथ्य देवे ।

त्रिफलाखादिरंसारंजातीपत्रंसमांशकम् ।
निःक्काथ्यक्षालयेदास्यंधूमव्यापत्तिनाशनम् ॥

अर्थ–त्रिफला, खैरसार, और चमेलीके पत्ते इनको बराबर ले काढाकरके कुल्हे करे तो धुमपानके विकारसें जो मुख दूषित हुआ हो वह अच्छा होवे ।

फिरंगवातकेसरी रसः ।

कालाजाजीचकंकुष्टंटंकत्रयमितंपृथक् । उभयोःसार्द्धगुणितं गुडंजीर्णविनिक्षिपेत् ॥ संचूर्ण्यसर्वमेकत्रगुटीःपंचदशाचरेत् । प्रातःसायंचभोक्तव्यागुटिकासप्तवासरम्॥ गोधूमरोटिकासर्पिर्युक्ताभक्ष्यातुकेवला । फिरंगजनिताःसर्वोपद्रवायांतिसंक्षयंम्॥ नास्त्यनेनसमोयोगःफिरंगजनितेगदे ।

अर्थ–कलोजी, मुरदाशंख, प्रत्येक तीन तीन टंक ले । इन दोनोंसें डोढा पुराना गुड लेवे, सबको कूट पीस पंद्रह गोली बनावे । एक एक गोली प्रातःकाल और सायंकालको इसप्रकार सात दिन खाय, इसके ऊपर गेंहूकी रोटी घीके साथ फक्त खाय और कुछ न खाय, तो फिरंगजनित सर्व उपद्रव दूर हो । इसके समान फिरंगरोगके ऊपर दूसरा प्रयोग नहीं है । परंतु यह प्रयोग बडा दुष्ट है नेकभी कुपथ्य करनेसे मुह आय जाता है । और बहुत दुखदेता है यह हमारा अनुभव करा है ।

संप्रसारणीगुटिका ।

षण्माषंहिंगुलंचैवटंकणंदशमाषकम् । आकारकरभंसिक्थंद-शमाषंपृथक्पृथक् ॥ प्रोक्तासिक्थेनवटिकाबदरीबीजसन्नि-भा । धूमपानायदेयैकाप्रातर्बब्बूलजाग्निना ॥ गोघृताक्ताय-वस्यैवरोटिकाऽलवणाऽशने । फिरंगिणेप्रदातव्याऽनिशंतां-बूलवीटकम् ॥ यस्तुवायुफिरंगार्त्तःसनरःसुखभाग्भवेत् । चतु-र्दशदिनैरेवनात्रसंदेहइरितः ॥

अर्थ—हींगलू ५ मासे, सुहागा १० मासे, अकरकरा, और मोम प्रत्येक दश-दश मासे; सबको घोटके बेरकी गुठलीके समान गोली बनावे । इसमेंसे १ गोली हुक्केमें धर बबूलकी आचसें पीवे और इसके ऊपर गौके घीमें सनीहुई रोटी विना नोनके देवे, और रात्रिमें पानका वीडा चबावे, तो फिरंगवात १४ दिनमें अवश्य नष्ट होवे ।

सौभांजनमहानिंबझाबुकारिष्टभृंगराट् । शरपुंखाकंटकारीकां-चनारत्वचासमा ॥ एतेषांसत्वचोग्राह्याःसमभागास्तुशुष्कि-ताः । शृतमष्टावशिष्टंतत्पलंहंतिफिरंगकम् ॥ वातमंतर्गतंव्या-धिंसप्तरात्रान्नसंशयः । अनुपानेप्रयोक्तव्यंचूर्णमूषणसंभवम् ॥

अर्थ—सहेंजना, वकायन, झाऊ, नीम, भांगरा, सरफोका, कटेरी, कचनार इनकी छाल बराबर ले, सबको सुखाय अष्टावशेष काढा करे, टकेभर पीवे तो फिरंगरोग, वादिके भीतरके रोग इन सबको सातदिनमें दूर करे । इसके ऊपर कालीमिरचका चूर्ण अनुपान है ।

शाणंहिंगुलकंशाणंकुनट्यायवचूर्णकम् । शाणद्वादशकंबद्ध्वा वटींबदरसन्निभाम् ॥ बदरीमूलशिखिनाप्रक्षिप्यैकांवटींप्रगे । सायंधूमंगुदेदद्याद्धंतिमामाफिरंगकम् ॥ वातंनचात्रसंदेहोनुर्नि-र्वातस्थितस्यच । परिभ्यक्तपटोःसप्तदिनाद्वाद्विगुणावधेः ॥

अर्थ—हिंगलू १ टंक, मनसिल १ टंक, जोंका चून १२ टंक, सबको जलमें सानके बेरके समान गोली बनावे, १ गोली बेरकी आंचसें प्रातःकाल और सा-यंकालमें गुदाको धूआ देवे तो फिरंगवात, बादि, इनको दूर करे । इसका साधन करनेवाला रोगी पवनरहित स्थानमें रहे और ७दिन या १४ दिनतक नोन न खाय ।

दरदंटंकमात्रंस्याद्यावचूर्णंत्रितोलकम् ।टंकणंकर्षमेकंचाघृष्यै-तत्रितयंक्षणात् ॥ आबद्धचवटिकांवाराबदरीप्रमितांबुधः । तस्याधूमंप्रगेदद्यात्पातुंकोलाग्निनास्यनु ॥ आच्छादितांगि-नःसायंगोदुग्धौदनसेविनः । चतुर्दशदिनाज्जंतोस्तांबूलखदि-राशिनः ॥ सोपिमुक्तोभवेद्रोगःफिरंगानिलतोद्रुतम् ।

अर्थ—हिंगलू ४ मासे, जौका चून ३ तोले, सुहागा १ तोले, तीनोंको जलसैं पीस बेरके समान गोली बनावे, एक गोलीको बेरकी लकडीकी आंचपर धरके प्रातःकाल धूआं पीवे, सायंकालको अंगोंको ढकके धूआं लेवे, गौका दूध और भात पथ्य देवे, और खैरसार धरके बीडी खाय तो फिरंगरोगसैं तत्काल निवृत्त होय।

रसकपूरसेवनम् ।

गोधूमचूर्णसन्नीयविदध्यात्सूक्ष्मकूपिकाम् । तन्मध्येरसकर्पू-रंचतुर्गुंजामितंक्षिपेत् ॥ ततस्तुगुटिकांकुर्य्याद्यथानस्याद्रसो बहिः । लवंगसूक्ष्मचूर्णेनतांवटीमवधूलयेत् ॥ दंतस्पर्शोय-थानस्यात्तथातामंभसागिलेत्।तांबूलंभक्षयेत्पश्चाच्छाकाम्ल-लवणंत्यजेत् ॥ श्रममातपमध्वानंविशेषात्स्त्रीनिषेवणम् । फिरंगसंज्ञकोरोगःसर्वथाप्रशमंव्रजेत् ॥ भक्षितोनेनविधिना मुखशोथंनविंदति ॥

अर्थ—अब रसकपूरके साधनेकी और खानेकी विधि कहते हैं । गेंहूके चूनको पानीसें उसने, उसकी कुप्पीसी बनाय उसके बीचमें ४ रत्ती रसकपूर धरके गोली बनाय लेवे, फिर उस गोलीको लौंगके चूर्णसें लपेट लेवे और दांत न लगे इस रीतिसें इस गोलीको पानीसें निगल जावे, ऊपर विना चूने कत्थेके पानकी बीडी खाय, इसका खानेवाला साग, खटाई, नोन, परिश्रम करना, धूपमें डोलना, मार्ग चलना, और स्त्रीसंग, इनको त्याग देय तो फिरंगरोग सर्वथा नष्ट होवे इस प्रकार खानेसें मुखसोथ (मुहआना) नहीं होता ।

अथ प्रसंगवशात्पारदोत्पन्नमुखपाकचिकित्सा ।

पंचवल्ककषायेणगंडूषंकारयेद्भिषक् ॥

अर्थ—अब प्रसंगवश पारा खानेसें मुह आय जाता है उसकी चिकित्सा लिखते हैं । पंचवल्कल (बड, गुलर, पीपर, सिरस, और पाखर, इनकी छाल) के काढेसें कुल्ले करे तो मुखपाक दूर हो ।

पलार्द्धंजीरकंचैवखदिरंकर्षमात्रकम् ॥ जलेनपेषयित्वातुक-
वलंकारयेद्भिषक् । तेनैवोपशमंयातिमुखपाकंसुदारुणम् ॥

अर्थ–जीरा २ तोले, कत्था १ तोले, दोनोंको जलमें पीसके मुखमें रक्खे तो इससे घोर मुखपाक दूर हो ।

फिरंगरोगके उपद्रव ।

कार्श्यंबलक्षयोनासाभंगोवह्नेश्चमन्दता । अस्थिशोषोऽस्थि-
वक्रत्वंफिरंगोपद्रवाअमी ॥ बहिर्भावोभवेत्साध्योनूतनोनि-
रुपद्रवः । आभ्यंतरस्तुकष्टेनसाध्यःस्यादयमामयः ॥

अर्थ–देहका कृश होना, बलका नाश, नाकका बैठना, मंदाग्नि, हड्डियोंका सूखना, और टेढी होना, ये फिरंगरोगके उपद्रव है । जो फिरंगरोग बाहरकी तरफ नवीन हुआ हो और उपद्रवरहित हो वो साध्य है । और जो भीतरी हुआ हो वो कष्टसाध्य कहा है ।

इति फिरंगवातचिकित्सा समाप्ता ।

अथ मसूरिकाचिकित्सा ।

रालहिंगुरसोनैश्चधूपयेत्ताःमसूरिकाः ।
कृमयोनपतंत्यत्रजाताःशाम्यंतितेलघु ॥

अर्थ–शीतलाओंको राल, हिंग, और लहसनकी धूनी देय तो उनमें कृमि नहीं पडे, और यदि पडभी गई हो तो इस धूनीके देतेही शांति हो जावे ।

आर्द्रकस्वरसंदद्यादार्द्रकंवापिभक्षयेत् । कफकोपेघुर्घुरकेकंठ-
रोधेत्रसत्वरम् ॥ मसूरिकायांकुष्ठोक्तालेपनादिक्रियाहिता ।
पित्तश्लेष्मविसर्पोक्तायाचाप्यत्रप्रशस्यते ॥

अर्थ–यदि शीतलामें बालकका कंठ रुकजावे, और कफ घर्र घर्र बोले उसको अदरकका स्वरस अथवा अदरख खवावे तो कफ जाता रहे । मसूरिकारोगमें कुष्ठोक्त लेपनादिक क्रिया करना हित है । तथा पित्तकफको विसर्पमें जो चिकित्सा कही है वो करनी चाहिये ।

खदिरत्रिफलारिष्टपटोलामृतवासकैः ।
क्काथोष्टभागोजयतिरोमांतिकमसूरिकाः ॥

अर्थ—खैरसार, त्रिफला, नीमकी छाल, पटोलपत्र, गिलोय, और अडूसा इनका अष्टभागावशेष काथ कर पीवे तो रोमांतिक मसूरिका दूर हो।

उन्नाभ्यांकृतदोषस्यविशुष्यंतिमसूरिकाः।
निर्विकाराश्चाल्पपूयाःपच्यंतेचाल्पवेदनाः॥

अर्थ—दोषोंके शांति होनेसैं शीतला सूखती है, और निर्विकार थोडी राधवाली तथा अल्पपीडासैं पचजाती है।

निंबपर्पटकंपाठापटोलंकटुरोहिणी। वासादुरालभाधात्रीमुशीरंचन्दनद्वयम्॥ एषनिंबादिकःक्काथःपीतःशर्करयान्वितः। मसूरींसर्वजांहन्तिज्वरंवीसर्पसंभवम्॥ उत्थिताप्रविशेद्यातुपुनस्तांबाह्यतोनयेत्।

अर्थ—नीमकी छाल, पाठ, पटोलपत्र, कुटकी, अडूसा, धमासो, आमले, खस, सपेद चंदन, लाल चंदन, यह निंबादिकाढा खांड डालके पीवे तो सर्व प्रकारकी शीतला, ज्वर, विसर्परोग, और जो शीतला निकल कर बैठगई हो उसको यह काथ फिर बाहर निकाल देवे।

श्वेतचंदनकल्काढ्यंहिलमोचीभवद्रवम्।
पिबेन्मसूरिकारंभेनैववाकेवलंरसम्॥

अर्थ—सपेद चंदनके कल्कमें हुरहुरका रस मिलाय शीतलाके प्रारंभमें पीवे तो शीतला कम निकले, अथवा केवल हुरहुरकाही रस पीवे।

चंदनंवासकोमुस्तंगुडूचीद्राक्षयासह।
एषशीतकषायस्तुशीतलाज्वरनाशनः॥

अर्थ—चंदन, अडूसा, नागरमोथा, गिलोय, और दाख, इनके काढेको शीतल करके पिवावे तो शीतलाका ज्वर दूर हो।

तासांमध्येयदाकाश्चित्पाकंगत्वास्रवंतिच। तत्रावधूलनंकुर्याद्वनगोमयभस्मना॥ निंबपत्रस्यशाखाभिर्मक्षिकामपसारयेत्। स्तोत्रंचपठेत्॥

अर्थ—उन मसूरिकाओंमें जो पकगई हो और स्राव होताहो तो उनमें आरने-उपलोंकी राख लगावे। मातावाले बालककी नीमकी डालीसैं मक्खी हटाता रहे। और शीतलाके स्तोत्रादिकोंका पाठ करे तो शीतला दूर हो।

इति मसूरिकाचिकित्सा समाप्ता।

अथ क्षुद्ररोगचिकित्सा ।

पैत्तिकस्यविसर्पस्ययाचिकित्साप्रकीर्त्तिता ।
तयैवभिषगेतांचचिकित्सेदिरिवेल्लिकाम् ॥

अर्थ–जो पित्तके विसर्पकी चिकित्सा लिखी है उसीसे इरिवेल्लिका फुंसीकी चिकित्सा करे ।

भिषक्पनसिकांपूर्वस्वेदयेदथलेपयेत् । कल्कैर्मनःशिलाकुष्ठ निशातालकदारुजैः॥पक्कांविज्ञायतांभित्त्वाव्रणवत्समुपाचरेत्॥

अर्थ–वैद्य प्रथम पनसिका फुंसीको स्वेदन करे फिर मनसिल, कूट, हलदी, हरताल, और दारुहलदीको पीस लेप करे जब वो पकजावे तब चीरा देकर व्रणके समान चिकित्सा करे ।

लोध्रधान्यवचालेपस्तारुण्यपिटिकापहः।तद्वद्गोरोचनायुक्तंमरिचं मुखलेपितम्॥सिद्धार्थकवचालोध्रसैंधवैश्चप्रलेपनम् । वमनंचानिहं त्याशुपिडकायौवनोद्भवाः ॥ केवलाःपयसापिष्टास्तीक्ष्णाःशा- ल्मलिकंटकाः । अलिप्तंत्र्यहमेतेनभवेत्पद्मोपमंमुखम् ॥

अर्थ–जवानीके मुहासे लोध, धनिया, और वचका लेप करनेसें दूर हो । उसीप्रकार गोरोचन, और कालीमिरचके लेपसै दूर हो । सिरसो, वच, लोध, और सैंधानिमकके लेपसें मुहासे दूर हो तथा वमन लेनेसें मुहासे दूर हो । अथवा केवल दूधमें सेमरके कांटोंको पीस तीन दिन लेप करे तो मुख कमलके समान सुंदर मुहासेरहित हो ।

शिरावेधैःप्रलेपैश्चतथाभ्यंगैरुपाचरेत् । व्यंगंचनीलिकांवापि न्यच्छंचातिलकालकम् ॥ वटांकुरामसूराश्चप्रलेपाद्व्यंगनाशनम् ॥

अर्थ–व्यंग (झाँई) नीलिका न्यच्छ और तिल ये फस्त खोलना, प्रलेप, और उबटना आदि उपायोंकर्के दूर करे । वडकी जटा और मसूरकी दालको पीसकर लेप करनेसें व्यंग (झाँई) दूर हो ।

मुरदाशंखहरिद्राभ्यांरक्तचंदनकैस्तथा । पेषयित्वाजलेनैवले- पंकुर्यात्ततोमुखे ॥ मुखकार्ष्ण्यंशमंयातिनीलीव्यंगादिकंजयेत् ।

अर्थ–मुरदाशंख, हरदी, लाल चंदन, इनको जलमें पीस मुखपर लेप करे तो मुखकी कालौच, नीली, व्यंगादि दूर हो ।

तंदुलीयअपामार्गःसमूलश्चसमाहरेत् । दग्ध्वाक्षारंप्रकुर्वीतपादांशंस्वर्जिकांक्षिपेत् ॥ शुक्तिचूर्णंततश्छित्त्वावस्त्रपूतंसमाचरेत् । क्षुरेणप्रच्छदंदत्वालेपंकृत्वाप्रयत्नतः ॥ मांसवृद्धिंहरत्येषचिरकालोद्भवंनृणाम् । कक्षारोहिणीप्रभृतिषुदशांगोलेपएवकार्यः ॥

अर्थ–चौलाई, और ओंगा, इनको जडमुद्धा उखाड लावे, फिर जलायकर खार बनावे, इस खारका चतुर्थांश सज्जी डाले, और सीपका चूर्ण डाले सबको पीस कपडछान करलेवे फिर छुरासे कुछ छीलके लेप करे तो मांसवृद्धिको हरण करे । कखलाई और रोहिणी आदि रोगोंमें दशांग लेप करना चाहिये ।

चिप्पंरुधिरमोक्षेणशोधनेनाप्युपाचरेत् । काश्मर्याःसप्तभिः पत्रैःकोमलैःपरिवेष्टितः ॥ अंगुलीवेष्टकःपुंसांध्रुवमाशुप्रशाम्यति । नखकोटिप्रविष्टेनटंकणेनतुशाम्यति ॥ कुनखश्वेतदाशैलःसलिलेप्लवतेऽपिच ॥

अर्थ–चिप्पा रोगको रुधिर निकलवानेकरके और शोधनकरके साधन करे, कंभारीके कोमल सात पत्रोंकरके उंगली लपेट देवे तो अंगुलीवेष्टकरोग दूर हो । तथा नखकोटिप्रविष्टरोग सुहागेसें दूर होता है । कुनखरोग मनसिलके लगानेसें दूर हो ।

सर्ज्जाह्वकुष्ठसैंधवसितासिद्धार्थप्रकल्पितोयोगः ।
उद्वर्त्तनेननियतंशमयतिवृषणस्यकंडूतिम् ॥

अर्थ–राल, कूठ, सैंधानिमक, और सपेद सरसों, इने जलमें बारीक पीस उवटना करे तो अंडकोशोंकी खुजली शमन हो ।

पद्मिन्याःकोमलंपत्रंयःखादेच्छर्करान्वितम् ।
एतन्निश्चित्यानिर्दिष्टंनतस्यगुदनिर्गमः ॥

अर्थ–जो मनुष्य कमलनीके कोमलपत्रोंको खांडके साथ खाय तो उसकी फिर कभी कांछ न निकले ।

मूषकाणांवसाभिर्वागुदभ्रंशेप्रलेपनम् ।
सुस्विन्नमूषिकामांसेनाथवास्वेदयेद्गुदम् ॥

अर्थ-मूसेकी चर्बी लेप करनेसें कांछका निकलना बंद होय, अथवा मूसके मांससें निकली हुई कांछको सेके तो फिर न निकले ।

रजनीमार्कवंमूलंपिष्टंशीतेनवारिणा ।
तल्लेपाद्धंतिवीसर्पवाराहदशनाह्वयम् ॥

अर्थ-हरदी, भांगरेकी जड, इनको शीतल जलसें पीस लेप करे तो विसर्प और सूकरदंष्ट्ररोग दूर हो ।

क्षुद्रास्वरससिद्धेनकटुतैलेनलेपयेत् ।
ततःकासीसकुनटीतिलचूर्णैर्विचूर्णयेत् ॥

अर्थ-कटेलीका रस डालकर सिद्ध करे तेलका लेप कर उसके ऊपर कसीस, मनसिल, और तिल इनका चूरा बुरक देवे तो अलसरोग दूर हो ।

सर्जाह्वसिंधूद्भवयोश्चूर्णंमधुघृतप्लुतम् ।
निर्मथ्यकटुतैलाक्तंहितंपादप्रमार्जनम् ॥

अर्थ-राल, और सैंधानिमकके चूर्णको सहत घीमें मिलाय कडुए तेलमें मथकर लगावे तो पैरोंकी बिवाई और खारुएआदि दूर हो ।

मधुसिक्थकगैरिकघृतगुडमाहिषाक्षसालनिर्यासैः ॥
शिलाजतुसहितैर्लेपःपादस्फुटनापहःसिद्धः ॥

अर्थ-सहत, मोम, गेरु, घृत, गुड, भैंसागूगल, राल, और शिलाजीत, इनको पीस एकत्र कर पैरोंमें लगावे तो पैरोंका फटना दूर हो ।

दहेत्कदरमुद्धृत्यतैलेनदहनेनवा । श्यामजीरककर्षैकंद्विकर्षं नवसादरम्॥ त्रिकर्षंशुक्तिकाचूर्णंचतुःकर्षंचतुत्थकम्।जयंती-पुष्पस्वरसैर्भृंगराजरसैस्तथा ॥ मर्दयित्वाप्रयत्नेनशोषयेदातपेनच।ततोवत्सतरीमूत्रैर्गुटिकांकारयेद्बुधः॥शोषयित्वाततः सर्वंवत्समूत्रेणघर्षयेत् । लेपनादस्यनश्यंतिचिरकालोद्भवा नृणाम् ॥ चर्मकीलोजतुमणिर्मसकास्तिलकालकाः ।

अर्थ-कदरनामक जो पैरोंमें गाठसी पडजाती है उसको उखाडकर तेलसें अथवा अग्निसे दाग देवे। काला जीरा १ तोला, नोसादर २ तोला, सीपका चूर्ण ३ तोले, लीलाथोथा ४ तोले, इनको वेतमजनूके फूल वा अरनीके फूलके रसमें अथवा भांगरेके रसमें खरल कर धूपमें सुखाय लेवे फिर बछियाके मूत्रसें गोली

बनायके सुखाय ले इस गोलीको वछडेके मूत्रमें घिसकर लेप करे तो बहुत दिनोंका चर्मकीलरोग, लहसन, मस्से, और तिल ए सब दूर हो ।

दरदंभर्जितंतुत्थंप्रत्येकंकर्षसंमितम्।कर्षार्द्धंचैवसिन्दूरंरालचूर्णंत्रिकार्षिकम् ॥ गोघृतंषट्पलंदत्वाकांस्यपात्रेऽथलोहजे । ताम्रदंडेनसंघृष्यकज्जलाभंसमाचरेत् ॥ लेपनादस्यनश्यंति कंडूविस्फोटकादयः ।

अर्थ-शिंगरफभुना, लीलाथोथा प्रत्येक एक एक तोले, सिंदूर, राल, दोनों तीन तीन तोले, गौका घृत २४ तोले मिलाय कांसीकी थाली अथवा लोहेके पात्रमें तामेके घुटनेसें घोटे जब कज्जलके समान होजाय तब लगावे तो खुजली और फोडे आदि दूर हो ।

लोहभाजनयुग्मेनसगंधरसतुत्थकम् ।
अंत्यासंवर्द्धयेद्धीमान्सर्पिःकंडूहरंपरम् ॥

अर्थ-लीलाथोथा १ तोला, पारा२ तोला, गंधक ३ तोले, इनमें घी डालके पकावे इस घीके लगानेसें खुजली दूर होवे ।

इति क्षुद्ररोगचिकित्सा समाप्ता ।

अथ शिरोरोगचिकित्सा ।

वातिकेतुशिरेलेपंभुक्तंपानान्नभेषजम् । श्लैष्मिकेलंघनंरूक्षंलेपस्वेदादिकारयेत् ॥ रक्तजेतत्रपित्तघ्नोविधिश्चास्रविमोक्षणम्। सन्निपातसमुत्थेत्रघृतंतैलंचबस्तयः ॥ धूमनस्यंशिरोरेकलेपस्वेदाद्यमाचरेत् ।

अर्थ-वादीके मस्तकरोगमें भोजनके उपरांत लेपादि करे, कफकेमें लंघन, रूक्ष पदार्थका लेप, और स्वेदादि विधि करे, रुधिरके मस्तकरोगमें पित्तनाशकविधि करे, और फस्त खुलावे, संनिपातकेमें घृत तेल बस्ती धूम नस्य मस्तकपर लेप और स्वेदादिक विधि करनी चाहिये ।

त्रिकटुकपुष्कररजनीरास्नासुरदारुतुरगगंधानाम् ।
क्वाथःशिरोर्त्तिजालंनासापीतोनिवारयति ॥

अर्थ-त्रिकुटा, पुहकरमूल, हलदी, रास्ना, देवदारु, और असगंध, इनके काढेको नाकके रास्तेसें पीवे तो मस्तककी पीडा दूर हो।

नागरकल्कविमिश्रंक्षीरंनस्येनयोजितंनॄणाम्।
नानादोषोद्भूतांशिरोरुजंहंतितीव्रतराम्॥

अर्थ-दूधमें सोंठका कल्क मिलायके नस्य लेय तो अनेक प्रकारकी तीव्र मस्तकपीडा दूर हो।

संक्षुद्यशर्कराद्धांशादाडिमीकलिकाःशुभाः।
घ्नंतिस्वरसनस्येनसद्योमूर्ध्निरुजंपृथुम्॥

अर्थ-अनारकी कलीका रस निकाल उसमें रसका आधा भाग मिश्री मिलाय नस्य देवे तो तत्काल मस्तकपीडा दूर हो।

कुष्ठमेरंडमूलंचलेपात्कांजिकपेषितम्।
शिरोर्त्तिंनाशयत्याशुपुष्पंवामुचकुंदजम्॥

अर्थ-कूठ, और अंडकी जडको कांजीमें पीसके मस्तकपर लेप करनेसें मस्तकपीडा दूर हो। उसीप्रकार मुचकुंदके फूलोंका लेप गुण करता है।

देवदारुनतंकुष्ठंनलदंविश्वभेषजम्।
लेपःकांजिकसंपिष्टस्तैलयुक्तःशिरोर्त्तिनुत्॥

अर्थ-देवदार, छड, कूठ, नेत्रवाला, और सोंठ, इनको तेल कांजीमें पीस लेप करे तो मस्तकपीडा दूर हो।

नस्येनकलिकाचूर्णनवसादरजंरजः।
वातश्लेष्मभवांपीडांशिरसोहंतिसर्वथा॥

अर्थ-कलीका चूना, और नोसादर दोनोंका चूर्ण कर नास लेनेसें वातकफकी पीडा मस्तककी दूर होय।

षड्बिंदुघृतम्।

मधुकमधूकविडंगैःसभृंगराजनागरैर्घृतंसिद्धम्।
षड्बिन्दुनस्यदानादेतच्छीर्षामयंहंति॥

अर्थ-मुलहटी, महुआ, वायविडंग, भांगरो, और सोंठ, इन औषधोंके काढेसें घत सिद्ध करे, इस घृतकी छः बूंद नस्यद्वारा लेय तो मस्तकपीडा दूर हो।

षड्बिंदुतैलम् ।

एरंडमूलंतगरंशताह्वाजीवंतिरास्नाअपिसैंधवंच । भृंगंविडंगं मधुयष्टिकाचविश्वौषधंकृष्णतिलस्यतैलम् ॥आजंपयस्तैलस-मानमेवचतुर्गुणंभृंगरसंचदत्वा । युक्त्याविपक्वंलघुनाग्निनै-तत्षड्बिंदुनामप्रभवेत्तुतैलम् ॥ षड्बिन्दवोनासिकयास्ययो-ज्याःशीघ्रंनिहन्युःशिरसोगदांस्ते । च्युतांश्चदत्तान्पलितांश्च केशान्दुर्बद्धमूलांश्चदृढीकरोति ॥ सुपर्णचक्षुःप्रतिमंचचक्षुर्बा-ह्वोर्बलंचाप्यधिकंकरोति ॥

अर्थ—अंडकी जड, तगर, सोंफ, डोडी, रास्ना, सैंधानिमक, भांगरा, वायविडंग, मुलहटी, और सोंठ, सब समान ले । काले तिलका तेल सेरभर, बकरीका दूध सेरभर, भांगरेका रस ४ सेर, सबको एकत्र कर मंद आंचसें तैलकी विधिसें पकावे, यह षड्बिंदुतैलकी नास लेनेसैं मस्तकके रोग, बालोंका गिरना, फटना, तथा सपेद होना दूर हो। और बाल दृढ हो गीधके समान नेत्रकी ज्योति हो और अधिक बल हो।

निश्चलस्योपविष्टस्यतैलैरुष्णैःप्रपूरयेत् । शिरोबस्तिर्जयत्ये-वशिरोरोगंसमुद्भवम्॥हनुमन्याक्षिकर्णार्त्तिमर्दितंमूर्द्धकंपनम्। तैलेनापूर्यमूर्द्धानंपंचमात्राशतानिच ॥ तिष्ठेच्छ्लेष्मणिपित्ते-ष्टौदशवातेशिरोगते । विनाभोजनमेवायंशिरोबस्तिःप्रशस्य-ते ॥ पंचाहंषडहंवापिसप्ताहंचैवमाचरेत् ।

अर्थ—मस्तक रोगीको निश्चय बैठारकर गरम तेलसैं शिरोबस्ती करावे, तो मस्तकरोग दूर हो, ठोडी, मन्यानाडी, नेत्र, कानके, मस्तकके रोग, काँपनेको दूर करे । तेलसैं मस्तक परिपूर्ण कर दे १०५ मात्रा पर्यंत तेलको रक्खे, यह कफकेमें है । पित्तके रोगमें आठ मात्रा, वातके मस्तकरोगमें दशमात्रा पर्यंत ठहरे, फिर तेलको निकाल डाले यह विधि प्रातःकाल विना भोजन करे करनी चाहिये यह ५।६ अथवा सात दिन करे ।

क्षयजेतुशिरोरोगेकर्त्तव्योबृंहणोविधिः । पानेबस्तौचसर्पिः स्याद्वातघ्नमधुरैर्घृतम्॥क्षयकासापहंचात्रसर्पिःपथ्यतमंमतम्।

अर्थ—क्षयजन्य मस्तकरोगमें बृंहणविधि करे, पीनेमें और बस्तिकर्ममें वातना-

शक और मधुर औषधोंके काढेसें सिद्ध करा हुआ घी तथा क्षय और खांसी नाशक घृत इसरोगमें पथ्य है ।

क्रृमिजेतुशिरोरोगेव्योषातिक्ताह्वशिग्रुजैः । अजामूत्रेणसंपिष्टैर्नस्यंक्रृमिहरंपरम्॥विडंगंस्वार्जिकादंतीहिंगुगोमूत्रसंयुतम् । विपक्वंसार्षपंतैलंक्रृमिघ्नंनस्यतःस्मृतम् ॥

अर्थ–कृमिजन्य मस्तकरोगमें त्रिकुटा, कुटकी, और सहजनेके बीजोंको बकरीके मूत्रमें पीसके नास लेवे तो मस्तकके पीडा दूर हो । अथवा वायविडंग, सज्जी, दंती, और हींग, इनको गोमूत्र मिलाय सरसोंके तेलमें पकावे, इस तेलकी नास लेनेसें मस्तककी कृमि दूर हो ।

सूर्यावर्तेशिरावेधोनावनंक्षारसर्पिषोः । हितःक्षारघृताभ्यांचसहरेच्चापिरेचनम् ॥ भृंगराजरसश्छागक्षीरतुल्योर्कतापितः। सूर्यावर्त्तंनिहंत्याशुनस्येनैषप्रयोगराट् ॥

अर्थ–सूर्यावर्त्त (आधासीसी) रोगमें शिराका वेध (फस्त खोलना) क्षार और घीका नास अथवा जवाखार और घृत मिलायके खाय तो सूर्यावर्त्तरोग जाय, अथवा जुल्लाब देनेसें यह रोग जाय, अथवा भांगरेके रसको बकरीके दूधमें बराबरका मिलाय धूपमें तपाय नस्य लेवे तो सूर्यावर्त्तरोग जाय ।

सशर्करंकुंकुममाज्यभृष्टंनस्यंविधेयंपवनासृगुत्थे । भ्रूशंखनासाक्षिशिरोर्द्धशूलेदिनाभिवृद्धिप्रभवेऽपिरोगे ॥

अर्थ–वादी और रुधिरसें मस्तकपीडा होतीहो तो खांड केशर और घी इनको भूनके नास देवे तो भौंह, कनपटी, नाक, नेत्र आधे मस्तकका शूल, और सूर्यावर्त्त रोग दूर हो और वादी रक्तकी पीडा जाय ।

सितोपलायुतंघृष्टंमदनंगोपयोन्वितम् । नस्यतोऽनुदितेसूर्येनिहंत्येवार्द्धभेदकम् ॥ पत्वाशशमुंडरसंमरिचैरवचूर्णितम् । भोजनादौतुसप्ताहात्सूर्यावर्त्तार्द्धभेदकौ ॥ हंतिसर्वात्मकौशीर्षदुःखदौभृशदारुणौ ।

अर्थ–मैनफलमें मिश्री मिलाय गौके दूधमें घिसके नित्य सूर्योदयसे पहले नास लेवे तो अर्धभेदक (आधामाथा दूखना) दूर हो । अथवा शशेके शिरको पानीमें औटाय घी सिद्ध करे उस घीमें मिरच मिलाय भोजनके प्रथम ७ दिन पीवे तो सूर्यावर्त्त और अर्द्धभेदक ए अत्यंत दुःखदायक रोग दूर हो ।

अनंतवातेकर्त्तव्योरक्तमोक्षःशिराव्यधैः ।
आहारश्चविधातव्योवातपित्तविनाशनः ॥

अर्थ–अनंतवातरोगमें फस्त खोलना, और वातपित्तनाशक आहार करना चाहिये ।

मांसीकुष्ठंतिलाःकृष्णाःसारिवामूलमुत्पलम् ।
सक्षौद्रंक्षीरपिष्टानिकेशसंवर्द्धनानिहि ॥

अर्थ–अब केश बढानेका यत्न लिखते हैं, जटामांसी, कूट, तिल काले, सरिवनकी जड, और कमलगट्टा, इनको सहत डाल घीमें पीसके लगावे तो केश (बाल) बढें ।

मार्कवस्वरसभावितगुंजाबीजचूर्णपरिपाचिततैलम् ।
मिश्रितंत्रुटिजटासुरकुष्ठैःकेशभारजननंजनतायाः ॥

अर्थ–भांगरेके रसकी घूंघचीमें भावना दे उसके चूर्णसें तेलको पकावे और उसमें इलायची, जटामांसी, देवदार, तथा कूठ, मिलाय ले इस तेलके लगानेसें बालोंके समूह होजावे ।

मांसीबलाबकुलजामलकैःसकुष्ठैःपिष्टैःप्रलिप्तशिरसोनपतं-
तिकेशाः । स्निग्धायतातिकुटिलाकृतयोभवंतियेप्रच्युता
अपिमिलिंदकुलप्रकाशाः ॥

अर्थ–जटामांसी, खरेटी, मौलसिरीकी छाल, आमले, और कूठ, इनको जलमें पीसके लेप करे तो माथेके बाल टूटकर न गिरे । तथा चिकने लंबे टेढेआकृतिके और भौंराके समान काले होजावे, और टूटेहुए फिर ऊग आवे ।

बृहतीफलरसपिष्टंगुंजायाःफलमथापिवामूलम् ।
हेमनिघृष्टंलिप्तंव्यपनयतिमहेन्द्रलुप्ताख्यम् ॥

अर्थ–कटेरीके फलके रसमें घूंघचीको वा घूंघचीकी जडको पीसै, फिर चोक मिलायके लगावे तो इन्द्रलुप्त (चाई) रोग दूर हो ।

नीलोत्पलाक्षफलमज्जतिलाजगंधाः सार्द्धंप्रियंगुलतयासमधू-
ककल्काः । संपिष्य्यःप्रकुरुतेबहुशःप्रलेपंखालित्यमस्यनप-
दंविदधातिमूर्ध्नि ।

अर्थ–नीलकमल, बहेडेकी मींगी, तिल, बनतुलसी, और फूलप्रियंगु, इनको

महुआके कल्कमें पीसके लेप अनेकवार करे तो इस प्राणीके मस्तकमें खालित्य-रोग कदाचित् नहीं हो ।

पुराणमथपिण्याकंपुरीषंकुक्कुटस्यच ।
मूत्रेपिष्टःप्रलेपोऽयंशीघ्रंहन्यादरूंषिकाम् ॥

अर्थ—पुरानीखल, और मुरगेकी वीठको गोमूत्रमें पीसके लेप करे तो अरूंषिका मस्तकका रोग दूर हो ।

बिल्वस्यमज्जापिष्टेनसहदध्नाहयाद्रिपः ।
स्नायात्प्रलिप्तमूर्द्धानमरूंषिविनिवृत्तये ॥

अर्थ—बेलगिरी, और कनेरको दही मिलायके पीसे, फिर इसको मस्तकमें लगायके मस्तकसहित स्नानकर डाले तो अरूंषिकारोग दूर हो ।

दध्नायोऽनुदिनंमर्त्योमूर्द्धानमनुलिंपति ।
अरूंषिकासर्वथास्यनश्यत्यल्पैस्तुवासरैः ॥

अर्थ—जो मनुष्य नित्यप्रति मस्तकमें दहीको लगायके स्नान करता है उसके अरूंषिका थोडे दिनमें जाती रहे ।

प्रियालबीजमधुककुष्ठमाषैःससैंधवैः । कार्योदारुणिकेमूर्ध्नि प्रलेपोमधुसंयुतः ॥ आम्रबीजस्यचूर्णेनाशिवाचूर्णसमंकृतम् । दुग्धपिष्टंप्रलेपेनदारुणंहंतिदारुणम् ॥ रसस्तिक्तपटोलस्यपत्राणांतद्विलेपनात् । इन्द्रलुप्तंशमंयातित्रिभिरेवादिनैर्ध्रुवम् ॥ इन्द्रलुप्तापहोलेपोमधुनाबृहतीरसः । गुंजामूलंफलंवापिभल्लातकरसोपिवा ॥ इतियोगचतुष्टयम् ॥

अर्थ—चिरोंजी, महुआ, कूठ, उडदका चून, और सेंधानिमक इनको पीस सहतके साथ दारुणिक (इन्द्रलुप्त) रोगमें मस्तकमें लेप करे । अथवा आमकी गुठली और आमले दोनों समान ले चूर्ण करे फिर दूधमें पीस दारुण इन्द्रलुप्तमें लेप करे तो दूर हो । अथवा कडुए परवलके पत्तोंके रसका मस्तकमें लेप करनेसे तीनदिनमें इन्द्रलुप्त दूर हो । अथवा कटेलीके रसको सहतमें मिलायके लेप करे अथवा घूंघचीका वा घूंघचीकी जडका लेप करे तो इन्द्रलुप्त जाती रहै । ए चार योग कहे हैं ।

हस्तिदंतमषींकृत्वाछागीदुग्धंरसांजनम् ।
लोमान्यनेनजायंतेलेपात्पाणितलेष्वपि ॥

अर्थ–हाथीदांतको जलाय उसकी खाकको और रसोतका बकरीके दूधमें पीस लेप करे तो हथेलीमेंभी बाल ऊग आवे ।

चतुःपदानांत्वग्रोमनखशृंगास्थिभस्मभिः ।
तैलेनसहलेपोऽयंरोमसंजननःपरः ॥

अर्थ–चौपाए (भैंस, बकरी, आदि) के त्वचा, बाल, नाखून, सींग, और हड्डी-की भस्मसें तेलको सिद्ध करके लेप करे तो बहुत बाल ऊगे ।

तिलतैलेनभृष्टगोणीखंडयंत्रितमाजूफलव्यक्तिः ४ नवसादररत्ती ४ तुत्थरत्ती ४ ताम्रपत्रीरत्ती ४ एतच्चतुष्टयंलोहमर्दकेनैवलोहपात्रेआमलकीरसंदत्वा यावन्नखकापिशताभवतितावन्मर्दयित्वा तेनकल्केनश्वेतान्कचानंगुलार्द्धमानेनसंमर्द्यालिंपेत् पश्चादेरंडपत्रैरावेष्टयसुप्यात् प्रातस्तैलामलककल्काभ्यांस्नात्वातदाभ्रमरसदृशकेशाभवंति ॥

अर्थ–माजूफलको टाटके टुकडेमें लपेटके तेलमें भूने, इसप्रकार भूनामाजूफल ४ रत्ती, नोसद्दर ४ रत्ती, नीलाथोथा ४ रत्ती, और ताम्रपत्री ४ रत्ती, इनचारोंका आमलेका रस डालके लोहेके पात्रमें लोहेके मूसलेसें जबतक घोटेकी जबतक नखपर धरनेसें नख कुछ काला न हों, जब काला होने लगे तब इसको सपेदबालोंपर आध आध उंगल मोटा लेपकर और ऊपर अंडके पत्ते बांधके रात्रिमें सोयजावे, प्रातःकाल उठ तेल और आमलेको पीस लगायके स्नान करे तो बाल भौंराके समान काले होजावे । इति केशकल्कः ।

साबुनसूखाटंक २ कावियासिंदूरटंक २ कलीचूनाटंक १ एतदौषधत्रयंघोषेंगुल्यायावन्नखकापिश्यंभवतितावन्मर्दयेत् ततोरूक्षेषुकचेषुगाढमंगुल्याघर्षणपूर्वंलिंपेत् घटिकार्द्धंस्थापयित्वातैलामलकाभ्यांस्नायात् । सणसदृशकेशाभ्रमरच्छविनिभाभवंति ॥

अर्थ–साबुनसूखा ८ मासे, काविया सिंदूर ८ मासे, और कलीका चूना ४ मासे, तीनोंको काँसेकी थालीमें जबतक घोटे कि जबतक नख काला न हो, फिर सूखेबालोंपर खूब घिसकर लेप करे, आध घडीके बाद तेल और आमले पीस लगाय स्नान करे तो सनके समान सपेद बालभी भौंराके समान काले हो ।

मुरदाशंखटंक ४ छारू (लुहारकी राख) टंक ४ एतद्वयं महिषाम्लतक्रेणानखकापिष्यंखल्वेसंमर्द्यानंतररूक्षान्कचानालिप्यवातारिपत्रैरावेष्टयप्रहरंतिष्ठेत् ततःशुष्केकल्केतैलामलकाभ्यांस्नात्वा शंखकुन्देन्दुकुंतलोपिभिन्नांजनसदृशोभवति ॥

अर्थ–मुरदाशंख १ तोले, लुहारकी राख, कि जिसको छारू कहतेहैं । छःछः मासे इन दोनोंको भैसकी खट्टा छाछमें तबतक घोटे कि जबतक नख काला न होय, फिर इसको रूखेबालोंपर लेप करे और अंडके पत्ते बांधके प्रहरभर टहर जावे जब कल्क सूखजावे तब तेल आमले लगाय स्नान करे तो सपेदबालभी काजलके समान काले हो।

माजूफलहरडैआवराखैरलीलाथोथालीलवरीनोसद्दर-लोहचूर्ण फटकरी-जंगाल-एप्रत्येकएकएकतोलालेवे भृंगद्रवैःपिष्ट्वाअयःपात्रेत्रिदिनंसंधितेनानेनरूक्षान्केशानालिप्यवातारिपत्रैरावेष्टयसुप्यात् ततःप्रातस्तैलामलकैःस्नात्वासितकेशोऽसितकेशोभवति ॥ इतिकेशकल्पः ॥

अर्थ–माजूफल, हरड, आमरे, कत्था, लीलाथोथा, लीलवरी, नोसदर, लोहेका चूर्ण, फिटकरी, और जंगाल, प्रत्येक एक एक तोले लेय। भांगरेके रससें लोहेके पात्रमें तीन दिन घोटे, फिर इसको रूखेबालोंपर लेप कर अंडका पत्ता बांधके रात्रिको सोयजावे प्रातःकाल तेल आमले पीस लगायके स्नान करे तो सपेद बाल काले हो। इति कल्पविधिः।

निंबतैलैःपूतितैलैरिंगुदीतैलतोपिवा।
भल्लाततैलैःक्षारमृदालेपोवायौकनाशनः॥

अर्थ–नीमका तेल, मालकांगनीका तेल, इंगुदी (गोदी) का तेल, अथवा भिलाएका तेल इनमेंसें किसी एक तेलका अथवा खारामिली मिट्टीका लेप करे तो जूआं दूर हो।

नागरस्यपलान्यष्टौद्वात्रिंशच्चगुडादपि। घृतंगुडसमंदत्वाक्षीरंदत्वाचतुर्गुणम् ॥ पचेन्मृद्वग्निनासम्यग्यावत्पाकोभवेद्घनः। भक्षितोनाशयत्याशुशिरःशूलंतथार्दितम् ॥ सूर्यावर्त्तंहनुःकंपंमन्यास्तंभंगलग्रहान्। नाशयेद्वातरोगंचकफसंसर्गजान्यपि ॥

अर्थ-सोंठ ८ टकेभर, गुड ३२ टकेभर, गौका घी ३२ टकेभर, दूध १२८ टकेभर ले । इन सबको मंदाग्निमें पचावे जब पाक होजावे तब इसमेंसे खाय तो शिरशूल, अर्दितरोग, सूर्यावर्त्त, हनुकंप, मन्यास्तंभ, गलग्रह, वातके, कफके, और मिलेहुए रोगोंको यह शुंठीपाक दूर कर्त्ता है ।

लवंगमेकंसंगृह्यमरिचत्रितयंतथा । चणकप्रमितंहिंगुसंघृष्यै-कत्रवारिणा ॥ एतच्छीर्षंव्यथांहन्यान्नावनान्नात्रसंशयः ।

अर्थ-लौंग १, काली मिरच ३, और चनेके प्रमाण हींग, इनको जलमें घिसके नास लेवे तो यह अवश्य मस्तकपीडाको दूर करे ।

श्रेष्ठानिंबपटोलमेघरजनीत्रायंतिहेमामृताःक्वाथःषड्गुणवारि-णाविधिशृतःषष्ठांशिकोहंत्ययम् ।भ्रूशंखाक्षिशिरोरुजंबहुविधं कर्णास्यनासागदंनक्तांध्यंतिमिरंसकाचपटलंदैत्यान्यथाकेशवः ॥

अर्थ-त्रिफला, नीमकी छाल, पटोलपत्र, नागरमोथा, हलदी, त्रायमाण, चोक, और गिलोय, इनको छःगुनेपानीमें काढा करे । जब छटा भाग पानीका बाकी रहे तब उतार छानके पीवे तो भौंह, कनपटी, नेत्र, शिर, इनकी पीडा, कान, मुख, नाकके रोग, नक्तांध, तिमिर, काच, और पटलरोग, इनको यह क्वाथ दूर करे।

पथ्याक्षधात्रीभूनिंबनिशानिंबामृतायुतैः । कृतःक्वाथःषडंगो-ऽयंसगुडःशीर्षशूलनुत् ॥ भ्रूशंखकर्णशूलानितथार्द्धशिरसो-रुजम्।सूर्यावर्त्तशंखकंचदंतपातंचतद्रुजम् । नक्तांध्यंपटलंशु-क्रंचक्षुःपीडांव्यपोहति ।

अर्थ-हरड, बेहेडा, आमला, चिरायता, हलदी, नीमकी छाल, और गिलोय इनका षडंग काढा गुड डालके पीवे तो भौंह, शंख, कर्णशूल, इत्यादि रोगोंको दूर करे ।

इति कर्णरोगचिकित्सा समाप्ता ।

अथ नेत्ररोगचिकित्सा ।

लंघनालेपनस्वेदशिराव्यधविरेचनैः ।
उपाचरेदभिष्यंदमंजनाश्चोतनादिभिः ॥

अर्थ-प्रथम आंख दूखने आवे तो लंघन, लेप, स्वेद, शिरावेध, जुल्लाब, अंजन, और आश्चोतन (पोटली) आदि कर्मद्वारा यत्न करे ।

अक्षिकुक्षिभवारोगाःप्रतिश्यायव्रणज्वराः । पंचैतेपंचरात्रेण शुद्धिमायांतिलंघनात् ॥ अंजनंपूरणंक्काथपीतमामेनशस्यते। आचतुर्थादिनादाममभिष्यंदिविलोचनम् ॥ ततःसंपक्कदोषस्यप्राप्तमंजनमाचरेत् ।

अर्थ—नेत्र, कूखके रोग, सरेकमा, व्रण, और ज्वर ये पांच रोग पांच रात्रि लंघन करनेसें शुद्धि होते हैं । अंजन और पूरणकर्म तथा काढेका पीना ये कची आंख दूखनेमें नहीं करना । आंख दूखनेमें आम संज्ञा (कच्चापना) चार रात्रि रहता है फिर दोष पकजाते हैं तब अंजनादि लगाने चाहिये ।

हेमन्तेशिशिरेचापिमध्याह्नेंजनमिष्यते। पूर्वाह्णेचापराह्णेचग्रीष्मेशरदिचेष्यते ॥ वर्षास्वनभ्रेनात्युष्णेवसंतेतुसदैवहि ।

अर्थ—हेमंत और शिशिरऋतुमें मध्याह्नके समय आंख आंजे. और ग्रीष्मऋतु तथा शरदऋतु इनमें क्रमसें प्रातःकाल और सायंकालमें आंजे, वर्षाऋतुमें जब बद्दल न होय उस समय और वसंतऋतुमें सदैव लगाना चाहिये ।

अंजयित्वावाममक्षिपश्चाद्दक्षिणमंजयेत् । सेतुभिर्वस्त्रखंडेन बद्धैःकासीसाआप्लुतैः॥अक्ष्णोराश्चोतनंशस्तंसाभिष्यन्देमुहुर्मुहुः ॥ आश्चोतनेसात्रिफलासलोध्रासचन्दनादारुनिशाप्रशस्ता । आलेपनेसैंधवगैरिकंचसतार्क्षशैलाभयमेतदिष्टम् ॥

अर्थ—प्रथम वामनेत्रमें अंजन लगावे, फिर दहनेमें लगावे । इनको कपडेकी पट्टीसें बांध देवे । अथवा अंजन लगाय कपडेकी पट्टीको कसीसमें भिगोयके बांध अभिष्यंदी नेत्ररोगमें वारंवार आश्चोतन कर्म (पोटलीसे सेकना) अच्छा है । तहां त्रिफला, लोध, चंदन, दारुहलदी, और हलदी, इनकी पोटली बनायके आश्चोतन कर्म करे । और लेपमें सेंधानिमक, गेरू, रसोत. फटकडी, और हरडको घिसके लगाना उत्तम कहाहै ।

अष्टौदशद्वादशबिंदवस्तुसंलेपनालेखनरोपणेषु । आश्चोतनेषुक्रमशोविधेयामात्रास्तुतिस्रोनयनामयेषु ॥

अर्थ—लेपन, लेखन, रोपणादि आश्चोतन कर्ममें आठ दश और बारह बूंद क्रमसें डालनी चाहिये । यह तीनों प्रकारके नेत्ररोगोंमें मात्रा कही है ।

शोथंचदाहरागंचक्लेदंकंडूंतथारुजम् ।

अक्ष्णोरश्रुप्रसेकंचक्षिप्रमाश्चोतनंहरेत् ॥

अर्थ–सूजन, दाह, नेत्रकी लाली, कीचड, खुजली, पीडा, और नेत्रोंसें आंसुओंका वहना इन सबको आश्चोतनकर्म तत्काल दूर कर्त्ता है ।

जात्याःपत्रैर्घृतभृष्टैश्चक्षुष्यमुपनाहनम् ।
अथवानिम्बपत्रैःस्यादुपनाहोऽक्षिरोगजित् ॥

अर्थ–चमेलीके पत्तोंको घीमें भून सुहाता सुहाता सेके तो नेत्ररोग जाय, अथवा नीमके पत्तेन्को घीमें भूनके सेके तो नेत्ररोगोंको जीते ।

यष्टीगुडूचीत्रिफलासदार्वीनिःक्वाथ्यतत्काथमथप्रभाते ।
निपीयनेत्रेचनिषिच्यतेनसद्योऽक्षिकोपंविजहातिजंतुः ॥

अर्थ–मुलहटी, गिलोय, त्रिफला, दारुहलदी, इन सबका काढा कर प्रातःकाल पीवे, और इसी काढेसें नेत्रोंको सिंचन करे तो नेत्रकी अत्यंत लाली तत्काल दूर हो।

श्वेतलोध्रंघृतेभृष्टंचूर्णितंवस्त्रगालितम् ।
उष्णांबुनाविमृदितंसेकादक्षिरुजंजयेत् ॥

अर्थ–पठानी लोधको घीमें भून कूट पीस कपडछनकर लेवे, फिर गरम जलमें डबोय नेत्रोंको सेंके तो नेत्रकी पीडा दूर हो ।

वासाघनंनिंबपटोलपत्रंतिक्तामृतावत्सकचंदनंच । कलिंगदार्वीदहनंचशुंठीभूनिंबधात्रीविजयाविभीतम् ॥ यवांश्चनिःक्वाथ्यतमष्टशेषंपूर्वेह्निसंस्थापितमग्रिमेह्नि । प्रातःपिबेदर्बुदशुक्रकंडूतैमिर्यदाहव्रणपिल्लरोगान् ॥ पीडोपनाहौपटलानिनेत्रेरोगानशेषानपरांश्चहन्यात् ।

अर्थ–अडूसा, नागरमोथा, नीमकी छाल, पटोलपत्र, कुटकी, गिलोय, कुडाकी छाल, लालचंदन, इन्द्रजो, दारुहलदी, चीतेकी छाल, सोंठ, चिरायता, आमले, भांग, बहेडा और जों, इनका एकदिन पहले अष्टावशेष काढा करे । दूसरे दिन प्रातःकाल पीवे तो अर्बुदरोग, शुक्ररोग, खुजली, तिमिर, दाह, नेत्रव्रण, पिल्लरोग, पीडा, उपनाह, पटल, इत्यादि नेत्रके रोग संपूर्ण दूर हो ।

वातारिपत्रेपुटपाचितानांद्रवंदलानांवरमाम्लिकायाः । संमर्दयेत्सिंधुफलेनकांस्येतेनांजनेनांजितलोचनस्य ॥ सद्योऽक्षिनिष्यंदमकांडकंडूस्तथाधिमंथानपिहंतिसत्यम् ॥

अर्थ—इमलीके गीले पत्तोंको अंडके पत्तेमें लपेट पुटपाक कर ले फिर इनको सैंधेनिमकके मूसलेसें कांसेकी थालीमें घोटे इसको नेत्रोंमें अंजन करे तो नेत्रोंकी लाली, विना समयकी खुजली, तथा अधिमंथको नष्ट करे।

वटक्षीरेणसंयुक्तंश्लक्ष्णंकर्पूरजंरजः।
क्षिप्रमंजनतोहंतिशुक्रंचापिघनोन्नतम्॥

अर्थ—कपूरके चूर्णको बडके दूधमें घिस अंजन करे तो नेत्रमें घोर छरभी पडीहो उसको तत्काल दूर करे।

किंशुकस्वरसभावितंमुहुर्नक्तमालतरुबीजजंरजः।
वर्त्तियोगविधिनाविनाशयत्याशुनेत्रगतपांडुतांपराम्॥

अर्थ—कंजाके बीजके चूर्णमें ढाकके रसकी वारंवार भावना देके बारीक पीस बत्ती बनावे, इसबत्तीको नेत्रोंमें फेरा करे तो नेत्रोंकी पिलाई दूर हो।

यस्त्रैफलंचूर्णमपथ्यवर्ज्जीसायंसमश्नातिसमाक्षिकाज्यम्।
समुच्यतेनेत्रभवैर्विकारैर्भृत्यैर्यथाक्षीणधनोमनुष्यः॥

अर्थ—अपथ्यको त्यागके जो मनुष्य सायंकालको घृत सहतमें त्रिफलाके चूर्णको मिलायके खावे तो नेत्ररोग दूर हो।

चंद्रोदयावर्त्ती।

शिवोषणकणावचामयशिलाऽक्षमज्जांबुजैरजास्तनजमर्दितैर्भवतिनामचंद्रोदया। इयंहरतिवर्तिकातिमिरकाचकंड्वर्बुदाधिमांसकुसुमादिकानपिगदाञ्जलेनांजनात्॥

अर्थ—हरड, काली मिरच, वच, कूठ, मनसिल, बेहेडेकी मिंगी, और शंखकी नाभि, इनको बकरीके दूधमें घोटके बत्ती बनावे, इसे चंद्रोदयवर्त्ती कहते हैं यह तिमिर, कांच, खुजली, अर्बुद, अधिमांस और फूलाआदि नेत्रके सर्व विकारोंको दूर करे इसे जलमें घिसके लगावे।

कलितरुफलमज्जास्निग्धपट्टेप्रपिष्टाहरतिनयनपुष्पंस्तन्ययोगांजनेन। श्रवणमलसमेतंमारिचंपंकमक्ष्णोःक्षपयतिकिलनैशांमंधतांस्त्रीपयोक्तम्॥

अर्थ—बेहडेके मिंगीको चिकने पत्थरपर स्त्रीके दूधसें पीसके लगावे तो नेत्रका फूल दूर हो अथवा कानका मैल और काली मिरचको स्त्रीके दूधमें पीसके लगावे तो रतोंध दूर हो।

हिंगुनाद्रोणपुष्पीवारसेनांजितलोचनम् ।
अचिरात्कामलोत्पन्नांपीततांहंतिनेत्रयोः ॥

अर्थ–गोमीके रसमें हींगको पीसके आंजे तो थोडेही कालमें कामलारोगसैं प्रगट नेत्रोंकी पिलाईको दूर करे ।

गुटिकांजनम् ।

पिप्पलीत्रिफलालाक्षालोध्रसैन्धवसंयुतम् । भृंगराजरसेघृष्टंगुटिकांजनमिष्यते ॥ अर्मसातिमिरंकाचंकंडूशुक्रंतथार्जुनम् । अंजनंनेत्रजान्रोगान्निहंत्येतन्नसंशयः ॥

अर्थ–पीपल, त्रिफला, लाख, लोध, और सैंधानिमक, इनको भांगरेके रसमें घोटके गोली बनावे, इसको जलमें घिसके लगावे तो अर्मरोग, तिमिर, कांच, खुजली, शुक्र और अर्जुन, इत्यादि सर्व नेत्रके रोग दूर हो ।

नक्तांधकेतुवर्ती ।

हरेणुकासैंधवसंप्रयुक्तांश्रोतोजयुक्तामुपकुल्ययाच ।
पिष्टाजमूत्रेणकृताचवर्तिर्नक्तांध्यविस्रंसकरीनराणाम् ॥

अर्थ–मटर, सैंधानिमक, सुरमा, और पीपल इनको बकरीके मूत्रमें पीसके बत्ती बनावे इसको लगानेसैं रतौंध दूर हो ।

नागार्जुनी शलाका ।

निर्वापयेत्रैफलकेकषायेनागंविधिज्ञःशतधाहुताशी । संताप्यतस्तत्रततःशलाकांकृत्वाऽस्यशुद्धेनरसेनलिंपेत् ॥ तयांजिताक्ष्णोमनुजःक्रमेणसुपर्णचक्षुर्भवतिप्रसह्य । जयेदभिष्यंदमथाधिमंथमर्मार्जुनोवातिमिराणिपिल्लान् ॥

अर्थ–शुद्ध शीशेको १०० वार गलायके त्रिफलाके काढेमें बुझावे, फिर इसकी सलाई बनवाय लेवे, इसको नेत्रोंमें फेरनेसें नेत्रोंकी दृष्टी गीधके समान हो, तथा अभिष्यंद, अधिमंथ, अर्मरोग, अर्जुन, तिमिर, और पिल्लरोग ये दूर हो ।

त्रिफलाक्वाथकल्काभ्यांसपयस्कंघृतंशृतम् ।
तिमिराण्यचिराद्धन्यात्पीतमेवनसंशयः ॥

अर्थ–त्रिफलाका काढा और कल्क तथा दूध मिलायके घृत सिद्ध करे, इसके पीनेसे थोडेही कालमें तिमिररोग निश्चय दूर हो ।

त्रैफलं घृतम् ।

त्रिफलात्र्यूषणंद्राक्षामधुकंकटुरोहिणी । प्रपौंडरीकंसूक्ष्मैलाविडंगंनागकेसरम् ॥ नीलोत्पलंसारिवेद्वेचंदनंरजनीद्वयम् । कार्षिकैः पयसातुल्यंद्विगुणंत्रिफलारसम् ॥ घृतप्रस्थंपचेदेतत्सर्वंनेत्ररुजापहम् । तिमिरंचजलस्रावंकामलाकाचमर्बुदम् ॥ विसर्पपटलंकंडूंतोदंचश्वयथुंपृथुम् । अन्यानपिबहून्रोगान्नेत्रजान्मर्मजानपि ॥ निहंति सर्पिरेतत्तुभास्करस्तिमिरंयथा । नचैवास्मात्परंकिंचिद्भेषजंकाश्यपादिभिः ॥ दृष्टिप्रसादनंदृष्टंतदेतत्त्रैफलंघृतम् ॥

अर्थ—त्रिफला, त्रिकुटा, दाख, महुआ, कुटकी, कमलगट्टा, छोटी इलायची वायविडंग, नागकेशर, नीलकमल, सरिवन, दोनो चंदन, हलदी और दारुहलदी प्रत्येक तोले २ लेवे । और इनकी बराबर दूध लेवे, और दूना त्रिफलाका रस डाले, इसमें सेरभर घृतको पक करे, यह घृत सर्व नेत्ररोगोंको तिमिर, नेत्रोंसे जलका गिरना, कामला, अर्बुद, विसर्प, पटल, खुजली, पीडा, सूजन, मोटापन और नेत्रज संधिज इत्यादि नेत्ररोगोंको दूर करे । इससे परे दूसरी उत्तम औषध नहीं है । दृष्टिको बढानेवाला यह त्रैफल घृत है ।

प्रत्येकंत्रिफलाऽमृतावृषवरीभृंगामलक्यंबुनातुल्येनाजपयःसमंच हविषःपात्रेपचेत्कल्कितैः । क्षुद्राक्षीरधरावरोत्पलकणायष्टीमधूकैः सिताद्राक्षाभ्यांचसमस्तनेत्रगदजित्सर्पिर्महात्रैफलम् ॥

अर्थ—त्रिफला, गिलोय, अडूसा, सतावर, भांगरा, इनको आमलेके जलमें भिगोकर रस ले, आमलेके रसकी बराबर दूध डाले, और इतनाही घृत मिलायके पचावे, फिर इसमें कटेरी, क्षीरकाकोली, त्रिफला, कमलगट्टा, पीपल, मुलहटी, महुआ, मिश्री, औषध, दाख ये और मिलायके घृतसिद्ध करे, यह महात्रैफल घृत समस्त नेत्ररोगोंको दूर करे ।

सर्वंशाकमचक्षुष्यंचक्षुष्यंशाकपंचकम् ।
जीवंतीवास्तुमत्स्याक्षीमेघनादपुनर्नवा ॥

अर्थ—सबसाग नेत्ररोगीको अहित है, परंतु पांचसाग हित है जैसे डोडीका बथुएका, मछेलीका, चौलाईका, और सांठका ।

माषारनालकटुतैलजलावगाहक्षुद्राक्षुरैश्चसुरतैर्निशिजागरैश्च ।

शाकाम्लमत्स्यदधिफाणितवेसवारैश्चक्षुःक्षयंव्रजतिसूर्यविलोकनाच्च ॥

अर्थ-उडद, कांजी, कडुआ तेल, जलमें तैरना, उलटे उस्तरेसें मूंडन करना, स्त्रीसंग, रातमें जगना, शाक, खटाई, मछली, दही, राब, मसाला, इनके सेवनसें और सूर्यके सन्मुख देखनेसे नेत्र नष्ट होते हैं।

शालितंदुलगोधूममुद्गसैंधवगोघृतम् ।गोपयश्चसिताक्षौद्रंपथ्यं नेत्रगदेस्मृतम्॥ नेत्रेत्वभिहितेकुर्याच्छीतलंभेषजंहितम्। पुनर्नवामूलकल्कपिंडीलेपेकुचन्दनम् ॥ अंतःस्त्रीस्तन्यसेकश्च रक्तमोक्षश्चशस्यते ॥

अर्थ-शाली चावल, गेंहू, मूंग, सैंधानिमक, गौका घी, गौका दूध, मिश्री, सहत, ये सर्व वस्तु नेत्र रोगीको पथ्य है। नेत्र दूखनेमें शीतल औषध करे, और सांठकी जडका कल्क और पिंडीसें सेक करना, तथा नेत्रोंके लेपमें पतंग लेना चाहिये। स्त्रीके दूधका तरडा देना और मस्तककी फस्त खोलना हित है।

शिलायारसकंपिष्ट्वासम्यगाप्लाव्यवारिणा । गृह्णीयात्तज्जलं सर्वंतच्चूर्णंतदधोगतम् ॥शुष्कंचतज्जलंसर्वंपर्पटीसन्निभंभवेत् । विचूर्ण्यभावयेत्सम्यक्त्रिवेलंत्रिफलारसैः ॥ कर्पूरस्यरजस्तत्रदशमांशंविनिक्षिपेत् । अंजयेन्नयनंतेननेत्राखिलगदच्छिदे ॥

अर्थ-मनसिलके साथ खपरियाको पीस जलमें घोट देवे फिर उसमेंसें नितरा हुआ जल निकाल सुखायदे तो उस जलकी पपडीसी जमजावेगी, इस पपडीको खरलमें डाल तीन भावना त्रिफलाके रसकी देवे और इसका दशमा भाग कपूर मिलावे फिर घोटके अंजन करे तो सर्व नेत्रके विकार दूर हो।

सैंधवगैरिकपथ्यादारुनिशाह्वारसांजनैरेतैः ।
कल्कीकृतैर्बिडालोदत्तोनेत्रामयंहंति ॥

अर्थ-सैंधानिमक, गेरू, हरडकी छाल, दारुहलदी, हलदी, और रसोत इनका कल्क करके लेप करे तो नेत्ररोग दूर हो।

त्रिफलाजीरसौराष्ट्रिकादोषारुणचन्दनम् । चिंचिनीफलतोयेनपिष्ट्वामंदोष्णमेवच ॥ सरसंबहिरालेपनंनवाक्षिरुजंहरेत् ॥

अर्थ-त्रिफला, जीरा, फिटकरी, हलदी, और लालचंदन, इनको इमलीफलके

रसमें पीस कुछ गरम कर सुहाता सुहाता नेत्रोंके ऊपर लेप करे तो नवीन नेत्रपीडा दूर हो ।

ससैंधवंसावरमाज्यभृष्टंसुकांजिकापिष्टमथांशुकेशिते ।
बद्धंतदाश्चोतनमस्यकुर्याद्दाहार्तिकंडूरचिरेणहन्यात् ॥

अर्थ–सैंधानिमक, लोध, इनको घीमें भून कांजीमें पीस लेवे फिर इसको सपेद बारीक कपडेकी पोटलीमें बांधके नेत्रोंपर फेरे तो दाह, पीडा, और खुजली ये तत्काल दूर हो ।

बिल्वपत्ररसःपूतःसाज्यःसुलवणान्वितः । शुल्बेवराटिकाघृष्टाधूपितागोमयाग्निना ॥ पयसालोडितश्चाक्ष्णोःपूरणाच्छोथशूलनुत् । अभिष्यन्देऽधिमंथेचरक्तस्रावेचशस्यते ॥

अर्थ–बेलपत्रका रस छनाहुआ उसमें घी और सैंधानिमक मिलावे और तामेके पात्रमें कोडीको घिस लेवे और आरने कंडाके धूएमें रखदेवे थोडी देरके बाद उसमें दूध मिलाय नेत्रोंमें तर्पण करे तो नेत्रकी सूजन, शूल, अभिष्यंद, अधिमंथ, और रक्तस्राव ये दूर हो ।

कौसुमिकावर्त्ती[1] ।

अशीतितिलपुष्पाणिषष्टिःपिप्पलितंदुलाः । जात्याःपुष्पाणिपंचाशन्मिरचानिचषोडश ॥ एषाकौसुमिकावर्त्तीगदंचक्षुर्निवर्त्तयेत् ।

अर्थ–तिलके फूल ८०, पीपलके दाने ६०, चमेलीके फूल ५०, और कालीमिरच १६, सबको एकत्र पीस बत्ती बनावे यह कौसुकावर्त्ती सर्वनेत्रके रोगोंको दूर करे ।

त्रिफलायाःकषायेणप्रातरक्ष्णोःसुधावनात् ।
जातरोगाविनश्यंतिनचोत्पन्नाभवंतिच ॥

अर्थ–त्रिफलाके काढेसे प्रातःकाल नेत्रोंको धोवे तो उठेहुए नेत्रके रोग दूर हो और फिर नवीनरोग कदाचित् न हो ।

तिक्तस्यसर्पिषःपानंबहुशश्चविरेचनम् । अक्ष्णोरपिसमंताच्चपातनंवाजलौकसाम् ॥ पित्ताभिष्यंदशमनोविधिश्चायंनिदर्शितः ॥

---

१ सूक्ष्मपिष्टाजलैर्वर्तिःकृताकुसुमिकाभिधा । तिमिरार्जुनशुक्राणांनाशिनीमांसवृद्धिनुत् ॥ एतस्याश्चांजनेमात्राप्रोक्तासार्द्धहरेणुका–इति कस्मिंश्चित्पुस्तके अधिकपाठः ।

अर्थ—तिक्तादि घृतका पीना, और विरेचन लेना, तथा नेत्रोंके चारोंतर्फ जोखोंका लगाना, ए पित्ताभिष्यंदरोग दूरकरनेका उपाय कहा है ।

कटुतैलंसलवणंकांस्यपात्रेसकांजिकम् । अवघृष्यकपर्देनधूपितंगोमयाग्निना ॥ अजादुग्धाऽवसिक्तंतद्वातश्लेष्मोत्थितांरुजम् । नेत्रयोःस्रावशोथौचरक्तत्वंहंत्यसंशयः ॥

अर्थ—कडुआतेल और सेंधानिमक इनको कांसीके पात्रमें कांजी मिलायके कौडीसें घिसे और आरनेउपलेकी धूनी दे फिर बकरीके दूधमें मिलायके तर्पण करे तो नेत्रोंमें वातकफकी पीडा पानीका बहना, सूजन और नेत्रोंकी लाली दूर हों ।

नयनामृतांजन ।

शुद्धनागेद्रुतेशुद्धंसूतंतुल्यंविनिक्षिपेत् ।कृष्णांजनंतयोस्तुल्यंसर्वमेकत्रकारयेत् ॥ दशमाषककर्पूरंतस्मिश्चूर्णंप्रदापयेत् । एतत्प्रत्यंजनंनेत्रेगदजिन्नयनामृतम् ॥

अर्थ—शुद्धशिसेको गलायके उसमें बराबरका शुद्धपारा मिलायदेवे, और दोनोंकी बराबर कालासुरमा तथा दशमासे भीमसेनीकपूर मिलावे, सबको पीसके धररक्खे यह अंजन नेत्रके सकलरोगोंको दूर करे, इसे नयनामृतांजन कहते हैं ।

सर्पिःपुराणमाहन्यात्सर्वनेत्रामयंनृणाम् ।
वृक्षाम्लबिल्वामलकरसाःसर्वाक्षिरुग्हराः ॥

अर्थ—पुरानेघीको नेत्रोंमें आंजे तो नेत्रके सर्वविकार जाय, अथवा तंतडीक, बेलगिरी, और आमले इनका रस नेत्रोंमें आंजे तो सर्वरोग दूर हो ।

बिभीतकारिष्टपटोलधात्रीवासाशिवाभिःशृतमंबुपेयम् ।
सगुग्गुलुस्रावरुगाढ्यशोथपाकाक्षिशुक्रव्रणरागनस्यात् ॥

अर्थ—बहेडा, नीमकी छाल, पटोलपत्र, आमले, अडूसा, और हरडकी छाल, इनके काढेमें गूगल डालके पीवे तो नेत्रोंसें पानीका गिरना, सूजन, नेत्रपाक, शुक्र, व्रण, और नेत्रोंकी लाली दूर हो ।

नारायणांजन ।

तुलस्याबिल्वपत्रस्यरसोग्राह्यःसमांशकः । ताभ्यांतुल्यंपयोनार्यास्त्रितयंकांस्यभाजने ॥ गजवेल्याहढंमर्द्यंताम्रेणप्रहरंपुनः । कज्जलत्वंसमुत्पाद्यतेनांजितविलोचनः ॥ सद्योनेत्ररुजंहंतिसशूलांपाकजामपि ॥

अर्थ-तुलसी और बेलपत्रका रस बराबर लेय, दोनोंके बराबर स्त्रीका दूधलेवे, तीनोंको कांसीके पात्रमें गजवेललोहसे खूब रगडे और फिर तांमके घोटनेसें प्रहरभर घोटे जब काजलके समान होजावे तब अंजनकरे तो तत्काल नेत्ररोग शूल और पाकको दूर करे ।

नयनामृतवटी ।

शुंठीहरीतकीवन्यकुलत्थंखपरंतथा । स्फटिकंश्वेतखदिरंपृथङ्माजूफलंसमम्॥कर्पूरंमृगनाभिश्चामौक्तिकंचतदर्द्धकम् ।प्रत्येकंनिंबुकद्रावैःखल्वेमर्द्यंदिनत्रयम् । पश्चात्तुवटिकांकुर्याज्जलेनतिमिरंहरेत् । स्तन्येनपुष्पपटलंमधुनाकांजिकान्मलम् ॥ नेत्रस्रावंरसोनेननक्तांध्यंभृंगयोगतः ॥ गोमूत्राच्चिपिटंमांसंवृद्धिंरंभाजलेनतु ॥

अर्थ-सोंठ, हरडकी छाल, वनकी कुलथी, खपरिया, स्फटिकमणि, सपेद कत्था, और माजूफल प्रत्येक समान लेय । और कपूर, कस्तूरी, अनविधमोती. ये उक्तऔषधोंसें आधे आधे लेवे, सबको नींबूके रससें तीन दिन घोटे फिर गोली बनाय लेवे, इसगोलीको जलमें घिसके लगावे तो तिमिररोग, स्त्रीके दूधसें फूला, और मोतियाविंद, सहतसे नेत्रका मल, लहसनके रससें नेत्रोंसें पानीगिरनेको, भांगरेके रससें रतौंध, गोमूत्रसें नेत्रोंका चिपटना, और केलाके जलमें घिसके लगावै तो नेत्रोंकी मांसवृद्धि दूर होय ।

हरिद्रादिवटी ।

हरिद्रानिंबपत्राणिपिप्पलीमरिचानिच । भद्रमुस्ताविडंगंचसप्तमंविश्वभेषजम् ॥ गोमूत्रेगुटिकाकार्याछागमूत्रेणचांजनम् । ज्वरांश्चनिखिलान्हन्याद्भूतावेशंतथैवच ॥ वारिणातिमिरंहंतिमधुनापटलंजयेत् ।नक्तांध्यंभृंगराजेननारीक्षीरेणपुष्पकम्॥

अर्थ-हलदी, नीमके पत्ते, पीपल, काली मिरच, नागरमोथा, वायविडंग, और सातवी सोंठ, इनको गोमूत्रमें बारीक पीस गोली बनावे, इस गोलीको बकरीके मूत्रमें घिसके लगावे तो संपूर्ण ज्वर, भूतावेश, इनको दूर करे । जलसें तिमिर, सहतसें पटल, भांगरेके रससें रतौंध, और स्त्रीके दूधमें घिसके लगावे तो फूला दूर हो ।

अपामार्गस्यपत्राणिमूषायांप्रक्षिपेद्बुधः । सूक्ष्माण्यसदपत्राणिधारयेच्चांतरांतरे ॥ मुद्रांकृत्वाततोधर्मा(?)च्छोषयेदातपे

च न । स्वच्छाङ्गारेततःक्षिप्त्वाध्मापयेच्चप्रयत्नतः ॥ अग्निव-र्णनिभंज्ञात्वाततस्तस्मात्तमुद्धरेत् । मृतपत्राणिनिष्कास्यसू-क्ष्ममंजनमाचरेत् ॥

अर्थ—ओंगा (चिरचिटा) के पत्तोंको मूषामें डालके ऊपर जस्तके पत्ते धरे फिर ओंगाके पत्ते धरे, इस प्रकार बराबर ऊपर नीचे ओंगाके पत्ते धरके उनके ऊपर मुद्रा कर धूपमें सुखाय ले, फिर उनको निर्धूम अंगारोंपर धरके यत्नपूर्वक धमावे जब अग्निमें समान वर्ण होजावे तब उनको निकाल बारीक पीस डाले, इसके लगानेसें नेत्रोंके सर्व विकार दूर हो ।

गैरिकंकांस्यदंडेनकांस्यपात्रेविघर्षयेत् । जलेनकज्जलाभंत-ज्ज्ञात्वात्वंजनमाचरेत् ॥ नेत्रस्रावंचरागंचपीडांजयतिदुस्तराम् ॥

अर्थ—गेरूको काँसेकी थालीमें कांसेके मूसलसें घोटे, जब कज्जलके समान होजावे तब निकालके अंजन करे तो नेत्रोंका ढलका नेत्रोंकी लाली और पीडा ये दूर हो ।

बब्बूलदलजंक्वाथंषोडशांशावशेषितम् ।वस्त्रपूतंपुनःपक्त्वागु-टिकाःसंप्रकल्पयेत् ॥तिमिरंपटलंकाचंकंडूंजयतिचांजनात् ॥

अर्थ—बबूलके पत्तोंका षोडशांशावशेष काढा कर कपडेमें छानके फिर पकावे, जब गाढा होजावे तब गोली बांध लेय यह गोली जलमें घिसके लगावे तो तिमिर पटल, (मोतियाबिंद) कांच, और खुजलीको दूर करे ।

रासभीदंष्ट्रयाग्राह्यातयाह्यंजनमाचरेत् ।
शीतलाजनितंपुष्पंनाशयेन्नात्रसंशयः ॥

अर्थ—गधीकी डाढको जलमें घिसके नेत्रोंमें लगावे तो शीतलाका फूला दूर हो इसमें संदेह नहीं है ।

वासाविश्वामृतादार्वीरक्तचंदनचित्रकैः । भूनिंबनिंबकटुका-पटोलत्रिफलांबुदैः ॥ निशाकालिंगकुटजैःक्वाथःसर्वाक्षिरोग-नुत् । वैस्वर्यंपीनसःश्वासंसकासंनाशयेद्ध्रुवम् ॥

अर्थ—अडूसा, सोंठ, गिलोय, दारुहलदी, लालचंदन, चीतेकी छाल, चिरायता, नीमकी छाल, कुटकी, पटोलपत्र, त्रिफला, नागरमोथा, हलदी, इन्द्रजौ, और कूडेकी छाल, इनका काढा सर्व नेत्रके रोगोंको, स्वरभंग, पीनस, श्वास, और खांसी, इनको दूर करे ।

इति नेत्ररोगचिकित्सा समाप्ता ।

अथ कर्णरोगचिकित्सा ।

कर्णशूलेकर्णनादेबाधिर्येक्ष्वेडएवच । चतुर्ष्वपिचरोगेषुसामान्यंभेषजंस्मृतम् ॥ शृंगवेरंचमधुचसैंधवंचकटुत्रिकम् । कदुष्णं कर्णयोर्द्धार्यमेतत्स्याद्वेदनापहम् ॥

अर्थ—कर्णशूल, कर्णनाद, बेहरापना, और कानका बहना, इन चारों रोगोंमें सामान्य औषध कहते हैं कि अदरकका रस, सहत, सैंधानिमक, और त्रिकुटा, इनको पीस कछु गरम कर कानोंमें डाले तो कानकी पीडा दूर हो ।

अर्कांकुरानम्लपिष्टान्सतैलाँल्लवणान्वितान् । संनिदध्यात्सुधाकांडेकोरितेमृत्स्नयान्विते ॥ पुटपाकक्रमास्विन्नंपीडयेदारसागमात् । सुखोष्णंतद्रसंकर्णेप्रक्षिपेच्छूलशांतये ॥

अर्थ—आकके अंकुरोंको नींबूके रसमें तेल और निमक डालके पीसे, फिर इसको थूहरकी लकडीमें भर कपडमिट्टी कर पुटपाककी विधिसें पकाय ले फिर इसका रस निचोड कुछ गरम कर कानमें डाले तो कानका दर्द दूर हो ।

अर्कस्यपत्रंपरिणामपीतमाज्येनलिप्तंशिखियोगतप्तम् ।
आपीड्यतस्यांबुसुखोष्णमेवकर्णेनिषिक्तंहरतीतिशूलम् ॥

अर्थ—आकके पीले पत्तोंको घीसे चुपड आंचमें भूनलेवे फिर इनका रस निकाल कुछ गरम गरम कानमें डाले तो कानका शूल दूर हो ।

तीव्रशूलातुरेकर्णेसशब्देक्लेदवाहिनि ।
छागमूत्रंप्रशंसंतिकोष्णंसैंधवसंयुतम् ॥

अर्थ—जिसके कानमें तीव्र शूल होता हो तथा बहता हो उसमें बकरेके मूत्रमें सैंधानिमक मिलाय कुछ गरम करके डाले ।

शिखरिक्षारजलेतत्कृतकल्केनापिसाधितंतैलम् ।
अपहरतिकर्णनादंबाधिर्यंचापिपूरणतः ॥

अर्थ—ओंगाके खारके जलसें तेल सिद्ध कर कानमें डाले तो कर्णनाद, और बेहरापना, दूर हो ।

गवांमूत्रेणबिल्वानिपिष्ट्वातैलंविपाचयेत् ।
सजलंचसदुग्धंचतद्बाधिर्यहरंपरम् ॥

अर्थ-गौके मूत्रमें बेलगिरीको पीस उसमें जल और बकरीका दूध मिलाय तेल सिद्ध करे, कानमें डाले तो बहरापना दूर हो ।

कुष्ठादितैल ।

कुष्ठहिंगुवचादारुशताह्वाविश्वसैंधवैः ।
पूतिकर्णापहंतैलंबस्तमूत्रेणसाधितम् ॥

अर्थ-कूठ, हींग, बच, देवदार, शतावर, सोंठ, और सैंधानिमक इनको बकरीके मूत्र-सहित तेलमें डालके पकावे इस तेलको कानमें डाले तो कानकी दुर्गंध आना दूर हो।

मूलकस्यरसस्तैलंकटुक्षौद्रंवरंसमम् ।
कर्णेनिक्षिप्यमखिलंबाधिर्येपरमौषधम् ॥

अर्थ-मूलीका रस, कडुआ तेल, और सहत बराबर लेके कानमें डाले तो बहरा-पना दूर हो ।

सितैलाचूर्णमप्येवंकर्णबाधिर्यनाशनम् ।

अर्थ-छोटी इलायचीके चूर्णको कानमें डाले तो बेहरापना दूर हो ।

नागरमागधसैंधवकुष्ठं हिंगुवचालशुनंतिलतैलम् ।
अर्कसुपक्वसुपत्ररसेन कर्णरुजंशतधाविनिहंति ॥

अर्थ-सोंठ, पीपल, सैंधानिमक, कूठ, हींग, वच, लहसन, और तिलोंका तेल इसमें पके आकके पत्तोंका रस मिलाय तेल सिद्ध करे कानमें डालनेसें कानकी पीडा दूर हो ।

ससैंधवंकटुतैलमर्कपत्रेसंलिप्यतप्तेलोहशलाकया ।
संवेष्ट्यतैलंपातयेत्तत्तैलप्रक्षेपेणकर्णरुङ्नश्यति ॥

अर्थ-सैंधानिमक और कडुए तेलको आकके पत्तोंपर लेप कर लोहेकी सलाईपर रखके नीचे आंच बरावे तो आकके पत्तोंसें तेल गिरे उसको किसीपात्रमें लेलेवे, इस तेलको कानमें डाले तो कर्णकी पीडा दूर हो ।

शंबूकस्यतुमांसेनकटुतैलंविपाचयेत् ।
तस्यपूरणमात्रेणकर्णनाडीप्रणश्यति ॥

अर्थ-घोंघा (छोटा शंख) के मांससें कडुए तेलको पचायके कानमें डाले तो कर्णनाडीरोग दूर हो ।

शंबूकमांसंपक्वार्क्षहिंगुतुंबुरुसैंधवम् । सकुष्ठंचैवकर्षांशंकल्का-

र्थैपेषयेद्बुधः ॥ पलानांसप्तकंकुर्यात्कटुतैलंप्रयत्नतः । सूर्यावर्त्तस्यचरसैःपचेत्तैलंसमैर्बुधः ॥ कर्णव्रणंकर्णनादंकर्णाभ्यंतरजंचयत् । पूतिगंधंतथापाकंहन्याच्छीघ्रंनसंशयः ।

अर्थ—घोंघेका मांस, कमलगट्टा, हिंग, तूँबरू, सैंधानिमक, और कूठ, प्रत्येक तोले तोले लेकर पीस डाले फिर जल डालके कल्क कर ले पश्चात् ७ टकेभर कडुआ तेल ले उसमें उक्त कल्कको मिलाय हुलहुलका ७ टकेभर रस डाल तेलको पचावे यह तेल कर्णनाद, कर्णका घाव, कानकी दुर्गंधी, कर्णपाक, इनको शीघ्र दूर करे।

चूर्णेनगंधकशिलारजनीप्लुवेनमुष्टचंशकेनकटुतैलपलाष्टकंच । धत्तूरपत्ररसतुल्यमिदंविपक्वंनाडींजयेच्चिरभवामपिकर्णजाताम् ॥

अर्थ—गंधक, मनसिल, और हलदी, इनके चूर्णको पल पल लेय, और कडुआ तेल ८ पल लेय, धत्तूरेके पत्तोंका रस ८ पल, इन सबको मिलायके पक्व करे जब तेल मात्र आयरहे तब उतार ले इसको कानमें डाले तो कानकी नाडी अर्थात् घावको दूर करे।

स्वर्जिकाद्यंतैलम् ।

स्वर्जिकामूलकंशुष्कंहिंगुकृष्णामहौषधम् । शतपुष्पाचतैस्तैलंपक्वंशुक्तंचतुर्गुणम् ॥ व्रणादिशूलबाधिर्यस्त्रावांश्चाशुव्यपोहति ॥

अर्थ—सज्जी, सूखीमूली, हींग, पीपर, सोंठ, और सोंफ इनके काढेसें तेल सिद्ध करे परंतु तेलसें सिरका चौगुना मिलाय लेवे तब पकावे, तो यह तेल कानके घावको, शूलको, बहरेपनेको, और कानके बहनेको तत्काल दूर करे।

प्रत्येकंपलमितैःसूर्यभक्ताशेफालीरसोनस्वरसैःकर्षमितैश्चशतपुष्पावचाकुष्ठव्योषलवंगकल्कैःचतुःपलेनछागीक्षीरेणचतुःपलंमृद्वग्निपक्वंकटुतैलंबाधिर्यकर्णनादघ्नंभवति ॥

अर्थ—हुरहुर, सम्हालू, और लहसन प्रत्येकका रस टके टकेभर ले; बच, कूठ, सोंफ, त्रिकुटा, लौंग, इनका कल्क तोले तोले भर ले; बकरीका दूध ४ टके भर, और कडुआ तेल ४ टके भर ले, सबको एकत्र कर पचावे। जब तेलमात्र आय रहे तब उतार ले इसको डालनेसें बहिरापना, कर्णनाद ये दूर हो।

हुतभुजिपरितप्तात्किंचिदाज्येनलिप्तात्करतलपरिपिष्टाद्बद्ध-

सेहुंडपत्रात् । गलितममलमंभःश्रोत्रयोर्न्यस्तमस्तंगमयति पृथुपीडांशूलमप्यंजसैव ॥

अर्थ-थूहरके पत्तेपर घी चुपडके अग्निमें भून ले, फिर हाथसैं मीडकर उसका रस निकाल ले, इस रसको कुछ गरम कर कानमें डाले तो कानकी घोर पीडाको शमन करे ।

समुद्रफेनचूर्णंतुन्यस्तंश्रवसिसस्रवे ।
पूयस्रावंव्रणंसान्द्रंहंतिध्वांतमिवांशुमान् ।

अर्थ-समुद्रफेनके चूर्णको कानमें डाले तो कानका बहना, राधका निकलना, कानका घाव, ये दूर हो ।

सूर्यावर्त्तकस्वरसंस्वरसंसिंदुवारजम् । लांगलीमूलतोयंवात्र्यूषणंवापिचूर्णितम् ॥ एतेयोगाश्चचत्वारःपूरणात्कृमिकर्णकाः । कृमीन्निर्मूलयंत्याशुशतपद्यस्रपादिकान् ॥

अर्थ-हुलहुलका रस, अथवा सम्हालूका रस, अथवा कलियारीका रस अथवा त्रिकुटाका चूर्ण, ये चार योग हैं इनमेंसें किसी एकको कानमें डाले तो कानमें कानखजूरा, कानसलाई, आदि कीडोंका नाश करे ।

हलिरविभक्तएकीकृत्यबुधोगालयेद्दृढंक्षुण्णे । वसनेनतद्रसेन श्रवणौपरिपूरयेद्भृशंयुक्त्या ॥ कर्णजलौकापतनंकृमिकीटपिपीलिकास्तथान्येऽपि । निपतंतिनिरवशेषाःकारंडाश्चापि मुंडस्थाः ॥ प्रक्लेदेधीमांस्तैलेनगूथंजह्याच्छलाकया ।

अर्थ-कलयारी, और हुलहुल दोनोंको कूटके कपडेमें डाल रस निचोड लेवे, इस रसको कानमें युक्तिपूर्वक डाले तो कानकी जोक, कीडा, चैंटी, तथा और प्रकारके जो जीव कानमें हो वो निकल पडे, और मूंडके जूआदि जीव दूर हो । यदि कानगीला रहता होय तो तेल डाले, और कानके मैलको सलाईसैं निकाले ।

शतावरीवाजिगंधापयस्यैरंडबीजकैः ॥ तैलंविपक्वंसक्षीरंपालीनांपुष्टिकृत्परम् ।धूपेनकर्णदौर्गंध्येगुग्गुलुःश्रेष्ठउच्यते॥ चिकित्सांकर्णरुक्छोथंकर्णार्शश्चोपशाम्यति । कर्णार्बुदानांकुर्वीतशोथार्शोर्बुदवद्भिषक् ॥

अर्थ-सतावर, असगंध, क्षीरकांकोली, अंडीके बीज, और दूध इनसे तेलको पचायके कानोंकी पालियोंमें लगावे तो पुष्ट हो । यदि कानमें दुर्गंध आती होय तो गूगलकी धूनी देवे । कर्णार्श अर्थात् कानकी ववासीरमें कर्णपीडा और कर्णशोथके समान चिकित्सा करे । और कर्णार्बुदका यत्न शोथार्श और अर्बुदरोगके समान करना चाहिये ।

इति कर्णरोगचिकित्सा समाप्ता ।

अथ नासारोगचिकित्सा ।

गुडमरिचाविमिश्रंपीतमाशुप्रकामंहरतिदधिनराणांपीनसंदुर्निवारम् । अष्टांगलेहिकाश्चूर्णंक्वाथंवार्द्रकजैरसैः ॥ पीनसेस्वरभेदेच तमकेसहलीमके । सन्निपातेकफेवातेकासेश्वासेचशस्यते ॥

अर्थ-गुड, काली मिरचका चूर्ण मिलायके दही पीवे तो अनिवार्य पीनसभी दूर हो । अथवा अष्टांगावलेह वा अष्टांगचूर्ण वा क्वाथ इनमें अदरकका रस मिलायके पीवे तो पीनस, स्वरभंग, तमक, श्वास, हलीमक, सन्निपात, कफ, वातके रोग, और साधारण श्वास दूर हो ।

व्योषाम्लवेतसंचव्यंतालीसंचित्रकंतथा । जीरकंतिंतिडीकं चप्रत्येकंकर्षमात्रकम्॥ त्रिशाणंत्रिसुगंधंस्याद्गुडःस्यात्कर्षविंशतिः । व्यूषणादिगुटीसामपीनसश्वासकासजित् ॥ रुचिदास्वरदाख्याताप्रतिश्यायप्रणाशिनी ॥

अर्थ-त्रिकुटा, अमलवेत, चव्य, तालीसपत्र, चीतेकी छाल, जीरा, और तंतडीक, प्रत्येक तोले तोले भर लेवे, त्रिसुगंध १॥ तोला, और गुड २० तोले, सबको कूट पीस गोली बनावे यह व्यूषणादिवटी कच्ची पीनस (सरेकमा) श्वास, खांसी, और जुखामको दूर करे रुचिकारी और स्वरको करनेवाली है ।

व्याघ्रीतैलम् ।

व्याघ्रीदंतीवचाशिग्रुसुरसाव्योषसिंधुजैः ।
सिद्धंतैलंनासिक्षिप्तंपूतिनासागदापहम् ॥

---

१ यदितु सघृतमन्नं श्लक्ष्णगोधूमचूर्णैः कृतमुपहरतेऽसौतत्कृतोस्यावकाशः इति पुस्तकांतरेऽधिकपाठः ।

अर्थ–कटेरी, दंती, वच, सहजना, तुलसी, इनका रस और त्रिकुटा तथा सैंधानिमक इन सबको मिलाय तेल सिद्ध करे इसकी नास लेनेसें नाककी दुर्गंधको दूर करे।

हिंगुव्योषविडंगकट्फलवचारुक्तीक्ष्णगंधायुतैर्लाक्षाश्वेतपुनर्नवाकुटजजैःपुष्पोद्भवैःसौरसैः । इत्येभिःकटुतैलमेतदनले मंदेसमूत्रंश्रृतंपीतंनासिकयायथाविधिभवेन्नासामयेभ्योहितम् ॥

अर्थ–हींग, त्रिकुटा, वायविडंग, कायफर, वच, कूठ, लाख, सपेद पुनर्नवा, (विसखपरा) इन्द्रजो, इन औषधोंसे कडुए तेलको गोमूत्र डालके मंदाग्निसें पचावे फिर नासिकाद्वारा पीवे तो संपूर्ण नासिकाके रोग दूर हो।

कट्फलंश्रृंगवेरंचपिप्पलीमारिचानिच । सटीपुष्करमूलंचभार्ङ्गीमधुरसावरी ॥ अभयाकृष्णलवणंश्रृंगीकर्कटकस्यच । एतच्चूर्णवरंप्रोक्तंक्काथोवामूत्रमूर्च्छितः ॥ पीनसेस्वरभेदेचतमकेसहलीमके । सन्निपातेकफेवातेकासेश्वासेचशस्यते ॥

अर्थ–कायफर, अदरख, पीपर, कालीमिरच, कचूर, पुहकरमूल, भारंगी, मुलहटी, सतावर, हरड, काला निमक, और काकडासींगी, इनका चूर्ण अथवा गोमूत्रमें काढा करे इसकी नास लेवे तो पीनस, स्वरभंग, तमक, हलीमक, संनिपात, अत्यंत कफ, खांसी, और श्वास इनको दूर करे।

यःपिवतिशयनकालेकोष्णमर्द्धश्रृतंपुरुषः ।
सलिलंपीनसयुक्तःसमुच्यतेतेनरोगेण ॥

अर्थ–जो पुरुष सोतेसमय रात्रिको अधोटा गरम जलको पीता है उसका पीनसरोग जाता रहे।

शय्यारूढोजलंशीतंनिद्राकालेपिबेत्तुयः ।
तस्यपीनसजंदुःखंशमंयातिदिनत्रयात् ॥

अर्थ–निद्राके समय जब शय्यापर लेटा चाहे तब थोडा शीतल जल पीवे तो निसका दुःख तीन दिनमें दूर हो।

अजाजीघृतखंडाभ्यांनस्यात्स्रावंनियच्छति ।

अर्थ–जाके नाकसें पानी गिरता होय तो जीरा घृत और खांडकी नास लेवे।

शुंठीकुष्ठकणाबिल्वद्राक्षाकल्ककषायवत् ॥
साधितंतैलमाज्यंवानस्यंक्षवथुरुक्प्रणुत् ।

अर्थ-सोंठ, कूठ, पीपल, वेलगिरी, और दाख, इनके कल्क या काढेमें कहुए तेलको वा घीको सिद्ध करे इसकी नास लेनेसें वारंवार छींक आना बंद हो ।

इति नासारोगचिकित्सा समाप्ता ।

अथ मुखरोगचिकित्सा ।

गंडूषोदशमूलवारिभिरभिस्नेहैरथैतच्छृतैःस्नेहैर्माक्षिकसंयुतै-
श्चबकुलस्येघृतथाचर्वणम्।शीतोष्णंतिलकल्कवारिचघृतंगंडू-
षइष्टंचलद्दन्तेघर्षमरुद्भवास्यजरुजासूक्तंभिषग्भिस्तथा ॥

अर्थ-दशमूलके काढेसें कुरला करना, अथवा दशमूलके काढे करके बनेहुए घृत तेल आदिके कुरले करना, अथवा घृतादिकमें सहत मिलायके कुल्ले करे. अथवा मौलसीरीकी छाल चवानेसें अथवा शीतल गरम तिलके कल्क और गरम जलको मुखमें राखे अथवा कुल्ले करे तो दांतोंका हिलना और वादीसें मुखमें पीडा होना सबको दूर करे ।

रजस्वर्जिकाकुष्ठकासीसहिंगुक्रमिघ्नैःकृतंसोमवल्कानुपीते ।
पटस्थंरदार्तिघ्नमेतद्धृतंचेद्दर्वाणपुंखाकषायंचतद्वत् ॥

अर्थ-सज्जीका चूर्ण, कूठ, कसीस, हींग, वायविडंग, और मालकांगनी. इन सबका कपडछन चूर्ण कर दांतोंको रगडे तो दांतोंकी पीडा दूर हो. इसीप्रकार सरफोंकेका काढा मुखमें रक्खे तोभी दांतोंकी पीडा दूर हो ।

स्नेहास्तथोष्णान्परिषेकलेपान्घृतस्यपानंरसभोजनंच ।
अभ्यंजनंस्वेदनलेपनंतदोष्ठेविदध्यात्पवनाभिभूते ॥

अर्थ-गरम गरम स्नेह, परिषेक, लेप, घृतका पीना, मांसरसका भोजन, उवटना, स्वेदन, और लेपनविधि ये सर्व उपाय वादीके ओष्ठरोगमें करने चाहिये ।

तैलंघृतंसजरसंससिद्धंरास्नागुडंसैंधवगैरिकंच ।
पक्कासमांशंदशनच्छदानांत्वग्भेदहंचव्रणरोपणंच ॥

अर्थ-तेल, घृत, राल, रास्ना, गुड, सैंधानिमक, और गेरु, इन सबको समान ले मिलायके पकावे जब तेल या घृतमात्र रहे तब उतार ले इसके लगानेसें होठोंका फटना और होठोंके घावको भरे है ।

रालंमधूच्छिष्टगुडेनपक्वंतैलंघृतंवाविनिहंतिलेपात् । त्वग्भेद-
पारुष्यरुजोऽधरस्यपूयास्रसंस्रावमपिप्रसह्य ॥ वेधंशिराणांव-
मनंविरेकंतिक्तस्यपानंरसभोजनंच । शीतान्प्रदेहान्परिषेक-
नंचपित्तोपसृष्टेष्वधरेषुकुर्यात् ॥

अर्थ—राल, सहत, गुड, इनसें तेल, या घृतको पकायके लेप करे तो होठोंका फटना, कठोर होना, पीडा होना, और राधका बहना, दूर हो । फस्त खोलना, वमन, विरेचन, कुटकीका पीना, मांसरसोंका पीना, शीतल प्रदेह, और तरडा देना, ये उपाय पित्तके होठरोगवालेके करे ।

रक्तपित्तोपधातुस्थाञ्जलौकाभिरुपाचरेत् । ओष्ठामयानत्र-
हितापित्तविद्रधिसत्क्रिया ॥ शिरोविरेचनंधूमःस्वेदःकवलधा-
रणम् । हृतेरक्तेप्रयोक्तव्यमोष्ठपाकेकफात्मके ॥

अर्थ—जो ओष्ठरोग रक्तपित्तके कारण करके अथवा दोषोंके उपधातुमें जानेसें जो होय उसमें जोख लगायके रुधिर निकलवाय डाले जो क्रिया पित्तकी विद्र-धिमें कही है वो करे । मस्तकसें मलोंको निकालना, धूमपान, स्वेद, और कवल धारण, ये कफसें होठ पकगएहो तब रुधिर निकालके क्रिया करे ।

त्रिदोषजेवाप्यथदुष्टमांससमुद्भवेष्वोष्ठगतेप्रशस्ता ।
रक्तस्रुतिश्चात्रहितःप्रलेपस्त्वक्पंचकस्यापिमृदूकृतस्य ॥

अर्थ—यदि ओष्ठरोग त्रिदोषके कारण अथवा दुष्ट मांसके होनेसें होय तो रु-धिर निकलवायके पंचवल्कलके काढेका लेप करे ।

प्रियंगुत्रिफलालोध्रचूर्णपक्वाधरेहितम् ।
प्रक्लिन्नेशीर्णमांसेचकिंवाश्रेष्ठमधूकजम् ।

अर्थ—होठोंके पकनेमें प्रियंगु, त्रिफला, और लोधका चूर्ण लगावे तो ओष्ठ पाक, होठोंका गीलापना, और मांसका विखरना, दूर हो । अथवा महुएके चू-र्णको लगाना उत्तम है ।

कणाद्यंचूर्णम् ।

कणासिंधूत्थजरणचूर्णंतूर्णंव्यपोहति ।
घर्षणाद्दन्तचाञ्चल्यंव्यथाशोथास्रसंस्रवान् ॥

अर्थ—पीपर, सेंधानिमक, और जीरा, इनके चूर्णसें दांतोंको रगडे तो दांतोंका हिलना, दर्द, सूजन, और दांतोंसें खूनका निकलना तत्काल दूर हो ।

जरणलवणपथ्याशाल्मलीकंटकानामनुदिनमुपघृष्टंदंतमूले-षुचूर्णम् । व्रणदरणरुगस्रस्रावचाञ्चल्यशोथानपनयतिविव-स्वानन्धकारानिवाशु ॥

अर्थ–जीरा, सेंधानिमक, हरडकी छाल, और सेमरके कांटे, इनका चूर्ण कर नित्य मसूढोंमें घिसे तो मसूढोंका घाव, फटना, पीडा, रुधिर निकलना, दांतोंका हिलना, सूजन, ए सब दूर हो।

भद्रमुस्तादिगुटी ।

भद्रमुस्ताभयाव्योषविडंगारिष्टपल्लवैः। गोमूत्रपिष्टैर्गुटिकांछा-याशुष्कांप्रकल्पयेत् ॥तांनिधायमुखेसुप्याच्चलदन्तातुरोनरः। नातःपरतरंकिंचिच्चलदंतस्यभेषजम् ॥

अर्थ–नागरमोथा, हरड, त्रिकुटा, वायविडंग, नीमके पत्ते, इनको गोमूत्रमें पीस गोली बनाय छायामें सुखाय लेवे, सोतेसमय एक गोली मुखमें रक्खे तो दांतोंका हिलना बंद होय यह परमोत्तम औषधी है।

फिटकरी नीलाथोथा खदिरपपरी तेजबल कच्चीलाख वंशलो-चन मिरच आवरा मजीठ रूमीमस्तंगी मौलसरीकी छाल सैंधानिमक माजूफल सुपारीदक्षणी एतेषांचतुर्दशानांचूर्णं वस्त्रपूतंकृत्वानिर्गुंडीरसैर्बहुशोविभाव्यातपेपरिशोष्यचूर्णयि-त्वा दन्तघर्षणंविधेयंतदादंतचांचल्यादीन्विकारान्नाशयति ।

अर्थ–फिटकरीसें आदि ले दक्षिणी सुपारी पर्यंत चौदह औषध है इन सबको समान भाग ले कूट पीस कपडछन करे, फिर सह्यालूके रसकी भावना दे, धूपमें सुखाय लेवे, फिर चूर्ण करके दांतोंको रगडे तो दांतोंका हिलना आदि सर्व विकार सर्वथा दूर हो।

कांचनारत्वचःक्वाथःप्रातरास्येधृतःसुखः ।
कुर्यात्सखदिरोजिह्वादरणोन्मूलनंमुहुः ॥

अर्थ–कचनारकी छालके काढेमें कत्था डालके प्रातःकाल मुखमें राखे तो जीभका फटना दूर होय।

जवाग्रजंतेजवतींसपाठांरसांजनंदारुनिशांसकृष्णाम् ।
क्षौद्रेणकुर्याद्गुटिकांमुखेनतांधारयेत्सर्वगलामयेषु ॥

अर्थ-जवाखार, तेजवल्कल, पाढ, रसोत, दारुहलदी, हलदी, और पीपल सबको पीस सहतसें गोली बनावे, मुखमें राखे तो सर्व गलेके रोग दूर हो ।

मुखपाकहरंभूयोजातीपत्रस्यचर्वणम् ॥ जातीपत्र्यमृताद्राक्षायासदार्वीफलत्रिकैः । क्वाथःक्षौद्रयुतःशीतोगंडूषान्मुखपाकजित् ॥

अर्थ-चमेलीके पत्ते चावनेसें मुखके छाले दूर हो । अथवा चमेलीके पत्ते, गिलोय, दाख, जवासा, दारुहलदी, और त्रिफला, इनका काढा कर उसमें सहत मिलाय शीतल होनेपर कुल्ले करे तो मुखपाक (छाले) दूर हो ।

खदिरादिवटी ।

खदिरस्यतुलांतोयेद्रोणेपक्त्वाष्टशेषके । जातीकोशेंदुपूगाम्रचातुर्जातमृगांडजैः ॥ पृथक्कर्षमितैःपिष्टैर्मेलयित्वाचणोपमाम् । गुटींकृत्वामुखेधृत्वातान्निहंत्यखिलान्गदान् ॥ जिह्वोष्ठदंतवदनगलतालुसमुद्भवान् ।

अर्थ-१०० टकेभर कत्थेको १५ सेर जलमें औटावे, जब अष्टमांश शेष रहे तब इसमें जायफल, भीमसेनी कपूर, दक्खनी सुपारी, चातुर्जात, और कस्तूरी, प्रत्येक तोले तोले भर ले सबको कूट पीस चनेके प्रमाण गोली बनावे इस गोलीको मुखमें रक्खे तो जीभ, होठ, दांत, मुख, गला, और तालुएके सर्व रोग दूर हो ।

तुल्यंखदिरसारस्यतत्रचूर्णंविनिक्षिपेत्॥ जातीकंकोलकर्पूरक्रमुकानांविचक्षणैः । गुटिकास्तुप्रकर्तव्यामुखेस्थाप्यासदैवहि ॥

अर्थ-खैरसार १ भाग, जायफल, कंकोल, कपूर, और सुपारी इनके चूर्णका १ भाग, सबको मिलाय जलसें गोली बांधे, मुखमें रक्खे तो सर्व मुखके विकार दूर हो

लोध्रखादिरमंजिष्ठायष्ट्याह्वैश्चापिसाधितंतैलम् ।
संशोधनंचहन्याद्दंतनाडीगतिंक्रमान्नियतम् ॥

अर्थ-लोध, कत्था, मजीठ, मुलहटी, इनसें तेलको सिद्ध करे; इसको मुखमें रक्खे तो मुखको शुद्ध करे, तथा दांतोंके घाव आदिको दूर करे ।

जिह्वागतविकाराणांशस्तंशोणितमोक्षणम् ।
ततोमृताकणानिंबकटुकाकवलोहितः ॥

अर्थ-जीभके रोगमें जीभमेंसें रुधिर निकालना हित है, फिर गिलोय, पीप नीम, और कुटकी इनको कवलविधि हितकारक कही है ।

कुष्ठोषणवचासिंधुकणापाठालपवैःसमैः ।
सक्षौद्रैर्भिषजाकार्यंगलशुंड्यांप्रवर्षणम् ॥

अर्थ—कूठ, पीपर, वच, सैंधानिमक, पाठ, और मोथा, ये समान ले इनका चूर्ण कर सहत मिलाय गलशुंडी (गलेके भीतरकी गांठ अर्थात् चोर दांतोंपर) घिसे तो चोर दाँत जाते रहे ।

कालकंचूर्णम् ।

गृहधूमोयवक्षारपाठाव्योषंरसांजनम् । तेजोह्वात्रिफलालो-
ध्रंचित्रकश्चेतिचूर्णितम् ॥सक्षौद्रंधारयेदास्येगलरोगहरंपरम् ।
कालकंनामतच्चूर्णंदंतास्यगलरोगनुत् ॥

अर्थ—घरका धूआ, जवाखार, पाठ, त्रिकुटा, रसोत, तेजबल, त्रिफला, लोध, चीतेकी छाल, इनका चूर्ण कर सहत मिलाय मुखमें रक्खे तो यह कालकचूर्ण दांत मुख और गलेके रोगोंको दूर करे ।

मनःशिलायवक्षारोहरितालंससैंधवम् । दार्वीत्वक्चेतिसंचू-
र्ण्यमाक्षिकेणसमन्वितम् ॥मूर्च्छितंघृतमंडेनकंठरोगेषुधारये-
त् । मुखरोगेषुचश्रेष्ठंपीतकंनामतत्स्मृतम् ॥

अर्थ—मनसिल, जवाखार, हरताल, सैंधानिमक, दारुहलदी, और तज, इनको सहत मिलायके घृत और मांडमें औटायके मुखमें राखे तो मुखके सर्व रोग दूर हों इसे पीतकचूर्ण कहते हैं ।

सैंधवंखादिरंकुष्ठंधनामरिचनागरम् ।
जीरकंभर्जितंतुत्थंदंतास्रचलताहरम् ॥

अर्थ—सैंधानिमक, कत्था, कूठ, धनिया, मिरच, सोंठ, भुनाजीरा, और नीलाथ, इनके चूर्णको रगडे तो दांतोंका हिलना दूर हो ।

जातीपत्रामृताद्राक्षापाठादार्वीफलत्रिकैः ।
क्काथोमधुयुतःशीतोगंडूषोमुखपाकनुत् ॥

अर्थ—चमेलीके पत्ते, गिलोय, दाख, पाठ, दारुहलदी, और त्रिफला इनके में सहत मिलायके कुल्ले करे तो मुखके छाले दूर हो ।

दार्विगुडूचीसुमनाप्रवालेद्राक्षायवानीत्रिफलाकषायैः ।
गंडूषचैतन्मुखपाकमेवप्रणाशयत्येततदुग्ररूपम् ॥

आर्द्रकस्वरसश्चैवगोघृतंक्षौद्रसंयुतम् । मेथिकास्वरसश्चैवपलांडुस्वरसस्तथा॥श्यामकुक्कुटमज्जाचप्रत्येकंकर्षसंमितम् । प्रत्यहंभक्षयेत्सर्वंसप्ताहंबलपुष्टिकृत् ॥

अर्थ–अदरखका रस, गौका घी, और सहत, प्याजका रस, मेथीका स्वरस और काले मुरगेकी चरबी, प्रत्येक तोले तोले ले सबको मिलाय सातदिन खाय तो बलपुष्टी करे ।

आमिषंतुकुलीरस्यातिलतैलेषुपाचयेत् । ध्वजस्तेनोपलिप्तस्तु शैथिल्यंपरिमुंचति ॥वृद्धदारस्यमूलानिसूक्ष्मचूर्णीकृतानिच। शतमूलीरसेनैवसप्तवारंविभावयेत् ॥ तच्चूर्णंसर्पिषालिह्यात्कर्षमात्रप्रमाणतः । त्रिंशद्दिनप्रयोगेणजायतेधातुवर्द्धनम् ॥

अर्थ–केंकडेके मांसको तिलके तेलमें भून इन्द्रीपर लेप करे तो इन्द्रीकी शिथिलता दूर हो। विधायरेकी जडका बारीक चूर्ण कर सतावरके रसकी सात भावना देवे फिर इस चूर्णको घृतसैं १ तोले भक्षण करे तो ३० दिनमें धातुबढे ।

पारामारणम् ।

शुद्धंसूतंद्विधागंधंलोहपात्रेऽग्निसंस्थिते । आर्द्रन्यग्रोधदंडेन चालयेद्भस्मतांनयेत् ॥ रत्तिकाद्वितयंभुक्तंरेतःपुष्टिकरंपरम् ॥

अर्थ–शुद्ध पारा १ तोलेभर, गंधक २ तोलेभर ले, दोनोंको लोहेकी कढाईमे डाल चूल्हेपर चढाय नीचे आग जलावे, और गीली वडकी लकडीसैं पारे गंधकको चलाता जाय तो थोडी देरमें भस्म होजाय, यह भस्म २ रत्ती खाय तो वीर्यको पुष्टि करे ।

रेतस्तंभकपारदः ।

शुद्धंसूतमिषुप्रतोलकमितंगंधंतथाशुद्धिमत्पंचाक्षंपरिगृह्यसंयुतमुंस्थांशुक्तिसमुद्घाट्यताम् । तत्कीटंपरिहृत्यशुक्तिजठराद्दंतःक्षिपेद्गंधकंप्रोक्तस्यार्द्धमथांतरेविनिहितंसूतंसमस्तंततः ॥ सूतस्योपरिशेषगंधकरजःसंक्षिप्यतन्मध्यगंसूतंशुक्तिकयान्य-

तोपरिगयासंमुद्यमृद्वस्त्रकैः। तांशुक्तिपरिशोष्यसूर्यकिरणात्सं दीयतेग्निस्तुषैर्धान्यानांगजसंज्ञकेवरपुटेतत्स्वांगसंशीतलम्॥ सचूर्ण्यांशुकगालितंकिलभवेद्गुंजोन्मितंपुष्टिकृद्रेतस्तंभनकृ-त्पयोऽनुचपिबेत्सायंसितासंयुतम् ॥

अर्थ–पारा ५ तोले और शुद्ध गंधक ५ तोले ले प्रथम गंधकका चूर्ण कर कीडारहित मुखमुदी सीपमें आधा चूर्णभर देवे, फिर पाराभर ऊपरसें सब गंधकका चूर्णभरके उस सीपके ऊपर कपड मिट्टी करे फिर उसको धूपमें सुखाय धान्यके तुसान्के गजपुटमें धरके फूंक देवे, जब स्वांगशीतल हो जावे तब निकाल पीसके कपडछन कर लेवे इसमेंसे १ रत्ती खाय तो पुष्टता करे, वीर्यको स्तंभन करे, और सायंकालको इसके ऊपर मिश्री मिला दूध पीवे।

गंधकरसायनम्।

शुद्धोबलिर्गोपयसाविभाव्यस्ततश्चतुर्जातगुडूचिकाभिः। पथ्याक्षधात्र्यौषधभृंगराजैर्भाव्योष्टवारंपृथगार्द्रकेण॥सिद्धेसितांयोजयतुल्य भागांरसायनंगंधकसंज्ञकंभवेत् । कर्षोन्मितंसेवितमेतिमर्त्योवीर्यं चपुष्टिंदृढदेहवह्निम् ॥ कुष्टंचकंडूविषदोषमुग्रंमासद्वयंयोजयतिप्रयोगात्। घोरातिसारंग्रहणीगदंचसवातरक्तंसहशूलयुक्तम् ॥जीर्णज्वरंमेहगणंचतीव्रंवातामयानांहरणेसमर्थः॥

अर्थ–शुद्ध गंधकको गौके दूधकी भावना देकर चातुर्जात, गिलोय, हरड, बहेडा, आमला, सोंठ, और भांगरा, इनके रसकी आठ आठ भावना दे; फिर अदरखके रसकी आठ भावना देवे, फिर सुखायके बराबरकी मिश्री मिलावे तो यह गंधक रसायन सिद्ध हो। इसमेंसें १ तोले नित्य सेवन करे तो मनुष्य वीर्य, पुष्टी, दृढदेह, दीप्ताग्निवान् हो। और कोढ, खुजली, विषके दोष, घोर अतिसार, संग्रहणी, वातरक्त, शूल, जीर्णज्वर, प्रमेह, और सर्व वातके विकार दूर हो।

जातीफलंलवंगंचजातीपत्रंसकुंकुमम्।सूक्ष्मैलाचाहिफेनंचआकारकरभस्तथा ॥ प्रत्येकंकर्षमात्राणिकर्पूरंशाणमात्र-

कम् । नागवल्लीदलरसैर्वटीचणकसन्निभा ॥ वीर्यसंस्तंभिनी ह्येषाबलवर्णाग्निदीपनी ॥

अर्थ–जायफल, लौंग, जावित्री, केशर, छोटी इलायची, अफीम, और अकरकरा, प्रत्येक तोले तोलेभर ले । भीमसेनी कपूर ४ माशे, इन सबको नागरबेलके पानके रससें खरल कर चनेके प्रमाण गोली बनावे, यह वीर्यका स्तंभन करे और बलवर्ण तथा अग्निको दीप्त करे ।

उन्मत्तसोमविजयाजातीपत्रंचखाखसम् । उन्मत्तपंचकंचैतद्यवानीपंचभिःसमा ॥ दुग्धनिर्वापितादस्मादर्कोग्राह्योयथोक्तितः । खादेत्पिशाचवन्मत्तोरमेच्चरमणीशतम् ॥

अर्थ– धतूरा, कपूर, भांग, जावित्री, पोस्त यह उन्मत्तपंचक कहाता है । प्रत्येक समान ले और सबकी बराबर अजमायन ले इसमें दूध डालके इसका अर्क खींच लेवे इस अर्कके पीनेसें पिशाचके समान मतवाला हो सौ स्त्रियोंसें रमण करे ।

जातीफलार्ककरहाटलवंगशुंठीकंकोलकुंकुमकणाहरिचंदनानि । एतैःसमानमहिफेनमनेनतुल्याश्वेतांनिधायमधुनावटिकांविदध्यात् ॥ माषद्वयोन्मितामिमांनिशिभक्षयित्वामृष्टंपयस्तदनुमाहिषमाशुपीत्वा । कुर्वीतिकामुकजनानतुबिंदुपातंचेतांसिचापिचकितानिकलावतीनाम् ॥

अर्थ– जायफल, अकरकरा, लौंग, सोंठ, कंकोल, केशर, पीपर, और पीलाचंदन, ए समान भाग ले सबकी बराबर शुद्ध अफीम लेवे, तथा इन सबकी बराबर मिश्री मिलाय सहतसें दोदो मासेकी गोली बनावे, १ गोली रात्रिको भक्षण कर ऊपर मिश्री मिला भैंसका दूध पीवे, तो यह कामी पुरुषोंके वीर्यको स्तंभन करे, और स्त्रियोंके चित्तको प्रसन्न करे ।

मानसोल्लासकचूर्णम् ।

त्वक्पिप्पलीलवंगैलाचंदनंचशिवापलम् । सारसार्द्धपलंभंगासार्द्धद्विपलसंमिता ॥ कर्पूरोमृगनाभिश्चदशमाषमितःपृथक् ।

सर्वैतुल्यासिताचूर्णमानसोल्लाससंज्ञकम् ॥ वृष्यंवह्निप्रदंचैत-
द्राजारामप्रकाशितम् ॥

अर्थ– तज, पीपल, लौंग, छोटी इलायची, सपेदचंदन, और आमले प्रत्येक टकेटकेभर ले, खार १॥ टकेभर ले, भांग २ टकेभर, कपूर, कस्तूरी, दोनों दश दश मासे, और सब चूर्णकी बराबर मिश्री मिलावे तो यह मानसोल्लासक चूर्ण वीर्यको पुष्ट करे, जठराग्निको बढावे है ।

कामसुंदरपाक ।

शतावरीचमुशलीगोक्षुरस्त्वग्लवंगकम् । खर्जूरमेलाकृष्णाच
शिवाकमलचंदनम्॥ कपिकच्छुभवंबीजंपत्रंमुस्ताचनागरम् ।
कोकिलाक्षश्चधनिकाशुक्तिपूगंपलद्वयम् ॥ विंशत्पलसितादर्प-
कर्पूरश्चार्द्धकार्षिकः । विजयासार्द्धपलिकाप्रमेहघ्नोरसायनः ॥
ज्वरघ्नःपुष्टिजननःपाकोऽयंकामसुंदरः ॥

अर्थ– शतावर, मूसली, गोखरू, तज, लौंग, छुहारे, छोटी इलायची, पीपर आमले, कमलगट्टा, सपेदचंदन, कौंछके बीज, पत्रज, नागरमोथा, सोंठ, तालमखाने, और धनिया, प्रत्येक तोले तोले ले । दक्षणी सुपारी ८ तोले, मिश्री २० टकेभर, कस्तुरी और भीमसेनी कपूर छः छः मासे ले; भांग १॥ टकेभर ले, फिर पाककी विधिसें पाक बनावे तो यह कामसुंदरपाक प्रमेह और ज्वरको दूर करे, रसायन है और देहको पुष्ट करे है ।

कार्पासबीजमज्जाहिफेनंजातीफलंविषम् । तथार्ककरभंसर्वैप-
लार्द्धंसूक्ष्मचूर्णितम् ॥ पलपंचमिताग्राह्यावसाशूकरसंभवा ।
संमर्दयेन्मेलयित्वाद्वात्रिंशत्प्रहरावधि ॥ लिंगलेपंविधायाथ
नागवल्लीदलेनच । बध्नीयान्नश्यतिक्षिप्रंध्वजपातःकियद्दिनैः ॥

अर्थ– विनोलेकी मिंगी, अफीम, जायफल, सिंगियाविष, और अकरकरा, सब दोदो तोले लेकर चूर्ण करे, फिर २० तोले सूअरकी चर्बी मिलावे, सबको एकत्र कर ३२ प्रहरतक बराबर घोटे, फिर इसका सुपारी बचाय लिंगपर लेपकर ऊपरसें नागरबेकाल पान बांध पट्टी बांध देवे तो लिंगकी शिथिलता कुछ थोडेही दिनमें दूर हो ।

अथ विजयाशुद्धिः ।

त्रिप्रक्षालितमोहिनीदलरजःसंशोषितंखर्परेसम्यक्कृतंमृदुभर्जि-
तंदृढपटेसंचूर्ण्यसंगालितम् । सम्यक्खाखसकोटरांबुनिचतुर्भा-
गेविपक्कंगवांदुग्धेचाष्टगुणेजहातिसकलान्दोषान्नृपाणांहितम् ॥

अर्थ–भाँगको तीन वार पानीसें धोय कोरे खिपडेमें सुखाय चूल्हेपर चढाय मंदाग्निसें भूने, फिर गाढे कपडेमें इसके चूर्णको छान लेवे, फिर खसखसके छोतरा-नके चौथाई पानीमें और अठगुने गौके दूधमें पृथक् २ पकावे तो भांग शुद्ध हो ।

जात्यापुष्पफलंत्वक्चलवंगकेशरैर्युतम् । शक्रासनस्त्रिभिस्तुल्यं
यथासात्म्यंविनिक्षिपेत् ॥ दोलायंत्रविधानेनदुग्धेपक्काशनैः
शनैः । तदुद्धृत्यपयःपेयंससितंचार्द्धशेषकम् ॥ शुक्रस्तंभकरंवृ-
ष्यंभेषजंनास्त्यतःपरम् । गोदुग्धविजयाकल्कसंसिद्धंगोघृतं-
नवम् ॥ रतिवर्द्धनकूष्मांडखंडादौतद्विनिःक्षिपेत् । नातःपरत-
रंवृष्यंशुक्रस्तंभकरंभवेत् ।

अर्थ–जावित्री, जायफल, दालचीनी, लौंग, और केशर मासे २ भर लेवे, और भांग ३ मासे लेय, सबकी पोटली बांधके दोला यंत्रकी विधिसें आधसेर दूधमें धीरेधीरे पचावे, फिर इस पोटलीको निकाल और उस दूधमें मिश्री मिलायके पीवे तो वीर्यका स्तंभन होय इससें परे वृष्यकर्त्ता औषध अन्य नहीं है । गौका दूध और भांगके कल्कमें गौके घीको सिद्ध करे फिर उस घृतको रतिवर्द्धन पाकमें अथवा कूष्मांडखंडमें मिलावे तो इससें परे वृष्यकर्त्ता और स्तंभनकारी पदार्थ दूसरा नहीं है ।

जलेप्रक्षालिताशुद्धाविजयाससितोपला । गिरिभृद्रंजितादर्पक-
पूराभ्यांसुवासिता ॥ मर्दयित्वादृढंखल्वेस्निग्धंचूर्णंप्रकल्पयेत् ।
रसायनाभ्रसंज्ञोयंयोगराडयमीरितः ॥ चूर्णावलेहगुटिकाविधानै
र्विविधैरयम् । यथामदकरोवृष्योबल्यःशुक्रकरस्तथा ॥ नापरो
विद्यतेयोगस्तस्मादत्रप्रकाशितः ॥

अर्थ–जलसें धुलीहुई शुद्ध भाँगमें मिश्री मिलावे फिर शिलाजीत, कस्तूरी, और कपूरसें सुवासित करे फिर खरलमें खूब मर्दन कर चूर्ण करे, इसको रसायनाभ्र सर्व योगोंका राजा कहते हैं । इसे चूर्ण, अवलेह, गोली और अनेक-प्रकारकी विधिसें सेवन करे तो यह मस्ती प्रगट करे, वृष्य है, बल करता है, इससें बढकर दूसरा प्रयोग नहीं है। इसवास्ते हमने यहांपर प्रकाश करा है।

जयासर्पिर्विधानंयत्तथाभ्रकरसायनम् ।बुद्ध्वायेनयथायोगाकल्पनीयाविजानता ॥ योगानांकल्पनाशक्तौदिगेषासंप्रदर्शिता ॥

अर्थ–जयासर्पि (जयाघृत) का विधान, तथा अभ्रकरसायनकी विधिको जानकर वैद्य यथा योगानुसार अन्य योगोंकी कल्पना करे । ये मैने जो वैद्ययोगोंके कल्पना (बनाने)में असमर्थ हैं उनके वास्ते दिग्दर्शनमात्र कर दीना है अर्थात् इसीप्रकार अन्य योगोंकीभी कल्पना अपनी बुद्धिके अनुसार करे ।

आम्रपाक

पक्वाम्रस्यरसेद्रोणेरसाढकमितांसितां।घृतप्रस्थमितंदद्यान्नागरस्यपलाष्टकम्॥मरिचंकुडवोन्मानंपिप्पलीद्विपलोन्मिता।सलिलस्याढकंदत्त्वासर्वमेकत्रकारयेत् ॥ पचेत्तन्मृन्मयेपात्रेदारुदर्व्याप्रचालयेत् । चूर्णान्येषांक्षिपेत्तत्रघनीभूतेऽवतारिते ॥ धान्यकंजीरकंपत्रंचित्रकंमुस्तकंत्वचम्।बृहज्जीरकमप्यत्रग्रंथिकंनागकेशरं॥एलाबीजंलवंगंचपृथक्जातीफलंपलं। सिद्धेशतेप्रदातव्यंमधुनःकुडवद्वयम् ॥भक्षयेद्भोजनादर्वाक्पलमात्रमिदंनरः । अथवानियतानात्रमात्राखादेद्यथाबलम् ॥मानवस्सेवनादस्यवाजीवसुरतेभवेत्। समर्थोबलवान्पुष्टोह्यद्योनित्यंनिरामयः॥

अर्थ–पक्के और मीठे आमोंका रस १६, सेर सपेद बुरा ४ सेर, घी सेरभर, सोंठ ८ पल, कालीमिरच ८ पल, पीपल ८ तोले, जल ४ सेर डालके सबको

---

१ ग्रहणींनाशयेदेषक्षयंश्वासमरोचकम् । अम्लपित्तंचपित्तंचरक्तपित्तंचपांडुतां ॥ इति अधिकःपाठः ।

एकत्र कर मिट्टीके पात्रमें मंद मंद आंचसैं पकावे, और लकडीकी कलछीसें चलाता जाय, जब कुछ गाढा होनेपर आवे तब इतनी औषध और डाले। धनिया, जीरा, पत्रज, चीतेकी छाल, नागरमोथा, तज, कलौजी, पीपरामूल, नागकेशर, इलायची, लौंग, और जायफल, प्रत्येक चार चार तोला चूर्ण कर उस कढाईको अग्निपैसें उतार कर डाले, जब अत्यंत शीतल होजावे, तब सहत आधा सेर डाले, फिर इसमेंसें १ टकेभर नित्य भोजनके प्रथम भक्षण करे, अथवा बलाबल देखके मात्रा देवे तो मनुष्य इसके सेवनसें घोडेके समान मैथुन करनेमें प्रवृत्त हो, समर्थ, बलवान्, हृष्ट पुष्ट और रोग रहित हो यह आम्रपाक हृदयको हितकारी है ।

आकरभादिचूर्णम् ।

अकारकरभःशुंठीलवंगंकुंकुमंकणा । जातीफलंजातिपुष्पंचन्दनंकार्षिकंपृथक् ॥ चूर्णयेदहिफेनंचतत्रदद्यात्पलोन्मितम् । सर्वमेकीकृतंमाषमात्रंक्षौद्रेणभक्षयेत् ॥ शुक्रस्तंभकरंपुंसामिदमानन्दकारकम् । नारीणांप्रीतिजननंसेवेतनिशिकामुकः ॥

अर्थ–अकरकरा, सोंठ, लौंग, केसर, पीपर, जायफल, जावित्री और सपेदचंदन, प्रत्येक एक एक तोले लेय, अफीम ४ तोला, सबको एकत्र कर १ मासेकी गोली बनावे, १ गोली सहतके साथ खाय तो वीर्यस्तंभन हो, स्त्रीपुरुषोंको आनंददाई इसको कामीपुरुष रात्रिको व्यालू करनेके उपरांत, सेवन करे ।

लक्ष्मीविलासावलेह ।

जातीकोशलवंगैलाभूसितामारिचंनखम् । हरीतकीतृवृच्छुंठीवरीकुंकुमचन्दनम् ॥ पारसीककसेरुश्चशृंगाटकवरांगकम् । मुराकस्तूरिकासर्वंपृथक्कर्षंविचूर्णयेत् ॥ पुष्पतैलतृतीयांशंमर्दितंविजयारजः । पलपंचमितंशुद्धंटंकार्द्धंलघुतैलयुक् ॥ रक्तातिमंजुलापुष्पसंधितातुसितोपला । गुरूपदेशादारक्तमंजुलाजलयोगतः ॥ लेहोलक्ष्मीविलासःस्याद्वृष्योबल्योऽग्निदीपनः ॥

अर्थ—जायफल, लौंग, छोटी इलायची, सोंठ, कालीमिरच, नख (सुगंधित द्रव्य जो इसी नखनामसें प्रसिद्ध है) हरडकी छाल, निसोथ, सोंठ, सतावर, केशर, सपेदचंदन, पारसीक अजमायन, कसेरु, सिघाडे, पत्रज, मुरा (कपूरकचरी) और कस्तूरी प्रत्येक तोले तोले भर लेवे; सबका चूर्ण कर इसमें अतर मिलावे, और तीसरा भाग भांगका चूर्ण डाले, फिर गुलाब जलसें इस अवलेहको बनावे, और दिव्य सुगंधवाली खाँड मिलावे तो यह लक्ष्मीविलासअवलेह बनके तयार हो । वृष्य, बलकारी, और अग्निदीप्त कर्त्ता है ।

कौंचपाक ।

नीस्तुषंवानरीबीजंकृत्वाविंशत्पलानिच । त्रिंशत्पलांसितांदत्वाघृतंदत्वापलाष्टकम् ॥ दुग्धाढकसमायुक्तंमृदुनावह्निना पचेत् । यावद्दार्वीप्रलेपःस्यात्तन्मध्यचूर्णितंक्षिपेत् ॥ जातीफलंत्रिकटुकंत्रिगंधंदेवपुष्पकम् । आकल्लकंजातिपत्रीकोकिलाबीजकेशरम् ॥पुनर्नवाबलेद्वेचमुशलीसाहिफेनकम् । पारदंलोहचूर्णंचअभ्रकंचपलार्द्धकम् ॥ चंदनागरुकस्तूरीकर्पूरंशाणमात्रकम् । पलार्द्धंभक्षयेदेतत्क्रमाद्वीर्यबलप्रदम् ॥

अर्थ—तुसरहित कौंचके बीज ८० तोले, मिश्री १२० तोले, घी ३२ तोले, दूध चारसेर, इन सबको एकत्र कर मंदाग्निसें पक करावे, जब गाढा हो कर कलछीसें लिपटने लगे तब ए औषध और डाले; जायफल, त्रिकुटा, त्रिगंध, लौंग, अकरकरा, जावित्री, तालमखाने, केशर, सोंठ, खरेटी और गगेरन, मूसली, अफीम, पारा (चंद्रोदय) लोहभस्म, अभ्रक, प्रत्येक दो दो तोले लेय, चंदन, अगर, कस्तूरी, भीमसेनी कपूर, प्रत्येक ४ मासे डाल पाक सिद्ध करे इसमेंसे दो तोले नित्य भक्षण करे तो वीर्य बल बढे ।

स्तंभनगुटी ।

समुद्रशोषबीजानिभागैकंधूर्तबीजकम् । भागत्रयंजातिपत्री भागमेकंचतत्फलम् ॥ यवानीम्लेच्छदेशस्थाभागत्रयसमन्विता । भागार्धमहिफेनंचमाहिषीक्षीरशोधितम् ॥ त्रिजयास्वसफलकाथैर्दशवारांविभावयेत् । धत्तूरबीजतैलेनमर्दयेत्तदनंतरम् ॥ बदरास्थिप्रमाणेनवटिकाःसंप्रकल्पयेत् । मदनानन्दजननीवीर्यस्तंभकरीपरम् ॥ उन्मत्तानांनर्तकीनामातंगर्वहराकली ॥

अर्थ-समुद्रशोषबीज १ तोले, धतूरके बीज १ तोले, जावित्री ३ तोले, जायफल १ तोले, खुरासानी अजमायन ३ तोले, दूधमें सुधीहुई अफीम ६ माशे, और भाँग १ तोले सबको कूट पीस पोस्तके डोडान्के क्वाथकी दश भावना देवे, फिर धतूरेके बीजके तेल करके खरल कर, वेरके समान गोली बनावे, यह कामदेवके आनंदको बढावे, वीर्यका स्तंभन करे, जो स्त्री मतवाली है उनके गर्वको दूर करता है ।

भागैकोमृगनाभिश्चप्रत्येकंकुंकुमंतथा । जातीफलंलवंगंचप्रत्येकंभागयुग्मकम् ॥ चतुर्भागाहिफेनंचविजयाभागयुग्मकम्। भक्षयेन्मधुनासार्द्धंरमतेकामिनीशतम् ॥ चणकाभावटीकायांवीर्यस्तंभकरीमता ॥

अर्थ-कस्तूरी १ तोलेभर, केशर १ तोलेभर, जायफल, लौंग, प्रत्येक दो तोले ले, अफीम ४ तोले, भाँग २ तोल, सबको कूट पीस चनेके प्रमाण गोली बनावे, १ गोली सहतके साथ भक्षण करे तो सौ स्त्रीसें रमण करनेकी शक्ति हो ।

कामिनीमदविधूननोरसः ।

कज्जलीकृतसुगंधकरांभोतुल्यभागकनकस्यचबीजम् ।मर्दितंकनकतैलयुतंस्यात्कामिनीमदविधूननएषः ॥ अस्यवल्लयुगलंससितंचेत्सेवितंहरतिमेहगणौघम् । लिंगदीर्घकरणंकमनीयंद्रावणंनिधुवनेवनितानाम् ॥

अर्थ-पारा गंधक दोनों समान भाग लेकर कजली करे कजलीके समान शुद्ध धतूरेके बीज मिलावे, सबको एक जीव कर धतूरेके तेलसें खरल करे तो यह कामिनीमदविधूननरस बने ४ रत्ती रस मिश्रीके साथ सेवन करे तो सर्व प्रकारके प्रमेह दूर हो लिंग बडा हो । और मैथुनमें स्त्री द्रवीभूत हो ।

इति वाजीकरणचिकित्सा समाप्ता ।

अथ कतिचिद्योगाः ।

कैराताम्बुदपर्पटज्वरगदेतक्रंग्रहण्यामथाऽतीसारेकुटजःकृमौकृमिरिपुर्दुर्नामकेरुष्करम् । पांडौकिमथक्षयागेट्टिरिजतुश्वा-

सेतुभाङ्गर्यौषधंमेहेत्वामलकंक्षयेतृषिजलंसंततहेमान्वितम् ॥ शूलेहिंगुकरंजमामपवनेतैलंरुबोमूत्रयुक्श्रेष्ठाप्लीह्निकणाविषेशुकतरुःकासेतुकंटारिका । वातव्याधिषुगुग्गुलुश्चलशुनःस्याद्रक्तपित्तेवृषोऽपस्मारेतुवचासवाद्यथगरेहेमोदरेरेचनम् ॥ वातास्रेतुगुडूचिकार्दितगदेमाषेंडरीमेदासिक्षौद्राम्भःप्रदरेतिरीटमरुचौलुंगोव्रणेऽप्यंपुरं । शोकेमद्यमथाम्लपित्तरुजितुद्राक्षाथकृच्छ्रेवरीकूष्मांडांबुदृगामयेतुत्रिफलोन्मादेपुराणंघृतम् ॥ कुष्ठेखादिरसारवार्यथपयोनिद्राक्षयेमाहिषंश्वित्रेवाकुचिफल्यजीर्णरुजितुस्वापोभयेशोषणम् । छर्दौलाजमधूद्भंजन्तुविकृतौनश्यंसतीक्ष्णौषधंशूलेपार्श्वभवेतुपुष्करजटामूर्च्छासुशीतोविधिः ॥ कार्श्यंमांसरसोऽश्मरीषुगिरिभिद्गुल्मेषुसेतुत्वचामोक्षोऽस्रस्यतुविद्रधौजतुरसौहिंध्मासुनस्यंहितम् ।दाहेशीतविधिर्भगंदरगदेतूर्वालतास्वास्थिनी घृष्टेरासभलोहितैःस्वरगदेमध्वन्वितंपौष्करम् ॥

अर्थ–अब कुछ रोग रोगके प्रति औषधोंके योग लिखते हैं जैसे कि ज्वरमें चिरायता, नागरमोथा, और पित्तपापडा, संग्रहणीमें छाछ, अतीसारमें कूडाकी छाल, कृमिरोगमें वायविडंग, बवासीरमें भिलाए, पीलियामें कीटी, खईमें खिलाजीत, श्वासमें भारंगी, प्रमेहमें आमला, क्षईकी तृषामें सुवर्ण बुझा जल, शूलमें हिंग और कंजा, आमवातमें अंडीका तेल और गोमूत्र, प्लीहमें त्रिफला विष और पीपर, खाँसीमें कटेरी और अनारकी छाल, वातव्याधीमें गूगल और लहसन, रक्तपित्तमें अडूसा, मृगीमें वच और आसवादिक, विषमें चोक, उदरमें रेचन, वातरक्तमें गिलोय, अर्दितमें मांषेंडरी, भेदरोगमें सहतजल, प्रदरमें लोधका चूर्ण, और अरुचिमें बिजोरेकी केसर, व्रणमें गूगल, शोकमें मद्य, अम्लपित्तमें दाख, मूत्रकृच्छ्रमें सतावर और पेठेका जल, नेत्ररोगमें त्रिफला, उन्मादरोगमें पुराना घी, कोढमें खैरसारका काढा, निद्राक्षयमें भैंसका दूध और शीतल

१ यह एक प्रकारका वडा होताहै हमारे बनाए चर्याचंद्रोदय ग्रंथमें इसके बनानेकी विधि लिखीहै ।

जल, चित्रकुष्ठमें बावचीका चूर्ण, अजीर्णमें हरड और कालीमिरच, वमनरोगमें खीलका यूष, और सहत, कंठसे ऊपरके स्थानोंकी विकृतिमें तीक्ष्ण औषधोंकी नस्य, पसवाडेके शूलमें पुहकरमूल और जटामांसी, मूर्च्छामें शीतल उपचार, कृशताके रोगमें मांसका रस, पथरीमें शिलाजित, गुल्ममें सहजनेकी छाल, विद्रधिमें फस्तका खोलना, हिचकीमें लाखके रसकी नस्य, दाहमें शीतलविधि, भगंदर रोगमें केंचुए कुत्तेकी हड्डी और गधेकी हड्डीको घिसके लगावे, स्वरभंगरोगमें सहतके साथ पुहकरमूलका चूर्ण खाय तो उक्तरोग दूर होय ।

दीर्घदीर्घाःसुबहवोग्रंथाःसंतितथापिमे ।
संप्रदायिकयोगानांसंग्रहार्थमयंश्रमः ॥

अर्थ–यद्यपि इस संसारमें अनेक बडे बडे वैद्यकके ग्रंथ विद्यमान है तथापि इस वैद्यरहस्यमें सांप्रदायिक योगोंके संग्रह करनेके लिये यह मेरा परिश्रम है । अर्थात् जैसा मैंने इस वैद्यरहस्य ग्रंथमें अनुभव करे गुप्त प्रयोगोंका संग्रह करा है ऐसा अन्य बडेबडे ग्रंथोंमें नहीं है ।

चतुःपंचाशद्भिर्मुनिविधुमितैर्नाधिसहितैर्गतेब्दे भूपाकान्नभसि सितपक्षेफणितिथौ । इतिश्रीमद्वंशीधरतनयविद्यापतिकृतो- भवत्पूर्णोग्रंथःसकलभिषगानन्दजनकः ॥

अर्थ–श्रीविक्रमादित्य महाराजके १७५४ वे वर्षमें श्रावणशुक्का ५ को वंशीधरके पुत्र विद्यापतिनामक मैंने यह वैद्यरहस्यनामका ग्रंथ पूर्ण करा यह संपूर्ण वैद्योंको आनंददायक हो ।

इति श्रीसकलवैद्यशिरोमणिश्रीवंशीधरतनुजविद्यापतिनिर्मितो
वैद्यरहस्याभिधो ग्रंथः समाप्तः

इति श्रीमाथुरकुलकमलप्रकाशकपाठकज्ञातीय कृष्णलाल (कन्हैयालाल)
तनय दत्तराम चातुर्वेदीमथुरानिवासिकृत वैद्यरहस्यार्थप्रकाशिका भाषा-
टीका समाप्ता । संवत् १९४६ आश्विन शुक्र १० शुक्रः ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–
खेमराज श्रीकृष्णदास.
"श्रीवेंकटेश्वर" छापाखाना. बंबई.